# शङ्करदिग्विजय

## प्रसिद्धमाधवीशङ्करदिग्विजय

अर्थात्

श्रीपरब्रह्म शिवस्वरूप धर्म्मरक्षक श्रीशङ्कराचार्य्यजी महाराज के जीवनचरित्र और अनेकमतवादियोंसे शास्त्रार्थ और वादाविवाद करके दिग्विजय करनेका इतिहास

जिसको

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीस्वामी रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानन्द भारतीने दोहा चौपाई आदि अनेक छन्द रीतिसे भाषामें उल्था किया

जो

महामहोपाध्याय श्रीपण्डित देवीप्रसाद साहब वीरेश डिप्टी कलक्टर जबकि उक्त पण्डित साहब ग़ाज़ीपुरके डिप्टी कलक्टरथे उनकी आज्ञानुसार प्रथमबार छापागयाथा

तृतीय बार

महात्मा और हरभक्तों व सब छोटे बड़ोंके स्नेहार्त्थ

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

मार्च सन् १८८८ ई० ॥

# विज्ञापन ॥

इस महीने अर्थात् फरवरी सन् १८८- ई० पर्यंत जो पुस्तकें बेचनेके लिये तय्यारहैं उनमें से कुछ इससूचीपत्र में लिखीहैं और उनका मोल बहुत किफ़ायतसे घटाके नियत हुआहै और व्योपारियोंके लिये और भी सस्तीहोंगी जिनको व्योपारकी इच्छाहो वह मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ हज़रतगंजके पतेसे ख़तभेजकर क़ीमत का निर्णयकरलें ॥

**नामकिताब**

( अ )

अमरकोषतीनोंकांड
अध्यात्मरामायणभाषाटीकासहित
अमृतसागरबड़ा व छोटा
अरियमेटिक तीनों भाग

( इ )

इलाजुलगुरबा
ईशावास्यबाजसनेयसंहितोपनिषत्
इतिहास तिमिरनाशक
इंगलिस्तानका इतिहास

( उ )

उमापतिदिग्विजय

( ऐ )

ऐक्ट १ सन् १८७६ ई०
ऐक्ट १२ सन् १८८१ ई०
ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०
ऐक्ट १४ सन् १८८२ ई०
ऐक्ट १० सन् १८८२ ई०
ऐक्ट १० सन् १८५६ ई०
ऐक्ट १० सन् १८६२ ई०

**नामकिताब**

ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०
ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०
ऐक्टमजमूआअवधलगान १६ सन् १८६८ ई०
ऐक्ट १८ सन् १८६६ ई०
ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०
ऐक्ट १६ सन् १८७३ ई०

( क )

कायस्थकुलभास्कर
कायस्थविनोद
कर्मविपाकसंहिता
कृष्णबाललीला
कालिंजरमाहात्म्य
कृष्णसागर
कथा श्रीगंगाजी
कैवल्यकल्पद्रुम
कृष्णप्रिया
कविकुलकल्पतरु
कवितरंग
केनोपनिषत्
काव्यसंग्रह
कवित्वरत्नाकर दोभाग
कृष्णचालीसी

**नामकिताब**

( ग )

गुटका तीनोंखण्ड
गर्गसंहिता
गरुड़पुराणप्रेतकल्प
गणितप्रकाशचारोंभाग

( च )

चित्रचन्द्रिका
चाणाक्यनीति
चौरासीवार्त्तिक

( छ )

छन्दोर्णवपिंगल

( ज )

जातकालंकार
जातकाभरण
जगद्विनोद
जातकचंद्रिका

( त )

तुलसीकृतरामायण
तशरीहुलहरूफउर्दूबनागरी

( द )

दुर्गास्तोत्रमूल व सटीक

## शङ्करदिग्विजय भाषाका

# विज्ञापनपत्र॥

---

विदित हो कि माधवी शंकर दिग्विजय शांति रस मयी परम अद्भुत मनोहर काव्य है और ज्ञान प्रधान शंकर चरित्रहै–विद्वानों को यह प्रबंध बहुत प्रियहै नाम लेते सब महात्मा इस की स्तुति करते हैं–इस ग्रंथ के माधुर्य्य और स्वाद का भाषा जानने वालों को भी आनन्द होय एतदर्थ इस ग्रंथ को चौपाई दोहा छन्द में श्री स्वामी माधवानन्द भारती ने श्री काशी जी में बड़े परिश्रम से बनाया–इस में १६ अध्याय हैं और अनुमान ५००० श्लोक बराबर ग्रंथ संख्या होगी —इस में कथा अति विचित्र और मनोहर है और इतिहास अपूर्व अति उत्तमता यह है कि जोश्री शंकराचार्य्य महाराज का जिन २ मत बादियोंसे शास्त्रार्थ हुआ उन सब के मत का संक्षेप और वैदिक सिद्धान्त जाना जाता है–प्रथम यह ग्रंथ श्री पण्डित देवी प्रसाद साहब डिप्टी कलक्टर बहादुर जो ज़िले गाज़ीपुर के डिप्टी कलक्टर थे उन की आज्ञानुसार इस यन्त्रालय में छपा था सो हाथों हाथ बट गया—जो कि आजतक इस अनुपम ग्रन्थ का उलथा किसी भाषा में नहीं हुआ और इस ग्रन्थ पर सब छोटे बड़े महात्मा हर भक्तों की अभि रुचि देख कर द्वितीय बार अत्युत्तमता पूर्व्वक छापा गया है और मूल्य भी बहुत थोड़ा नियत किया गयाहै जिस किसी की इच्छा हो यन्त्रालय के नाम मूल्य अथवा पत्र भेज कर मंगवा लेवें–यह पुस्तक मुंशी नवलकिशोरके छापे ख़ाने में स्थान लखनऊ और कानपुर व कोठी अजंटी देहली बड़े दरीबे और हिन्दुस्तान के बहुधा बड़े २ नामी शहरों के किताब बेचने वाले सौदागरों से मिल सक्ती है —

---

# सूचीपत्रमाधवी शंकरदिग्विजय

# शङ्करदिग्विजय भाषा ॥

## श्लोक

श्रीगुरुंपरमानन्दंदक्षिणामूर्त्तिरूपिणं। ज्ञानानन्दप्रदंशान्तंकृपासिंधुमहं भजे १ श्रीरघुपतिपर्य्यायमुदारं कृष्णनामसहितंगुणसारं। भारतीतिप्रथितेसुखदारंनौमिगुरुंसंसृतिभयहारं २ सत्यंज्ञानमनंतमादिविधुरंनित्यं विभुंनिष्कलंशान्तानन्दपयोधिमक्रियमजंशुद्धंतुरीयंसमं।यस्यानंदलवेन सर्वमनिशंप्रानंदिधात्रादिकं योवाग्बुद्धिभिरप्यगम्यानितरांध्यायेमतंसर्वगं ३गणेशंश्रीहरिंदुर्गांरविंशम्भुंसरस्वतीम्।विधातारमहंवंदेसुरेशप्रमुखान् सुरान् ४ भद्रगृहंयद्यशरमणीयंभक्तयाह्यमरैरपिश्रवणीयं। आशुतोष श्रीहरकमनीयंनौमिसदाशंकरभजनीयं ५ व्रजवनितारतिदंसुखधामंनिजमाधुर्य्यतृणीकृतकामम्। कृष्णमनोहरमतिमभिरामंहृदयस्थंप्रणमाम्यविरामं ६ श्रीमिथिलेशसुतापतिभूपं चेतनघनमानंदस्वरूपम्। वंदेहं रघुबरकुलकेतुंरामविधुंभवसागरसेतुं ७ श्रीकामदंलोकहितावतारंप्रकाशिताम्नायशिरस्सुसारं। निवारितंद्वैतविमोहभारं नतोस्म्यहंशंकरभाष्यकारम् ८ नारायणंविधातारंवशिष्ठंशक्तिमेवच। पराशरंमुनिंव्यासंशुकंगौडांघ्रिनामकं ९ गोविंदंशंकरंपद्मपादंचश्रीसुरेश्वरं। हस्तामलकसंज्ञंचतोटकंनौमिसर्वदा १० योमाधवोमाधवपादसेवीसमाधवोभारातिसंज्ञकोये। करोतिवैमाधवकाव्यभाषांतनोतुसानन्दमियंजनानाम् ११ ॥

## चौपाई ॥

मंगलमूरति सिद्धि विधायक। विनवहुँप्रथमहिंश्रीगणनायक॥
श्रीगिरिजा जगजननिभवानी। चरणवन्दिविनवौंसुखखानी॥

बन्दौं दिनकर जासु प्रकाशा । सब जगकरतम करैविनाशा ॥
श्रीहरि बिनवौं तनमन बानी । महिमा जासुन जायबखानी ॥
ब्रह्मादिक सब देव सनाई । ऋषिमुनिकबिलोगनसिरनाई ॥
भाष्यकार बपुधर श्रीशंकर । मत्तबादि गज सिंह भयंकर ॥
बहु प्रकार बन्दौं कर जोरी । पद्मपाद पद बन्दि बहोरी ॥

दो० पुनि सुरेश हस्तामलक तोटक मुनिहिंप्रणाम ।
औरनहू को करहुं जे प्रभु सेवक गुणधाम ॥

श्रीशिव गुरुपितुमातु समाना । सब प्रकारसमहित भगवाना ॥
सब विद्या के ईश गोसाईं । चरण बन्दि बिनवौं सुरसाईं ॥
यद्यपि मैं अघ अवगुण राशी । तदपिनाथबहु कृपाप्रकाशी ॥
जेहिविधि उर प्रेरण अनुसरहू । तथा मनोरथ पूरण करहू ॥
करहु कृपा जस ममसन भावै । मोहिंसनतवकीरतिबनिआवै ॥
श्रीगुरु वर सम परम कृपाला । बिश्वनाथ बपु दीनदयाला ॥
मम अघ अवगुण सब बिसराई । दीनजानि लीन्हो अपनाई ॥
करौं प्रणाम चरण शिरनाई । सब प्रकार जिनदीन बड़ाई ॥

दो० पुनिपुनितासु चरणरज पावन करिनिज माथ ।
मुदित हृदय वर्णन करौं श्रीशंकर गुण गाथ ॥

प्रभु यश अति पावन संसारा । महिमाजासु अगाध अपारा ॥
सो सब भाँति सुमंगल कारी । सेवत जाहि मिलैं फलचारी ॥
पढ़े सुने नाशहिं अबिवेका । निर्मलमन पुनिहोय बिवेका ॥
मंगल मूल भक्ति उर आवै । संशय भ्रम कोउ रहन नपावै ॥
होयसगुण निर्गुण करज्ञाना । जानिपरै उर गत भगवाना ॥
श्रुतिशारद महिमा बहु गाई । सो नहिं सोपै बरणि सिराई ॥
सब प्रकार सुखधाम सुहावा । धन्य सोनर जेहिकेमनभावा ॥
शम्भुविजययशपरमसुहावन । मुनिबर्णित सुरनर मन भावन ॥
बहु प्रकार गाये जग माहीं । परमरुचिर जेहिकीमतिनाहीं ॥
गावहिंगे बहु सुजन बहोरी । जिनहिंशम्भुपदप्रीति नथोरी ॥

माधव बुधवर परम उदारा । तिन गायो प्रभुगुणगणहिसारा ॥
कविताकरि बहुगुण दर्शावा । कहिनजायसव भाँतिसुहावा ॥
अति गम्भीर सरस सुखदाई । करहुँ एकमुख कवनि बड़ाई ॥
सोप्रबन्ध बुध अति आदरहीं । नाम लेत अस्तुति सबकरहीं ॥
शंकर विजय सार तेहि नामा । चन्द्रकलाधरगुण सुखधामा ॥
सो जेहि दिनते मैं सुनि पावा । दिनप्रतिप्रीतिलाभसरसावा ॥
समझन योग मोरि मतिनाहीं । तदपिभईअतिरुचिमनमाहीं ॥
कीन्ह यथामति तासुविचारा । नाथकृपा सब काज सवाँरा ॥
कछु२बुधि प्रवेश करि पावा । उतनेहिं सों उरआनँद छावा ॥

दो० काशी बास आश बहु मनमहँ कीन्ह निवास ।
पूजी नहिं सो कर्मवश जहँ तहँ रह्यो प्रवास ॥

विश्वनाथ अब परण कीन्हा । अभिमतवरकरुणाकरिदीन्हा
इहाँआय पुनि कीन्ह बिचारा । विजयसारकरमतिअनुसारा ॥
बार बार अति आनँद पाई । यह तरंग मेरे मन आई ॥
भाषा महँ यह जो बनिजाई । तौ लोगन आनँद अधिकाई ॥
देव गिरा जिनकी मति नाहीं । शिवचरित्रकीरुचिमनमाहीं ॥
तिनहूं को सुख होय घनेरो । भयो मुदित जैसो मन मेरो ॥
सुनिअतकोउबुधजनअसकहहीं । निजउरविमलयुक्तियहगहहीं
देव गिरा भाषा नहिं कीजै । ऊंचे को पद नीच न दीजै ॥
मैं अपने मन कीन्ह विचारा । सोइऊंचोजहँप्रभुयशप्यारा ॥
देव गिरा महिमा अधिकाई । प्रभु सम्बन्ध न आन उपाई ॥
देव गिरा रस ग्रन्थ घनेरे । ते न होहिं भवसागर बेरे ॥

दो० वेद बहिर्मत ग्रन्थ बहु देव गिरा दर्शाहिं ।
हृदय मलिनता हेतु जे बुध आदरतहँ नाहिं ॥

संस्कृत प्राकृत अरु ब्रज भाषा । जंहँजहँहरिहरचरितप्रकाशा ॥
दुख नाशक आनँद प्रद सोई । वहनिश्चय बुधवर मनहोई ॥
जिमिसबितासब ठौरप्रकाशा । करहिंलोकसुखअरुतमनाशा ॥

तिमि हरिहर यशपरम उदारा । ज्ञान प्रकाशक उव तमदारा ॥
तेहि सम्बन्ध सकल शुभ होई । गिरा दोष गुण गनै न कोई ॥
दैव गिरा यद्यपि अतिपावनि । पायनाथयशअधिकसुहावनि ॥
पुण्य पाठ नहिं कछु संदेहा । सब बुध जनकर सम्मत एहा ॥
जिन लोगन कर श्रमतहँ नाहीं । प्रभुचरित्रकी रुचिमनमाहीं ॥
तिनकेहित बुधजन श्रमकरहीं । सबछरुभारशीश निजधरहीं ॥
महूँहोहुँतिनकरअनुगामी । नहिंप्रियजिनहिंतिनहिंप्रणामामी ॥
कौन वस्तु असि है जग माहीं । सुधा हलाहल समजोनाहीं ॥
भोगिहि घृतअतिशयहितहोई । ज्वरपीड़ितकहँविषसमसोई ॥
शशिरविदेखि सबहिसुखहोई । कमलउलूकहिविषसमसोई ॥
दारा युक्त गृही जब होई । होय कर्म अधिकारी सोई ॥
नारि विलास यती मन भाषा । सुगतिधर्मसव तबहिंनशावा ॥
ऐसेहि बहुतन को सुखकारी । यहु यश बहुलोगन सुदहारी ॥

सो० का प्रकट्यो जगमाहिं जोसबको सुखप्रद भयो ।
तथावस्तु कोउ नाहिं हितसब कहँ जग होयजो ॥
तिमि हर यश सुदहार बहुतन को सुखप्रदन यह ।
यदपिकह्यो श्रुतिसार कुपथ परायण विषसरस ॥

राग द्वेष जे मन नहिं धरहीं । हरिहर भक्ति सदा अनुसरहीं ॥
तिनकहँ सुखदायक यशएहा । जिनहिं शम्भुपदपरमसनेहा ॥
अथवा जे निज जन हितकारी । उमा नाथ शंकर मदनारी ॥
विषभोजनअहि भूषणकीन्हा । चिताभस्म कहँ आदरदीन्हा ॥
सब गुण हीन मोरि यह बानी । जन परिहास परमरससानी ॥
निजयशलखिनिर्मलयहिमाहीं । गहिहैंपतुसमअचरजनाहीं ॥
यहिप्रकार निज मनहिँ दृढ़ाई । सबकहँबहुबिधिविनयसुनाई ॥
बहुरि बंदि गुरु पद सुखदाई । शिवकीरति बरणौं मनभाई ॥

सो० माधव रचित प्रबन्ध तेहि कहँ माधव भारती ।
भाषा करै निबंध क्षमैं चपलता बुध सकल ॥

अथ ग्रन्थारम्भः ॥

दो० करि प्रणाम परमेश्वरहि भारति तीरथ रूप ।
वृहद्विजय के सार को संग्रह करौं अनूप ॥

घट समूह गजगण अरु पर्वत । देखि परैं छोटेहु दर्पणगत ॥
तैसेहि मम लघु संग्रह माहीं । देखहु शम्भुविजयपरिछाहीं ॥
जिमिअतिमधुरस्वादुयुतभोजन ।तेहिमहँरुचिबाढ़तहितसज्जन
जेहिविधिचाखत वस्तुसलोनी । तेहिमन रुचिउपजै तहँदूनी ॥
तिमिप्राचीनविजयअतिसुन्दर । हृद्य पद्य गम्भीर मनोहर ॥
तेहि महँ रुचि बढ़न हितएहा । देखहिंगे बुध सहित सनेहा ॥
गायो वेद पुराणन जोई । मम कविता मुद पावहु सोई ॥
जैसे कमल नयन घनश्यामा । रमानाथ पय सागर धामा ॥
गोपिनको दधिदूध लियो हरि । प्रीतिप्रतीतिदेखिकरुणाकरि
मसवाणिहु शिवकहँसुखकारी । ह्वैहै यही रीति अनुसारी ॥
*क्षीर सिंधु विवरीसों निकरो । अमृत प्रवाह मधुररस अगरो ॥
तेहिसोंअधिकमधुरयशहरको । मंडन सहस्रानन मुख वरको ॥
सुखदायक जग गुरु शंकर को । अतिपावनयशगिरिजावरको॥

दो० निज उर पावन होन हित सोइ हरयश मुद खानि ।
वरणौं निजमति अनुहरत शिवशंकर उर आनि ॥

पुनि संदेह होत मन मेरे । कहां विशद गुण शंकरकेरे ॥
दशदिशि कूल खननपरवीना । दिग लंघनकी कला धुरीना ॥
फूली जो बसंत ऋतु पाई । ऐसी वर मालती सुहाई ॥
परिमल तासु रुचिरअपहरहीं । हरगुणनिजभक्तन मुदकरहीं ॥
कहँ मैं तदपि कृपा युत हेरनि । अमृतभरीचितवनिसुखप्रेरनि॥
कृपा कटाक्ष केर बल पाई । भई योग्यता की रुचिराई ॥
धन्य गनत अपने को जे जन । रहें विवेक शून्य वे तन मन ॥
जे मानैं अपने को सज्जन । चिह्न सकलजिनकेज्योंदुर्जन ॥
लक्ष्मी नाच देखि मतवारे । ते नर रहे मोहिँ बहु प्यारे ॥

* सूक्ष्म प्रबाह

अधम कथा तिनअधमनकेरी । मैं वर्णन कीन्हीं बहुतेरी ॥
शिव यश सागरधों बहुवानी । सोमल छुटे मिट मनग्लानी ॥
बंध्यासुत खरि शृङ्ग समाना । क्षमा शूरतादिक गुण गाना ॥
पाँवर नृप कीरति विस्तारी । दुर्वासित मैं गिरा हमारी ॥

दो० त्रैलोकी रँग स्थली कीरति नटी समानि ।
नाचत चंदन कन गिरे सो राखे उर आनि ॥
तेहि सुगंध निज गिराकी करि दुर्गंध सुदूरि ।
भाष्यकार महिमाकहौं जो उरहे भरिपूरि ॥

माधव कविता वर संताना । सोई भयो सुर बिटप समाना ॥
कुसुम रूप व्याहार प्रयोगा । विधु शेखर पदपूजन योगा ॥
देव सुखद सुर तरु आमोदा । सुमनन कहँ यह देइ प्रमोदा ॥
मृगमदअनुमोदनजेहिकीन्हा । चंदनहू अति आदर दीन्हा ॥
अभिनन्दन मंदार करत नित । जाहि सराहत केसर अतिहित ॥
नूतन कालिदास बुध बानी । दोषरहित सब शुभ गुणखानी ॥
ऐसेहु बाणी कर अपमाना । कुकविकरहिंगे मम अनुमाना ॥
उत्तम धेनु यमन जिमि पाई । करहिँ तासु अपकार अघाई ॥
अथवा हैं जग साधु सयाने । दीन दयाल सुहृद गुण खाने ॥
सज्जनता सरि क्रीड़ा करहीं । पर गुण देखि मोद मन भरहीं ॥
सुकविभणितमुक्तामणिजानी। निजउर धरहिँ सदा सन्मानी ॥
अथवा दया सिंधु श्रीशंकर । होहु प्रसन्न कृपा रत्नाकर ॥
कछु चिंताकर अवसरनाहीं । वृथा बिकल्प करौं मनमाहीं ॥

दो० शिवगुण रचना करतकोउ एकचरणमें भग्न ।
कोउ बनाय के दुइ चरण ह्वैगे चिंता मग्न ॥
तेहिकीरति को मैं कह्यो चाहतहौं मतिमन्द ।
जिमिहायन पकरो चहै लघुबालक नभचन्द ॥

तैसोइ है मम निश्चय एहा । साहस देखि होत संदेहा ॥
यद्यपि मैं यहिलायक नाहीं । तदपि प्रतीति होति मनमाहीं ॥

यती राजकी कृपा निहारनि । जो प्रसिद्ध है अधम उधारनि ॥
क्षीरसिंधु कल्लोल विलासा । चितवनिरुचिर तासुपरिहासा ॥
करति सदा मूकन वाचाला । सोमम ऊपर कीन्ह कृपाला ॥
तेहिते दुर्घट्ट यह आशा । पूरी ह्वै है बिनहिं प्रयासा ॥
शिवयश वर्णन जनितउदारा । सुकृत बड़ो बहुअम्ब तुम्हारा ॥
शारद देवि विनय सुनि लेहू । अभिमत वर करुणाकरि देहू ॥
मृत्युंजय जब नृत्य कराहीं । जटा मुकुटते तब चलि जाहीं ॥
सुरसरि धारा के बहु यूथा । कोलाहल कल्लोल बरूथा ॥
तासु लहरि मद खंडन कारी । तव प्रागल्भ्य मनोहर भारी ॥
निज व्याहार उदार प्रवाहा । परमरुचिरकविजनजेहिचाहा ॥
मम जिह्वा सिंहासन ऊपर । देवि शारदा लाय करो थिर ॥
यहबिनतीसुनिशारदकहही । ऐसोहठ केहि कारण गहही ॥
कहँ शंकर के चरित उदारा । कहँ मति मोरि न पैहौं पारा ॥
बहुतकालकर समयश जोरा । तुम चाहत समुद्र महँ बोरा ॥
असकहि ब्रह्मलोकसमुहानी । कविहठकरि पुनि प्रेरतबानी ॥
ऐसो अचरज रूप बड़ेरो । धन्य गुरुत्व जगत गुरु केरो ॥

दो० पुनि चिन्ता यह होय मन कलिके जे कविकूर ।
तिनके वश मों परैगी मम कविता सुख पूर ॥

रूखेआखर जिनहिं सोहाहीं । अन्वय बड़ी दूरि चलिजाहीं ॥
एकाक्षरी कोश जब जानें । तब उनको कछु अर्थ बखानें ॥
औणादिकप्रत्ययपुनिलावहिं । पद यगंतके कठिनदिखावहिं ॥
दुख बोध पद विषम बनावें । कष्ट कल्पना बिन नहिं भावें ॥
तिनकेवश ममकविता ऐसी । मृगी किरातन के वश जैसी ॥
पुनिमनकहँ यहुधीरज आवा । संशय भ्रम सब दूरि बहावा ॥
शंकरजेहि कविता के नायक । पूजनीय पदजन सुख दायक ॥
परमशान्तिरस जेहिकरभूषन । हैं शृङ्गार प्रमुख उपसर्जन ॥
महाअविद्या क्षय फल जासू । व्यास समान अचलकवितासू ॥

सो कवि धन्य धन्य हैं वैजन । पढ़ैं सुनैं समुझैं हर्षित मन ॥
प्रथम सर्ग भूमिका सोहाई । शिव अवतार कथा पुनिगाई ॥
जेहिविधि और देव अवतारा । तिसरे महँ सो चरित उदारा ॥

दो० सात वर्ष लौं जे किये शंकर चरित अपार ।
चौथे महँ तिनको भयो भली भाँति बिस्तार ॥

जेहिविधिश्रापुलीन्हसंन्यासा । सोपंचममहँ कीन्ह प्रकाशा ॥
शुद्धातम विद्या श्रुति गाई । भवसागर की सेतु सुहाई ॥
लोपी काल पाय बहुतेरा । छठे भयो थापन तेहि केरा ॥
व्यास समागम सप्तम गायो । अष्टम मंडन बाद सुहायो ॥
नवयें भारति साथ विवादा । सो सब बरणयों शुभ संबादा ॥
राजदेह महँ कीन्ह प्रवेशा । दशम सर्ग तेहिकर निर्देशा ॥
भैरव नाम कपालिक जीता । एकादश सो चरित पुनीता ॥
हस्तामल तोटक जिमि पाई । शरणा कथा द्वादश दर्शाई ॥
अध्यातम विद्या विस्तारा । वार्तीकलौ परम उदारा ॥
पहुँचो जेहि प्रकार सरसाई । कह्यो त्रयोदशमहँ समुझाई ॥
पद्मपाद कर तीरथ गमनू । कह्यो चतुर्दशमहँ भवशमनू ॥
दिशाविजयकन्हींजिमिशंकर । पंद्रह में सो चरित मनोहर ॥
जेहिविधि शारद पीठ निवासा । षोड़शमहँ सो करौंप्रकाशा ॥

दो० यहिविधि षोड़श सर्गमें कहिहौं शिव गुणग्राम ।
कलिमल नाशन सुखकरन दायक सब मनकाम ॥

नाना प्रश्नोत्तर युत भूरी । कहौं सो शङ्कर कीरतिरूरी ॥
बुधजन आनँद हेतु सुहावनि । शम्भुकथाबरणौंअतिपावनि ॥
गिरिकैलास पुराणन गायो । महादेव को धाम सुहायो ॥
एकसमय शिव दयानिधाना । बैठे ज्ञान धाम भगवाना ॥
देव समाज तहाँ चलिआई । करिप्रणाम बहुविनयसुनाई ॥
शिवहिप्रसन्नदेखि हर्षितमन । अभिमतसिधिमानीसबदेवन ॥

दो० अंतर्यामी नाथ तुम सब जानहु भगवान।
तदपि हमारी यह विनय सुनिये कृपानिधान ॥

देवन हित जो परमानंदा। बौद्धरूप प्रभु धरयो मुकुंदा ॥
दनुज बंचना हेतु बनाये। ये आगम श्रीनाथ चलाये ॥
तिनको पढ़िपढ़ि जैनअपारा। व्यापि गये ते अब संसारा ॥
धर्षिणा जैन सय अब दर्शाई। जिमि रजनीमहँ तमसरसाई ॥
वेदन को ते खंडन करहीं। वर्णाश्रम के धर्म न गनहीं ॥
विप्र जीविका वेद बखानें। वेदविहित कछुकर्म न मानें ॥
तिनके संग दोष नर नारी। सब पाखण्डी भे मद नारी ॥
संध्यादिककोउ कर्म न करहीं। नहिंसंन्यासमाहिं मनधरहीं ॥
करहु यज्ञ असकहे जो कोई। मूंदहिँ कान पीर जनु होई ॥
जब यह दशा भई सुरसांई। क्रियाकौनिविधिहोहिँसहाई॥
यज्ञ होत महि मंडल नाहीं। क्रतु भुज हमरो नाथवृथाहीं ॥
विष्णु शिवागम पंथाधारी। चक्रलिंग चिह्नित भे भारी ॥
यहिविधिवैदिककर्मनभजहीं। दुर्जनजेहिविधिकरुणातजहीं ॥
अन्य भाव बर्जित श्रुति रानी। पुरुषोत्तम पहँ जाय भवानी ॥
सती नारिजिमि पतिपहँजाही। दुर्जन मग महँ दूषत ताही ॥

दो० तिमि श्रुति दूषक बौध शठ जग महँ भये अनंत।
पुरुषोत्तम अब करि कृपा करिये तिनको अंत ॥
कापालिक द्विज शिर कमल भैरव चरण चढ़ाय।
कौन लोक मर्याद वह जो दूषत न अघाय ॥

और बहुत मत कंटक रूपा। कलिमें प्रकट भयो सुरभूपा ॥
जिन में पशु धरतहि सुर राया। पावत नरबहु दुख समुदाया ॥
लोकनाथ जग रक्षण हेतू। दुष्टनमथि पालहु श्रुतिसेतु ॥
जेहि महँ उभयलोक सुखपावैं। जनतुम्हार पावनयश गावैं ॥
अस कहि रहिगे मौन सँभारे। गिरिजापतितबवचनउचारे ॥
मानुष तन धरि काज तुम्हारा। करिहैंबहुविधिचरितअपारा॥

दुष्टाचार सकल अपहरिहैं। धर्मस्थापनसबविधिकरिहैं॥
ब्रह्म सूत्रकी भाष्य सोहाई। रचिहैं सब आशय दर्शाई॥
यतीराज शंकर अस नामा। होइहैं तीनलोक अभिरामा॥
द्वैत अविद्या मूल सघन तम। तासुबिनाशकतरुणभानुसम॥
ऐसे चारि शिष्य मम नीके। चारिभुजाजिमिकमलापीके॥
तुमहूं सकल देव महि जाई। मम अनुशरणाकरयोमनलाई॥

दो० तुम्हरे सब अभिलाष तब पूरण नहिं संदेह।
असकहि सन्मुखओर तब चितये सहितसनेह॥

पय सागर कल्लोल समाना। वैकुण्ठ दुर्ल्लभ जग जाना॥
जिमि सविताकर पंकज पावा। लहिशुह उरआनँद सरसावा॥
तिन्हहिं पाय सन्मुखप्रमुदितअस। बिधुकरपायपयोधि हर्षजस॥
विधुशेखर सुत सन तब बोले। प्रकटे निर्मल दशन अमोले॥
उडपतिकर सम तासु प्रकाशा। सुर चकोर हर्षित चहुँ पासा॥
सुनहु तात मम बचन उदारा। जग उद्धार हेतु सुख सारा॥
कर्म उपासन तीसर ज्ञाना। कांड तीन सब वेद बखाना॥
वेदन को अस्थापन होई। द्विज उद्धार गनो तुम सोई॥
जबहिं विप्र रक्षा बनि आई। सब जग रक्षा होय सोहाई॥
विप्र धर्म के मूल धुरीना। वर्णाश्रम तिनके आधीना॥
जानि हमारी यह अभिलाषा। बिष्णु शेष आये मम पासा॥
उनको यहमैं दीन्ह सिखावन। धापहुमध्यमकाण्डसुहावन॥

दो० मम आज्ञा अनुकूल ह्वै जन्म लियो जग जाय।
मध्यकांड सेवत सदा मुनि ब्रत धरि मनलाय॥

पातंजलि संकर्षण नामा। योगागम कर्त्ता गुण धामा॥
ज्ञान कांड कर मैं उद्धारा। करिहैं लै मानुष अवतारा॥
तुम हुँ तात जानत मम ध्वनिको। सूत्रजाल सागर जैमिनि को॥
तेहि कहँ चंद्र होहु तुम जाई। विप्र वेद की करहु सहाई॥
कर्मकांड को करि उद्धारा। वैदिक पथको करहुप्रचारा॥

धरि अवतार सुजन जन बोधी । जितहु जैन जे वेद बिरोधी ॥
यहि में अति कीरति तव होई । सुब्रह्मण्य कहिहैं सबकोई ॥
तव सहाय हित श्रीचतुरानन । मंडन नाम धरहिंगे नर तन ॥
इंद्रहु लेहैं जन्म धरणि पर । नाम सुधन्वा प्रबल राज वर ॥
विधिसन्मान योग शिव बानी । राखी शीश सुधासम जानी ॥
हर आशय अनुसार सुरेशा । राजा भयो जाय प्रभु देशा ॥
प्रजा धर्मयुत पालन कीन्हा । महितलस्वर्गसरसकरिदीन्हा ॥
देखि राजधानी की शोभा । अमरावती केर मन लोभा ॥

दो० यद्यपि है सर्वज्ञ नृप जैन धर्म मन दीन्ह ।
कृत्रिम श्रद्धा युक्तह्वै तिनको मन हरि लीन्ह ॥

*गुह की बाट लखत सचुपाये । पुनि षरामुख भूतल महँजाये ॥
भट्टपाद भयो नाम मनोहर । दिग्वनिता को भूषण सुंदर ॥
वेदाशय जैमिनि मुनि सूचित । भट्टपाद प्रकट्यो करि भूषित ॥
जिमिकछुअरुणाकरहिउजियारा । पुनिसविताकोतेजअपारा ॥
करत दिशा जय बिप्र महीपा । गये सुधन्वा नगर समीपा ॥
आगे जाय नृपतिवरलीन्हा । विधिवतपूजि सुआसनदीन्हा ॥
दे अशीश बैठे कनकासन । जुरे सभा बहु जैन महाजन ॥
†गुह सों सभा बिराजति ऐसी । +स्वर्ग बनी सुरभी सों जैसी ॥
सभा निकट तरुवर पर सुंदर । बोली कोकिल शब्दमनोहर ॥
सो सुनि भट्टपाद मुनि ज्ञानी । बोले नृपहि सुनाय सुबानी ॥
मलिननीचवायस कुलपापी । श्रुतिदूषकअतिकठिनप्रलापी ॥
अस कुसंग पिक तू तजि पैहै । तबहिं प्रशंसा योग कहैहै ॥
तात्पर्य गर्वित यह बानी । बौधमराडली समुझिरिसानी ॥
जिमिविषधर धोखे दबिजाई । तुरतहि सो अँग लेत चबाई ॥
बौध कुमत जो वृक्ष समाना । युक्तिकुठारकाटिबिधिनाना ॥
बौध ग्रन्थ इंधन इवलाई । तिनकी क्रोधानल सरसाई ॥
तेहिक्षण सभा मनोहर ऐसी । सोहत पुष्करणी छबि जैसी ॥

* सन्मुख † सन्मुख + बयं ॥

दो० बौध अरुण मुख क्रोध सों रक्त कमल छवि देत ।
सभा सरोवरसी मनहुँ देखत मन हरिलेत ॥
यहिविधि लागो होन बिवादा । प्रश्नोत्तर महँ बढ़ो विषादा ॥
कोउ निज पक्षारोपन करहीं । कोउतेहिकाखंडनअनुसरहीं॥
थापन खंडन होत परस्पर । तहँनिर्घोष भयोअतिशयतर ॥
कर्क शतर्क वज्र जनु जाना । बौध पर्वताकार समाना ॥
कटेपक्षगिरि ज्यों गिरिगयऊ । चित्रसमान मौन युत भयऊ ॥
दर्प भग्न जैनन कर देखी । वेद महातम बरणि विशेषी ॥
राजहि बोध कीन्ह द्विज हंसा । बहुप्रकार करि तासु प्रशंसा ॥
तब राजा बोल्यो शिर नाई । विजय आपकीन्होमनभाई ॥
जीति हारि विद्या आधीना । मतनिश्चय तबहोयप्रवीना ॥
गिरे शिखर पर्वत सों जोई । अंग हानि पुनि तासु न होई ॥
तेहिको मतनिश्चय मैंजानौं । पुनितेहिकोनिजगुरुसमसानौं॥
राज गिरा सुनि बौध परस्पर । देखत मुख कोउदेइ न उत्तर ॥
द्विजवरकरिवेदनको ध्याना । गिरिशिरचढ़ियहबचननखाना ॥
दो० वेद प्रमाण होहिं जो तौ न होय मम हानि ।
कूदे गिरिवर शिखर ते मुनिवर बिगत गलानि ॥
गिरिशिरते द्विज आवत देखी । मनबिस्मितसबप्रजाविशेषी॥
यह अपने मन करहिं बिचारा । नृप ययाति सुरपुर पगुधारा ॥
सुकृत हानि महि मंडल आये । दुहिता सुतनिज पुण्यपठाये ॥
सोऊ सुकृत रह्यो अब नाहीं । पुनिययातिआवतिमहिमाहीं॥
यहिविधिलोगविकल्पकराहीं। आर्यगिरेमुनिमहितलमाहीं॥
तूल पिण्ड सम तासु शरीरा । गिरोधरणिनहिं भयकछुपीरा॥
शरण वेदके भय बुधि जिनकी । रक्षा क्योंनकरे श्रुतिउनकी ॥
भट्ट पाद कर यह यश भारी । करतभयोदशदिशिउजियारी॥
सुनिसुनिझुण्डझुण्डद्विजआये । मेघघोष जिमि मोर सुहाये ॥
राजा द्विज कहँ अक्षत देखी । श्रुतिमहँश्रद्धाकीन्हविशेषी ॥

दुष्ट संग दूषित मन जानी । धिगधिगमोहिं बोल्योबहुबानी ॥
नृपति गिरा सुनि जैनन कहेऊ । मतनिर्णयअबहींनहिंभयऊ ॥
मंत्र मणी औषध सो राजा । तनकोकछुनहिंहोयअकाजा ॥
जब प्रत्यक्ष प्रमाण न मानी । तब सकोप बोल्योनृप बानी ॥
दो० जो पूछों मैं दुहुन सों उत्तरुन आयो जाहि ।
उपल यंत्रमों घालिके बधकरिहौं मैं ताहि ॥
ऐसी कठिन प्रतिज्ञा कीन्हा । एकसर्प घटमों धरि दीन्हा ॥
पुनिमुखबाँधिसभामहँलायो । सबहिनकोवहकलशदिखायो ॥
हे द्विज गण हे जैन घनेरे । जे तुम जुरे सभा महँ मेरे ॥
बरणौ कौनिवस्तु घट भीतर । बोले कालिह देहिंगे उत्तर ॥
यहिविधिनृपकहँविनयसुनाई । गये जैन अरु द्विज समुदाई ॥
करन लगे द्विजवर तप गाढे । कंठ प्रमाण बारि महँ ठाढ़े ॥
कमलसमानतरणिअनुरागी ।भजनकीन्हनिशभरिसुखत्यागी ॥
भक्तिविवश सविता तबआई । विप्रन उत्तर दीन्ह बताई ॥
घट निश्चयकरि तथा जैनसब । नृप समीप गवने दूनहुं तब ॥
जैनन प्रथम कह्यो यह उत्तर । है भुजंग यहि घट के भीतर ॥
जैन भणितबाणी सुनि द्विजवर । राजाकहँ दीन्हो यहउत्तर ॥
शेष शयन शायी भगवंता । कलश विराजें प्रभु श्रीकंता ॥
भूसुर बचन सुनो जब राजा । श्रीहतमुखयहिभाँतिविराजा ॥
दो० सूख सरोवर निकट जिमि सारस बदन मलीन ।
तैसेहिं नृपकर मुखभयो तेहि अवसर छबिहीन ॥
राजहि दुखित देखिनभबानी । होत भई अति आनँद सानी ॥
महाराज कछु संशय नाहीं । जो कुछ विप्र कहैं तुमपाहीं ॥
द्विजवर बचन सत्य करिलेखो । घटमुख खोलिसभा महँदेखो ॥
उरगत सब संशय परिहरहू । अपनि प्रतिज्ञा पूरण करहू ॥
सुनि नभगिरा दीख घटराजा । श्री मधुसूदन रूप बिराजा ॥
इमिहरि सूरति तहँ नृप पाई । जिमिसुरपतिलहिसुधासुहाई ॥

और वस्तु धरि औरहि पाई। तब नरपति संदेह बिहाई ॥
श्रुतिरिपुगणवधकीमतिकीन्हीं। तुरतमहीपतिआज्ञादीन्हीं ॥
सेतुबन्ध सागर अति पावन। उत्तरदिशि हिमशैलसुहावन ॥
उभय मध्य मम सेवक जोई। जैनन को मारै सब कोई ॥
ममआज्ञासुनि जेहि नहिंमारे। तिनको वध है हाथ हमारे ॥
गुरुसमानजिनकोनृपजाना। तिनकरबधकेहिविधिअनुमाना॥
यह संदेह न कोउ उर आनो। तहँ परिहार रुचिर यहजानौ ॥
यद्यपिअति अपनो प्रियहोई। बड़े दोष देखे पुनि सोई ॥
दो० निश्चय बध के योग सो होय न कछु संदेह।
परशुराम जननी हनी तजि उर को अति नेह ॥
भट्ट पाद अनुसारी नृपवर। मारे जैन धर्म दूषक तर॥
योग विनाशक विघ्न अपारा। हनै योगि जिमि तत्त्वअधारा ॥
यहि विधि दुष्ट भये संहारा। वेद धर्म कर कीन्ह प्रचारा॥
यथा निशातम जब सबनाशै। सबदिशि सविता तेज प्रकाशै॥
भट्टपाद हरि जग उजियारे। जैन मतंगज सब संहारे ॥
वेद विटप शाखा चहुं पासा। बढ़ीविघ्नबिनकरहिंप्रकाशा॥
यहिविधि धरासुखधरिअवतारा। वेद कर्म जहँतहँ विस्तारा॥
छं० विस्तार जब चहुँदिशिकियो शुहवेदधर्म सुहावनो।
अज्ञान सिंधु अपार बूड़त देखि हर जग भावनो॥
अद्वैत ज्ञान सुपोत द्वारा पार को अवसर भयो।
यहशोचिनिजअवतार निश्चयचंद्रशेखरउरठयो ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिब्राजकाचार्यश्री७स्वामिरामकृष्ण भारतीशिष्यमाधवानंदभारतीविरचितशांकरदिग्विजयेउपोद्घातवर्णनपरःप्रथमस्सर्गः १॥

——*——

श्लोक ॥ श्रीशंकरंज्ञानघनंगुहाशयंबोधैकगम्यंप्रणतानुरंजनं । महेश्वरं मानसरोगनाशनंसदाबुधानंदकरंभजाम्यहं १ प्रणमामिसदाबोधरूपिणंगुरुमीश्वरम् । सुखदंक्लेशहर्तारमहंहरिहरात्मकं २ ॥

सो० बंदौं शम्भु दयाल भक्त कल्पतरु भव शमन।
तजै राम महिपाल जासु बोध आनंद हित ॥
दो० बिनवौं नाथ कृपाल चित सेवक हित सुख धाम ।
प्रकट भये जग बोध लगि पूजे जन मन काम ॥

चौपाई ॥

वेद धर्म फैलो यहि भाँती । तब जो कीन्ह मदनआराती ॥
सो बरणौं निजबुधि अनुसारा । जैसे हर लीन्हो अवतारा ॥
केरल देश पुनीत सुहावा । वृषपर्वत जहँअति मनभावा ॥
पूर्णा नाम नदी तट श्री हर । लिंग रूप प्रकटे गिरिवरपर ॥
तहाँ राज शेखर अस नामा । रह्यो एक राजा गुण धामा ॥
निजप्रकाश प्रभुताहिजनायो । सपनेपुनिपुनिदरशदिखायो ॥
नृप बनवायो तब अति सुंदर । चंद्रमौलि कर अद्भुत मंदर ॥
पूजन को प्रबंध सब कीन्हो । सबविधिहरचरणनचितदीन्हो ॥
शिव मंदिर के निकट मनोहर । कालटि नामरह्यो पुर सुन्दर ॥
द्विज प्रधान बहु नगर सुहावन । ईतिभीतिवर्जितअति पावन ॥
तहाँ बसहि इकपण्डित राजा । तासुनाम विद्या अधिराजा ॥
जिनकी रीतिप्रीति शुभ देखी । हरमनमें रुचि भई विशेषी ॥
इन के घर लैहैं अवतारा । वृषबासी हरहृदय विचारा ॥
उनके पुत्र भयो सुख धामा । तेजधामशिव गुरुअसनामा ॥
सो० शिवसमान जेहिज्ञान बचन बृहस्पति के सदृश ।
सद्गुण परम निधान यथा नाम गुण वैसई ॥
जबहिं भयो उनकर उपनयना । गुरुसमीप गवनेगुणअयना ॥
गुरुसेवा महँ अति मन धरहीं । विहितअर्चनानितभोजनकरहीं ॥

साँझ प्रभात हुताशन पूजा । करहिं वेद अभ्यास न दूजा ॥
पढ़े नेम युत तिन सब वेदा । पुनि२ करहिं बिचार न खेदा ॥
वेदन महँ जे कर्म बखाने । समुझि नजाहिं अर्थ बिन जाने ॥
अर्थ सहित बहु कीन्ह बिचारा । गुरु दयाल बोले इक बारा ॥
पढ़े वेद सब अंग सहीता । चिंतत तुम हिं काल बहु बीता ॥
हो मम भक्ति कर्म मन बचना । मम सेवा भूले घर अपना ॥
जाहु तात अब तुम निज गेहा । सब कर तुम पर अधिक सनेहा ॥
दरश लालसा बहु करि पूरी । हरहु वियोग जनित दुख भूरी ॥
अब बिलंब कर अवसर नाहीं । कारण तात कहैं तुम पाहीं ॥
दुसरे पहर बिचारो जोई । करिये प्रथम हिं कारज सोई ॥
करिबे होय काल्हि जो काजा । आजु करै सो है बुध राजा ॥
सस्यादिक अवसर अनुसारा । जिमि कीन्हे फल होय उदारा ॥
नहिं विपरीत काल फल वैसो । गुनो बिवाहादिक फल तैसो ॥
अवसर कृत सब है फलदाता । नतरु वृथा यह निश्चय ताता ॥
जन्म दिवस ते तव पितु माता । घर मों करहिं परस्पर बाता ॥
दो० बहु दिन धौं कब आइ है ह्वै है सुअन बिवाह ।
निज नयनन हम देखिहैं हे विधि यह उत्साह ॥
एक एक दिन गनती करहीं । सुत के मोद मगन मन रहहीं ॥
मातु पिता की प्रकृति सनातन । सुत उत्सव देखन की रुचि मन ॥
कर्णबेध मुण्डन उपबीता । पुनि बिवाह कर ध्यान पुनीता ॥
निज २ कुल के पितर मनावहिं । निज संतान वृद्धि नित ध्यावहिं ॥
व्याह मूल संतति कहँ जानै । तेहि बिन पिंड हानि मन मानै ॥
वेद पढ़े कर फल सुविचारा । तेहि कर फल बहु मख बिस्तारा ॥
सपत्नीक कर तहँ अधिकारा । करि बिवाह श्रुति विधि व्यवहारा ॥
सब वेदज्ञ कहहिं अस नीती । नहिं कपोल कल्पित यह रीती ॥
गुरुवाणी सुनि विप्र वगुरु कहेऊ । सत्य नाथ अनुशासन भयऊ ॥
है परंतु यह नेम न कोई । श्रुति पढ़ि अवशि गृही द्विज होई ॥

जेहि के उर वैराग प्रकाशा । तो वहु तुरत लेइ संन्यासा ॥
जेहि विवेक वैराग न होई । चहिये गृही होय प्रभु सोई ॥
राज पंथ है वेद बताई । सुनहु जो है मेरे मन भाई ॥
नैष्ठिक ब्रह्मचर्य ब्रत धारे । जबलग जियोंसमीप तुम्हारे ॥
रहौं दराड मृग चर्म सहीता । सबकुछजानौं तदपिविनीता ॥

दो० होम करत नित अग्नि महँ पढ़त पढ़ावत वेद ।
जिमिनहिं भूलौं निज पढ़ो सेवत पद गत खेद ॥

दार भवन तौलौं सुख सूझै । जबलौंअनुभवकरिनहिंबूझै ॥
अनुभव गोचर जब ह्वै जाई । पुनि सो विरस रूप दर्शाई ॥
अनुभव गम्य दार गृह साँई । तेहिकी जनिप्रभु करहुबड़ाई ॥
मखते होय स्वर्ग महँ वासा । जोविधिवत बनिपड़ेप्रयासा ॥
पूरी विधि दुर्लभ महि ऊपर । तैसोइ फल संदिग्ध गुणाकर ॥
वर्षा हेत यथा मख कोई । करहिंन्यून विधिवृष्टिनहोई ॥
ऐसेहि परलोकहु विज्ञानी । विधिवैषम्यहोहिं फलहानी ॥
गृही होय धन सों जो हीना । निश्चय निरयीहै अतिदीना ॥
अल्पहु दान शक्ति जेहि नाहीं । बिनाभोगनिशिवासरजाहीं ॥
पूरण होय तहूँ सुख लेशा । नहिंजानौतेहिअधिककलेशा ॥
दिन प्रति चहत वस्तु सरसाई । नितप्रतिलाभलोभअधिकाई ॥
गृहमहँ नितयहुहोय बिचारा । उठनी बस्तु जितो परिवारा ॥
जौलों एक बस्तु गृह आई । पहिले की तौलौंचुकिजाई ॥
लावत बरतत दिवस सेराहीं । गृहवासी स्वप्नेहु सुखनाहीं ॥
होत रह्यो सम्वाद सोहावा । तवहीं पिता लेवावन आवा ॥
श्रीगुरुकहँ वहुधन तिनदीन्हा । सुतसमुझायुगमनगृहकीन्हा ॥

दो० जाय भवन निज मातुके चरण गहे शिर नाय ।
चरण गहत सुत देखिकै लीन्हों हृदय लगाय ॥

जननी को संताप मिटो सब । प्राण समान तनय भेंटो जब ॥
चंदन रसते अति हितकारी । तनयगात को परश सुखारी ॥

बहुत काल पीछे गृह आयो । सुनिसुनि सकलबंधुसुखपायो ॥
देखन हित आये सब धाई । शिवगुरु सबहिंमिलेहरषाई ॥
सबहि यथोचित आदर दीन्हों । सेवा मानयथा विधिकीन्हों ॥
एक दिन सावधान सुत देखी । पिताकिये तबप्रश्न विशेषी ॥
वेद वेद के अंग अनूपा । पूंछों पद क्रम जटा स्वरूपा ॥
भट्ट पाद सिद्धान्त बहोरी । प्रश्न प्रभा कर मत के भूरी ॥
पुनि कणादगौतम मतमाहीं । औरहु बहु पूंछा तिन पाहीं ॥
सुतसतिजाननहित द्विजराया । यहिविधिकीन्हेप्रश्ननिकाया ॥
जासु नाम विद्या अधिराजा । जिन्हैंजान सब विज्ञ समाजा ॥
यथा नाम तैसेहि गुण ताके । सुने तनय सब प्रश्न पिता के ॥
विनय प्रणाम सहित हरषाई । प्रश्न*समाधि सकल दर्षाई ॥
शास्त्र वेद युत बुद्धि विशेषी । उत्तर प्रश्न निपुणता देखी ॥

दो० पितहि तोष अतिशय भयो सुनि सुतकौ वरबैन ।
स्वाभाविक प्यारेलगैं किमि कहिये श्रुतिऐन ॥
सब गुण भूषित देखि बर आये सहित उछाह ।
द्विज समाज ऐसीभई मानहु अबहिं बिवाह ॥

ब्याह हेतु आये बहुद्विज बर । बहुधनदायकसुकुलगुणाकर ॥
सब बिप्रन महँ बहुत कुलीना । मघ पंडित अति धनीप्रवीना ॥
कीरति धर्म सकलगुण खानी । ब्याह बतकही तिनसों ठानी ॥
मघ बोले एतो धन लीजै । सब बरात गृह पावन कीजै ॥
बर के पिता कीन्ह हठ एहू । मम गृह लाय सुता तुमदेहू ॥
मघ बोले जो मम गृहऐहो । ठहरे सों दूनों धन पैहौ ॥
बर पितु तब यह बचन उचारा । तुम मानहु जो बयन हमारा ॥
धनके बिनहिंब्याह करिलैहौं । दूजी बात न मैं मन दैहौं ॥
देखि विवाद परस्पर भारी । बिचवानी तबकह्योबिचारी ॥
तुम जो झगरि लौटि गृह जाहू । तौलौं ह्वै जैहै यहु ब्याहू ॥
पुनि पाछे मन में पछितैहौ । ऐसो बर ढूंढे नहिं पैहौ ॥

* समा ॥

विचक्षानी जबबहुसमझायो । सब पंडित हठ दूरि बहायो ॥
वर स्वरूप गुण मोहित भयऊ । मानिलीन्हजोवरपितुकहेऊ ॥
दो० देखो है गुण जासु को वरण योग है सोय ।
बहुत कालकी भावना मंत्र वरद जिमि होय ॥
सब पण्डित विद्या अधिराजा । बैठे द्विज वर रुचिरसमाजा ।
उभय विप्र वर निज कुल देवा । पूजे करि भूसुर गुरु सेवा ॥
गिरा दान दुहुँ समधी दीन्हा । ब्याहलग्नशोधनपुनिकीन्हा ॥
ब्याहलग्नशुभ जेहिदिनआई । लौकिक वैदिक रीतिसुहाई ॥
होन लगे सब मंगल चारा । वेद विहित जेते व्यवहारा ॥
सती नाम सब मंडित कन्या । निजगुणरूपअलौकिकधन्या ॥
शिवगुरुपाणिग्रहणजबकीन्हा । सर्वविप्रनबरआशिषदीन्ह ॥
दंपति भूषण बसन मनोहर । विकसितबिधुमुखदंतरुचिरतर ॥
ब्रीड़ायुत चितवनि शुभ भाँती । प्रीति परस्परकोहिमहिँजाती ॥
भयो मुदितमन अधिकउछाहू । नर अरु नारि हर्ष सब काहू ॥
निरखर सबनब्याह जिन रेखा । लह्योहृदय परितोष विशेषा ॥
दो० गिरिजा शिव वर पायके जिमि पायो आनंद ।
तिमिदंपतिकोभयो सुख जिमिकमला गोविंद ॥
अग्न्या धान करत जो कोई । होत यज्ञ अधिकारी सोई ॥
यह बिचारि जेविप्र प्रवीणा । योगाग्निग्रविधिकुशलबुतीणा ॥
तिनहिंबोलि अग्न्यधानकरायो । पंचहुताशन को श्रुतिगायो ॥
शिव गुरु याग किये बहुतेरे । जिनमहँ लागहिं द्रव्य घनेरे ॥
उत्तम लोक जीतिबे काजा । नित पूजत जेते सुर राजा ॥
दिन प्रति यज्ञ भाग सुर पावा । अमृत स्वाद देवन बिसरावा ॥
देव पितर मानुष नित पोषैं । जेहि जो रुचै सोइ दै तोषैं ॥
शुभवनसुमन प्रफुल्लितद्विजवर । जंगमकल्पविटप सानहिंनर ॥
पर उपकार बसत मन माहीं । व्रतयुत वेदपढ़त दिन जाहीं ॥
स्मृति श्रुति गाये शुभ कर्मा । करत सदा पालत निजधर्मा ॥

यहिविधिकछुककालचलिगयऊ। दिनप्रतिहोततिनहिंसुखनयऊ ॥
काम देव सम सुन्दर ताई । सर्वोत्तम विद्या जिन पाई ॥
रहे धनी जेते अति नामी । ते सर्वशिव गुरुके अनुगामी ॥
गर्भ न जान बिनय युत दानी । सब प्रकार उत्तम गुणखानी ॥
यहिविधिनिकटबुढापोआयो । सुतसुखदर्शनतिननहिंपायो ॥
गोहिरण्य बहु सस्य मनोहर । बसुधाअति रमणीयसुमंदिर ॥
दो० बंधु समागम यश घनो बहु संपदा बिभाग ।
पुत्रहीन शिवगुरु हृदय कछु न मनोहरलाग ॥
आसैं भयो सुअन जो नाहीं । ह्वै है अगिले सम्वत माहीं ॥
तबहूं भयो न जन्म उछाहा । अबकीबर्ष अवशिसुतलाहा ॥
ऐसे करत मनोरथ अवसर । कछुबीतो तबशोचेहिजवर ॥
पुत्र छांड़ि सब काज हमारा । सिद्ध भयोनहिं होयकुमारा ॥
शिव गुरु परम खेद उर पाई । जाया को यह गिरा सुनाई ॥
बीती बयस हमारि तुम्हारी । तनयानन देख्यो नहिंप्यारी ॥
उभयलोक हितसुत जगमाहीं । हमकहँ दीन बिधाता नाहीं ॥
पुत्र जन्म बिन जाय जो देहा । क्षीणपुण्य नहिं कछु संदेहा ॥
निशिदिन तासु उपाय सुहावा । गुनतसदामनकछुछनहिंआवा ॥
संतति रुचिर जासु जग नाहीं । नाम तासु नाहीं महिमाहीं ॥
रहित पुण्य फल पादप नामा । कौनलेतजगप्रियसुखधामा ॥
निष्फल होत जन्म यहु मेरो । कहौ विचार होय जो तेरो ॥
सुनि पतिवचन सतीअसकहई । नाथ मेरेमन निश्चयअहई ॥
दो० शंकर रूप कल्प तरु छाया परिये तासु ।
तत्संबंधी मिलहिंगो शुभफल कृपया जासु ॥
भक्तनको अभिमतफलदायक । ऐसो नहिं कोऊ सुरनायक ॥
पूजिहिसब अभिलाष तुम्हारी । प्रीतिसहित सेवहु त्रिपुरारी ॥
शिव महिमा इतिहाससुनावों । तुम्हरो सब संदेह मिटावों ॥
सुनि नंदन उपमन्यु सुनामा । खेलैं ऋषि पुत्रन के धामा ॥

दूध पियत तिनको जब देखा । जननी सनहठकीन्हविशेषा ॥
पयपीवहिं मुनिबालक भारी । हमको क्यों न देत मातारी ॥
रह्यो दरिद्र क्षीर कहँ पावै । बालककोकेहिविधिसमुझावै॥
पुनिपुनिजबसुतबहु हठकीन्हीं । कनिकघोरिजननीतबदीन्हीं॥
ताहि पान करि अति हर्षाई । नाचै बाल सभा महँ जाई ॥
बालक जानि मातु चतुराई । हँसे सकल मुनिसुत समुदाई ॥
निजगृह आयहँसीकर कारण । पूछा मातहिकरि पदधारण ॥
है दरिद्र नहिं क्षीर हमारे । पिष्ट घोरि मैं दीन दुलारे ॥

दो० मातु बचन सुनि शंभुकी शरण गही मुनिबाल ।
क्षीरसिंधु अधिपति कियो ऐसे नाथ कृपाल ॥

यह चरित्र भारत में गायो । तुमको मैं संक्षेप सुनायो ॥
देवप्रकट तिहुंकाल गोसांई । जो मनुष्य छोड़ै जड़ताई ॥
यहिबिधिमुनिबनिताकीबानी । शम्भुभक्तिमहिमारससानी ॥
प्रणतवश्य सुनि नाथ सुभाऊ । चित उपजो बिधु शेखरभाऊ ॥
हरप्रसाद हित तप अनुमाना । दम्पति घरसों कीन पयाना ॥
वृषगिरि ज्योतिर्लिंगसुहावन । पूर्णानदी सलिल जहँपावन ॥
सरि स्नान करत शिव पूजा । भोजन कंद काज नहिंदूजा ॥
पुनि तिनकंदअशनतजिदयऊ । शिव पद पद्म भृङ्ग ह्वैगयऊ ॥
विमल हृदय जाया तन केरी । जेहिकी प्रभुपद प्रीतिघनेरी ॥
बहु करै ब्रत संयम नेमा । पूजहि दंपतिशिवहि सप्रेमा ॥
देह कसैं करि करि उपवासा । वृष पर्वत पर करहिंनिवासा ॥
यहिविधिबीत्योकालअनेका । हरप्रसन्नलखि निश्चलटेका ॥
देव कृपा परवश द्विज वेशा । स्वप्ने दर्शन दीन्ह महेशा ॥

दो० कह्योमांगु वरदान अब केहि हित सह्यो कलेश ।
इच्छा कौनि तुम्हारि मैं पूरी करौं द्विजेश ॥

नाथ पुत्र कारण तप भारी । सुनि बोले शंकर भय हारी ॥
एक पुत्र सब गुण की खानी । अरु सर्वज्ञ परम विज्ञानी ॥

ऐसो पुत्र चहहु द्विजराया । अथवामांगहु तनयनिकाया ॥
जिनकी बहुत अवस्था होई । लघु विद्या अरु गुणावे सोई ॥
शानि यथारथ गिरा हमारी । बरणौं जो अभिलाषतुम्हारी ॥
शिव गुरु कह्यो एक सुतमेरे । होय जिते गुण कहे घनेरे ॥
बड़ो प्रभाव जासु जग होई । अरु सर्वज्ञ होय पुनि सोई ॥
ऐसे ह्वै हैं तनय तुम्हारे । जाहुभवन सुनिबचनहमारे ॥
अब न करो तुम यहु तपभारी । पूजी मन कामना तुम्हारी ॥
शंभुबचन सुनि शिवगुरु जागे । स्वप्न कह्योगृहिणीके आगे ॥
नारिशिरोमणिशिवगुरुजाया । सुनि बाढ़ो आनंदनिकाया ॥
सुत ह्वै है सब गुण जेहिमाहीं । नाथ स्वप्नफुर संशय नाहीं ॥
शिवगुरुउनकी नारि सयानी । शिवशरणागत मनक्रमबानी ॥
सावधान सुमिरत सो स्वप्ना । भूलि गये सिगरो दुखअपना ॥

दो० तब आये घर सती सह विप्र अनेक जेंवाय ।
दियो दक्षिणा बहुतधन हर्षे आशिष पाय ॥

पुनिविप्रनजब आज्ञादीन्हीं । शिवगुरुतबभोजनरुचिकीन्हीं ॥
रह्यो अन्न द्विज भोजन शेषा । कियो तहां शिव तेजप्रवेशा ॥
दम्पति सों भोजन जब करेऊ । हर की कृपा गर्भ रहि गयऊ ॥
जब आये सुखप्रद उरमाहीं । क्रम से गर्भ बढ़े दुख नाहीं ॥
सतीतेज तबअति बढ़िगयऊ । मध्यदिवस सवितासमभयऊ ॥
अतिशय तेज देखि नहिं जाई । अतिसुखमानहिंबरणिसिराई ॥
गर्भजस ते मंद भई गति । यहिमें कुछ अचरज मानहु मति ॥
चौदह भुवन बसैं जेहि काया । सोप्रभु जेहिके गर्भ समाया ॥
महि,पय,पावक,व्योम,समीरा, । रवि,शशि,आतम,जासुशरीरा
अष्ट मूर्त्ति शंकर भगवाना । महिमा जिनकी वेदनजाना ॥
द्वरा धर्य प्रभु तेज अपारा । जबते व्यापि गयो तनसारा ॥
तबसे नहिँ कछु संग्रह त्यागा । नहिंमन कछुप्रपंचअनुरागा ॥

दो० रम्य गंधयुत पुष्प नहिँ गहैजानि तेहि भार ।

भूषणाकी रुचिको तहाँ कहिये कौन प्रचार ॥
गुरुई बस्तु जिती संसारा । ह्वैगै तिनसों अरुचि अपारा ॥
कुछदिनयहिप्रकारचलिगयऊ । दोहदआयप्रकटतेहि भयऊ ॥
गर्भिणि नारि मनोरथ होई । दोहद ताहि कहैं सबकोई ॥
दोहद ताहि सतावन लागा । चाहतत्यागनसो नहिं त्यागा ॥
यथा शरीर पतंग अभागा । त्यागतहूँ चाहै नहिं त्यागा ॥
दुर्लभवस्तु पाय पुनि त्यागहि । और पदारथ नूतन माँगहि ॥
जब वहमिल्योतज्यो पुनिसोई । और अनूपमको रुचि होई ॥
दोहद समाचार सुनि पाये । सती बंधुजन देखन धाये ॥
लैलै बस्तु अमोल पियारी । देखहिंआयसतिहिनरनारी ॥
कबहूँ कुछ चाखत हर्षाई । कछुकपाय कबहूँअनखाई ॥
नारि बिधाता वादि बनाई । गर्भहेतुजेहि दुखअधिकाई ॥
मानुष तन अनुसार बखाना । सतिहिनकुछदुखकरअनुमाना ॥
दो० सब दुख दूरि होन हित जाहि भजै संसार ।
सोशिवजेहिकेगर्भमें तेहिनहिँ दुखव्यवहार ॥
सोवत देखै स्वप्न सयानी । बिधुनिर्मलवृषसबगुणखानी ॥
तेहिपर आपु भई असवारा । गुणा गावत गंधर्व उदारा ॥
विद्याधर बहु बिनती करहीं । आयसमीपचरणशिरधरहीं ॥
रक्ष रक्ष जय जय उचरहीं । अवलोकपयहध्वनिसबकरहीं ॥
ध्वनिसुनितिनहिँ देतिबरदाना । जबजागीतबकुछ नदिखाना ॥
इत उत देखति विस्मय भारी । पुनिनसुनीवहध्वनिजयकारी ॥
शयन करनको पलंग मनोहर । बिछौसेजतहँ अतिशयसुंदर ॥
तहँ विश्राम करत हर्षाई । नर्महु बचन सुनत अनखाई ॥
स्वप्ने सब बादी गण जीते । खेदितदेखि परहिँ सुखरीते ॥
सबन जीत आनंद सहीता । बैठी शारद पीठ पुनीता ॥
तहाँ बैठि अति आनँद माना । जागी बहुरि नकुछ दर्शाना ॥
जाग्रत महँ समता पुनि ऐसी । सत्पुरुषन के उर महँ जैसी ॥

दो० विषय लालसा सती कहँ रही न गर्भ प्रभाव ।
सब लक्षण मानहुं कहत भावी बाल सुभाव ॥

उर शोभा शुभ सरित समाना । कुचगिरितेजनुकीन्हपयाना ॥
रोमावलि अतिशय छविछाई । मनहुँसेवार पाँतिचलिआई ॥
रच्यो बिधाता जनु सुत काजा । सुभग मनोहर बेणुबिराजा ॥
युगल कुम्भ विधि नूतन सुंदर । भरेसुधारस अधिक मनोहर ॥
सती पयोधर मिष दर्शाये । सुत पय पीवन हेतु बनाये ॥
द्वैत वाद युग कुच गत भाषा । शून्यवाद दुहुँबीच प्रकाशा ॥
सत्पुरुषन करिकेदोउनिन्दित । सतीगर्भगतसुतक्षत खण्डित ॥
बढ़े गर्भ दूनहुँ मिलि जाहीं । उभय पयोधर अंतर नाहीं ॥
शोहर जन्म दिवस जब आयो । सब प्रकारबहुसमयसुहायो ॥
लग्न रही शुभग्रहयुत पावनि । शुभग्रहकीपुनिदृष्टिसुहावनि ॥
उच्च भवन बैठे ग्रह चारी । रविसुत सुरगुरु भौम तमारी ॥
जिमि जायो सुखसों जगमाता । षरामुखतनय देवऋषित्राता ॥
जिमिशिवगुरुकीनारिसयानी । हर्षितजायोसुतसुखखानी ॥

दो० गर्भ वास व्यवहार सब निज माया दर्शाय ।
बालक रूप आप शिव तहां प्रकट भेआय ॥

छं० तहांआपशिवगुरुशिशुहिदेखयोमनमगनसुखगारमयो ।
अतिहर्षतममनकीखबरिनहिंउपजपलपलसुखनयो ॥
पुनिहू सचेत नहाय बिधिसों दान बहु विप्रन दये ।
शुभ धेनु धरणी बसन भूषण रतन गण मंदिर नये ॥

सो० शिव गुरु सब विधि कीन्ह देव पितर आराधना ।
याचक गण कहँ दीन्ह जेहि जो मांग्योतेहिसमय ॥

तेहि दिन सकल जीव हर्षाने । स्वाभाविक निजबैर भुलाने ।
बाघ सिंह मृग गजअहि मूषक । काहू कर कोई नहिं दूषक ।
घातक सकल बैर बिसराई । बन महँ साथ फिरैं हर्षाई ।
एक एक की देह खुजावैं । निर्भय निजनिज प्रेमदेखावैं ।

बर्षहिं सुमन लता अरु तरुवर । सरित बहैं पावन जल सुंदर ॥
जल धर बर्षहिं बारम्बारा । गिरिगणझरनाझरहिंअपारा ॥
द्वैत बादि कर पुस्तक सुंदर । सहसा आपु गिरी भूतल पर ॥
श्रुति शिर हँसे नमोदसमानो । व्यास हृदय पंकज हर्षानो ॥
दशदिशअति निर्मलता छाई । त्रिविधिबयारिबहैसुखदाई ॥
अग्निहोत्र विप्रन गृह सुंदर । उठीधूम बिनज्वाल मनोहर ॥
तेहिक्षणआपुहिआपहुताशन।करुप्रकाशबिस्मितसबद्विजगन॥
*ससनन सुमनवृष्टि झरिलाई । सुमनहृदयसम बिमलसुहाई ॥
अति सुमनोहर गंध सुहावनि । अद्भुत सुखकारी मनभावनि ॥
जिमि राजै सुमेरु सों धरणी । जिमिद्वैलोकी सुखमातरणी॥
बिद्याबिनयपावजिमिराजहिं।सुवनसहिततिमिसतीविराजहिं॥
दो० रामकृष्ण सों लह्यो सुख कौशल्या नँद रानि ।
तिमि यहु बालक पायके भईसती सुखखानि ॥
आये बहु दैवज्ञ सयाने । शिवगुरु भलीभांतिसन्माने ॥
पूंछे सुत लक्षण तिन कहेऊ । बड़ भागी तव बालक भयऊ ॥
जन्मकाललहिकीन्ह बिचारा । ह्वै है यहु सर्वज्ञ कुमारा ॥
रचि है शास्त्र स्वतंत्र अपारा । बादविपन कोजीतन हारा ॥
महिमंडलबहुकीरतियाकी।व्यापिहिजेहिविधिभासविताकी॥
बहुत कहहिँ कहँ लौंबिस्तारा । पूरण होइहै तनय तुम्हारा ॥
पिता न पूंछी तासु अवस्था । बिप्रनहूँनहिँ कीन्हिव्यवस्था ॥
जे शुभज्ञ पण्डित जग माहीं । बहुधा अशुभ जनावतमाहीं ॥
जाति बंधु सुहृदिष्ट सुवासा । सहितउपायनशिवगुरुधामा ॥
जाय जाय सूती गृह पासा । तनयदेखिसबलहहिँसुपासा ॥
जिमिग्रीषमऋतुकरसबतापा । मेटहिहिमकरकिरणकलापा ॥
तैसेहि सुत बिधु बदन निहारी । होंहिं सकल नरनारिसुखारी ॥
राति समय सूती गृह माहीं । सुवन तेज अंधियारो नाहीं ॥
सो० बालक अतुल स्वरूप बिनहि दीप तमहानिगृह ।

* देवनां दीप्ति ॥

ऐसो तेज अनूप लखि सब को विस्मित हृदय ॥

दो० देखनहारे जनन को जेहि कारण सुखदानि ।
तेहि निमित्त शंकर धस्यो नाम पिता अनुमानि ॥

अथवा बहुतकाल शिव सेवा । कीन्हीं तब दीन्हों वरदेवा ॥
शिव प्रसाद प्रकटे सुखधामा । तेहिते भा शंकर यहु नामा ॥
यद्यपि कृपा सिंधु भगवाना । सकलशक्तिधर सबकछुजाना॥
तद्यपि जिमि नर देह सवाँरी । तिमि बालकलीला अनुसारी॥
कछु दिन बीति गये सुखदाई । बिहँसन लागे प्रभु हर्षाई ॥
धावन लगे घुटुरुअन नीके । भयोमोद अति पितु जननीके॥
जब शंकर शुभ मंत्र घो आये । साधुहृदय अति आनंद छाये ॥
मणि गुच्छा देखैं प्रभु जबसों । विद्वन्मुख निर्मल भे तब सों ॥
सोवन को जो पलँग मनोहर । अतिकमनीय सेज तेहिऊपर॥
तेहिपर शयन करत श्रीशंकर । हर्षित चरण चलाव अनंतर ॥
जे बादींद्र रहे संसारा । तिनके जे अभिलाष अपारा ॥
मनहु बाल क्रीड़ा मन दीन्हें । पद ताड़नमिष भेद न कीन्हें ॥

दो० जब अक्षर मुख पद्म सों कहन लगे दुइ तीन ।
हेत बाद महबीर जे सबन मौन गहि लीन ॥

जब पद पद्म चलन प्रभु लागे । दशदिशि मतबादी सब भागे ॥
कहन लगे जब मधुरी बानी । कोयलबिकल मौन तबठानी॥
आनँद सहित चले जब शंकर । विकल मरालभये तेहिअवसर॥
चंद्र सरस धीरे पग धरहीं । अरुणत्विषापदकोमहिधरहीं॥
विद्रुम पल्लव मनहु बिछावहिं । केसर रजमय भूमि बनावहिं ॥
लोचन चिह्न ललाट मनोहर । माथे उड़पति अंक शुभगतर ॥
शूल चिह्न दूनहुँ कांधे पर । फटिक समान शरीर उजागर॥
यह सब लक्षण देखि सयाने । श्री शंकर शिव शंकर जाने ॥
उरपर नाग चरण महँ चामर । बालचंद्र मस्तक अद्भुत तर ॥
चक्र गदा धनु डमरू रेखा । माथे चिह्न शूल कर देखा ॥

अँगसुकुमार सकल पुनि वैसे । निमिषलगैं नहिं लोचन तैसे ॥
रेखा लक्षण चिह्न निहारी । अचरज लोगन को अतिभारी॥
नीति निपुण नृपकी मनमानी । राजबढ़ै दिनप्रति दुखहानी ॥
कुव्यसनगतनहिंमतिजेहिकेरी । सदा बढ़ै विद्या तेहि केरी ॥
निर्मलसुखद शरदऋतुपाई । नितप्रतिजिमिविधुछविसरसाई॥
दंपतितोष सहितजिमि सुन्दर । हर मूरति बाढ़े निशिबासर ॥

दो० आदि सृष्टि सनकादि कृत ज्ञान पंथ भा क्षीन ।
दुर्गति प्रद मारग बहुत चले भये जन दीन ॥

छं० जन दीन ह्वै गो स्वर्गदुर्गम मुक्ति की चर्चा कहा ।
सबलोगमलिनस्वभावते नहिंपुण्यजगमेंकहुंरहा ॥
जब सृष्टि नाशक विघ्न बहुबिध होनलागे नितनये ।
तेहिकालशंकर रूपधरिहर धरणिपर प्रकटतभये ॥

इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यश्री७ स्वामिरामकृष्ण भारतीशिष्यमाधवानंदभारतीविरचितशंकरदिग्विजये श्रीशंकरावतारकथापरोद्वितीयस्सर्गः २ ॥

श्लोक ॥ शिवेतिचाख्यांवचसाभजामिहरंशरीरेणहिपूजयामि ॥
उमेशमूर्तिंपरिचिंतयामिमहेशपादौसततंनमामि ॥ १ ॥

दो० बाल चंद्र शेखर लियो यहि विधि जब अवतार ।
तेहि पीछे जे सुर प्रवर आये यहि संसार ॥

निगमागम ये निपुण द्विजेशा । तिनकेगृह प्रकटे सुर ईशा ॥
कमलापति सखपति भगवाना । बिमलबिप्रसुतभयउसुजाना ॥
पद्मपादसहिकहि अतिजिनसों । वादिमहाअशउठिगोतिनसों ॥
रवि सम तेज प्रभाकर नामा । पवन प्रकटभे तिनकेधामा ॥
हस्ता मलक कहै जग जाही । भयो जोभेद वादिगलग्राही ॥
वायू दशम अंश अवतारा । तोटक जाहि कहैं संसारा ॥
जिनके यशपयोधिमहँ धरणी । असिउतरायमनो दृढतरणी ॥

बादिगिरा जिमि नाव पुरानी । बूड़ि गई तहँ तुरत बिलानी ॥
नन्दीश्वर प्रकटे जग माहीं । सकल उदंक कहैं तिनपाहीं ॥
वादी निग्रह जनित अपारा । कीरति जिनकी भै संसारा ॥
ब्रह्मा मण्डन मिश्र कहायो । सुरगुरु आनँदगिरिह्वै जायो ॥
बरुण भये चित्सुख के रूपा । अरुण सनंदन करे स्वरूपा ॥
दो० पद्म पाद जेहि सों कहैं सोई सनंदन होय ।
उभय देव के तेज सों जानहु प्रकटो सोय ॥
अवरहु देव बहुत यहि भाँती । सेवन हेतु मदन आराती ॥
भूसुर तनय भये सब आई । जगतशरण चरणनमनलाई ॥
कोइ आचारज को मत ऐसो । आगे कहहुँप्रकट करिजैसो ॥
चार्वाक मत को निर्माना । सुरगुरु कृतचतुरानन जाना ॥
भयो तासु मन अति संतापा । तुम नर होहुदीन्ह यहुशापा ॥
भये देव गुरु मंडन आई । कीरति जासुधरणिमहँछाई ॥
शिवकरि कृपा सप्रेरण कहेऊ । नंदी आय सनंदन भयऊ ॥
यहि प्रकार सुर धरे शरीरा । बरणौंबिधिकी कथागंभीरा ॥
माहिष्मती पुरी सुख खानी । शोभाजासु न बरणिसिरानी ॥
सब धन रहे जासु द्विज गेहा । धरीविरंचि जाय तहँ देहा ॥
विद्या विनय सकल गुणधामा । विश्वरूप अस पायो नामा ॥
निजगुणकुलकीन्होंअभिमंडन । तेहिते नाम कहायो मंडन ॥
दो० यहिविधिविधिअवतार जब भयोधरणिमहँआय ।
उनकी प्यारी भारती जनमी नर तन पाय ॥
एकसमय मुनि निज निज वेदा । पढ़तरहे विधिपासअखेदा ॥
स्वर में चूके मुनि दुर्वासा । तबशारदाकियोहासप्रकाशा ॥
क्रोध रूप मुनिवर दुर्वासा । बाढ़ीरिस लखिशारदहांसा ॥
अग्नि समान नयन सों देखी । शापदीन्ह मुनिउग्रविशेषी ॥
तू दुर्विनय अवनि तल जाई । जन्म जाय मानुष तनु पाई ॥
परीचरण शारद भय व्यापा । बिनती करै हृदय अतितापा ॥

शारद विकल देखि मुनिराया । कहन लगे अवकीजे दाया ॥
यथा पिता बालक अपराधा । तथाक्षमहुमुनि ज्ञानअगाधा ॥
यहिविधि शारद मुनिनमनाये । मुनि दुर्वासा कुछ हर्षाये ॥
बोले शाप विमोचन बयना । ह्वैहैं मनुज स्वरूप त्रिनयना ॥
उनको दर्शन जब तू पैहै । पुनि यहि ब्रह्मलोकमहँऐहै ॥
पायो जन्म शोणा नद तीरा । सब गुण सूरति परम गँभीरा ॥

दो० उभय भारती भूमि पर तेहि सों कहैं सुजान ।
जेहि ते दूनों लोक में संज्ञा भई समान ॥

द्विजवर सुता रूप गुण हृद्या । सहजभई तेहिकहँ सब विद्या ॥
जोगुण जेहिमाथेलिखिगयऊ । तेहि मेटे अस जगको भयऊ ॥
सहित अंग जानै सब वेदा । सकलशास्त्र वरणौं गत खेदा ॥
काव्यादिक नाटक सबजाना । सोनहिंगुणजाकर नहिंज्ञाना ॥
देखितासहिअतिअचरज मानी । सबलोकन तेहि शारद जानी ॥
अति गुणाढ्य शारदा भवानी । विश्वरूप गुण सुने सयानी ॥
ऐसेहीं मंडन सुनि पाये । सरस्वती गुणबाद सुहाये ॥
दरश आश दूनहुँयों जागी । सुनिगुण उभय भयेअनुरागी ॥
अति चिंतवन परस्पर ठयऊ । उभय दरश सपनेमहँ भयऊ ॥
भाषनहू कुछ भा सुखकारी । जागतहीं वियोग दुखभारी ॥
दर्शन की इच्छा अति बाढ़ी । दिनप्रति प्रीति परस्पर गाढ़ी ॥
स्वप्नरूपभावशसुधिकरिकरि।गयोदुहुनकोयहिविधिमनहरि॥
क्रीडा भोजन कुछ न सुहाई । उभय शरीर गयो दुबराई ॥

दो० कृशतन देख्यो पिता तब तनयसमीपबुलाय ।
कारण पूछा शोचकर बहुत हेतु दर्शाय ॥

कौन हेतु कृश देह तुम्हारो । जानि परै कुछ चिंता भारी ॥
रोग शरीर तुम्हारे नाहीं । औरौनहिं कुछ दुख तुमपाहीं ॥
इष्ट हानि अनभल संयोगा । जगप्रसिद्ध दुख पावहिंलोगा ॥
सो दूनो तुम्हरे नहिं देखौं । अपने मन यद्यपि बहुलेखौं ॥

क्याहकालनहिंतबचलिगयऊ। नहिं अपमानतुम्हारो भयऊ ॥
नहिं दरिद्र तुम्हरे घरमाहीं । कौनिवस्तु जो तव गृहनाहीं ॥
नहिं तुमपर कुटुम्ब कर भारा । जब लौं मैं जीवत संसारा ॥
है तुम्हरी आनंद अवस्था । मननआवकुछ दुःखव्यवस्था ॥
परम धुरंधर तर्क प्रधाना । जौन अर्थ उनहूं नहिं जाना ॥
सो तुम जानहु पढ़ौ पढ़ावौ । सबके संशय कहिसमुझावो ॥
नहिं तुम मूढ़ बाद नहिं हारे । क्यहिकारण मनदुःख तुम्हारे ॥
जन्म दिवसते शुभ आचरणा । जस कुछ वेद पुराणन बरणा ॥
पाप कर्म नहिं तव मनमाहीं । नरकादिकभय तुमकहँ नाहीं ॥

दो० केहि कारण मुख पद्म तव देखौं शोभा हीन।
दिन प्रति पूंछा तात जब प्रीति सहित हठकीन॥

बोले मंडन विनय समेता । जो तुम पूछहु कृपा निकेता ॥
कहत मोहिं आवैबड़िलाजा । हँसिहैंमोहिँ सुनिवृद्धसमाजा॥
कहिबे योग जौनि नहिं बाता । तव हठ बश बर्णतहैं ताता ॥
विष्णुमित्र द्विजगुणगम्भीरा । करहिं निवासशोणनदतीरा॥
तिनकी कन्या मनहु भवानी । है सर्वज्ञ सकल गुण खानी ॥
सुनिसुनि तासु रूप गुणगाहा । मम मनचाहे तासु बिवाहा ॥
विनयसहित सुनिसुतकेबयना । युगुल विप्रबोले गुणअयना ॥
वधू वरण वारता प्रवीना । पठये दै धन वस्त्र नवीना ॥
ते द्वौ विप्र देश बहु त्यागी । तहँपहुँचेनिजकारज लागी ॥
पूंछा विश्व रूप पितु जैसे । शारद तातहु पूंछो तैसे ॥
भारति कहहि सुना मैं ताता । राजस्थान बसैं विख्याता ॥
द्विजबर विश्व रूप असनामा । सकलशास्त्रसबविद्याधामा ॥

दो० तिनके युग पदरेणु सहँ मो मन रह्यो समाय ।
सोहमको तब मिलहिंगी जो तुमहोहुसहाय ॥

इमि कन्या के बचन सुहाये । सुनत रहे भूसुर मन लाये ॥
युग द्विज जे पठये बर ताता । पहुँचे जाय सुखी*संघाता ॥

* शरीर

हाथ विराजे निर्मल लाठी । सुंदर बदन मनोहर काठी ॥
विष्णु मित्र करि सब सत्कारा । पूंछा केहिकारण पगुधारा ॥
माहिष्मती पुरी जग जाना । तहां बसैं हिम मित्र सुजाना ॥
विश्व रूप के तात पठाये । तुम्हरे भवन नाथहमआये ॥
श्रुत बय कुल आचार सुपावन । रूप वेष गुण धर्म सुहावन ॥
विश्व रूप जग कीरति जैसी । महाराज तव कन्या तैसी ॥
सब प्रकार निज तनय समाना । जानिपठायो हमहिंसुजाना ॥
यह बिनती हमरी सुनिलीजै । विश्वरूप हित कन्या दीजै ॥
युगमणिमिलन होयजेहिरीती । महाराजसोइ करहु सप्रीती ॥
विष्णु मित्र बोले हर्षाई । तुम्हरे वचन मोहिंसुखदाई ॥
निजगृहणी सन पुछिहौं जाई । पुनि करिहौं अपने मनभाई ॥
कन्या दान बधू आधीना । बिन पूंछे करिये न प्रवीना ॥
दैव योग कन्या दुख पावैं । तवगृहणीजन अधिकसतावैं ॥
जाया सन गाथा सब गाई । निजसंमतिमोहिंकहैाबुझाई ॥
सुनि पति के मुख कीवखानी । बोली शारद मातु सयानी ॥
दूरि रहैं कुछ जानि न जाई । कुलविद्याधनकोअधिकाई ॥

दो० लोक वेद में प्रकट यह कन्या दीजे जानि ।
कुलाचार धन युक्त कहँ अपनेसम अनुमानि ॥

सुनहु सुबयनि नेम यहु नाहीं । जे प्रसिद्ध तर हैं जग माहीं ॥
तेन परिक्षा योग सयानी । कृष्णबिवाहु लेहु अनुमानी ॥
तीरथ मिस घूमतगे श्रीहरि । कुण्डनेशसबनरपतिपरिहरि ॥
विनय परिक्षाकीन्ह बिवाहा । तिमि प्रसिद्धहैं द्विजनरनाहा ॥
यहिविकल्पमनमें नहिँ कीजै । यदुपति उपमा कैसे दीजै ॥
मण्डनहूँ कर यश विख्याता । थोरी तोहिं सुनावहुं बाता ॥
अति दुर्जय जैनी जग माहीं । जिनकीविद्याकोमितिनाहीं ॥
तिनहिं जीतिकरिअधरम दूरी । वेद धरम प्रकटो जग भूरी ॥
ऐसी भट्ट पाद की करनी । एकबदन किमि बरनौंघरनी ॥

भट्ट पाद यश पोयश हारा। विश्वरूपतिहुं पुर उजियारा॥
दहिनो हमहिँ जोहोयविधाता। लहिये विश्वरूप जामाता॥
विद्या धन द्विज करनहिं आना। नहिं कोउ धनहैतासुसमाना॥

दो० नृपति चोर नहिं लै सकैं नहिं बनिता सुत भाग।
यश दिगंत जेहि सों मिलैं सब संशय दुखभाग॥

लौकिक धन सब दुखकीमूला। उप जत रहत सदा उरशूला॥
प्रथमहिं अर्जुन को दुख भारी। पुनि रक्षा की आपद न्यारी॥
खर्च भयेधन अति दुख दाई। नाशकेरदुख कहि नसिराई॥
स्वजन चोरराजा भय रहई। दुखकहँसुखमूरखजनकहई॥
लोभी धन धरती तरधरहीं। दानभोगमहँव्ययनहिंकरहीं॥
कछुदिन गयेधरोनहिं पावहिं। औरधरो धन औरहिखावहिं॥
सरिता तीर बाढ़ि जब आई। तहां गड़ोधन जल बहिजाई॥
ऐसे दुख अनेक धन माहीं। विद्या सम दूसर धन नाहीं॥
तनया बहुत काल गृह रहहीं। दोषअनेकलोकश्रुतिकहहीं॥
ब्याह प्रथम रज उद्गम होई। नरक हेतु जानहु तुम सोई॥
तनया के मन की सुनि लीजे। पुनिजो उचितहोयसोकीजे॥
जननी जनक सुता पहँ आये। समाचार सब ताहि सुनाये॥

दो० निज रुचि कहुसुनि शारदा मनआनँद नसमान।
निकरि बहुरि रोमांच मिस तन बाहेर दर्शान॥

दंपति बचन उतरु सो भयऊ। गृहबाहेर शारद पितुगयऊ॥
विदाकिये द्विजमानि विवाहा। निज भूसुर पठवा द्विजनाहा॥
शारद निज द्विजवर समुझावा। लग्न महूरत शोधि सुनावा॥
चौदह दिन पीछे दशमी की। ह्वैहैलग्नसकलविधिनीकी॥
चले विप्र वर अति हर्षाई। विश्वरूप गुरु देख्यो जाई॥
मुखप्रसन्नलखितिन अनुमाना। कारजसिद्ध भयो हम जाना॥
विष्णुमित्र प्रोहिततब दीन्हीं। लग्नपत्रिकावरपितुलीन्हीं॥
भयो हर्ष पूजे तिन द्विज वर। भूषणबसनदियोधन बहुतर॥

विश्व रूप मन बात जनाई । लह्योपरमसुख*अधिगाँवाई ॥
पठे निमंत्रण बंधु बुलाये । यथा योग बहु काज बताये ॥
ते सब साज सँवारन लागे । हर्ष सहित निजमन अनुरागे ॥
मंगलचार भये सब भाँती । वरशोभा नहिंकछुकहिजाती ॥
दिव्य बसन भूषण पहिराई । चली बरात सकल छबिछाई ॥
कुशलसहितसबसुखीशरीरा । पहुँचे जाय शोणनद तीरा ॥

दो० शोणतीरको पहुँच सुनि लेन चले अगवान ।
दरश लालसा मन बढ़ी बाजे बहुत निशान ॥

वरहिदेखि सुखलह्योसमाजा । घर लैगये बजहिँ सबबाजा ॥
मृदुबाणी कहि आसन दीन्हें । पाद्यअर्घ विधिवतसब कीन्हें॥
दीन्हें पुनि मधु पर्क सुहावा । बिनयबचनबहुभाँतिसुनावा ॥
गृह कन्या शोधन ममसबधन ।तुमअपनो करिजानहुसज्जन ॥
हमरो कुल पवित्र तुमकीन्हों । मोहिं भलीविधिआदरदीन्हों॥
तवविवाह मिसि दर्शनपायो । उदय भयो मम पुण्यसुहायो ॥
नतरु कहाँ हमको तव दर्शन । विधिसमानविज्ञानविचक्षन ॥
मम गृह सर्वस अपनो जानो । लीजै सकल वस्तु मनमानी ॥
समधी कृत सुनिविनय बड़ाई । कहहिम मित्र हृदय हर्षाई ॥
कस न कहो तुम ऐसे बयना । वृद्ध उपासक सब गुण अयना॥
जो ह्वै है अभिलाष हमारे । सोहमकहिहैं बिनहिविचारे ॥
यहिविधिकहहिं परस्परबानी । आनँद विनय नेह रससानी ॥

दो० दुहूं ओरके लोग सब देखत यह वर व्याह ।
हासबिलास मगन सब मनमहँपरम उछाह ॥

बरकन्या स्वाभाविक सुन्दर । तद्यपि जान सुमङ्गल अवसर ॥
दरश परस्पर महँ मन लोभा । परवश कृत अंगन की शोभा ॥
वर कन्या के रूप अपारा । प्रभा मंद भे सब शृंगारा ॥
धारे लोक रीति अनुसारी । रूप दृष्टि नहिँहृदय विचारी ॥
तब बहुज्ञ तत्काल लग्नकर । लागे करन विचार परस्पर ॥

* मनव्यथा ॥

खेलत सखी वृंदमहँ शारद। तेहिपूंछहिँ सबगुणविशारद॥
जो निश्चयकरि दीन्हसयानी। वही लगन सब के मनमानी॥
अति शुभ सों बेरा जब आई। बहु बाजन बाजैं सुखदाई॥
वेद शंख ध्वनि भे सरसाई। निजपराय कछुसुनिनहिंजाई॥
विष्णु मित्र तनया कर पद्मा। ग्रहणकीन्हहिसतनयसधर्मा॥
विष्णुमित्र हिम मित्र विप्रवर। मगन भये आनंद के सागर॥
पजी सकल कामना जिनकी। को कहिसकै हर्षके तिनकी॥
तेहिक्षण जो जो मांगत जोई। हर्षित ताहिदेहिं सोइ सोई॥
उभय कल्प तरु जंगम जैसे। सभा मध्य सोहैं द्वौ तैसे॥
गृह्य सूत्र विधि के अनुसारा। विश्वरूप कियो होम प्रचारा॥

दो० लाथा होमे वर बधूधूम गंध शुभ लीन्हि।
पुनि दंपतिने अग्निकी सप्त प्रदक्षिण कीन्हि॥

कियोहोम पूरण यहि भाँती। जनवासे गे सकल बराती॥
दाइज बहु दीन्हा द्विज राया। कोकहिसकै वस्तु समुदाया॥
दानपाय द्विजनिजगृह जाहीं। रहे बधू बर मण्डप माहीं॥
चारि दिवस लौं दीक्षाधारि। हर्षित बसे अग्नि रक्षाकरि॥
बहुत भाँति सब की पहुनाई। कीन्हींसो नहिं वरणिसिराई॥
बिदा होनकर दिन जबआयो। सासु ससुर अवसरशुभपायो॥
आय समीप वरहिससझायो। सावधान करिवचन सुनायो॥
बाल समान हमारी बाला। नहिं कछुजानलोक जंजाला॥
लड़िकन में खेलै नित जाई। क्षुधा लगे घर आवै धाई॥
यही एक संतान हमारी। तेहिकारणप्राणान ते प्यारी॥
घरकोकामकबहूँनहिं कीन्हा। यहि की रक्षा तव आधीना॥
मधुरवचन करिहै यह काजा। रूखे रूठि जाय महराजा॥
कोऊ मधुर बचन बश होई। होयकठोर बचन बश कोई॥

दो० जेहि को जौन स्वभाव है त्याग करै नहिं कोय।
जिमि उपाय ते शीतगुण कबहूँ अनल न होय॥

दण्डसहितसिखयोनहिंयाको । तात सुनो तुम कारण ताको ॥
एक समय मुनिवर गृह आयो । सुतादेखि हमकहँ समझायो ॥
मानुष निज तनया जनि जानो । तुम यहिको देवीकरिमानो ॥
कठिनबचनकबहूंनहिंकहियो । मोरसिखावनदृढकरिगहियो ॥
तव कन्या सर्वज्ञ सयानी । उभय वाद मध्यस्थ भवानी ॥
ह्वै है यहिको बहुगुणगाथा । असकहिगमनकीन्हमुनिनाथा ॥
हमरी ओर चरण बहु गहियो । जननीसों अपने यहिकहियो ॥
नीके राखहिं बधुहि सयानी । याहि धरोहरि हमरी जानी ॥
धीरज सों गृह कारज लेहीं । भले रुचिर सिखावन देहीं ॥
सहज भूल बालक मन होई । तेहि कहँहृदय न लावैकोई ॥
यहिविचारिलघुबयस निहारी । क्षमा करैं सब घरकी नारी ॥
हम सब पहिले बाल अयानी । काल पायअबहैं गुण खानी ॥

दो० हमरे मन अभिलाष बड़ चरणगहैं हम जाय ।
भली भांति निज बचनसों बिनती देहिं सुनाय ॥

है परंतु अस संशय एहा । और कौन नहिं हमरे गेहा ॥
गृह रक्षा जेहिके शिर धरहीं । तेहिते सबसों बिनती करहीं ॥
आपु जाय कहिबे कैसा फल । हमहिँमिलैवैसो सब निश्चल ॥
ऐसी कृपा करैं सगरे जन । जे बरात में आये सज्जन ॥
यहिविधिबिनतीसबहिसुनाई । दम्पति निज तनया समझाई ॥
दशा अपूरब अब तुम पाई । रहियो करि अति यत्नसुहाई ॥
करहुन बाल विहार विनोदा । हम सम पैहैं और न मोदा ॥
अधिपति मातुपितातनयाको । व्याह भये पीछे पति ताको ॥
तेहिते शरणगहो तुमपतिकी । चाहहोय जो उत्तम गतिकी ॥
पतिके प्रथम निमज्जन करहू । पति प्रसाद भोजन आचरहू ॥
पति बिदेश शृंगार न धरहू । पतिं देवता चरित्त अनुसरहू ॥
प्रियतम क्रोधकरैं तेहि सहहू । तेहिक्षण परम मौनगहिरहहू ॥

दो० यहि विधि सुमन प्रसन्नपति होय सदा यहनेम ।

पति प्रसन्न उयहि पर भयो तेहिपर सबकर प्रेम ॥

सकल इष्टफल साधन कारी । क्षमा जानु सब गुण में भारी ॥
पति सन्मुख परपुरुष निहारी । सति बोलौ तेहिसन तुमप्यारी ॥
जब सन्मुख कर बर्जन कीजै । पीछे कर सिखवन कहदीजै ॥
देखत बोलत शंका होई । प्रीतम प्रेम मग्न करु सोई ॥
जब घर आवैं स्वामि तुम्हारा । उठहु त्यागि गृह कारजसारा ॥
नाथ यथारुचि पाद पखारहु । सेवहु निजसुखसकलविसारहु ॥
पतिपरोक्ष तेहिके जो गुरुजन । आवहिं तिनकोकरियोपूजन ॥
सहितमानतिनकी शुभआशा ।पुजवहुनहिंजिमिहोहिंनिराशा॥
ससुरसासु पितु मातु समाना । जानि सदा करियोसन्माना ॥
देवर जेठनहूं अन सरहू ।अपने शील सबहि वश करहू ॥
पति संबंधी जो दुख पावैं । दम्पति प्रीति भंग उप जावैं ॥
सुनि उपदेश कीन्ह प्रस्थाना । गृह पहुँचे वर बधू सुजाना ॥
मंदिरसुख नहिंजाय बखाना । पावहिं गुरुजनसो सन्माना ॥
उभय भारती बहुसुख लहई । शाप अवधि अपनीसो चहई ॥
शंकर मण्डन वाद सयानी । ह्वैहै जहँ मध्यस्थ भवानी ॥
शिव सर्वज्ञ भाव घोतन करि । जैहै ब्रह्मलोक साखी भरि ॥

दो० जिनकी साखी शारदा दूजि सर्व विज्ञाव ।
प्रकट करैगी जगतमहँ तिनकरगुण अवगाव ॥

सो शंकर सर्वज्ञ सुजाना । भक्त सुखदप्रभु कृपानिधाना ॥
खेलत खेल करत लरिकाई । जिमि खेलैं सर्वज्ञ कन्हाई ॥
प्रलयकालजिमिबालमुकुन्दा । बट पल्लव सोवत सुख कन्दा ॥
सकल जगतदेखैं निज माहीं । निज उरसों कछु बाहरनाहीं ॥
तिमि शंकर अपने महँ देखा । भूत भावि सबजगत विशेषा ॥
आतमगतसब लोकविलोका । भुवन चतुर्दश लोका लोका ॥
कबहुंधरणिगत कबहूं पलना । देखि सुखीसबनरअरुललना ॥
अद्भुत बालक पलकन लागा । नयन मनोहर अंग विभागा ॥

बासुदेव सम सब छबि छाजा । सकलसुखद प्रभुगातबिराजा ॥
शिव चतुराननविष्णु समाना । बाल रूप धर कृपा निधाना ॥
केशपाश श्यामल सुखकारी । कोमल नव नीरद छबिहारी ॥
शोभा खानिसकलगुणराशी । परममनोहर शिवअविनाशी ॥

छं० चक्रांक चिह्नितपाशुपत कापालिक्षपणकसत घने ।
पुनि जैन और अनंत दुर्मत जाहिंते कापै गने ॥
दुर्बाद खल समुदाय सों शुभ वेद मारग उठि गये ।
प्रभुताषु रक्षण हेतु जग महँ प्रकट शिव शंकरभये ॥

दो० संसृति कानन भय हरण भद्र करण सुख कंद ।
क्रीड़त शंकर कृपानिधि नाशक सब दुख द्वंद ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्री ७ स्वामिराम
कृष्णभारतीशिष्यमाधवानंद भारतीविरचितेशंकर
दिग्विजयेदेवावतारकथापरस्तृतीयस्सर्गः ३ ॥

श्लोक ॥ श्रीगुरुंपरमोदारंगुणागारंसुनिर्गुणं । दक्षिणामूर्त्तिवपुषंभजे हंभद्रदंपरं १ ॥

सो० सुमिरौं शंभुदयाल भव भय टारन हेतु प्रभु ।
भये मनोहर बाल ज्ञानप्रकाशन तम हरण ॥

दो० मायामनुज पुरारि शिव पितु गृहकरैं निवास ।
मातु पिता अरुसबनको बहुविधि देहिं हुलास ॥

सो० पूरी भई जो आय शंकर की पहिली बरस ।
ग्रहण किये सुराय निज भाषाके सब बरण ॥

दूजे साल मधुर रस पागे । लिखित अंक उचारण लागे ॥
तीजे संवत काव्य पुराना । शंकर श्रवण करैं धरिध्याना ॥
रही जो देवी बुद्धि सोहाई । श्रवण बिना जान्यो सुरराई ॥
शिक्षाकोदुखगु रुहिनदीन्हा । एक बारसुनिउरगहिलीन्हा ॥
गुरुबिन पढ़िबे मो मन लावैं । सह पाठिन को आपु पढ़ावैं ॥

रजतम जिनके नहिं छुइजाई । महि खेलत रज अंग सुहाई ॥
यहिविधिशिवगुरुसुतसुखदाई। सबमिलिजानिलईमनभाई ॥
शंकर को मुराडन जब भयऊ । गातमनोहरअति छबिछयऊ॥
घृत आहुति पावक छबिजैसे । शंकर तेज बढ़ो बहु तैसे ॥
पुनिसब वेद कंठ करि लीन्हें । व्याहृति सहितपढ़े मनदीहें ॥
क्रीड़ाकीन्ह काव्यमहँ शंकर । तर्कप्रबंधअधिक कर्कशतर ॥
तिन सबकर उल्लंघन कीन्हों । लोगनकोबड़ अचरजदीन्हों ॥
जे परिडत जन परम धुरंधर । बचनविभवजिनकोअतिसुंदर॥
जल्प वितंडा बाद प्रवीणा । जिनसों हारे बादि धुरीणा ॥
शंकर सन्मुख ऐसेहु पंडित । बोलिन सकैंगिरा भैखरिडत॥
सुर गुरु चतुराई प्रभु हरहीं । सन्मुख होतमौन सब करहीं ॥
शेष वचन छबि छीननहारी । शिवबाणीतिहुंपुरउजियारी ॥
यहि क्रम उचारण परि पाटी । जबहीं श्रीमुख सों उद्घाटी ॥
सुनि वादी मोहित ह्वै जाहीं । तासुउत्तरु कछुआवत नाहीं ॥

सो० कुमत कौन संसारजे नहिँ खराडन कियेहर ।
यपे न दूजी बार यद्यपि कीन्हें बहु यतन ॥

यमुना तात तेज सब शोभा । शंकरसों अनुपम छलशोभा॥
ऐसो तनय अलौकिक पायो ।शिवगुरुउरअतिआनँदछायो॥
यज्ञ उपवीत देखि हम लेहीं । यहूमोद विधिहम कहँदेहीं ॥
यह अभिलाष रही मनमाहीं । कर्म विवश पूजी सो नाहीं ॥
लोग करैं आशा मनमाहीं । काल कृताकृतदेखत नाहीं ॥
तीजे वर्ष भयो शिव लोका । सुतमोंमुदितहृदयनहिँशोका॥
यह संसार सुलभ सुत नाहीं । होयकदाचित जोगृहमाहीं ॥
पुत्र विभव कर देखन हारा । है अतिशय दुर्ल्लभसंसारा ॥
शिव गुरु बड़ कष्ट सुत जायो । तासु उदय नहिँदेखनपायो ॥
सतीकीन्ह निजपति तन दाहा । सहितबंधु सबकर्म निबाहा ॥
बंधु हाय कछु क्रिया कराई । कछु निजहाथकरी मनलाई॥

लोगन बहुत सती समझाई । लोक वेद गाथा दर्शाई ॥
दो० सम्वत भरके नियम सब पूरे करि शिव माय ।
सुत उपनयन साज सब जोरे मन हर्षाय ॥
पंचम वर्ष भयो सो काजा । जुरे सकल द्विजबंधु समाजा ॥
प्रवर योग युत समय सुहावा । विधिवतयज्ञउपवीत करावा ॥
यह उत्साह सबहिँ मनमाना । मातुहर्ष किमि जाय बखाना ॥
अंग सहित क्रम सों सब वेदा । गुरुसन पढ़िलीन्हें बिनखेदा ॥
शंकर छोटे गात सुहाये । सब विद्याशुभ गुण सबपाये ॥
लोगन कहँ भा अचरज भारी । हरको अद्भुतशक्ति निहारी ॥
साथ पढ़ैं जे बटु समुदाई । सम पढ़िबे कीशक्ति न पाई ॥
श्री गुरु के मन यह संदेहा । को समरथ पढ़ाव जोएहा ॥
पढ़े मास दुइतीन कृपा निधि । ह्वैगे गुरु समानप्रभु सबविधि ॥
पढ़त रहे गहि नेम सुहाये । अचरजनहिँ जो वेदसबआये ॥
चतुरानन सम वेद बखानैं । गार्ग्य सरिस अंगनकहँजानैं ॥
अंग सहित सब श्रुतिकी गाथा । आशय सकल युक्तिकेसाथा ॥
दो० सुर गुरु सम जानत भये शंकर वैदिक कर्म ।
जो जैमिनि वर्णन करैं स्वर्ग हेतु जो धर्म ॥
वेद वचन के ज्ञानसो वेद व्यास समान ।
नये व्यास मानहु भये काव्य बिलास सुजान ॥
तर्क भली विधि देखो शंकर ।कपिलतंत्रमहँप्रचलअधिकतर ॥
कीन्हों पातंजल जल पाना । भट्ट पाद मत नीके जाना ॥
आतम विद्या तिन सब जानी । जेहिके बिन न होयविज्ञानी ॥
सब विद्या में जो सुख पायो । सो सबयहिमें आय समायो ॥
कूप तीर जो कारज होई । सुरसरितट न होयकिमिसोई ॥
यहिप्रकारगुरुकुलबसिशंकर । पढ़त पढ़ावत बेद निरंतर ॥

अथ ब्राह्मणी बरदान ॥

एक दिवस भिक्षा के हेतू । द्विजगृह गमनकीन्ह वृषकेतू ॥

परम दरिद्री सो द्विज रहेऊ । तासु नारि शंकर सन कहेऊ ॥
बड़े भाग उनके जग माहीं । तुमसे बटु जिन के गृहजाहीं ॥
आदर युत परिचर्य्या करहीं । भिक्षा देहिं मोद मन भरहीं ॥
वृथाकीन्हबिधिजन्महमारा । जिन के नहिं दरिद्र कर पारा ॥
देइ सकैं नहिं कणादुइ चारी । ऐसे जीवन को धिग भारी ॥
दो० विनय बचन बहुभांतिकहि धात्रीफलयकआन ।
दीन्हीं शंकर हाथ में भक्ति सहित सन्मान ॥
करुणाबचनसुनतकरुणाकर । दया बहुत बाढ़ी उर अंतर ॥
द्विज दारिद्र होय जेहि दूरी । कमलाकीअस्तुतिपठि रूरी ॥
पद कोमल नवनीत समाना । मधुर विचित्र अर्थको जाना ॥
अतिशयशुभविनतीजबबरणी । तुरतहिप्रकट भई हरि घरणी ॥
तड़ित बरण शोभा तन भारी । दश दिशि फैलगईउजियारी ॥
विधिसुरेंद्र बंदित लखि पद्मा । कीन्हप्रणाम जोरिकर पद्मा ॥
ललित मनोहर स्तुति रचना । श्री हर्षित बोली यह बचना ॥
राउर मन की रुचि मैं जानी । प्रथम जन्मके ये नहिं दानी ॥
कियोनजिनशुभमोहिंक्योंभावैं।ममकटाक्ष महिमाकिमिपावैं॥
सुनहुमातु अबइन शुभकीन्हा । मोहिंआस तकप्रेमसोदीन्हा ॥
यहि फलकर फलदेहु सयानी । सोपर कृपाजो तुम उरआनी ॥
सुनिशिवबचन बहुतमन भाये । सुबरण के अँवरा बर्षाये ॥
दो० द्विज गृह में चहुँ ओर सों कनका मल दर्शाहिं ।
तैसे विस्मय भरि दियो सबही के मन माहिं ॥
छं० मनमाहिं विस्मय हर्ष सब के देय अंतर हितभई ।
मधुकैटभारि बिलासिनी तवलोकसहँ अपनेगई ॥
सबजन प्रशंसा करत शंकर सुखदको सुखदेखहीं ।
महिमाविलोकिसुहावनी बड़भाग अपनेलेखहीं ॥
दो० स्वर्ग कल्प तरु भूमि पर शंकर सब गुण खानि ।
सुर भूसुर प्रिय करत नित इष्ट पदारथ दानि ॥

अमर सिहाहिं संपदा देखी । द्विजगृहकरिसबभाँतिविशेषी ॥
गुरु समीप रमने सुखदाया । पढ़ैं पढ़ावैं श्रुति समुदाया ॥
सकल कला शंकर वर पाई । लही अधिक सौभाग्य बड़ाई ॥
जैसे निज सम्पति गृह जाई । सुमुखि मनोहर नारि सुहाई ॥

अथध्यानम् ॥

विद्या सकल रहस्य समेता । सीखी जिनश्री कृपा निकेता ॥
तिनको वपु अति सुंदर सोहै । उपमा योग्य तिहुंनपुर कोहै ॥
जपति चरणपंकज मदहरना । मुनिगणहृदय मोहतम हरना ॥
मुनिवरकर लालित बहुभाँती । बंदौं चरण मदन आराती ॥
जोपैचंद्रमणिम्रवितभयोजल । पावै पद्मराग मणि सरथल ॥
तहाँ सरोज प्रकट जो होई । चरण कमल उपमा लहुसोई ॥
श्री पद पद्म समान बतावैं । मुखद्विजराजसरिसकहि गावैं ॥
हम कहँयहमतभावत नाहीं । कहौं जोहै कारणयहिमाहीं ॥
पद्म पाद सेवक जिन केरो । सब जानत यश जासु घनेरो ॥

दो० प्रात मंडल द्विजराज के निशि दिन सेवत जाहि ।
तेहि मुख उपमा देतसो कवि शारदाल जाहि ॥

छं० जे पाद पुनिपुनि संत योगी हृदय पंकज महँ धरैं ।
निजहृदय पावनकरन कारण प्रेमते बहुविध करैं ॥
जेहि बदन ब्रह्मामृत स्रवत इंद्रादिसुर दुर्लभ लहैं ।
पदबदन पंकज इंदुतें यहि भाँति अतिउत्तम अहै ॥

दो० तत्त्व ज्ञान रूप फल वरहिँ भक्ति हित जोय ।
पान करहिँ व्य मोह कहँ श्रीशंकर पद दोय ॥

सकल व्यसन भक्षक जेचरना । जे अतिशय पातकके हरना ॥
मत्सर दंभ मान समुदाई । यहिसब दोष जेलेहिँ चुराई ॥
तीन ताप के जे दुखदाई ।जिनकीमहिमाअतिश्रुतिगाई॥
दया करहिं ते पद दुख हर्ता । होहिं सदा शुभमंगल कर्ता ॥
मुनि मृकण्डुके तनय सुजाना । अल्पमृत्यु सुनि तवव्रतठाना ॥

मृत्युंजय को ध्यान लगायो । तिनके लेने को यम आयो ॥
पाद प्रहार शंभु तब कीन्हा । यम भुजमें अवलौंसो चीन्हा ॥
पुनि गिरीश मंदिर अँगनाई । पाद प्रहार परत सुखदाई ॥
तहां दण्डवत जे जन करहीं । तिनके शत्रुनको पद हरहीं ॥
परब्रह्म शंकर शुभ चरना । जिनकी विरदावलि श्रुति वरना ॥
शरण जासु की मोह निवारक । श्रीपद कामादिक सुखहारक ॥
चंद्र उदय सागर उल्लाशा । होहिं सकल तमके रविनाशा ॥
तारा विधुके पास विराजा । षोडश कलासहित द्विजराजा ॥
हिमकर निर्मल किरणसुहाई । करहिं ताप अल्हाद बढ़ाई ॥
तैसे परम उदय शंकर को । बर्द्धक ब्रह्म तत्त्व सागर को ॥

सो० बाढ्यो ज्ञान प्रकाश गयो अविद्या रूप तम ।
*तार विचारविलास इनकेढिगशोभितअधिक ॥

दो० सकल कला धर नायके मधुरवाद विन्यास ।
मेटि ताप त्रय करत उर ब्रह्मानंद प्रकाश ॥

कोउकहैपदनतिमुक्तिविधाता । कोउकहहपद कैवल्य प्रदाता ॥
यहिविधिश्रुतिविदकरहिंविवादा।हमवरनैंयहविगतविखादा॥
श्रीपद भजन करैं मनलाई । प्रभु सेवक त्रिभुवन सुखदाई ॥
तत्पद पंकज रज परि रंभा । मनसों जबहि किये आरंभा ॥
तत्क्षण मुक्ति देत जग माहीं । यहि में कौनहु संशय नाहीं ॥
शंकर ऊरू अधिक विराजे । श्वेत वसनतेंहिपरछविछाजे ॥
जनु ऐरावत कर अति पावन । पयनिधिफेनसहितमनभावन॥
गौर वरण वपु परम मनोहर । कटि तट मूंज मेखला सुंदर ॥
जो सुवस्त्र पल्ली त्रय होहीं । फटिक कूट के तटपर सोहीं ॥
शंकर कटि उपमा तब होई । और न मन तर आवैं कोई ॥
प्रभु श्रीकरसुखमा अतिनीकी । उक्तिकहौंतहँभावतिजीकी ॥
वामहस्त श्रुतिग्रन्थ विचक्षण । गहे ज्ञान मुद्रा कर दक्षिण ॥
वादिस्वमत अनुसारजो भाखे । श्रुतिमहँ सोइकंटक भरिराखे ॥

* पणव ॥

सो काढ़ें मानहुं मन दीन्हें । चुटकी सों करपुस्तक लीन्हें ॥
कल्पद्रुमकिशलयकैसीद्युति।श्रीकरलखिकमलहिउपजीमति॥
दिनहुं चुरावत ये मम शोभा । निशिमहँ बढ़ैचौर उरलोभा ॥
यहभय कोकरिमन अनुमाना । पंकज करहिंउपाय सयाना ॥
सांझहिते दल रूप किवारा । लाय रहै जौलौं भिनुसारा ॥
दो० श्री शंकर की उरथली मांसल अधिक विशाल ।
रुचिर मनोहर शुभग अति राजत वरण मराल ॥
जनु*भूभ्रमन जनित श्रमहारी । जय लक्ष्मी की सेज सवाँरी ॥
वाह्यांतर रिपुके जय कारी ।युगभुजपरिघ†ख्यातिपरिहारी॥
राजहिशुभलक्षणयुतद्युतिकर । मानहु दुइजय खंभ धुरंधर ॥
सूक्ष्मता मृड़ाल छवि हरई । चन्द्र किरण उल्लंघन करई ॥
अस निर्मल उपवीत सुहावा । कहिनजाय अद्भुतछविपावा ॥
भगवत्पाद कंठ बहु राजै । अतिगँभीर जहँशब्द बिराजै ॥
वादिविजय बोला ध्वनितासू । जयशंखध्वनि सरिसप्रकासू ॥
दंत पाँति अरुनाधर माहीं । अतिसुठिउज्वलपरमसुहाहीं ॥
जनु नव विद्रुम बेलि सुहाई । तेहिमहँ शरदचन्द्रछबिछाई ॥
उड़प तेज हर श्री गुरु शंकर । उभय कपोल विराजत सुंदर ॥
मुख बासिनि भारतिकेकारन । जनु दर्पण विरचे चतुरानन ॥
सबजगको जो सुकृत उदारा । सोई मनहुं पयोधि अपारा ॥
तेहिते श्रीमुख चन्द्र मनोहर । उदयभयोजिमिसिंधुसुधाकर ॥
सुधा सुधा कर की अतिसुंदर । ब्रह्मा सृतयहि बदन मधुरतर ॥
यहिविधिहौविधुअहैंसमाना । कछु अंतर सों करहुं बखाना ॥
दो० उड़गन तेजहि हरत विधु श्री मुख तेज प्रभाव ।
देखि संत जन तेज अति बाढ़ै सहज स्वभाव ॥
लखिशंकरसन्मुखद्विजजाया । जासुदरिद्रदुखितअतिकाया ॥
क्षीर सिंधु कन्या तहँ आई । कन का मल धारा बर्षाई ॥
कमलाप्रति पात्र सी लोचन । भव सागर दुख द्वंद्वविमोचन ॥

* पृथ्वी † प्रसिद्धि ॥

सोसकि है नयनन सुरा गाई । जेहि के सुकृत पुंज समुदाई ॥
दूषणादि जे शत्रु अपारा । जीति राम पुनि सेतु सवाँरा ॥
तैसेहि जे बादी दुर्बारा । तिनहतत जे दूषण विस्तारा ॥
मेटि अलौकिन युक्ति सहेतू । जगमें प्रकट कियो श्रुतिसेतू ॥
तापस कुल हिमकर श्रीरामा । तैसे पुनि शंकर सुख धामा ॥
अतिकायादिक जे बलधामा । तिन मारे बानर संग्रामा ॥
रामकृपाचित्तवनिफिरि जागे । मृत्यु रूप निद्रा दुख त्यागे ॥
जो स्थूल देह अभिमाना । देहातम विभ्रम बलवाना ॥
सोई अति कायादि समाना । तासु नाश महँ परम सुजाना ॥
शाखा मृग समान संसारी । जन्म मरण सम्भव दुखहारी ॥
ऐसे शम्भु कटाक्ष उदारा । शरणा गत कहँ सब सुखदारा ॥
यह संसार दुःख को सारा । ख्यणक्षण क्षतिभयकंटअपारा ॥
काम दाव ज्वाला भय कारी । जहँ आरति कर्दम अतिभारी ॥

दो० अधरम मारग विकट अतिधीरज करै विनाश ।
रोग रूप बारण जहां दुखप्रद करैं प्रकाश ॥

संसृति कानन श्रम अपहरहीं । शंकर दृष्टि जहां कहुँ परहीं ॥
श्वेत विभूति त्रिपुराड मनोहर । उपमा तासु कहैकवि सुंदर ॥
कृपा समुद्र मिली जनु जाई । त्रिपथगामित्रय धारसोहाई ॥
मैं उपमा बरनौं मन भाई । वेदत्रय शिर भाष्य बनाई ॥
तेहि उपकार जो कीरति पाई । रेखा त्रय मिस सो दर्शाई ॥
मूरति श्री कामारि मनोहर । शंकर रूप सुलभ भै सुंदर ॥
यह मूरति जिनके मन भाई । तिनकोतृणसममदनदेखाई ॥
बन अज्ञान सघन गंभीरा । भव दावानल तप्त शरीरा ॥
तिन संसारिन के हित कारण । आतमज्ञान द्वार दुख टारन ॥
वट तरु तर अरु मौन विहाई । शिव मूरति भूतलपर आई ॥
श्री शंकराचार्य्य वपु धारी । विचरत हर कैलाशबिहारी ॥

अथ गुण वर्णन

जबते प्रकट भये करुणाकर । सेवक चिंता हृदयताप हर ॥
बड़े प्रचंड प्रबल रिपु भारी । अतिजल्पकमिथ्यापथधारी ॥
जल्प वितंडा माहिं चतुर तर । विजयी पंडित बड़े धुरंधर ॥
भास्विवेक आदिक जगनाना । कीन्हेंडर तिनके मनथाना ॥
वैशेषिक गण की चतुराई । गई बिलाय न कहुँ दर्शाई ॥
इनमहिमहँ *क्रतुगणविस्तारा । उन शिव दक्ष यज्ञ संहारा ॥
यही दुहुन महँ आयो भेदा । उभय हरें प्रणतारत खेदा ॥

दो० इनहुँ जीतो काम कहँ द्वौ सर्वज्ञ समान ।
अस्तुति इनहुँ की करैं सुर नर विज्ञ सुजान ॥

विद्वज्जन त्रिलोक महँ जेते । कोउ समतर आवैं नहिं तेते ॥
एक कला उपमा जो लहई । शिव सन्मुखऐसो कोअहई ॥
कहे जो कोउते आपु समाना । नाहीं करिहै कौन सुजाना ॥
स्वर्ग विपिनि सुर वृक्ष अनंता । तरुवर सोन पुष्प कर चंता ॥
तिनपुष्पन सह भ्रमर वरूथा । तिमिअसंख्यशंकरगुणयूथा ॥
विषय लालसा को प्रभुमारा । शास्त्र मनोहर बस्तु बिचारा ॥
हिंसा क्रोध तथा कटु बानी । क्षमा द्वार इन सबकी हानी ॥
मिथ्या भाषण संचय लोभा । दैन्यजनित जोमनकरक्षोभा ॥
श्री शंकर तिहुँ पुर उजियारे । गहि संतोष सकल संहारे ॥
दोष बड़ो मत्सर बरि आरा । अनसूया ते ताहि निवारा ॥
औरनके लखि गुणगणपांती । मद अरुमान हनेयहिभांती ॥
यह तृष्णा जो प्रेतिनि भारी । तृप्ति परस गुणसों संहारी ॥
शिष्यनि के जो दोष मिटावैं । तिन समीप ते कैसे आवैं ॥

छं० जोस्वर्ग मुक्ति बिनाश करसो काम शिष्यनको हयो ॥
निःशेष दोषन को शरीरहि चूर्णसम पेषण कियो ॥
लोभादिरिपु समुदायको तृण सरिस जो क्षणमहँहनै ॥
सो पूज्य पाद दयाल सोसों कहौ क्यों बरणत बनै ॥

---

* यज्ञ ॥

सो० शंकर शुभ गुण देखि दिग्गज अरु वाकी बधू ।
उत्तमप्रश्न विशेषि किये सो अब वर्णन करौं ॥

दिनमें नाथ निशाकर किरना । हैं ये कौन धर्मतपर हरना ॥
मुग्धे ये विधुकर नहिं जानो । जोमैंकहहुँ वचनचितआनो ॥
शंकर नव अवतार सोहावन । तिनकेगुणगनदिग्मनभावन ॥
प्रीतम जो यह तव फुर बानी । उत्पल पांती क्यों विकसानी ॥
श्याम कमल बिनु विधुकरपाये । दूजे केहि जगमाहिं फुलाये ॥
प्रिया श्याम पंकज यह नाहीं । जो संशय तुम्हरे मनमाहीं ॥
दिग्वनिता श्री शंकर के गुन । इत उतसब देखैं विस्मितमन ॥
तिनके श्याम अपांग सोहावन । फैलरहे सर्बदिशमनभावन ॥
यहि विधि उत्तर प्रश्न सोहाये । अतिराजहिं सज्जनमनभाये ॥
शंकर गुण गण पांति सोहाई । सुखदायिन सबकेमन भाई ॥
जेहि कहँ मधु देखें नहिं भावें । जो दोयहु माधुर्य्य सिखावें ॥
इक्षू क्षीर अनादर करहीं । सकल माधुरी कोमदहरहीं ॥
अति कमनीय सचंचल चाला । जो उलंघति सब दिग्जाला ॥
परम धन्य तेहिको हमसानहिं । तेहिसमानऔरेनहिंजानहिं ॥

दो० मुनि शेखर को क्षमा गुण वर्णन करैं कवीश ।
तौ धरतीकी कीर्त्तिसब वृथा होयअरु खीस ॥

जो विद्या गुण कहिये तासू । होहिं गुहादिक मदकरहासू ॥
करिये जो वैराग प्रकाशा । तौशुकको यशकीनहिंआशा ॥
वहु जल्पन कहँलोंकरिजाहीं । उपमाको त्रिभुवनकोउ नाहीं ॥
शंकर मूरति महँ गुण नाना । वसहिंक्षमाजहँधरणिसमाना ॥
कीरति रुचिर बढ़ावन हारी । है विद्या शारद अनुहारी ॥
भक्त मनोरथ पूरण कारी । कल्पलतादिककीछविहारी ॥
प्राकृत जन की उपमा दीन्हे । को नहिंमंद बनै अस कीन्हे ॥
शंकर तुल्य कौन जग माहीं । भयो नहै कोउ होनो नाहीं ॥
जिमि कनकाचलहै अतिसुंदर । तीनकालतेहिकीनहिंसरिवर ॥

सोकुलतिनसोंअधिक सोहावा । भूयगाता सुशील मनभावा ॥
शील रुचिर भो विद्या पाई । विद्या विनय पाय सरसाई ॥
शंकर कल्प विटप संसारा । शोभनयशसोइसुमनअपारा ॥
गुण पल्लव जहँ परम प्रकाशा । बुधमधुकर सेवहिं चहुँपासा ॥
दो० अथवा पंडित अमर नित आवैं जेहि के पास ।
ज्ञान मधुरफल क्षमारस विद्या मनहुँ सुवास ॥

अथ वाणी वर्णन

दो० शंकर बाणी चातुरी जेहि क्यहुँ सेवन कीन्ह ।
शेषकपिलकांणादको गिरानतेहिमनदीन्ह ॥
और गिरा केहि लेखे माहीं । तेहिते बुध आदर तहँनाहीं ॥
भट्ट भास्कर वाद कुपंका । रह्यो दुर्दशा रूप कलंका ॥
बूड़िरहेश्रु ति शिरतेहिमाहीं । काढ़िलियोजिनजनुगाहिबाहीं॥
ऐसी शंकर गिरा रसा इनि । अक्षरब्रह्मसवैसुख दायिनि ॥
नृपति भगीरथ के हित लागी । शंकर जटाजूट कहँ त्यागी ॥
हिमगिरि ह्वै सुरसरिकी धारा । चली प्रवाह वेग वरि आरा ॥
श्री शंकर हिम शैल स्वरूपा । बोलनिगिरि गर्जनअनुरूपा ॥
सुरसरि सम प्रभु गिरा प्रवाहा । नहिंपावहिं बादीगणथाहा ॥
अस प्रवाह सोहैं महि माहीं । दुर्भिक्ष दुकाल भय नाहीं ॥
जेहिविधि अमर नदीके तीरा । नहिंदुर्भिक्ष जनितकछुपीरा ।
चित्त* मतंगज की दृढ़वारी । बोधरूप नृपकी पुरि प्यारी ॥
दूरि भयो जेहि सों दुर्वादा । मेटतिहैजोसकलबिखादा ॥
सूरि धरैं उर हार बनाई । चिंता तू न वशरि सोहाई ॥
वेद चतुरता जेहि सों बरनी । जो भवसागर की दृढ़ तरनी ॥
भगवत्पाद बैखरी बानी । उदय काहु जगमों सरसानी ॥
शंकर उक्ति निगुंफ सोहावा । अंतिउत्कर्ष जासुजगछावा ॥
जेहिमुनि वादिन आवन बाता । भयोमनहुं जिह्वा कर पाता ॥
सुनत जाहिरसना बल नाशा । जिमिवगलामुखिमंत्रप्रकाशा॥

---

* गजबन्ध । नीबेड़ो ॥

॥ दो० वेद शिखर पंकज सुभग सो जनु सुरभि उदार ।
॥ जय लक्ष्मी बिरदावली घंटा शब्द अपार ॥

कस्तूरी कर्पूर सुगंधा । जहांयशहिं अ स्वचनप्रबंधा ॥
त्रिविध ताप उल्लास चोरावै । विधुकाको मदमान मिटावै ॥
खांड़ दाख मधु सम मधुराई । कोअसजगजेहिकोनसोहाई ॥
ऐसे मुनि शेखर व्योहारा । केहिकोदेहि न मोदअपारा ॥
सत अद्वैत राज पथ सोहा । जहां भेद कंटक अवरोहा ॥
शंकर बाणी प्रबंध उदारा । सोई बँधो जहँ बंदन वारा ॥
विगत राग ईर्षा अभिमाना । ते सज्जनहैं पथिक समाना ॥
तिनको व्यापारहीं तहँ पांती । तिनकहँसुखदसदासबभांती ॥
यहसंसार सो विपिन अपारा । बुद्धिरूप मारग विस्तारा ॥
दुष्ट नीति सोइ ईति समाना । गईविलापभीति जेहिमाना ॥
अत प्रभु वचन वतास सोहाये । प्रसादादि गुण युत सनभाये ॥
दाव सदृश जनमनपरितापा । गयोसकलअसुखअतिव्यापा ॥
युक्तिखानि शिवसूक्तिसोहाई । सुनिसुनि ग्रहशंकाडरआई ॥
रसना पर इनके सुख रासी । नाचहि शारद सदाहुलासी ॥
तेहिके कंकणको ध्वनिभारी । नूपुर सुस्वर किधौ मनहारी ॥
क्षुद्र घंटिका को रव एहा । अस उपजै लोगन संदेहा ॥
गिरा गुंफ शंकर को चोखा । बर्षत जल घनकै सो धोखा ॥
पवन क्षुभित पय सिंधु तरंगा । तिनकर करहि मानमदभंगा ॥
पुनिसोसाल तिगवं नशावन । गिरागुंफ प्रभुको अतिपावन ॥

छं० भाष्यादिरूप मनोज्ञ बाणी जन अविद्या जो हरै ।
॥ सुरबैरि वादिसमूह शंका नाशिनी सब सुखकरै ॥
॥ आपदनिवारिणि सुक्तियोगीसुधास्वादु रसायनी ।
॥ सोहरहु ममभव रोगको अस्तदेहुगति अनपायनी ॥
॥ छं० आयासको अंकुर मनहुं अरु बीज है मन तापको ।
॥ सब क्लेशको रंग स्थली प्रासादहै सब पापको ॥

रोगादि दोष समस्त को प्रस्ताव डिंडिम रूपजो ।
है अनृतकी दृढ मूल चिंता को मनो उद्यान सो ॥
सो० ऐसो जो दुख रूप अहंकार देहादि गत ।
मुनिवर उक्ति अनूप नाश करै तत्काल तेहि ॥
वेद पुरातन सीप मुक्ता मणि शंकर गिरा ।
मुक्ति भवन की दीप हरु दुरंत भवभय सदा ॥
सो० जैन शिरोमणि सूरि क्षपणकादि जेहि हत किये ।
अहै सजीवनि मूरि अनुवर्ती सब जनन कहँ ॥
झंझा मारुत बढहिं तरंगा । कोलाहल परि पूरित गंगा ॥
ऐसे शिव के बचन प्रवाहा । नाशहिं मनकी दारुण दाहा ॥
झूठ मतन की रज दुख दाई । बैठि गई अब नहिं दर्शाई ॥
करुणा सिंधु गिरा संदोहा । नाश करहिं सज्जनमनमोहा ॥
अति सौरभ मालती नवीना । तेहिसमानप्रियकारिअदीना ॥
कल्प वृक्ष मकरंद सो हाये । तहँ क्रीडत निजगुण हर्षाये ॥
करुणा सागर आदर दीन्हें । ऐसे बैन उचारण कीन्हें ॥
ते संतन को चित्त रमावैं । अरु आमोद मदहि सरसावैं ॥
धार प्रवाह सरस सुख राशी । बचनामृत धारासु प्रकाशी ॥
जे सज्जन तहँ क्रीडा करहीं । पुनि नहिं द्वैतबचनमनधरहीं ॥
हेम तंतु वर बसन सवाँरा । पहिरहिं जो नर परम उदारा ॥
सो० तेहिको किमि प्रियहोय महा दरिद्री योग पुनि ।
मलिन काथरी जोय फटे पुराने बसन को ॥
ऐसी मुनिवर की जो बानी । बुधजनशिक्षाकी शुभखानी ॥
तेहिसो करिसपक्ष निजपक्षा । जेहिकी बुद्धि भई अतिदक्षा ॥
क्षीर क्षार सम देखहिं सोई । मधुचाखनकी रुचिनहिंहोई ॥
रूखी जानि सितानहिं लेहीं । कहो ऊखमहँ कब मन देहीं ॥
दाख ताहि कैसेहु नहिं भावै । कदलीकहँ केहिविधिमनलावै ॥
शिवबानी लखि परमसोहाई । मधु बेची आपनि मधुराई ॥

आनँदसहितदास पुनि दीन्हीं । पात्रजानिपय अर्पण कीन्हीं ॥
ऊख मधुरता बलकरिलीन्हीं । सुधा चोर भयते धरि दीन्हीं ॥
तेहि कारण श्री शंकर बानी । अद्भुत महा मधुर गुणखानी ॥
कहिआवैसोकिमिमोहिंपाहीं । जेहिकोउपमात्रिभुवननाहीं ॥
शम्भु गिरा सौरभ सरसाई । सोकपूर ने ऋण कर पाई ॥
मृगमदपढ़ि सम्पादन कीन्हीं । सेवा करि मल्ली गणालीन्हीं ॥
केसर मोल देय सो पाई । चंदन तरुवर लीन्हि चोराई ॥
धन्य गिरा सौगंध्य मनोहर । महिमा जासु सदा सर्वोपर ॥
रुचिरमधुरदधि हमने खाये । बहुदिन क्षीर स्वादुपुनि पाये ॥
देखी ऊख दाख पुनि चाखा । रस मकरंद हृदय करि राखा ॥
कदलीअधिकमधुर हमखाई । अब श्रीशंकर गिरा सोहाई ॥
पायन रुचिउनकोमन माहीं । साध सुधाहू की अब नाहीं ॥

छं० संतप्त भव संताप कहँ कर्पूर दृष्टि विहारणी ।
श्रीमुक्ति मृगनयनीमनोहरगात मोती हारणी ॥
अद्वैत आतम बोध सर हँसी अनूपम पावनी ।
सो करहु ममबुद्धि श्रीशंकर गिरा मनभावनी ॥
वेदालबालसुरेश आदिकवचनजल सींचीगई ।
कैवल्यआशपलाशबुधमनशालपरजोअतिछई॥
हैतत्त्वज्ञान प्रसून सुन्दर अमृत फल द्विज सेवई ।
सोबचनबेलिमुनीशको प्राशस्त्यगुणसोहिंदेवई॥

सो० नृत्य समय भूतेश जटा मुकुट अति विशदते ।
सुर सरिधार विशेष कोलाहल ध्वनि सों बहैं ॥

तिनकी अस्पर्द्धा बहु करहीं । गिरा प्रवाह जे प्रभु उचरहीं ॥
अमृत सरोवर सरित अपारा । ढाहे कूल तुरा धति धारा ॥
तिन सरि की परि पाटी जैसी । शंकर गिरा सोह पुनि तैसी ॥
उल्लंघित श्रुति पथ मर्यादा । वादिमानमथि देति विषादा ॥
वेद शिखर अवगाहन हारी । शंकर गिरा संतजन प्यारी ॥

श्री शंकराचार्य्य मुनि राजा । ऐसी बाणी सहित बिराजा ॥
मान सहित देवासुर पांती । क्षीर समुद्र मथो बहुभांती ॥
भुज बल फेरत मंदर गाढ़े । सुभितसिंधु लहराउतबाढ़े ॥
तिनके तुल्य वचन शंकर के । धारा पात अमृत जल भरके ॥
भव संताप मगन जन दीना । तिनकहँ सुखप्रदपरमप्रवीना ॥
प्रभुकीकिमि स्तुतिकहि जाई । जासु गिरा ऐसी सुखदाई ॥

अथ यश बर्णन

केश युद्ध पय निधि सोठाना । गदा युद्ध हिम करसों माना ॥
बाहु समर शिवगिरिसन करई । परमचतुरशिवयशमनहरई ॥
कथा युद्ध वस्तुन की आई । तब काहू यह बात चलाई ॥
है परि शुद्ध चंद्र सुखदाई । दूजे तब यह गिरा सुनाई ॥
जन्म सिंधु विष जासु सहोदर । दिन मलीन रजनीमहँ सुंदर ॥
गुरुतियगमनकलंक बिराजहि । पुनिपुनिग्रसेराहुद्विजराजहि ॥
कोककमलविरहिनदुखदायक । नितप्रतिबढ़ैघटै निशिनायक ॥

दो० बहु कलंक अवगुण भवन नहिं पुनीत द्विजराज ।
अति पावन शंकर सुयश विगत कलंक बिराज ॥

यहिविधिनिर्जितउडुगणनाहा । निजकलंकखोदनसोचाहा ॥
हिमकर शंकर सेवन करई । गंग तरंग शीश पर धरई ॥
शिवयश दशदिशनभलोपूरा । सोह अनूप मनोहर रूरा ॥
दशदिशि मृगनयनी कमनीया । तिनकर केशपाशरमनीया ॥
तहँ नव मल्ली माल उदारा । परम चतुर रचना बिस्तारा ॥
बहुरि सोयश दिनारिललारहि । चंदन रेखा रुचिर सँवारहि ॥
पुनि दिग्वनिता कंठ मनोहर । मुक्ता हार भयो यश सुन्दर ॥
शंकर यश सम हिम करनाहीं । कहँजोहैकारणवहिमाहीं ॥
यहिकहँ सबदिशि अंकमलाई । शशधरएककरक प्रतिजाई ॥
किरण रूप कर सोयह चंदा । तारा कार्य लहै आनंदा ॥
सो क्रम सो उडगण महँ जाई । है प्रसिद्ध यश बिधुसरसाई ॥

स्वर्गसदा यहि चुंबन करहीं। सोनतहां नित थिरताधरहीं ॥
करहि वियंभंगा आलिंगन। तेहि चंद्रहि कबहुं मालिंन ॥
लोकालोकदरीलखिहर्षन्ति । तेहिनिशिपतिकीतहँनाहींगति॥
शेष करहियहि शशिपरप्रीती। तहाँ गमन की तासु नरीती ।
यहिविधितीनिलोकसुखकारी। शंकर सुयश चंद्रकविहारी ॥

दो० मुनिशेखर यश सिंधु की लहरें सहित विलाश ।
सकल दशा के अंत लों पूरों करैं प्रकाश ॥
चंद्र किरण कहँ देखिके बहुत करहिं उपहाश ।
तिनहिंविलोकत होय नित सुधामानकर नाश ॥

जग व्यापी जो तम अज्ञाना। घातकरहि तेहि भानुसमाना॥
पुनि शिव कीरति रूपामाला। राजै बहुगुण भरी विशाला॥
अति उत्कंठा सह पंचानन। नखवर मत्त गयंद विदारन ॥
कीन्हिप्रकट मुक्ता गनमाला ।अतिशयसुखमाजासुविशाला॥
तेहिसन बाहु युद्धकी लीला ।कीरतिकरहिविमलगुणशीला॥
कमलिनि प्रश्नकरी हर्षित उर। लोका लोक दरी प्रति सुंदर ॥
तोहि अतिशय हर्षित मैं देखों। निजमनमें यहकारण लेखों॥
कीरति हिमकर प्रीतम संगा। भो आलिंगन मिलन प्रसंगा॥
लोका लोक दरी तब कहेऊ। सखितबगात प्रफुल्लितभयऊ॥
अति प्रसन्न मैं पावहुं तोहीं। निज सुखहेतु सुनावहु मोहीं॥
प्रश्न परस्पर को वर उत्तर। भई उभय मुसुकानि मनोहर॥
बहुत गर्व जिनको दुर्बारा। ऐसे वादी विदुष अपारा॥
तूल समूह समान विराजे। शंभु प्रभंजन सों सब भाजे॥
हिमकर सम जो बोध अबाधा। तासु जन्म थल सिंधुअगाधा॥
पुनि भवदाव ताप संहारी। शंकर मेघ सरस सुखकारी॥
ऐसी कीरति सहित विराजा। जयतिसदा शंकर मुनिराजा॥

दो० भारतादि इतिहास वर अरु पुराण सुखसार ।
स्मृति नानाशास्त्रप्रभु पुनि पुनि किये विचार ॥

लोक वेद अति लही बड़ाई । पाई सर्वज्ञता सुहाई ॥
व्यास मुनीश्वर गिरा सुहावनि । शांतिपर्वगतअतिशयपावनि ॥
बहुत विचार कीन्ह मन लाई । परन शांति पाई सुख छाई ॥
शांति जनित शुद्धत्व सुहावा । श्रीशंकरा चार्य्य मुनिपावा ॥
व्याख्या चतुर वदन अतिसुंदर । तेहि कारण चतुरानन शंकर ॥
ये मिथ्या प्रपंच को जानैं । वे चतुरानन सांचो मानैं ॥
नाग शरीर कहावत भोगा । श्रीहरिको तेहिकर संयोगा ॥
तेहि कारण पुरोत्तम भोगी । ये पुरुषोत्तम भोग वियोगी ॥
काम जयी दूनो गत माना । वे विरूप ये काम समाना ॥
अस अनूप जग गुरु महराजा । जयतिसदा शंकर यतिराजा ॥
श्री शंकर ढिग पंडित आवैं । ते बहुविधि शंका मनलावैं ॥
मुख बैठी शारद नित सेवा । हैं किमु ये कमला सनदेवा ॥
लक्ष्मी क्षमारूप इन पाहीं । कि मुये विश्वम्भर तौ नाहीं ॥
आरज सेवित चरण निहारी । काम विजयकी कीरतिभारी ॥

दो० भय न विनाशन प्रकट भे श्री शंकर के रूप ।
ऐसी शंकर बुध करैं देखि प्रभाव अनूप ॥

एक राम महँ जेहिकी प्रीती । मायाभिक्षु दिखाय प्रतीती ॥
सीता को रावण लै गयऊ । समर सुरारिनसों तब भयऊ ॥
रावणप्रति अति निष्ठुर सीता । तासुहेतु रिपुदल प्रभु जीता ॥
तापस वेष राम लै आये । सीतहि सुरनरमुनि यशगाये ॥
आतम विद्या सिया समाना । परब्रह्म जेहि सदा सुहाना ॥
क्षणिक ज्ञान बादी दशकंधर । हरिलैगो निजमतबलदुस्तर ॥
देखि अनेक जीव बादी सत । निठुररहीकरिबुधिउनकोहत ॥
ते विवेक बैरी गण जीती । लाये शंकर ताहि सप्रीती ॥
मुनिवर योग काछसब काछे । तापस वेष विराजत आछे ॥
दो० ब्रह्मा नंद स्वरूप महँ सर्बहि रमावैजोय ।

ज्ञाता तीनहुँ भवन के बसहु हृदय मम सोय ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिब्राजकाचार्यश्री७स्वामिरामकृष्णाभार तीशिष्य विरचितेश्रीशंकरदिग्विजये विद्याध्यायन यज्ञोपवीतादिचरित्रवर्णनपरश्चतुर्थसर्गः ४ ॥

श्लोक ॥ बन्देसदाज्ञानघनस्वरूपं स्वगययाग्रानिर्मितदिव्यवेषं । यतीश्वरैसेवितपादपीठंश्रीशंकरंकल्पतरुंमहेशं १

छं० यहिभाँति सब श्रुति पारगामी वर्षसप्तम लौभये ।
पुनिपाय गुरुआयसुकृपानिधि भवनमेंअपने गये ॥
निशिदिनकरैं निजमातुसेवा पढहिं वेदनको सदा ।
दुहुकाल अग्नि दिनेशपूजैं भक्तिपरि पूरन हदा ॥
सो० कहे जौन शुभ धर्म्म ऋषिन स्वयंभू आदिने ।
सदा करैं निज कर्म्म तथा प्रकाशहिं तरणिसम ॥
शंकर बालहि देखि युवा क्रोध अपनो तजैं ।
अति प्रभाव उर लेखि वृद्ध देहिं आसन अपन ॥

जेजे जन प्रभु सन्मुख आवैं । हाथजोरि शिर तुरत नवावैं ॥
कोमलबचन चरितशुठि नीके । सब अँग सबल भावते जीके ॥
ये सबगुण लखिमातु सयानी । अनुपम तनय जानि हर्षानी ॥
एक समय शङ्कर की माता । चलहिँ मंदगति जर्जर गाता ॥
मज्जन हेतु सरिता पहँ जाई । घाम जनित पीड़ा अति पाई ॥
कीन तहाँकछुकालविलम्बा । गृहनहिं आई शंकर अम्बा ॥
तब प्रभु मनअतिशङ्का छाई । नदी तीर देखी सो जाई ॥
कमल पत्र जलयुत लै शङ्कर । शीतल पवन करी जननी पर ॥
सावधान करि यतन समेता । गृह लैगे श्री कृपा निकेता ॥
तब शङ्करअस मन अनुमाना । जननी करहिं सदा अस्नाना ॥
जाय नदी तट नितश्रम पावै । केहिविधि मातुकलेशनशावै ॥
लावहुँ जोसरि निजगृह पासा । तो जननी कहँ होय सुपासा ॥

यहविचार सरिता तट जाई । स्तुति तासुकीन्हि मन भाई ॥
छंद अलंकृत पद सुख कारी । परमरुचिरकविजनमनहारी ॥
पूर्णा नदी परम सुख पावा । हर्षित ऐसो वचन सुनावा ॥
जगहित वाल बसे मन तेरे । तव इच्छा पूजि है सबेरे ॥
यह बरदान नदी मन पायो । विनयसहितअपनेगृहआयो ॥
बीती राति भयो भिनसारा । दिनपतिकरफैलो उजियारा ॥
शीत पवनजलशीकर पावनि । लोगन देखी सरित सुहावनि ॥
माधव मंदिर तीर सुहाई । मानहुँ नई नदी बहि आई ॥
सो० दुख दरिद्र हरतार सकल अलौकिक चरितमुनि ।
केरल नृपहि अपार बढ़ी लालसा दरश की ॥
श्री शंकरहि बोलावन काजा । निजवर मंत्री पठयो राजा ॥
सचिवप्रवीणशम्भुढिगआवा । बहुकरिणीधन सन्मुखलावा ॥
सरस मनोहर मंजुल बचना । मधुर सुहावनि बाणीरचना ॥
सकल उपायन आगे राखी । बोलाचतुरविनयबड़िभाखी ॥
जेहिसमान नहिंकाहुहिबोत्रा । जेहिके सरिस नकोईयोवा ॥
जासु सभा महँ द्विजवर भारी । राजहिं सकल हेमपटधारी ॥
पूजित बसहिं सभासद पंडित । विद्या मूरति बोध अखंडित ॥
जिनकी सरस बाद गाथा सुनि । मौनहोहिं बादी मानहुँमुनि ॥
तेहि राजा ने मोहिं पठायो । समअतिसुक्षतइहाँलैआयो ॥
जेहिने जीते सकल महीपा । स्तूयमान चरणाङ्कुलदीपा ॥
श्री पदरेणु सकल सुख साजा । आदर युत पावैं मम राजा ॥
मत्त गयंद सकल गुण खानी । पठयो तवहित नृप सन्मानी ॥
राज भवन सब भाँति सोहावन । निजपदधूरिकरहुतेहिपावन ॥
यहिविधि मुनी सचिव बखानी । दूत चातुरी मय रस सानी ॥
अत्युदार वाणी श्री शंकर । बोलेजोयजेहिकीस्तुतिकर ॥
भिक्षा अन्न अजिन परिधाना । कष्ट सहित सवनेमविधाना ॥
बटू धर्म्म जे वेद बताये । होहिं सुखद कीन्हेमनलाये ॥

अपने कर्म छांड़िये भोगा । रुचहिंगजादिकनहिंजिमिरोगा ॥
हे अमात्य वर नृप सन जाई । कहो हमार वचन समुझाई ॥

दो० राजा अपने प्रजा कहँ करे धर्म्म उपदेश ।
देहि सबन कहँ जीवका सोई प्रबर नरेश ॥

देवादिक ऋण बिगत सुखारी । वर्णाश्रम निजपथअनुसारी
करिबो उचित नृपति को एहू । तुमहूं सब सोइ यतन करेहू ॥
सुनिये वचन लौटि सो गयऊ । शंकरचरितनृपतिसनकहेऊ ॥
राजा सुनि वृत्तान्त सुहावा । आपुहिचलिशंकरपहँआवा ॥
बाल रूप ऋषिवर छवि छाजे । भूसुर बालक मध्य बिराजे ॥
अति निर्मल उपवीत सुहाना । भासमानविधुकिरणसमाना ॥
जनुहिमगिरद्रुमसहित सुहावा । स्वच्छ जन्हुतनयाछविछावा ॥
श्यामल हरिण चर्म परिधाना । करैंउचित निजकर्मविधाना ॥
नूतनां बुद इवांबर धारी । पूत नारि * भ्राता अनुहारी ॥
हेम सरिस मौंजी छबि छाई । भासि रहीकटि परम सुहाई ॥
मानहुँ कल्प बेलि रुचि राई । कल्प विटप सुखमा सरसाई ॥
मंद हास मुख पद्म बिराजा । दर्शन पाय सुखी अति राजा ॥
बार बार करि दंड प्रणामा । मान्योविधिसमसबवरधामा ॥
शिव पूंछी तेहि कुशल भलाई । नृप शेखर बरनी हरषाई ॥
अयुत मोहर प्रभु आगे राखी । प्रीतिसहितविनतीबहुभाखी ॥
नाटक त्रय जे आपु बनाये । बहुरिनृपतिशिवकहँ दर्शाये ॥

दो० रस, गुण, रीति, विशिष्टते, भद्र, सन्धि, युतभाव ।

१ शृंगारादयः २ प्रसादादयः ३ वैदर्भ्यादि ४ सुखप्रमुखादि ५

संग्रह सो सब देखि कै हर्षि कह्यो मुनि राव ॥

मांगु चतुर नर पति बरदाना । हौं प्रसन्न तैं अति गुणवाना ॥
सुनी गिरा हृदयंगम सारा । श्रवणसुखदतुलितामृतधारा ॥
कर संपुट कीन्हे नर नाहा । निजसमानसुतकर वरचाहा ॥
शंकर बोले सुनु महराजा । यह धन हमरेकौने काजा ॥

* बलदेव ॥

मम गृह बासि जनन कहँ देहू । सुखसों गमन करहु निजगेहू ॥
पूरो ह्वै हैं तव अभिलाषा । रहसि बुलाय ताहिसोंभाषा ॥
जेहि उपाय नृप संतति होई । सिखयो प्रभु आराधन सोई ॥
इष्ट विधान सुनत हर्षाना । सकलइष्ट फलकरतलजाना ॥
यहिविधि श्रीशंकर भगवाना । कीन्हींतासुउचितसनमाना ॥
सकल कलाधर बर नर नाहा । गाये नगर जाय गुण गाहा ॥
सबबिधि आपु कृतारथ जानी । उदित नरेश परम सुखमानी ॥
कवि कोविद श्रुति पारंगामी । आय भये शंकर अनुगामी ॥
शेष कुशलता सीखन हेतू । पढ़ैं सदा सेवहिं वृषकेतू ॥
आपु पढ़े जो वेद सुभागा । कीन्हों सार सार विभागा ॥
सो शिष्यन के उर धरि दीन्हें । मतनमोद सागर सब कीन्हें ॥
द्विजवर सकल करैं सन्माना । नहीं धन्यकोउ जासुसमाना ॥
सर्व तत्त्व के जाननि हारे । लोकवेद विधिको अनुसारे ॥
मातु पूजि परितोष बढ़ावा । यहिप्रकारकछुकालबितावा ॥

दो० माता शंकर के शरण सो जननी हितकारि ।
विरह परस्पर को सहन कठिन उभयभो भारि ॥

तदपि ब्याहकी रुचि मनमाहीं । सपनेहु श्री शंकर के नाहीं ॥
देव देव शंकर सुर भूपा । जानत निर्विकार निजरूपा ॥
यथा सुमेरु शिखर गृहपाई । पुनिकिताहिमरुधरणिसुहाई ॥
तदपि बंधुनिजमति अनुसारा । पाणिग्रहणाकरकरहिँविचारा ॥
कुलविद्याधन गुण जहँजानहिँ । वरसमान कन्या अनुमानहिँ ॥
एक दिवस मुनिवर गुण गाये । दर्शन हित शंकरपहँ आये ॥
श्री दधीचि उपमन्यु सुजाना । अरुअगस्त्यगौतम गुणवाना ॥
त्रितादिकऋषिमुनिगणदेखी । शंकर उठे सनेह विशेषी ॥
मातुसहितकरिबहुविधिपूजन । स्वागतविनयकीन्हिहर्षितमन ॥
हाथ जोरि आसन बैठारे । ऋषय मुदितमुख पद्मनिहारे ॥
सकल मुनीश्वर शंकर साथा । कहन लगे परमारथ गाथा ॥

कथा सकल जननी शिर नाई । कह्योमुनिनसनविनयसुनाई ॥
हम कृतकृत्य जन्म फल पाये । तुम जगपूजित समगृहआये ॥
कहँ कलियुग दोषनकोभाजन । कहँतवचरणकमल करदर्शन ॥
जोमम पुण्यभयो यह लाहा । तौ बहु सुकृत नजाय सराहा ॥
यहबालक अतिशयलरिकाई । वेद पारगामी मुनि राई ॥
पुनिमहिमाकीअसिअधिकाई । अचरज तवन चरितसमुदाई ॥
अति दुर्लभ जो दरश तुम्हारा । सो तुम आप सदन पगुधारा ॥
दो० कृपादृष्टि अतिशय करौ यहिकर सुकृत विशाल ।
मोरे सुनिबे योग जो भव तुम कहो कृपाल ॥ ॥
सादर सुनि जननी की बानी । मुनि प्रेरित अगस्त्यबिज्ञानी ॥
कहन लगे सुनु सती सयानी । तुमसेये शिव मन व्रत बानी ॥
दंपति को तबअधिक निहारी । ह्वै प्रसन्न प्रगटे त्रिपुरारी ॥
हँसि बोले शंकर दुख भंजन । रजनी बल्लभ खंड विभूषन ॥
दू रुख बहुत एक सुत ज्ञानी । मांगहु जो तुम्हरे मन मानी ॥
एक तनय सर्वज्ञ सुजाना । शिवगुरु मांगेहु यहवरदाना ॥
नर अरु नाग सुरा सुर जोई । शिव समान सर्वज्ञ न कोई ॥
द्विजअभिलाष सिद्धजेहिहोई । तुम्हरे भाग प्रकट भा सोई ॥
ऐसी सुनि मुनिवर की बाणी । मुदित मातु जोरे युग पाणी ॥
केती आयु दया करि कहऊ । तुमसबकछुमुनि जानतअहऊ ॥
षोड़श वर्ष अवस्था जानहुं । तदपि यह्वनिज उरतुमआनहुं ॥
अष्ट अष्ट सम्बत समुदाई । रहिहैं पुनि कछु कारणपाई ॥
भावी कथा कहैं मुनि ज्ञानी । कियो निवासऋषयसुबानी ॥
विदा मांगऋषि शङ्कर पाहीं । गे सब निजनिजआश्रमसाहीं ॥
करिरिणहिमानहुआँकुशलागा । तिमिदुखपायोमुनिवरबागा ॥
बड़े पवन कदली गति जैसी । ऋषि के बचन मातु भे तैसी ॥
पुष्कररणीजिमि ग्रीषम पाई । तिमि जननीतनगयोसुखाई ॥
दो० शोक विकल जननी निरखि श्रीशङ्कर मति धीर ।

तासु प्रबोधन करन हित बोले गिरा गँभीर ॥
जानहु नश्वर तुम संसारा । वृथा करहु यहशोक अपारा ॥
चीन बसन की ध्वजा सवाँरी । कम्पित प्रबल पवनकीमारी ॥
ताहू सों अति चञ्चल देहा । अस्थिर जानि करै को नेहा ॥
मूढ़हु यह तनथिर नहिंजाना । किमिकहियेज्यहिकोकछुज्ञाना ॥
केते सुत महि लालन कीन्हें । केती वधू भोग मन दीन्हें ॥
कहाँ सुवन कहँ वधू सोहाई । भव सँग पथिक संगकी नाई ॥
भवभर मत लोगन सुख नाहीं । देखौ करि विचार मनमाहीं ॥
तेहि कारणलै*चौथाअश्रम । करिहौंअतिशयप्रयतनमहाश्रम ॥
जेहि विधिमुक्तहोय भवबंधन । औरन दूजी बात मेरे मन ॥
क्रूर कठोर सुनी सुत बानी । दुगुन शोक पीड़ा सर सानी ॥
नयन बहै आँसुन की धारा । कोकहिसकै शोचकर पारा ॥
गद्गदकंठ न कछु कहिजाता । उरमहँ दुख सुख आवनबाता ॥
धीरज बाँधि नयन जलरोकी । कहै मातु सुतमुखअवलोकी ॥
यहिबुधित्यागिसुनहुममबाता । गृही होहु पहिले बलि माता ॥
होहिं तुम्हारे तनय उदारा । करिये बहुत यज्ञ विस्तारा ॥
तब करियो संन्यास सोहावा । यह क्रम सब वेदन में गावा ॥
जन्म लेहिं जग में द्विज जेते । त्रयऋणगाऋणी होहिं सुततेते ॥
दो० विद्या ते ऋषि ऋण पितर पुत्र भये सों जाय ।
ऋण देवन को तब मिटै करै यज्ञ मन लाय ॥
त्रयऋण मेटिलेय द्विजजबहीं । मुक्तिमाहि मन लावै तबहीं ॥
श्रुति स्मृति सब जानत नीके । मानहुँ तात बचन जननीके ॥
तुमहीं एक मोर आधारा । दूजो नहिं घर बूढ़ो बारा ॥
सो तुम प्राणनहूं ते प्यारे । तुम बिन कैसो रहौं दुलारे ॥
जो तुम जैहौ मातहि त्यागी । मोहिंसमाननहिंऔरअभागी ॥
मम पालनमहँ कोचितधरिहै । पड़े शरीर क्रिया को करिहै ॥
तुमसबधर्म्म जानिअति ज्ञानी । जैबे की कैसे उर आनी ॥

* संन्यास ॥

द्रवै हृदय कैसे तव नाहीं । कृपा न आवति क्योंमनमाहीं ॥
यहिविधिजननीव्याकुलदेखी । उरउपजी तब कृपा विशेषी ॥
मोह रहित कहि गिरा सुहाई । माता बहु प्रकार समझाई ॥
जबहीं वर्ष आठईं आई । कियो विचार देव सुखदाई ॥
संसृति कोन चहै मन मेरो । अम्बाने बहुविधिमोहिं घेरो ॥
मम मनकी देखै यह नाहीं । आपु सुनहिं देहैमोहिं पाहीं ॥
माता वचन टारि नहिं जाई । जो गुरु सम वेदन महँ गाई ॥

दो० यहि कारण संन्यास में मातु वचन की चाह ।
थोरेहु अज्ञा के बिना है नाहीं निर्बाह ॥

यह विचारि कबहूं श्रीशङ्कर । नदी नहानगये संग द्विजवर ॥
जबहिं प्रवेश कीन्ह जलजाई । चरण गहो जलचर तबधाई ॥
करन लगे रोदन तब शङ्कर । हाजननी मोहिंपकरोजलचर ॥
गहिरे मैं खैंचे लिये जाई । एकहु पग चलि सकोंनसाई ॥
बड़ो भयावन मुख फैलायो । सबप्रकार चाहैमोहिं खायो ॥
घरमहँ मातुखबरि सुनि पाई । सरितसमीपअति व्याकुलआई ॥
सुत मुख देखि भयो संतापा । करनलगीयहिभाँतिविलापा ॥
सखिते पहिले पति चरणा । शरण रहे अबतुम दुखहरणा ॥
मगर विवश ममबालक जाई । हेशिव मोहिं क्योंमौतनआई ॥
मैंभरि जन्म कीन्हि तव सेवा । अशुभ होत कैसे मम देवा ॥
नयन तनय आनन सों जोरे । अंग बसन आँसुन सों बोरे ॥
यहिप्रकार शोचै तहँ ठाढ़ी । देखिप्रभुहिअतिकरुणाबाढ़ी ॥
शङ्कर बोले सहित सनेहू । अम्ब मोहिं आयसु जो देहू ॥
तुम्हरे अनुमत मैं संन्यासा । करौंतौ बीति जायममत्रासा ॥
छोड़ै चरण तुरत यहु जलचर । तुम जो देहु संन्यास केरवर ॥
जब यह गिरा कही सुरत्राता । चकितभई मनमहँनिजमाता ॥
तुरतहिअपनी अनुमतिदीन्हीं । निजउरमेंनिश्चययहकीन्हीं ॥
जियत रहे दर्शन मैं पैहौं । नतरु पुत्र बिन मैं मरि जैहौं ॥

सो० माता अनुमति पाय कियो मानसिक न्यास तव ।
जलचरगो बिलगाय चरगा छोड़िकरि शम्भुको ॥
यह दर्शायो भाव भव जलचर जिन कोप सो ।
मुक्ति न और उपाय बिन कीन्हें संन्यास के ॥

जल बाहर शङ्कर तव आये । माता को ये वचन सुनाये ॥
अस्व कियोमैं मानस न्यासा । उचितमोहिंअवभयो प्रवासा ॥
मोहिं लायक आज्ञाअव देहू । सो करि हैं मैं बिन संदेहू ॥
बंधु सकल सेवा सव करि हैं । तवआज्ञानिशिदिनअनुसरिहैं ॥
भोजन बसन यथा विधि देहैं । हमरे पितु कर धन जे लेहैं ॥
रोग भये पुनि औषध दाना । करिहैं सब प्रकार सन्माना ॥
मरणसमयसबक्रिया तुम्हारी । बंधु करहिं गे धर्म्म विचारी ॥
धन के लाभ लोक की लाजा । बंधु सवाँरहिँ गे सब काजा ॥
अपने मन कुछभयनहिंलावो । मोहिं योग उपदेश सुनावो ॥
यहसुनि पुनिबोली महतारी । सुनहुँतात यहविनय हमारी ॥
जल चर ते जीवन तव रहेऊ । मानस न्यास तुम्हारोभयऊ ॥
तव जीवन कारण मैं जानी । प्रियवियोगबाणोप्रियमानी ॥
यह दुख कहु कैसे सहि जाई । तवकर जो मैं क्रिया न पाई ॥
तुमहीं आय करो संस्कारा । ये तो मानहुँ बचन हमारा ॥
जो तुम कहो यती मैं भयऊ । अबअधिकार नहमको रहेऊ ॥
मुनिअगस्त्य हमसनसबभाषा । तव प्रभाव कछु गुप्तन राखा ॥
तुम समर्थ शंकर अवतारा । तुमकहँ नहिंकछुदोषप्रचारा ॥
लोक विरुद्ध कदाचितमानहुं । तहँ यहु मेरो उत्तर जानहुं ॥

दो० तुम ऐसो सुत पायके भयो न पूरण काम ।
तौ क्या हमकहँ फलभयो उतरुदेहु सुखधाम ॥

अपनी क्रिया हेतु दुखदेखा । माताको हठ जानि विशेषा ॥
शंकर कृपासिंधु सुख दाई । कह्योमातु सन यों समुझाई ॥
रात दिवस अरु सांझ प्रभाता । कौनेहु समय बोलसुनु माता ॥

बशमर बश तें करु सुधि मोरी । ऐहौं तुरत काज सबछोरी ॥
मानहुं तुम विश्वास हमारा । करिहौं मैं सबकर्म तुम्हारा ॥
तबहितलगि अनकरणी बानी । जोतुमकहो सकल मैंमानो ॥
तुमहूं मम यह विनती मानहु । अपने मनमें अमनहिंआनहु ॥
मम सुत लै लीन्हों संन्यासा । सोहिंत्यागिचलिगयोप्रवासा॥
मैं अनाथ बिधवा दुख पैहौं । कैसे अपनी वयस बितैहौं ॥
असिचिंता कबहूंजनि करियो । मेरे बचन हृदय में धरियो ॥
तब ढिग रहि जेतो फल देहौं । तेहिते सौगुण फल पहुंचैहौं ॥
यहिप्रकार जननिहिवरदीन्हा । पुनिकुटुंबसनभाषणकीन्हा ॥
अबहमन्यासमाहिं मतिदीन्हीं । दूरि ज्ञानकी इच्छाकीन्हीं ॥
तुमको सौंपत हौं निज माता । सबमिलिहोहुताहुसुखदाता ॥
जननी कारज सबसन भाषी । मातु चरणरजशिरपर राखी ॥
विनय कीन्ह दूनौ कर जोरी । जननी सौंपी बंधु निहोरी ॥
नयन नीर सुतको अन्हवावा । अधिकसनेहहृदयभरिआवा ॥

दो० माता के हित जो नदी लाये भवन समीप ।
तहां एक मंदिर रहा जहँ बश यदुकुल दीप ॥

वृष्टि होय जब बर्षा पाई । नदो नीर मठ में भरि जाई ॥
बहुत बेर जल को दुख पाई । श्री माधव नभ गिरासुनाई ॥
जेहि क्षण चलो चहैं श्रीशंकर । बिनवहिं जननीकोजोरे कर ॥
दूरि रही सरिता तुम लाये । माता के सब ताप मिटाये ॥
हम कहँ देत क्लेश यह भारी । क्यों न करौ हमरी रखवारी ॥
सुनिआकाश गिरा तहँ आई । दौकर प्रतिमा लीन्ह उठाई ॥
अचल रही मूरति अति भारी । जो काहू सों टरहि न टारी ॥
सो उठाय ऊंचे बैठारी । पुनि यह शंकरगिराउचारी ॥
अब बाधा सरिता की नाहीं । रहिये आपु सदा सुखमाहीं ॥
तब माता सों अनुमति लीन्हीं । माधव मुदित अनुज्ञा दीन्हीं ॥
दूरि ज्ञान को कीन्ह विचारा । अतितीक्षण बिरागउरधारा ॥

जो नवका महँ होय सँवारा । गिरो चहै नहिं सागर धारा ॥

दो० तैसे जेहिको होयगो ज्ञान विराग विचार ।
सदा सोहावन पोत सम सोकि गिरै संसार ॥

छं० यहि भांतिमातु मुरारिकहँ परितोष श्रीशंकरगये ।
श्रीघटज मुनिके बचन अपने चित्तके भीतर लये ॥
अत्यंत भोग विराग मनमें दूरितृष्णा दुख कियो ।
आनंद ज्ञानस्वरूप आतम प्रेम परिपूरण हियो ॥

दो० जिनकी मूरति दूसरी सोम अग्नि रवि नयन ।
तेहि समीप पहुंचो नहीं जरो बीचही मयन ॥

सो० महावात जिमि दीप का मन सन्मुख ह्वै सकै ।
कैसे आव समीप काम मूल संसार यहु ॥

विधिहिकामशरबशकरिपाये । निज तनया के पीछे धाये ॥
चंद्र सदन रस ऐसे पागे । तारा गुरु पत्नी लै भागे ॥
तथा मोहिनी रूप निहारी । *अह हमहूं धायो ब्रतधारी ॥
यहि विचारि यतिवर वपुधारा । जग पावन श्रीशम्भु उदारा ॥
काम व्यथा चर्चा जहँ नाहीं । जयतियतीश्वरत्रिभुवनमाहीं ॥
तीन लोक विजयी विख्याता । मुनि गंधर्व सुरासुर हाता ॥
पावक सिंधु सकल जग हारा । जो धन्वी वर यहि संसारा ॥
तेहि मनसिज से जे बरिआये । परमशूर त्रिभुवन गुणगाये ॥
तिनकीमहिमाकिमिकहिजाई । सुमिरत मनकोदोष नशाई ॥
बशकरिलीन्हशांतिमतिमनकी । दांतिक्रियासबरोकीतनकी ॥
उपरति विषय स्तंभन कीन्हें । क्षांती मृदुतासों भरि दीन्हों ॥
दिनप्रतिजो समाधि विस्तारी । बढी ध्यान उत्कंठा भारी ॥
श्रद्धा अतिशय प्रिय मनमाहीं । इनसबकर कारण हमनाहीं ॥
जानि सकहिं किमुपर बैरागा । अथवा कारण अपरविरागा ॥
बनिता सरिस बिजनताप्यारी । देहिं सदा मन आनंद भारी ॥
जो प्रारब्ध वेग मिलि गयऊ । देह स्थितिनिमित्तसोभयऊ ॥

---

*आश्चर्य ॥

गृह गोचर ममता सब त्यागी । उरवासी शिव मन लौलागी ॥
देखत जाहिं शैल सरिता बन । ग्राम नगर नरपशु पतंग गन ॥
इंद्रजाल महँ चतुर जो होई । मायाविविधि देखावै सोई ॥
माया नाथ ब्रह्म यह माया । दर्शायो बहु जगत निकाया ॥
श्री शंकर ऐसी बुधि कीन्हें । चले जाहिं मारग मन दीन्हें ॥
जे वादी श्रुति धेनु पुरानी । निजनिजपथखैंचेभ्रकुलानी ॥
निजमारग प्रवृत्त तेहिकीन्हा । एकदंड तेहि कारण लीन्हा ॥
खल मत वादि कुमारग गामी । दण्डदीन्हसबकहँ श्रीस्वामी ॥

छं० मदक्षरे अति स्वच्छंद जल्पक मर्म भेदक जे रहे ।
संसारि मृगकहँश्वान सेनहिं जाहिं काहूपै गहे ॥
कहौकौनक्लेशनहोतविप्रनपरतनहिंकेहि शोकमें ।
सोदण्डधर मुनिराज रक्षक होतनहिं यहिलोकमें ॥

सो० शृंग बसन काषाय दण्ड एक धारण किये ।
प्रभु बन देखो जाय श्री मुनि गोविंद नाथ को ॥

जो नर्मदा तीर अति पावन । तहांप्रवेशकीन्हश्रुतिभावन ॥
अस्ताचल गमने जब दिन कर । सांझ समय पहुँचेश्रीशंकर ॥
सरि तट द्रुम बयारि जो लागी । हर्षित भे श्रम पीडा भागी ॥
विपिन मध्य गमने सुख दाई । जहां अनेक यती रहे छाई ॥
कहुं मृग चर्म कतहुं कोपीना । कहु कंथाकहुंकरकनवीना ॥
वल्कलादि छाये सन भावैं । वृक्ष मनहुं मुनि बास बतावैं ॥
रहे तहां जे मुनि वर ज्ञानी । गुफा तीर लौगे सन्मानी ॥
चोरी और द्वार कहुं नाहीं । गुरुवर बास करैं तेहिमाहीं ॥
तहां छिद्र प्रादेश प्रमाना । सोई जनु प्रतिहार समाना ॥
श्रीगोविन्दगुहा अतिपावनि । शरणागतपरितोषबढ़ावनि ॥
देखि तीनि परिकरमा दीन्ही । छिद्रसमीप दंडवति कीन्ही ॥
तुष्ट हृदय पुनि स्तुति ठानी । विगतशोकप्रभुभलक्षणवानी ॥

छं० पत गेंद्र बाहन श्री रमण पर्यंक रूप सोहाव जो ।

कामारिके पदमाहिं नूपुरके सरिस छविशाजजो ॥
सबसिंधु पर्वतसहित पृथ्वी जासुशीश विराजही ।
शेषस्वरूप नमामि सद्गुणखानि श्रीमुनिराजही ॥
भयभीतलखि निजशिष्यगन नागेशरूपविहायके ।
जिनकरि अनुग्रह सेवकनपर सौम्यवेषविधायके ॥
श्रीशांतमुनिवर ऋषिपतंजलि प्रकटभेहौ आयके ।
प्रणमामिपुनिपुनिततवचरणनिजहृदयहर्षबढायके
जोजायके पाताल महँ श्रीशेषसन पढि आयके ।
पुनियोगअरुव्याकरणकीवरभाष्यदीन्हिबनायके ॥
यहु महाजग उपकार जिनको रहोपृथ्वी छायके ॥
तिनआपुकीमैं शरणआयोसकलआशविहायके ॥

दो० व्यास पुत्र के शिष्यवर गौड़ पाद भगवान ।
उनके शिष्यवर आपुकी नहीं जगत उपमान ॥

परब्रह्म की मोहिं जिज्ञासा । तेहि कारण आयोंतवपासा ॥
सुनि तव महिमा परम उदारा । शिष्यहोनहितआयतुम्हारा ॥
अपने शरणागत प्रभु जानी । कहु मोहिं उपदेश सुबानी ॥
मुनिवर सुने शंभु के बयना । अतिशय निपुनप्रेमरसअयना ॥
बड़े भाग खुल गई समाधी । पूछा श्रीमुनि बुद्धि अबाधी ॥
को तुम कहाँ जन्म तवभयऊ । श्रीशंकर यहु उत्तर दयऊ ॥

छं० स्वामीनमैं आकाश मारुत तेज नहिं पुनि जलमही ।
नहिं शब्द पर्सन रूप नहिँ रसगंध प्राणहु मैं नहीं ॥
हौंमैंनमन बुधिचित्त अहंमति सकल साक्षीरूपजो ।
केवल सनातन परमअजमोहिं जानिये शिवरूपसो ॥

सो० सुनि शंकर के बयन आतम अनुभव रस भरे ।
हर्षे करुणा ऐन बोले यह बाणी मधुर ॥

शंकर तुम निश्चय कर शंकर । लीन्हो है अवतार धरणिपर ॥
ज्ञान दृष्टि सब जानत अहऊँ । मिथ्याबचनकबहुँनहिँकहऊँ॥

पुनिमुनिवर शंकर रुच चीन्हीं । चरणा गुहाते बाहरकीन्हीं ॥
भक्तिसहितशिव पूजाकीन्हीं ।मानहुँसबहिसिखावनिदीन्हीं॥
पुनि कीन्हीं उपदेश सुबानी । श्री गोविंद नाथ मुनिज्ञानी ॥
श्री शंकर निवास तहँ कीन्हा । श्री गुरु पद सेवा मन दीन्हा ॥
जानत ब्रह्मतत्त्व पुनि सोई । लाभभलीविधि जेहिमेंहोई ॥
अस संदेह करै जनि कोई । जो जानत क्यों चाहत सोई ॥
यह संशय कर सुनहु निवारन । संप्रदाय परि पालन कारन ॥
जैसो मानुष तन प्रभु धारा । चरित करैं ताही अनुसारा ॥
भक्तिसहितकीन्ही परिचर्या । अधिक प्रसन्नभये यति वर्या ॥
दो० मुनिवर शिव को कीन्ह तब ब्रह्म भाव उपदेश ॥
महा वाक्य चहुं वेदकर आशय रुचिर सुदेश ।
व्यास सूत्र पुनि कियेविचारा । तिनको हृदय जोगूढ़ अपारा ॥
भली भाँति जान्यो श्रीशंकर । व्यास मतहि जोपरब्रह्म पर ॥
व्यास परासर सुत गुणवाना । माता सत्यवती जग जाना ॥
व्यास तनय शुकदेव सुहाये । जिनके चरित पुराणन गाये ॥
उनके शिष्य भये मुनि राजा । गौड़ पाद असनाम विराजा ॥
मुनि गोविंद नाथ पुनि तिनके । शिष्यभये श्रीशंकर जिनके ॥
मुनि गोविंद नाथ के तीरा । शास्त्रजाल शंकर मतिधीरा ॥
श्रद्धा सहित सुने तिन पाहीं । जिनकीउपमात्रिभुवननाहीं ॥
प्रथमहिं गये जो शेष ससीपा । करिपरितोषितनागमहीपा ॥
पुनिकीन्हों यहि विधि संकेता । हे अनंत प्रभु कृपा निकेता ॥
दो० निज विद्या उपदेश जो करिहो मोहिं उदार ।
तो मैं करिहौं तासु बहु भूतल पर विस्तार ॥
यहिविधिसत्यप्रतिज्ञाकीन्हीं । नागेश्वर तब विद्या दीन्हीं ॥
असप्रभाव जिनकर जग गावा । तिनसों चौथो आश्रमपावा ॥
सूर्यादिक पूजित पर धामा । शंकर पायो अति अभिरामा ॥
अतिशय ऊँचे पद पर राजे । जैसे ध्रुव महराज विराजे ॥

पाटल बसन धरे तनु सुन्दर । यहिप्रकारशोभित श्रीशंकर ॥
संध्या अरुणमेघ छवि छावा । मानहुंहिमगिरि कूट सुहावा ॥
औरहु उपमा कहहुं सुहाई । जो मेरे मन में अति भाई ॥
जनु अज्ञान महागज मारी । तासु चर्म रुधिराप्लुत भारी ॥
उदित अरुण कारके अनुहारा । सोइ अंबर मिष तनुपर धारा ॥

अथ शंकरको ब्रह्मरूप वर्णन

क्रीड़त ब्रह्मयु तिन सों जैसे । क्रीड़हिं निशिदिन शंकरतैसे ॥
दो० परम हंस गति ब्रह्म जिमि तिमि शंकर भगवान ।
त्यों निज महिमासों निरत सोतैसेहि कृपानिधान॥
विधि प्रपंच रत ब्रह्मन होई । शंकर निः प्रपंच पुनि सोई ॥
यहिते इन्हैं ब्रह्म मैं जानहुं । निश्चययुत निर्णयउरआनहुं ॥
वृहिधातू को अर्थ उदारा । घटितसकलविधिविरउपचारा॥
केवल भाव ब्रह्म को जैसो । शंकर को सोहै पुनि तैसो ॥
श्री वामन दुइ पद सो नापो । त्रिभुवननिजकायासोंव्यापो ॥
जो इनको पद ज्योतिस्वरूपा । वहिसों पूरण त्रिभुवन रूपा ॥
सतगुण इनको सो कहुँनाहीं । व्यापो भवपालन लयमाहीं ॥
सतगुण जो लक्ष्मी धर केरा । केवल पालन काज निबेरा ॥
बाल्यादिक जो दश आकारा । तिन सों सदा रहौ यहु न्यारा॥
हरिके मत्स्यादिक अवतारा । सदा होत जानत संसारा ॥
तेहि कारण वैराग समेता । रमै जासु निज महिमा चेता ॥
गुणविचारिसबयु तिमनधरहीं । विष्णुपरमपद वर्णन करहीं ॥
जेहिकारणहरिसोंअतिशयतर । है स्वरूप जिनको अद्भुत वर ॥
हरिते होय अधिक पद जाको । विष्णुपरमपद कहियेताको ॥
शिव को भूतन सों आसंगा । इनहिं न कबहूं भूत प्रसंगा ॥
वे गोवृषभ सहितनितविचरहिँ । गोइंद्री समये नहिँ बिहरहिँ ॥
उन को रहै विभूति प्रसंगा । इन्ह हिंन*भूतिसाय संसर्गा ॥
उन ढिग+भोगि सर्प बहुताई । इनसमीप भोगी नहिं जाई ॥

* विषयी + द्रव्य ॥

दो० अद्भुत यद्यपि भांति बहु उन इनको व्यवहार ।
वेद त्रिपुर के दहन ते शिव तुरीय उचार ॥
त्रिपुरा सुर के तीनि पुर कीन्हें दहन गिरीश ।
स्थूल,सूक्ष्म,कारण,त्रिपुर जारे इन जगदीश ॥
त्रिपुरविजयशङ्करजब कीन्हा । सुवर्णरूप अनुप करलीन्हा ॥
सुन्दर वर्णादिक जो धर्म्मा । इनहिगनोईबसहित कर्म्मा ॥
उनके पारके फल भगवाना । पुरुषोत्तम प्यारे गुण वाना ॥
इनकी एक कर्म्म फल माहीं । है आसक्ति स्वप्न में नाहीं ॥
सविता सोम† अरो हैं जाके । धरणि रूप रथ सोहै ताके ॥
अहमादिकबहुअरिजहिमाहीं। देहरूप महि सम रथ नाहीं ॥
श्रोत्रादिक, ज्ञानेंद्रिय,जानहु । हस्तादिककर्म्में दिय,मानहु ॥
ये दुइ पंच भेद पुनि प्राना,। व्यान अपान उदान समाना ॥
मनबुधिचित,अहंमितअज्ञाना। काम, कर्म्म बासना नाना, ॥
यह पुर्य्यष्टकविनहि सहाई । जेहि का ण जीता यतिराई ॥
तेहिकारण सबश्रुति समुदाया । शङ्करकहँ परशिवकरिगाया ॥

अथ परम हंस तत्त्ववर्णन ॥

हंस महा वर्षा परि हरही । कमलनाल भोजनपुनिकरही ॥
मानसरोवर सदा विराजा । तैसेहि परमहंस यति राजा ॥
पाप पयो दम घन गंभीरा । बेग सहित वर्षहिं दुख नीरा ॥
वर्षा ऋतु संसृति दुर्वारा । दूरि तजैं मन परम उदारा ॥
अतिप्रचण्ड प्रतिपक्षी नाना । उनको यथा‡नालीक समाना ॥
दो० तासु नाल को ग्रास करि अति सोहत यति राज ।
बुधजन मानस मानसर निर्म्मल सदा विराज ॥
ब्रह्म क्षीर जग नीर समाना । उभयविवेकनकोउकरिजाना ॥
कर्रिविवेकहरिलीन्होंशोका । परमहंस तेहिको कहैं लोका ॥
द्विजवरकरहिंबुद्धिअतिपावनि । *रागद्वेषबिलगायसुहावनि ॥
नीर क्षीर के न्याय समाना । सारासार परस्पर साना ॥

† चक्र ‡ कमल * रागद्वय ॥

सबको रह्यो अधिक दुर्बोधा । श्री शङ्करमुनिकीन्ह प्रबोधा ॥
तेहि सों परमहंस हैं सोई । रहे अशक्त और जे कोई ॥
विषयनिस्वफलरसिकसदाहीं । काक कहैंमुनिवर तिनपाहीं ॥
ऊपर को तम +हंस निवारत । ये पुनि अन्तरहाटि सवाँरत ॥
वैतालीक प्रीति नहिं तजहीं । ये नालीका प्रेमकहँ भजहीं ॥
जे अलीक विषयादि घनेरे । तिनकीरुचिकब आवतिनेरे ॥
जैसे वै जग के प्रिय कारी । तैसे ये सब के उपकारी ॥
वै निज सुहृचक्र ‡ दुख हरहीं । ये निज मित्र वर्ग सुखकरहीं ॥
घट पटादि वै अर्थ विकाशैं । ये पुनि आतम अर्थ प्रकाशैं ॥
सो० ये लक्षण सब जानि उभय हंस गुनि मुनि निरखि ।
न्यूनाधिक उर आनि परमहंस हम सों कहत ॥

अथ वर्षाशरद वर्णन ॥

हंस स्वरूप पाय श्री शङ्कर । करत स्वरूप विचार निरंतर ॥
मेघ चलहिं वर्षा ऋतु पाई । दामिनिकबहुं तहां दरशाई ॥
भोगचपलतामनहुं दिखावहिं । चपलाकी उपमासमुझावहिं ॥
रविनिष्ठुर पद सों नितछुवहीं । यहदुखहमइतनोनहिंगिनहीं ॥
जो हम *पुष्प रूप जल वर्षहिं । निजकर तें सविताआकर्षहिं ॥
मम पत्नी महि को दुख देहीं । तेहिकर प्रभवहेतु हरिलेहीं ॥
यहु विचारि निज बैर सँभारा । घेरहिं सवितहि मेघ अपारा ॥
मेघ मंडली बीच सुहाई । यहिप्रकार चपलाछबिपाई ॥
ज्ञानवान ह्वै भोग बिलासी । अंतरंग गत बोध कलासी ॥
दो० विष्णु रूप को पायकै गर्जहिं मेघ गँभीर ।
ब्रह्मभाव उपदेशजनु सबहिंकरहिंमतिधीर ॥
जेहिकारणाअतिशायसबलोका । मुदितहोहिंमुनिनादविशोका ॥
ज्ञान गर्व पूरण उर छाया । सोरनयजन करहिंयातिराया ॥
यहिरिसि देवराजचढ़िआयो । घनस्यंदननिजधनुष चढ़ायो ॥
गिरि मल्लिका नवांकुर सुंदर । नीलझिंटि आमोद मनोहर ॥

+ सूर्य † कमल ‡ चक्रवाक * वीर्य्य ॥

तासु परश भरी मन भावैं । बन बयारि सुंदर तहँ आवैं ॥
सतरजतम गुणमिलतप्रकाशा । जनुजग माया केर बिलाशा ॥
घन निशचरदल सरिस सुहाये । तम सम छविनजकी दरशाये ॥
तीक्षण शब्द करहिंअतिघोरा । लीन्हे चिन्हित चाप कठोरा ॥
॥ दो० भ्रमहिं घेरि सब ओरते दामिनि नयनदिखाय ।
॥ ध्यान यज्ञ जनु पतिन को भंग करैंगे आय ॥
॥ गगन धाम सब ढाँपिके छोडहिं जलकी धार ।
॥ तेहि अवसर निजरूपको शंकरकरहिं बिचार ॥
सब इंद्री रोंकी सुर साईं । आतमगतमनकीन्ह गोसाईं ॥
व्यास सूत्र नय सहित सुवानी । श्रुतिकेमधुर अलापसयानी ॥
आतम ढिग शंकर बुधिसुंदरि । पहुँचीतनअभिमानदूरिकरि ॥
परमप्रीति भाजन श्रु तिगायो । ऐसोनिज प्रीतम जबपायो ॥
तासु पर्श महँ धीरज त्यागी । तहाँ बिलाय गईरस पागी ॥
जेहिविधिमानिनिसखीसयानी।युक्तिसहितकहिकहिमृदुबानी ॥
बिनतीकरिप्रीतमढिगलावहिँ।तेहिकोअतिशयमानमिटावहिँ
सर्वोत्तम प्रीतम पहँ जाई । धीरज देह दशा बिसराई ॥
सब प्रकार तेहि महँ लयहोई । शंकर बुद्धि भई गति सोई ॥
जहँ*सविताकरनाहिँप्रकाशा । नहिँतारातति हिमकरभाशा ॥
इनसब कर प्रकाश जहँनाहीं । विद्यु तागिनकेहिलेखेमाहीं ॥
निज सुख रसपूरण नभ माहीं । दिविभुविकालककुतहँनाहीं ॥
श्रुतिवर्णित असजासुप्रकाशा । बुद्धिफुरनकोतहँकिमआशा ॥
सहजानंद रूप जल राशी । सबमायामल गतअविनाशी ॥
संतचितनित अतिशुद्धस्वरूपा । परशिव तहिमाजासु अनूपा ॥
देया देय जहाँ कुछ नाहीं । मगनरहत शंकर तेहि माहीं ॥
विष्णु गात सम श्याम शरीरा । पीतांबर समदामिनि चीरा ॥
ऐसेहु महा सुभग जो रहेऊ । पय संग्रह मलीन ह्वै गयऊ ॥
ऐसो संग्रह जानि अभागा । होइधरणिपरकेहिनबिरागा ॥

* पंक्ति ॥

सलिलाशयकलुषितसबभयऊ । हंसहृदय मानस महँ गयऊ ॥
और भाँति आश्रय ह्वै जाहीं । केहि को मानस चिंतानाहीं ॥
गगनबीथि महँ मेघ अपारा । जहाँ सुधा कर केर प्रचारा ॥
घनगतविधुकरनहिंअतिभाशे । कोमलीनतट पद्दिरि प्रकाशे ॥
बड़े तृषा जे युत चातृकगन । स्वाती पै पाये हर्षित मन ॥
अमृतहु चाह किये नर पावैं । चातक सम घनआस लगावैं ॥
यहिप्रकार अतिशय जलबर्षे । पवन तमाल बिटप आकर्षे ॥

दो० नदी तीर अति शुभग वर रहा भूमिसुर ग्राम ।
तेहिसमीपशंकर बसहिं जीतिसकल गोग्राम ॥

परमपूज्य गुरुचरण सुखाकर । भक्ति सहित पूजत श्रीशंकर ॥
बर्षाकी अतिशय झरि भारी । पाँच दिवस नहिंखुलतमारी ॥
शुण्डा दण्ड गिरैं जल धारा । भई तहाँ अति वृष्टि अपारा ॥
मारुतआगमभये तेहि काला । अतिसमीरकम्पिततरुजाला ॥
ग्राम भवन तट वृक्ष गिराई । बाढ़ि नर्म्मदा की बहुआई ॥
प्रलयसिंधुसमचहुँदिशिधायो । घोषसहित जलभयसरसायो ॥
तेहिभयव्याकुललोगपुकारा।मुनिशिवनिजमनकीन्हविचारा॥
गुरु समाधि महँ बिप्र न होई । सुखीहोहिंजेहिविधिसबकोई॥
तुरत शोचि करवाकर लीन्हों । बहुरिताहिअभिमंत्रितकीन्हों॥
जलप्रवाह सन्मुखधरिदीन्हा । सकलवारितेहिमोंभरिलीन्हा ॥
जैसे घट सम्भव ऋषि सागर । मंत्रप्रभाव लियोनिज करपर ॥
मुनिवर जबसमाधि सों जागे । लोगन चरित कह्योप्रभुआगे ॥
सुनिप्रसन्न अतिशय मुनिराई । योग सिद्धि जल्दी इन पाई ॥
कछुदिनमें बारिद सब गयऊ । तबशिवसनगुरु बोलतभयऊ ॥
देखहुतात विमल आकाशा । शरदपायअतिकरहिंप्रकाशा ॥
विमलब्रह्म विद्याजिमिपाई । ब्रह्म तत्त्व की छवि दरशाई ॥

दो० मेघ यती जल धार वर वाणी अमृत समानि ।
औषधिसेवक तृप्तिकरि शाहिंस्वरुचि अनुमानि ॥

घनविमुक्त अतिशयसुखदाई । शीत*रश्मिमकी अतिछविछाई ॥
माया वरण भयो जब नाशा । यथा तत्त्व विबोध प्रकाशा ॥
वारिद माला सकल बिलानी । तब उडुगण शोभा सरसानी ॥
मत्सरादि जबदोष विनाशहिं । मैत्र्यादिकगुणआपप्रकाशहिँ ॥
मत्स्य कच्छप मई सरिभावै । हरि मूरति की उपमा पावै ॥
चक्रावर्त वती अति राजै । मनहुं सुदर्शन चक्र विराजै ॥
भुवनरूप जल गर्भ सुहाई । सदा बसै कमलालिनि सुखदाई ॥
परमहंस नित सेवहिँ ताही । यती हंस पुनि सेवत याही ॥
चिरसंचित धन सम जनुवारी । चपला मनहुं मनोहर नारी ॥
सबकुकृत्यागिलीन्हसंन्यासा । शरदमेघ यहिभांति प्रकाशा ॥
शरदकाल वह अधिकसुहावै । यतीराज कैसी छवि पावै ॥
चंदनि जनु विभूति तन राजै । चंद्र कमंडलु सरिस विराजै ॥
बंधुक पुष्प समूह सुहाये । काषायांबर सम छवि छाये ॥
निर्मल शरद सरोवर वारी । सोहतजनु तब मनछविभारी ॥

दो० परम हंसके संग सों भयो रजोगुण नाश ।
तैसे सर को विरज जल हंसन पाय प्रकाश ॥

शरद वारि धरको वर पांती । सोहत भानु गगनयहिभांती ॥
चंदन कौस्तुभ सहित सुहावा । मानहुँ माधवउरछबि छावा ॥
मुनिजन हृदयादिक वरपंकज । ऊपर मुखवह्नौ राजहि गतरज ॥
योग कला छवि युत सरसाये । हरिहर रूप ध्यान बल पाये ॥
तिमि सरपंकज रविकर पाई । उद्गतविकसितछवि सरसाई ॥
रेणु भस्म पल्लव पटधारी । भ्रमरमाल माला छविहारी ॥
कुड्मल रूप कमंडलु सुखमा । विटपलहै यतिकी वरउपमा ॥
धारणादि श्रवणादि उपाया । सुखसों वर्षाकाल बिताया ॥
शरदपाय यति राज विचरहीं । पाद पद्म रज पावन करहीं ॥
तेहि कारण काशी तुम जाहू । करहु मोरि आज्ञा निर्वाहू ॥
वेदराशि उद्भव वर ज्ञानी । भव दावानल मेघ बखानी ॥

करहु तत्त्व पद्धति कर निर्णय। सारासार विभागहि वर्णय।
वेद व्यास इमसन कहिराखा। तुमहिँसुनावहुँसो मुनिभाखा॥
एकबार हिमगिरि के ऊपर। कीन्हिऋषि मुनि*सत्रमनोहर
बड़ो भयो मुनि ऋषय समाजा। आये सुरवर सह सुर राजा॥
दो० तहाँ परासर सुतकियो श्रुति शिर अर्थ प्रकाश।
मैं तब यह बिनती करी सुनौ महामुनि व्यास॥
वेद बिभाग कीन्ह बहु भाँती। भारत अरु पुराण की पाँती॥
योग शास्त्रपुनि अधिकउदारा। ब्रह्मसूत्र प्रकटे श्रुति सारा॥
शारीरक को हृदय गँभीरा। है अथाह जिमि सागरनीरा॥
कोउ बादी निजमति अनुसारा। वर्णहिकल्पित अर्थपसारा॥
आप कृपाकरि भाष्य बनावो। सकलविपर्य्ययदोषमिटावो॥
सुनि मम बचन व्यास हर्षाई। यह गाथा तबमोहि सुनाई॥
जोतुमवचन कह्यो मोहिंपाहीं। सुरनकहेशिवसंसदि माहीं॥
तात होयगो शिष्य तुम्हारा। सब गुण युत सर्वज्ञ उदारा॥
अति उत्वण सरिता जलभारी। जोकरि लेहेकरक सम्हारी॥
करि खंडन दुर्मत दुखदाई। सोइपुनिरचिहैं भाष्यसुहाई॥
कातिकहिमकरसरिससुहावा। तवयश सब गैहैं मन भावा॥
यह कहि मुनिवर गे कैलाशा। जोहम सुनारहा मुनि पासा॥
सोसब प्रिय चरित्र तव देखा। भयो हृदयपरितोषविशेषा॥
तुम पुरुषोत्तम शिव भगवाना। तुमसमानजग और नआना॥
जेहिविधि होय लोक उद्धारा। सोई मन में करहु बिचारा॥
ब्रह्मसूत्र को भाष्य मनोहर। औरहु ग्रन्थ रचहु तुम सुंदर॥
दोष रहित अद्वैत प्रकाशा। करहु लोकअज्ञान विनाशा॥
शशिधर-नगर जाहु प्रिय कारी। जहँ सुरसरि सुखमावपुधारी॥
तुम्हरे ऊपर बिन श्रम सेवा। करिहि अनुग्रह शंकर देवा॥
यहि प्रकार मुनि दीनदयाला। विदाकीन्हसमुझाय कृपाला॥
सो० शंकर के उर प्रेम सदा चरण सेवन करैं।

* यज्ञ

नहीं रहा सोनेम गुरु आज्ञा सबसों अधिक ॥

पुनिपुनि करिवंदन दुखहरना । पंकजके प्रति भटयुग चरना ॥
गुरुवियोग दुख सहो न जाई । सो मूरति मन माहिं बसाई ॥
बाराणसी देखि पुनि जाई । विटप कदंब रहे बहु छाई ॥
सुरसरि तीर यज्ञ के शाला । हेमखंभ जँह रुचिरविशाला ॥
भूपति भगीरथ करतप भारी । तेहिकोफलसुरसरितनिहारी ॥
योगि राज लायक तटकुंजा । हरि शिर के शोभा कीपुंजा ॥
विष्णु पाद निर्मल नखजाई । अथवाशंभु मौलि सों आई ॥
हिमगिरसों किमभयोप्रकाशा। तेहितेफटिकसरिसजलभासा॥
कल षट पद स्वर मानहुं गावैं । चलितकमलभुजनृत्यदिखावैं॥
स्वेत फेन सोचित जनुहासा । भेंटति मानहुलहरि बिलासा॥
दिव्यवधू चितवनि सोश्यामा । भूषणाभा*चित्रित अभिरामा॥
कहुँकहुँकुच कुंकुम अरुणाई । सोह गंग बहु रंग सोहाई ॥
देवनदी जल मज्जन कीन्हा । तासुबारिसबश्रम हरिलीन्हा ॥
सुरसरि जलयुत मूरति सुन्दर । करैप्रकाशरुचिर तेहिअवसर॥
हिमकरमणिप्रतिमाछबिछाई। स्रवत वारिकणविधुकरपाई॥
विश्वनाथ पद कीन्ह प्रणामा । माधवादि पूजित सुखधामा॥

दो० विश्वेश्वर को पूजिकै मन अति अधिक हुलाश ।
जग पावन हर क्षेत्र महँ कीन्ह कछुक दिन वास ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्री७स्वामिराम
कृष्णभारतीविरचिते श्रीशङ्करदिग्विजयेभाष्यकार
संन्यासवर्णनपरपंचमसर्गः ५ ॥

श्लोक ॥ प्रचण्डपाखण्डतरुप्रभञ्जनःश्रुत्यर्थदीप्त्यासुरसाधुरंजनः
योवोधपाथोजदिवाकरोऽनिशंवदामहेतच्चरणौमुनिप्रियौ १

अथपद्म पादादिसंन्यास ॥

दो० श्रीशङ्कर आनन्द वन बस आनन्द समेत ।
तहां एक दिन द्विज तनय आयो तेज निकेत ॥

* द्युति ॥

कमलनयननिजतनकी भाशा । रविसमसबदिशिकरतप्रकाशा ॥
पढ़ वेद जानत श्रुति नीती । देखत शङ्कर और सप्रीती ॥
चढ़िगुरुकरुणातरणिअबाधा । तरयोचहैभव सिन्धुअगाधा ॥
अतिविराग व्याही नहिंदारा । तजिआयो औरहु परिवारा ॥
चरण कमल महँ गा लपिटाई । त्राहि त्राहि शङ्कर सुखदाई ॥
मुनिवर ताहि उठाय सप्रीती । रीझेलखि अतिप्रेम प्रतीती ॥
को तुम कहाँ धाम क्यों आये । लक्षण तुम्हरे परम सुहाये ॥
वय बालक वर बुद्धि सयानी । धीरज वान यथा बहु ज्ञानी ॥
हो तुम एक*नेक से लागे । निर्भयफिरहुसकलभ्रमत्यागे ॥
द्विजवर बोलये गिरा सुहाई । वचन चतुरता अति दर्शाई ॥
चोल देश महँ मोर निवाशा । कावेरी जहँ करति प्रकाशा ॥
जेनर करहिं तासु जल पाना । लहहिंपरमहरिभक्तिसुजाना ॥
महा पुरुष दर्शन अनुरागी । घूमा बहुत देश गृह त्यागी ॥
कोउ सत्कर्म इहाँलै आयो । नाथ चरण दर्शन हम पायो ॥

सो० भव सागर बूड़त फिरौं अति शय भीति समेत ।
पार करहु मोहिं करि दया शङ्कर कृपानिकेत ॥

छं० स्वापांग सुधाप्रवाहलहरिनशोक भयहरिलीजिये ।
अपनीकृपामयदृष्टिसोंममदर्शाबलोकनकीजिये ॥
गुणदोष मेरेयहि समय जोआए निज उर लाइहौ ।
तौनाथ निरवधिकृपानीरधि विरुदप्रभुकब पाइहौ ॥
यशराशिहहै आपुकी मोहिं दीनपर करुणा किये ।
वैसोन यश उपदेश प्रभु श्रोमान समरथ कहँ दिये ॥
जेहि भाँतिबर्षत मरुथली जलधरपरम अस्तुतिलहै ।
सोवर्षवर्षहिं सिंधुमहँ कीरतिगिरा नहिं कोउ कहै ॥

सो० तव मुख शारद सार सुधा सरस निर्मल सुखद ।
तहँ सारस अनुसार मम मति प्रभु विरहहु सदा ॥

तथाकरहियहुविमलविचारा । कामादिक वश सब संसारा ॥

* अनेक ॥

पंच बाण कृत हृदय मलीना । आतम ज्ञान रहितसब दीना ॥
सुरधाम पुनि हिम कर मन्दिर । नहिं चाहत सो नगर पुरंदर ॥
धनदभवन अरु पावक बासा । पवन लोककोनहिंमनआशा ॥
सबसों अधिकब्रह्मको धामा । बरणातजाहिबहुत अभिरामा ॥
सो० बढ़ो विराग प्रकाश तवबाणी की प्रीति सों ।
तेहिकोकरैंविनाश लोकबासनामलिनअलि ॥
सकललोक तवकिंकर के उर । नहिंकौतुक उपजावहिंशङ्कर ॥
पृथिवी के बनितादि मनोहर । विष वल्ली फल समते सुंदर ॥
लौकिकविषयनकीयहिशोभा। कबहूं नहिं करैमन लोभा ॥
रम्भाकुच परि रम्भ बिधाता । इंद्र लोक नहिं कौतुकदाता ॥
ब्रह्मलोक सबगुण जेहिमाहीं । हम कहँ आदर पदसों नाहीं ॥
तव नवीनबाणी गुण खानी । चंद्र अमृत के धार समानी ॥
मन चकोर चाहै नित ताही । दूजी बात न ताहि सोहाही ॥
स्वर्ग भूमि कहँ जो सुखकारी । सकल सुमंगल प्रदुखहारी ॥
दीनन को धन सो घर भरई । भव निर्मूल नाश जो करई ॥
असगुन मंदिर भजन तुम्हारा । तहँ उत्कंठित चित्त हमारा ॥
सदा रहहु दूसरि नहिं आशा । भजनसदा मनकरहिनिवाशा ॥
दो० भव व्याधिन के वैद्यवर शिव लीन्हों अवतार ।
यहिसुनि आयों शरणमैं मेटनहित दुखभार ॥
भव बंधन यह रोग अपारा । हरहु नाथ भव रुज परिवारा ॥
मोर परम दुख मेटन हारा । तुम समान नहिंकोउ संसारा ॥
यहिविधिसुनिअतिविनयविलाशा।दीन्हकृपानिधितेहिसंन्यासा॥
प्रथमशिष्य शङ्करगुणधामा । बरणात संत सनंदन नामा ॥
यह संसार समुद्र अपारा । गयोचहै द्विज बालक पारा ॥
दृढ नौका संन्यास स्वरूपा । भयो कृपा रस दण्ड अनूपा ॥
ऐसी तरणि चढ़ाय उदारा । करि दीन्हों भव सागर पारा ॥
ने औरहु देवन के अंशा । सेवन हेतु चंद्र अवतंशा ॥

भूसुर कुल महँ प्रकटे आई। सहित विराग शम्भु पहँजाई ॥
पहि तेहु सेवक सुर समुदाई। अबहूं शिष्य भये हर्षाई ॥
गिरिकैलाशशिखरश्रुतिगावा। अतिसुंदर वटवृक्ष सोहावा ॥
दो० तेहितर बैठे मौन गहि शङ्कर परम सुजान।
तरुण मनोहर रूप हर जगगुरु कृपा निधान ॥
तिनसमीप सुरमुनिऋषिवृंदा। बामदेव सनकादिक सिद्धा ॥
तेऊ सकल मौन ह्वै जाहीं। जेहिकारणकछुसंशयनाहीं ॥
जग पावन वर चरित घनेरे। ये ऐसे सेवक हर केरे ॥
जग उद्धार हेतु शिव आये। तिन सबहुन भूसुर तन पाये ॥
सेवहिं श्री शंकर के चरणा। तिनकोसुकृतजायनहिंवरणा ॥
छं० श्री शेष अपने साधु शब्दन लोग संतोषित करैं।
कविराजमुनिवरबाल्मीकहु कल्पितास्वरचितहरैं ॥
मुनिव्यास वर्णित सूत्रदेवहिं काल पीछे अर्थको।
तत्त्वशाकृतारथ करतशंकर तिनसमान समर्थको ॥
दो० चक्र तुल्य महिमा सुभग शंकर सेवहिं लोक।
बक्र पंथगत बुद्धिनिज कीन्हीं विमल विशोक ॥
जिमिकिरणनसवितावछबिपावा। नयनसमूहसुरेश सोहावा ॥
कल्पविटप पुष्पनसोंराजहिं। शिष्यनसोंतिमिशंभुबिराजहिं ॥
अथ शंकर विश्वनाथ संवादः ॥
कछु दिन गत ग्रीषम ऋतुआई। भईसो काशी पाय सोहाई ॥
मध्यदिवस अति आतपछावा। जनु शिवतीसरनयनदेखावा ॥
दिनकरकीकिरणेअतिचमकें। तिनहिंपाय*सविताश्मशादमकें
मणिभूमींजहँरुचिरसँवारी। तरणिकिरणितहँअतिशयप्यारी॥
कहु सामुद्र पूर सम भासै। मोरपंखछबि कतहुं प्रकाशै ॥
दिनमणि जनुमायावीआयो। बहुत भांति को रंग देखायो ॥
कमलखंडिगत विमलसराला। अरु शकुंत तरु जंबु रसाला ॥
गिरि कंदर महँ मोर अदीना। जल अथाहगत सुस्थिरमीना ॥

* सूर्य्यकांति ॥

शंकर जानि समय मध्याना। चले करन सुरसरि अस्नाना॥
शिष्य मध्य सोहैं प्रभु कैसे। उडुगण बीच सुधाकर जैसे॥
दो० शंकर देख्यो निकट तर आयो एक चंडाल।
लीन्हें अपने संग महँ चारि श्वान बिकराल॥
जाहि दूर तेहि सन शिव बोले। तेहूं उतर दिये अनमोले॥
अद्वितीय मनवद्य मसंगं। सत्य बोध सुख रूप मखंडं॥
श्रुतिकहैं आतम परम पवित्रं। तहां भेद कल्पत तव चित्रं॥
दहिने कर महँ दण्ड विराजै। बांये हाथ कमंडलु राजै॥
बसन कषाय महा छवि देहीं। बोलतबचन चित्तहरिलेहीं॥
ज्ञान गंध आई नहिं ढिगहीं। बेष बनाय गृही जन ठगहीं॥
दूरि करौ केहिको यति राजा। देह किधौं जो देह विराजा॥
छं० यहिअन्नमय ते अन्नमय को भेदकहु कौने लह्यो।
तिमिभेदसाक्षी साक्षिकर नहिंजात काहूपरकह्यो॥
द्विजवर श्वपच को भेद प्रत्यग आत्मासों नहिंबने।
यति राज यह मेरी गिरा मनमें विचारो आपने॥
सो० दिन कर बिंब उदार पड़ो देव सरिधार में।
सोइ सुरा मझार उभय मध्य अंतर कवन॥
जो वहु सब में आप विराजै। सकल शरीरजासुकछबिछाजै॥
एक पुराण पुरुष श्रुति गावा। ताहि छोड़ितवमनहठभावा॥
हैं हम भूसुर परम पुनीता। श्वपचदूरि हमसों अपुनीता॥
विमलअचिंत्य अनादिअरूपा। अज अव्यक्त अनंत अनूपा॥
निज स्वरूपअभूलि सोहावन। गहोदेह अभिमान अपावन॥
करिकर सम चंचल यह देहा। आपुसानि बढ़ि गयेसनेहा॥
मुक्तिपदी पाई शुभ विद्या। संग न छोड़ा तवहुं अविद्या॥
त्यागि दियो सब सुख समुदाई। जन संग्रह तवहूं दुख दाई॥
माया नाथ केर यहु जाला। इंद्रजालते अधिकविशाला॥
बूड़हिं तुमसे ज्ञान निधाना। अहोमोहमहिमा बलवाना॥

दो० यहसुनि अंत्यज की गिरा शंकर कीन्ह विचार ।
श्वपच न होय देव कोउ बोलत वचन उदार ॥

अत्युदार चरितामृत धारा । शंकरकही गिरा सुखसारा ॥
आपु कहैं सब सांचे बयना । पुरुषप्रवरतुमसबगुणअयना ॥
यहु अंत्यज ऐसी मति त्यागौं । तुम्हरे बोध बचन अनुरागौं ॥
भेद शून्य दुर्ल्लभ जग माहीं । उपालंभ करिये केहि पाहीं ॥
श्रुतिशिरमुनिआतमसबजानहिं । इंद्रीवर्गविजयकरि*मानहिं ॥
ध्यानहूं करहिं सदा मन लाई । भेद बुद्धि तबहूं नहिं जाई ॥
आतम रूप सकल जग जाही । करौं प्रणामसदा मैं ताही ॥
श्वपच होहु द्विज वर वा होहू । हमरे मन नाहीं संदेहू ॥
जो चैतन्य शक्ति हरि पाहीं । सोई कीट पतंगहु माहीं ॥
सो त्रिकाल में हैं अविनाशी । मैंन दृश्यजो भ्रांतिप्रकाशी ॥
ऐसी जेहि की बुद्धि उदारा । कोऊ होहु सो गुरू हमारा ॥
घटपटादि जहँ उपजै ज्ञाना ।तजिउपाधिश्रुतियुक्तिप्रमाना ॥
ज्ञान मात्र हैं आनँद रूपा । जेहिकी ऐसो बुद्धि अनूपा ॥
पावन होहु अपावन देहा । सो नर मम गुरु नहिंसंदेहा ॥
यहिविधिकहतबचनश्रीशंकर । नहिंतहँ अंत्यज श्वानभयंकर ॥
चंद्र कला धर आगे पाये । मूर्त्तिमान संग वेद सोहाये ॥
भयधृति विस्मय हर्ष सहीता । भक्तिसहितअस्तुति सुपुनीता ॥
करन लगे श्रीशिव कहँ देखी । भयोमोद परितोष विशेषी ॥

दो० देह दृष्टि तव दास हैं जीव दृष्टि तव अंश ।
आत्म दृष्टि तव रूपहैं सु हु चंद्र अवतंश ॥

शंकर सर्बातम जग दीशा । यहमम निश्चयहै गौरीशा ॥
लौकिकमणिमहँद्योतप्रकाशा । जहां रहै भास निज भाषा ॥
खोदी जान शान पर चढ़ई । मणि मंजूषा भीतर रहई ॥
परम हंस तहँ मन नहिं धरहीं । छुइबेको इच्छा नहिंकरहीं ॥
असिमणितेगुणकोटिप्रभाशा । भीतरब.हेर करहिप्रकाशा ॥

* मननकर लेहे ॥

त्रिभुवन मंजूषा जेहि नाहीं । सबसोंपड़समायकेहिमाहीं ॥
चहिअजाहिनहिंखनोनशाना । यतीकरहिंजेहिकरनितध्याना
सदा चाह राखैं जेहि केरी । यतन करैं मन प्रीति घनेरी ॥
प्रशावहु तत्पदलक्ष्य स्वरूपहि । त्वंपदलक्ष्यअभिन्नअनूपहि ॥
सब कर परम प्रकाशक जोई । निगमशिरोभूषणासिसोई ॥
छं० हेशास्त्र जगमहँ धन्यतुम पर तत्त्वजो बोधन करै ।
कालाभ दीन्हों शास्त्र नहिं जोगुरुकृपा उरमेंधरै ॥
नहिंभयो पूरणबोधजो तौगुरुकृपाकह फलदियो ।
पुनिबोधसों कालाभजो अवलंब ममनाहींकियो ॥
सो० जासुज्ञान पर्यंत सब अचरज यहि जगत महँ ।
प्रणमों ताहिअनंत निज स्वरूप भूतार्थ जो ॥
यहिविधिशंकर अस्तुतिकरहीं । अश्रु विंदुनयननसों गिरहीं ॥
बहु प्रकार तब करि सन्माना । बोले शंकर कृपा निधाना ॥
विधि हरिहर पदवी तुम पाई । निज स्वरूप निष्ठा सरसाई ॥
व्यास तुल्य ह्वैहौ जग माहीं । मम प्रिय तुमसम दूसरनाहीं ॥
वरदायक सब के संसारा । ह्वैहैं तवयशधरणि अपारा ॥
वेद व्यास करि वेद विभागा । ब्रह्म सूत्र पुनि रचे सुभागा ॥
सूचन करहिं ब्रह्म कहँ जोई । तेहिते ब्रह्म सूत्र भे सोई ॥
जहँकणादिसांख्यादिअनेका । खण्डसबमत सहितविवेका ॥
सूत्रन तिन की भाष्य बनाई । दुइ वा तीनि वाक्य बलपाई ॥
अपनी जानि बहुत कछुजाना । कलि के दोष बढ़ो अज्ञाना ॥
भयो अर्थ उनको अयथारथ । तुम समर्थहो करहुयथारथ ॥
श्रुतिशिर अभिप्रायतुमजाना । दुर्मत खण्डहु सहित प्रमाना ॥
सूत्र भाष्य अब करहु सोहाई भलीभाँति श्रुतियुक्ति घटाई ॥
ह्वैहै तुम्हरी भाष्य उदारा । बड़ आदर करि है संसारा ॥
दोष रहित इन्द्रादिक देखी । करिहैं आदर तासु विशेषी ॥
दो० कमला सनकी सभा महँ पुनि ह्वैहै सत्कार ।

यहिविधि राउर भाष्यकी अतिमहिमा विस्तार ॥
भास्कर भेदा भेद बतावै । अभिनवगुप्त शाक्तिगुणगावै ॥
नीलकंठ है मम आराधक । अहै परंतु भेदकर साधक ॥
मंडन मिश्र प्रभाकर सोऊ । केवल कर्म परायण दोऊ ॥
मंडन सुखिआ है सब माहीं । तेहि समान कोउ दूसरनाहीं ॥
सबन जीति अद्वैत सोहावा । थापहु जगमहँसबश्रुतिगावा॥
मोह निशा तम खोवन हारे । रविसमानहैं शिष्य तुम्हारे ॥
परम तत्त्व पथ पालन कारण । तहँ तहँ बैठारहु जगतारण ॥
ह्वै कृत कृत्य लोक सुख दाई । तवमूरतिमो महँमिलिजाई ॥
दो० यहिविधिकरि अतिशय कृपा वेदनसहितमहेश ।
तब अंतर हित ह्वै गये करि शंकर उपदेश ॥
विस्मित शिष्य सहित हर्षाई । स्नानकीन्ह सुरसरिमहँजाई ॥
मज्जनविधिकरिध्यानलगावा । तबशिवकेमनमहँयहुआवा ॥
अब बिलम्बकर अवसर नाहीं । जगउपकार होयजेहिमाहीं ॥
भाष्यादिक बहुग्रन्थ बनावों । जोशिवकह्योसोकरिदर्शावों॥
चंचरीक जिमि कमलविहाई । यथा हंस मानस तजि जाई ॥
यहिविधि विश्वनाथ बरपाई । कछु दिन रहे चले मुनिराई ॥
जे अद्वैता चार्य्य विराजा । तिन सबके श्री शङ्कर राजा ॥
श्रीहिमगिरिकहँकीन्हपयाना । चंद्र बिम्ब जनुछत्र समाना ॥
दो० सन्मुख गामि प्रकाश मिष निर्मल सुखद सुचारु ।
मानहुँ दिग्ललना सुभग रुचिर चमर शिरहारु ॥
सुरनर शांतिजनक सुखकारी । उत्तरदिशि लागीअतिप्यारी ॥
तहँ तहँ तीरथ सेवन कीन्हें । चले जाहिं बदरी मन दीन्हें ॥
कहुँ शीतल कहुँ उष्ण उबोधो । कहूंकुटिल मारग कहँ सीधो ॥
कहुँ नहिंकहुँ कंटकमगमाहीं । यथा मूढमन एक रस नाहीं ॥
देखहिंआतमअज अविनाशी । तद्यपिलौकिकरीतिप्रकाशी ॥
कहुँकहुँ सरस मधुरफलखाहीं । तोय पानकरि कहुँरहिजाहीं ॥

सोवत बैठत उठत बहोरी । शिष्यसंग शोभानहिं थोरी ॥
यहिविधिकरि मारगउल्लंघन । क्षेमसहित पहुँचे बदरी बन ॥
जहँ गिरि गौरी तात सुहावा । जहँ तहँ गंगधार छविपावा ॥
जासु दरी खेलहिं सुर नारी । करहिंगात शोभाउजियारी ॥
जे समाधि रत गतअभिमाना । *षट सप्त नवविगतसुजाना ॥
तिन ब्रह्मर्षिन साथउदारा । श्रुतिशिर विचार बहुवारा ॥
बरहीं बर्ष लोक सुखदाई । ब्रह्म सूत्र की भाष्य सुहाई ॥
अधिक भव्य अरु मधु गंभीरा । रचत भये शंकर मतिधीरा ॥
आतम तत्त्व कर बदर समाना । दूरिकियो सब मोह निदाना ॥
जे उपनिषद मुख्य दशगाये । सबके सुंदर भाष्य बनाये ॥
भारत सारभूत पुनि गीता । सनत्सुजात संहिता पुनीता ॥
बहुरि नृसिंह तापनी सुहाई । इन सबकोवर भाष्य बनाई ॥

दो० पुनि उपदेश सहस्रिका शंकर रची सवारि ।
औरहु ग्रन्थ अनेकप्रभु रचे सुभग मनहारि ॥

छं० दुर्वाद व्याख्या रूप तम श्रुति सूत्र महँ पहिले रह्यो ।
श्री भाष्यकार उदार रवि के उदय सो क्षण में मह्यो ॥
जे वादि रवि कर युक्ति सों सरिनाथ सम सूखे नहीं ।
तेभाष्यवर निज शिष्य लोगन कहँ पढावत सोहहीं ॥

दो० शिष्य हृदय पाथोज कहँ शंकर भानु समान ।
शम दमादिगुण सहित सब सेवहिं कृपानिधान ॥

तिन सबमहँ जेअति गुणवाना । भये सनंदन आदि प्रधाना ॥
सो सब वेद पढो सब जानहिं । गहनब्रह्मविद्याअतिमानहिं ॥
यहिते अद्भुत नेम सहीता । पुनिपढ़िवेकोरुचिसुपुनीता ॥
निजपदकमलमाहिं अतिप्रीती । प्रभु हर्ष लखि प्रेम प्रतीती ॥
उरसों अधिक दया सरसाई । तीनि बेर करि आपु पढाई ॥
वेदसार निधि की शुभ खानी । सकलग्रन्थ रूपा निज बानी ॥
देखि सनंदन कर सन्माना । औरन मनमहँ मत्सर आना ॥

*षड्र्मय: सप्तधातव: ५ पंचज्ञानेंद्रिय ४ अंत:करण सहित नव ९

सो सब जाना श्री वृष केतू । अनुपम भक्ति दिखावनहेतू ॥
एक दिन तट पर शंभु उदारा । रहे सनंदन सुरसरि पारा ॥
दे संबोधन शंभु पुकारा । तुरत सनन्दन कीन्हबिचारा ॥
सो० जो गुरु भक्ति उदार तारहिं भवसागर महा ।
क्यों नकरैंगीपार सो इमकोयहिसरितसों ॥
यहिबिचारितजिसकलश्चंदेशा । सुखसोंजलमहँ कीन्हप्रवेशा ॥
जहँ तहँ प्रीतिसहित पगुधारा । तहँ तहँ सुरसरि पद्म उभारा ॥
धरि कमलन पर चरण उदारा । प्रभु समीप पहुँचोगुरुप्यारा ॥
शिवकहँ विस्मय हर्षअपारा । हृदय लगायो बारहिँ बारा ॥
अद्भुत देखि तासु गुण ग्रामा । पद्म पाद धरि दीन्हो नामा ॥
ज्ञान विटप के दाव समाना । कुमतपाशुपतकरअभिमाना ॥
पाठ होत बेरा दुइ चारी । आपकह्यो पशुपत मतधारी ॥
दो० कारज कारण योग विधि दुःख नाश ये पांच ।
कहे पदारथ मुक्ति हित श्रीपशुपति प्रभुसांच ॥
कारज कारण महत प्रधाना । योगसमाधीविधि अस्थाना ॥
सब दुख नाश मुक्ति के पाये । पांच पदारथ पशुपति गाये ॥
उभय भेद कारण महँ जानहुं । उपादान प्रकृती कहँ मानहुं ॥
अरुनिमित्तकारणश्रीपशुपति । लोकहिऔर नाहिंदूजीगति ॥
जैसे जग देखिय साकारा । तैसे पशुपति सहितअकारा ॥
तुमजो ब्रह्मकहँ कारण मानहु । मुक्तिकौनविधिकीउरआनहु ॥
निराकार बहु जग सुख रूपा । सो सुखमय जगहै दुखरूपा ॥
प्रलयकाल जब जगलय होई । तासु दोष दोषी पुनि सोई ॥
इत्यादिक बहु संशय कीन्हे । शंकर सब खण्डनकरिदीन्हे ॥
कारण सम सब कारज होई । ऐसो नेम दीख नहिं कोई ॥
गोबर सों वृश्चिक भव होई । गोमयसमता लहहिंकि सोई ॥
नख अरु केश देह सन जाये । तनसमकबहूं नहिं लखिपाये ॥
घट सरावजबधरणि समाहीं । तिनकौनहिंविकारमहिमाहीं ॥

टेढ़ी गोल भूमि नहिं होई । निज स्वरूप स्थिर समसोई ॥
मरुमरीच सों थलहि न दोषा । ब्रह्म सदा तिमि रहहिं अदोषा ॥
जब कछु गर्वल चोवन केरा । कीन्हों मत खण्डन तिन केरा ॥
पशुपतिप्रकृतियोगनहिंलहई । चितजड़संगतिकिमिनिर्वहई ॥
उत्तम मध्यम हीन बनाये । दुखी सुखी जन जगउपजाये ॥

दो० ऐसे राग द्वेष को पशुपति लहहिं प्रसंग ।
यहि विधि तव अभिमत जगत कारणह्व गोभंग ॥
ईश्वर समता मुक्ति जो भेद रहे क्यों होय ।
ध्यान जनित मानो जो पैहै मत ठीकन सोय ॥

जो उपजो न श्वर है सोई । जनितनित्यताकेहिविधिहोई ॥
पशुनमांहिं ईश्वरगुणआवहिं । मुक्ति समय ऐसो जो गावहिं ॥
अंगहीनगुणकेहिविधिआवहिं । अंगबिनाकोउचलैनपावहिं ॥
पद्म गंध मारुत जिमि लावैं । तिमिपशुपहँपशुपतिगुणआवैं ॥
ऐसे जनि मानहु मन माहीं । उपमा को समुझे तुम नाहीं ॥
पंकज गंध सूक्ष्म परि मानू । जात पवनसँग निश्चय जानू ॥
एक प्रश्न हमरो यह कहहू । अपने मन में हठ नहिं गहहू ॥
मुक्तन महँ थोरे गुण आवैं । अथवा सब गुणआय समावैं ॥
प्रथमपक्षनहिं बनहितुम्हारा । दूजे आवहि दोष अपारा ॥
सबगुणजोपशुमहिचलिआये । ईश अबोधादिक गुण पाये ॥

छं० यहिभाँति कर्कशतर्कसों निजपक्षजबखण्डनभये ।
जे रहे विद्या गर्व पूरण मान सब तिनके गये ॥
जिमिगरुड़पंखसवेगहतफणासकलसर्पविमोहहीं ।
सबछोड़िविषज्वालातथा पशुनाथ सेवकसोहहीं ॥
व्याख्यासुशोभितचातुरीग्रावशोषनयननवावहीं ।
निजशिष्यमण्डलहृदयपद्मदिनेशभावदिखावहीं ॥
उल्लंघि दिग्पर्यंत यश कुसुमन जगत बहुसोहहीं ।
मृगवादिमंडल सिंहक्रीड़ा करतजनमन मोहहीं ॥

सो० बन वेदान्त विहार तीक्ष्ण तर्क नख दाढ़ सम ।
शंकर सिंह उदार भय प्रदवादि गयंद कहि ॥

देखि अमानुष चरित सुहायो । लघुवय बड़ प्रभाव प्रभु पायो॥
विस्मितमनअतिशयहर्षितउर । कहनलगे काशीके द्विजवर ॥
सर्वशास्त्र द्योतित इन कीन्हे । विदुष हृदयभयसोंभरिदीन्हे॥
गुरु भास्कर गुप्त मुरारी । पायो सबन पराभव भारी ॥
इन की निष्ठा सो हर्षाने । दर्शन देय शम्भु सन्माने ॥
सूत्र भाष्य की रचना हेतू । प्रेरन कीन्ह आप वृष केतू ॥

दो० कुमत पंक महँ मग्न जो रही पुरातन गाय ।
व्यास उधारी धेनुसो बुधजन हित मनलाय ॥
भाष्य मनोहर अमृत जल धोयकरी निष्पंक ।
युक्तिसहितभूषितकियोसबविधिमेटिकलंक ॥

तीनिलोक जेहिको पयपावन । पित्रतक्रियाफलरूपसुहावन॥
विधिस्वरूप द्विजवर गृहवासा । ताहिधेनुकहँ विगतप्रयासा ॥
घोरखरन डारी गहि कूपा । पंकिलअधिकक्कुतर्कस्वरूपा ॥
भाष्य सिंधु वचनामृत धारा । अंग धोय सब पंक निवारा ॥
श्रुतिशिर मिथ्या वचनसुनावैं । जीव ब्रह्म एकहि करिगावैं॥
यहविचारिअतिकरहिअनादर । एकन फेंकि दिये घरबाहर ॥
कर्मिन यहु कीन्हों अनुमाना । कहँ यजमानकेर गुणगाना ॥
नैयायक पुनि औरहु बादी । श्रुतिशिरको जोभावअनादी॥
वंचन करि तिन अर्थकोरायो । और रह्यो औरहि दर्शायो ॥
जेहिविधि तत्वमसी करभावा । सो तू है यह वेद बतावा ॥
तेहि को तू है तेहिते जायो । यहिविधिबहुप्रकारउलटायो॥
अशरण सी उपनिषद सुहाई । श्री शंकर शरणागत आई ॥
मोद मान सब दुःख विहाई । राजहि श्रुति आनँद सरसाई ॥

छं० धायोहननहित जीवके जो शून्यमत वादीरहो ।
पुनिजीवने काणाद सो कछुलाभ योरोसोगहो ॥

श्रीमद्द पादादिकनसों निजपद गमन मारगलहा ।
कियोसांख्यकुछदुखदूरिप्राणायामपातंजलिकहा॥

दो० तेहिसे भै कछु पूज्यता करि सब दूरि कलेश ।
श्री शंकर यह जीव को करि दीन्हों परमेश ॥

भूत*ग्रसित आतम नहिँ देखा । चार्वाक कहँ मोह विशेषा॥
यद्यपिदेख्यो योगा चारा । तदपिक्षणिकतेहिकीन्हविचारा॥
तार्किक मीमांसक पुनिदेखा । भूत रहित निज उरमहँलेखा ॥
सांख्यकृती कछु मानो नाहीं । भूतन गुण कछु आतममाहीं॥
भूत असत्व काहु नहिँ माना । तेहिते जीवरहा भय साना ॥
भूतसत्व सब दूरि बहाई । जीव अभयकीन्हों सुरसाई॥
भयोनकछु अचरज व्यवहारा । ज्ञान धाम शंकर अवतारा॥

दो० चार्वाक अपलाप करि डारो जीवहि घालि ।
ज्ञानगुणादिक भेंटदैकछु कणादलियोपालि॥
तिनसों कर्षिन छीनकै जीव कियो सुरदास ।
यज्ञादिक कीन्हो करै सदा स्वर्ग को आश ॥
तिनहुनसों पुनि खैंचिकै करिदीन्हों मनहीन ।
सांख्य न राख्यो जीवको एक प्रकृति आधीन॥
देखि परातम रूपसो सर्वेश्वर करि दीन्ह ।
श्रीशंकर अवतार जिन यहीहेतु महि लीन्ह ॥

## अथ भाष्य वर्णनं ॥

कल्प लता सम शंकर बानी । सुमननकहँअभिमतफलखानी॥
जिन देखी यह मधुरस सानी । औरभाष्यतिनमननहिंआनी॥
श्री शारद सौ भाग्य विहीना । तथा दुरन्वयसबगुणा हीना॥
वैबानी प्रिय लागहिं कैसे । सुरसरित्यागि कूपजल जैसे॥
काम किरात शरासन बाना । विदलितउरधीरजनहिँज्ञाना॥
तिनकी बुद्धि रचित जे ग्रन्था । रस विहीन संसृति के पंथा॥
शंकर ग्रन्थन अनुसर सोई । धीरजवान पुरुष जो होई॥

* पंचभूत ॥

जेहिकरनिर्मल मन अभिरामा । वर्जित भेद लह्यो विश्रामा ॥
सुधासार अहमित की हरनी । भगवत्पाद गिरा भव तरनी ॥
कोउ कह तासुसमान सोहाये । औरनहूं जो ग्रन्थ बनाये ॥
जेहि के मन शंका असि ऐहै । सोई यह उपमा मन लैहै ॥
कृत्तिम नहरि कुग्राम बनाई । देव नदी सम सहज सोहाई ॥
यथा रुचिर शंकर शिर धारा । तैसोई है नहरि प्रचारा ॥

दो० जेहि वाणी के स्वाद सो मधुरिपु वधू उदार ।
कनकवृष्टिसों भरिदियो द्विजवरको घरद्वार ॥

जौनि गिरासुनि उमा भवानी । सौंदर्य्य लहरी हर्षानी ॥
महा भयानक विषधर जेऊ । जाहि सुने भय देहिं न तेऊ ॥
साबर मंत्र रूप प्रभु बानी । तुलसिहु महिमा जासु बखानी ॥
अनमिल आखर अर्थ न जापू । प्रकट प्रसिद्ध महेश प्रतापू ॥
श्री शंकर बचना मृत धारा । काहि देहि नहिं मोद अपारा ॥
यतीराज वर गिरा उदारा । जनु सुरतरु कुसुमनकी धारा ॥
अर्थ पंक्ति चिंता सरिस नारी । वेणी नृत्य मनहु मुद कारी ॥
व्यंग्य समूह मनहुं सुखदाई । काम धेनु पय लहरि सुहाई ॥
ऐसे सुखद प्रबंध बनाये । सकलस्वर्ग सुखमहिदर्शाये ॥
कदली सरिस बचन मधुराई । श्रम अपहरनि अर्थ चतुराई ॥
काव्य सकल गोक्षीर समाना । मानहुसर्पिग्रंथध्वनिनाना ॥
यतिवर गिरासकलगुणखानी । बुधलोगन अतिधन्यबखानी ॥
जिन महँ कर एकहु श्लोका । प्रमुदितकरहिसदाअवलोका ॥
गिरा गुंफ अतिशय गुणवाना । सुस्तनवांकुर सरिस बखाना ॥
अर्थ सुभग पंकज मकरंदा । उज्वल अतिशयदेहिअनंदा ॥
सुर तरु सुमन सुगंध सुहाई । व्यंगमनहुँ गर्भित करिलाई ॥

सो० यहिविधि परमउदारकाव्य पंक्ति यतिराजकी ।
विधि गृहणी शृंगार काहि देत आनंद नहिं ॥

असमहिमाजेहिकीअतिवरनी । सो भवसागर की वर तरनी ॥

श्रुतिशिर भाष्यसुनीजबकाना। केते द्विजवर तर्क प्रधाना॥
*अक्षपाद मत ज्ञान गुमाना। गंग तीर बासी गुनवाना॥
तिन खण्डनकर कीन्हप्रसंगा। पावक देखी यथा पतंगा॥
तापन घर्षन छेदन द्वारा। लहै हेमजिमि वरण उदारा॥
पाय वादिगन सथन प्रयासा। भाष्यतेजत्र्यतिकीन्हप्रकाशा॥
भाष्यमनहु द्विजराज सुहायो। शंकर क्षीर सिंधु सन जायो॥
सुक्ति सुधा बुधजन कहँ देही। कुमत रूप सब तमहरिलेही॥
विमलगिरासोइकिरणसमाना। प्रमुदितद्विजचकोरगणनाना॥
सो० वेद पयोधि अपार मथि करि काढ़ो सुधासम।
शंकर भाष्य उदार अजर अमर करि देहि जो॥
अंतर बैरि काम अरु क्रोधा। बाहेर के बादी गण योधा॥
जिन जीते रिपु गण दुखदाई। तिनके सेवन योग सुहाई॥
शंकर दिनकर परम सुजाना। भाष्यविशद रबिप्रभासमाना॥
सज्जनहृदयकमल विकसाने। तब अज्ञान स्वरूप नशाने॥
शंकर गिरा प्रताप नशाने। प्रति वादी उलूक प्रविलाने॥
श्रुति समूह मय सिंधुअगाधा। व्यास न्याय मंदर गत बाधा॥
शंकर जबहि मथोविधिनाना। भाष्य भई तब सुधा समाना॥
जीवत अजर अमर करिलेही। सुनतहि बुधन अमरपद देही॥
दो० पद्मनाभ के पाद सों सुरसर भई अनूप।
श्री शंकर मुखसों विमल भाष्यगिरा सुखरूप॥
पहिली में प्रारब्ध बश बूड़ि जात हैं लोक।
सरन उधारै दूसरी करि सब भाँति विशोक॥
न्याय समूह सूत्र शुभ गुंफित। रत्न मयी माला सी शोभित॥
वेदव्यास प्रकट तेहिकीन्हा। अर्थबिना काहू नहिंलीन्हा॥
यतिपति जबहिंअर्थ देदीन्हा। सुलभहोतसब बुधजनलीन्हा॥
पण्डित आभूषित उर दर्शै। व्यास कृतारथ मन में हर्षै॥
असि उदारता शंकर केरी। लखिलोगन विस्मयबहुतेरी॥

---

* गौतम॥

छं० विद्वान मण्डल परम तप केरी मनहु फलरूपहै ।
श्रुतिरूप विनिताकेश मालति मालकेअनुरूपहै ॥
श्रीव्यास सूत्र पवित्र सुन्दर मित्र पुण्यो दय भई ।
वाग्देवि के बड़ भागवै भवको मनो शाखा नई ॥
दो० ऐसी शंकर भाष्य ते करि हैं सदा विचार ।
बहुरि न सम्भव होयगो जिन को यहि संसार ॥
श्रुति कदम्ब पयसागर सुंदर । गिरा सुसंथन शैल धुरंधर ॥
जे जग अर्हहिं परावर ज्ञाता । तिनकहँ अतिआनंदविधाता ॥
कुमतरूपचखर्वतिमिरविनाशिनि । युक्तिकिरणशुभपन्थप्रकाशिनि ॥
यतिनृप ग्रन्थसूक्ति सुदखानी । करति प्रकाश परम सरसानी ॥
परब्रह्म विद्या सुख राशी । यहिप्रकार सब औरप्रकाशी ॥
दक्षिण रामेश्वर पर्यंता । उत्तर जहँ सुमेरु को अंता ॥
प्राची दिशि उदया चलताई । पश्चिम अस्त शैल लौंछाई ॥
सो० द्वैत रहित गुण खानि जग बंधन कर वालसी
मुक्ति करति सुखदानि आतम* विद्या परमहित ॥
प्रकटी श्री यतिराज शंकर करुणाकर सुखद ।
सर्वोपरि सो विराज अति उत्कर्ष न ज्ञायकहि ॥
इतिश्री मत्परमहंसपरिब्राजकाचार्यश्री ७ स्वामिराम
कृष्णभारतीशिष्य विरचितेश्रीशंकरदिग्विजयेब्रह्म
विद्याप्रस्थापनपरः षष्ठः सर्गः ६ ॥

श्लोक ॥ शिवंशिवाद्र्धावयवंशिवंकरंहरंमहामोहहरंहरिप्रियं ॥ गौरं गुरुंगंगतरंगसंगमंभवंभवाभावकरंभजाम्यहं १

अथव्याससमागमं ॥

दो० एकसमय सुर सिंधुतट बाठरेत सुख धाम ।
शारीरक की भाष्यको दिवस गयो दुइ जाम ॥
शंका शिष्य बर्ग जो करहीं । समाधान करि संशय हरहीं ॥

*खड्ग

यहिकारण लागी अति बारा । उठिबेको जब कीन्ह विचारा ॥
द्विजबर वृद्ध एक तहँ आयो । श्री शंकर को बचन सुनायो ॥
कोतुम काह पढ़ावहु ताता । हमहुँ सुनहिं कहुतवमुखबाता ॥
शिष्य कहैं ये गुरू हमारे । भेद बाद सब दूरि निवारे ॥
शारीरक वर भाष्य बनाई । सो हम कहँ पढ़ाव द्विजराई ॥
यह सुनि श्री शंकर सों बोले । द्विजबर निर्भयबचनअमोले ॥
राउर शिष्य जिते ये अहहीं । भाष्यकारतुमकहँसबकहहीं ॥
है यद्यपि यह अद्भुत बाता । होहु हमैंकह ज्ञान विधाता ॥
मुनिवर सूत्र अर्थ जो जानहु । भाष्यकार अपने को मानहु ॥
तौ मेरो पूंछो तुम कहहू । एकसूत्र बहु क्लेश न लहहू ॥
भाष्यकार बोले सह प्रीती । सुनहु विप्रवर हमरी रीती ॥
सूत्र अर्थ जे गुरुवर जानैं । तिनहिंप्रणामकरैं हसमानैं ॥
सूत्रज्ञान अहमिति सोहिंनाहीं । जोपूंछो कहिहैं। तुम पाहीं ॥

सो० तीसर जो अध्याय आदि सूत्र आरंभ को ।
द्विज प्रतीक दर्शाय शंकर सों पूंछत भये ॥
तदनन्तर प्रत्यादि मैं पूछौं यतिराजवर ।
होय तुम्हैं जो यादि अर्थकहो यह सूत्रको ॥

तब यहु दीन्ह उत्तर श्री शंकर । जीव शरीर त्यागके अवसर ॥
सूक्षम भूत घिरो नित जावहि । जिनसों दूसरिकायापावहि ॥
गौतम जैमिनि को प्रश्नोत्तर । तांडि श्रुती महँ आवत सुंदर ॥
प्रकट अर्थ यहु तहां सुहावा । औरहु पूंछो जो मन भावा ॥
द्विजवर सो विकल्प दर्शाई । कीन्हें। खण्डन बाद बढ़ाई ॥
देहहेतु को लाभ कौनि विधि ।होतजीवकहँकहहुकृपानिधि॥
कर्म बेगके आपुहि आपा । देह हेतु मानहु तुम व्यापा ॥
सब इंद्रिन युत जीवहि मानहु । अथवाकेवल मनयुतजानहु ॥
अथवा जीव आपु चलि जाई । तरुते तरुपर शुक की नाई ॥
सूक्षम भूत जीव सँग जाहीं । श्रुतिअनुकूलकहततुमनाहीं ॥

देह वियोग समय यतिपावा । गो*शशानिजकारशालयपावा ॥
लय ह्वैगे पुनि कैसे जाहीं । समुझिकहैयतिवरमोहिंपाहीं ॥
जीवगमन नहिं बनहिं बनावा । सो कहहु जो श्रुतिनसुनावा ॥
पण्डित कुंजर जुरी समाजा । सुनिविस्मतउरचकितविराजा ॥
दो० सर्वविकल्प अनुवाद करि पुनि उत्तर मन दीन्ह ।
सहस भांति द्विज प्रश्नको शंकर खंडन कीन्ह ॥
जीवजातलखिप्राण सिधारहिँ । तेहिके सँग इंद्री अनुसारहिँ ॥
प्राण साथ सब इंद्री जाहीं । यहश्रुतिआपु लखीधौंनाहीं ॥
आश्रय रहित प्राण नहिँजाई । जीवत हूं यह युक्ति सुहाई ॥
और शरीर न सो विन प्राना । जीवगमनकर नहिँअनुमाना ॥
लय प्रकार द्विजवर जो बरणा । तासुउत्तरु यह संशयहरणा ॥
पावकादि महँ गोवा गादी । लय बरणी जो वेद अनादी ॥
अग्न्यादिक करजो उपकारा । रहै न गो महँ मरती बारा ॥
यह उपचार श्रुती उर आनी । पावकादिमहँविलयबखानी ॥
सुर गुरु शेष सरिस गिरधारी । भयोविवाद आठदिन भारी ॥
उत्तर प्रति उत्तरहो कहहीं । श्रुतिवर पक्षउभयदृगगहहीं ॥
यहिविधि दूनहुं वादकराहीं । पद्म पाद जान्यो मन माहीं ॥
दो० येद्विजवर नहिँ सुनहुं प्रभु बिनती मोरि यतीश ।
हैं वेदांत रहस्य के ज्ञाता व्यास मुनीश ॥
साक्षात श्री शम्भु तुम श्री नारायण व्यास ।
उभय बिवाद देखि अति किंकर लहै प्रयास ॥
उभय देव अब कृपा करीजे । मोकहँउचितसिखावनदीजे ॥
जो ये बचन शम्भु सुनि पाये । दर्शनलागि नयन ललचाये ॥
हाथ जोरि पुनि मधुरी बानी । यहिविधिशंकर स्तुतिठानी ॥
दामिनि द्युतिवर जटाकलापा । सजल मेघ सूरति हरुपापा ॥
चंद्र किरण उपवीत विराजा । कृष्णाचर्मधर श्री मुनिराजा ॥
कृष्णाचंद्र तुम कलि मल हारी । सुनहुं नाथ अज्ञान तमारी ॥

*इंद्री ॥

छं० तवसूत्रपर अद्वैत भाष्य जो नाथ मैं निर्मित करी ।
जहँसगुणनिर्गुणब्रह्मकोनिर्णयकियोहैश्रीहरी ।
जोभाष्यसम्मतआपुकहँतौ कृपामोपरकीजिये ॥
अपराध सब क्षमिकरहमारो दयादर्शनदीजिये ॥

दो० यहिविधि अस्तुति करतहीं प्रकटभये श्रीव्यास ।
जटा मुकुट थिर तड़ित सम मानहुं करैं प्रकाश ॥

सजल मेघ सम रुचिर शरीरा । मुद्रा ज्ञान धरे गंभीरा ॥
चंद्रकांति मणि करक सुहावन । सोहैं हाथलिये श्रुतिभावन ॥
श्याम शरीर प्रभा छवि छावा । करकमनोहर उपमा पावा ॥
जनुअनुराग भरी निशि पार्वनि । भेंटतिशरदचंद्र मन भावनि ॥
अक्षमाल सोहति उर पाहीं । सप्तविंशगजमणिजेहिमा हीं ॥
जनु तारावलि मिलि संगमाहीं । प्रीतम चंद्र मनावन जाहीं ॥
सिंह चर्म नित धारण करहीं । भस्म जटावर शिरपर धरहीं ॥
अक्ष वलय कर महँ प्रियलागी । शंकर अद्वैसिन के भागी ॥

सो० अहमितिअतिवरिआर कुंजरेंद्र जिनवशकियो ।
आंकुश तीखीधार आतम विद्या रूप शुभ ॥
खम्भ मनहुं वेदांत सूत्र ज्वाल की दामसो ।
श्रुति सहस्र सिद्धांत बांधी धेनु समान जिन ॥

जैमिनादि बड़ कीरति धारी । संगशिष्य मंडलि अतिभारी ॥
सुधा सजीवनि सूरि सोहाई । मुनिचलवनिअतिशयसुखदाई ॥
यतिवर मुनिवर कहँजबदेखा । बाढ़ो विस्मय हर्ष विशेषा ॥
शिष्यसहितआगेउठि लीन्हा । करिप्रणाम पूजन बहुकीन्हा ॥
विनय सहित आसन बैठारे । प्रेम भरे पुनि बचन उचारे ॥
द्वैपायन मुनि स्वागततुमको । सबविधिकियोकृतारथ हमको ॥
राउर कहँ यह अचरज नाहीं । पर उपकार सदा मन माहीं ॥
जगकेहित नित प्रति श्रमकरहू । निजबाणी सबकर तम हरहू ॥

छं० शिव विष्णु नारद लिंग गारुड़ ब्रह्मपद्म सोहावनी ।

वामन वराह स्कंद कूरम भागवत जग पावनी ॥
पुनि मार्कंडे ब्रह्म वैव्रत मत्स्य अग्नि भविष्य जो ।
ब्रह्मांड अष्टादश पुराणन आपु बिन जग करतको ॥
दो० नारी चौथे वरण को लखो न श्रुति अधिकार ।
तिन सब के उद्धार हित कियो पुराण बिस्तार ॥
परम पुनीत पुराण बनाये । श्रुति अर्थ गुंफित मन भाये ॥
अर्थ सुसंगत दुइ अवलोका । रचिबोकठिनअहैयहिलोका ॥
वेद समुद्र मिलो जो रहेऊ । चारिविभाग तासुवरभयऊ ॥
प्रथमहिंऋगश्रुतिदुसरोयजुगणा । तीजोसाम चतुर्थ अथर्वणा ॥
बहुरि बिचारि कियो मुनिराई । कलिमहँ द्विजप्रकटैंगेआई ॥
निज वेदहु महँ आलस करिहैं । अल्पबुद्धिविषयन अनुसरिहैं ॥
तिनकेहित कारण चितदीन्हें । शाखाभेद आपु बहु कीन्हें ॥
वर्त्तमान भावी भूतारथ । तुमसब जानहुं नाथयथारथ ॥
नतरु भूत भावी सब गाथा । कैसे रचे जात मुनि नाथा ॥
नाथ सिंधु गंभीर अपारा । प्रकटो भारत चंद्र उदारा ॥
बाहर भीतर को तम नाशै । कारणकारजसकल प्रकाशै ॥
वेदषडंग शास्त्र समुदाया । भारत तथा पुराण निकाया ॥
तीन लोक महँ राउर बानी । करतिप्रकाशसकलगुणखानी ॥
दो० सत्य धाम परब्रह्म तरु कीन्हे दीप प्रकाश ।
श्रुतिशाखा सहस्रशुक सेवितसमन प्रयाश ॥
सोहत सुरतरु विटप रुमाना । सेपासकन देत फल नाना ॥
हौ तुम द्वैपायन यहि हेतू । मुनिवर्यतिलकऋषिनमहँकेतू ॥
कृष्ण भये गोवर्द्धन धारी । गो गोपन की त्रास निवारी ॥
निज उर तुम गिरीश कहँ धरहू । सबजगको आरतिपुनिहरहू ॥
नूतन गोपालन तिन कीन्हा । नरकासुरकोश्रासु हरिलीन्हा ॥
आपु पुरातन श्रुति गो रूपा । पालहु नितमन प्रेम अनूपा ॥
नरकहि दया दृष्टि सो हरहू । युद्ध परिश्रम नहिं कछुकरहू ॥

* प्रास ॥

अद्भुत कृष्ण मूर्त्ति तव अहही । को जग जो राउरगुणकहही ॥
वेद जासु महिमा नित गावैं । सदसद्भिन्न रूप दरशावैं ॥
सो सत चिद्घन आनँद राशी । पुरुष पुरात सकल उरवासी ॥
परमातम नारायण रूपा । तवमहिमाकिमिकहहुं अनूपा ॥
यहिविधिजबअतिविनयबखानी । द्वैपायन बोले सन्मानी ॥
अस्मदादि पदवी तुमपाई । जानहुँतव महिमा अधिकाई ॥
तुममोहिंप्रियशुकदेवसमाना । किमिसन्मुखगुणकरहुँबखाना ॥
वाद हेतु नहिं आयो यतिवर । यथाप्रथम भ्रमकरहुनशंकर ॥
करो सिद्ध ने बचन सुहावा । शंभु सभामहँमोहिं सुनावा ॥
दो० विरची तुमने भाष्यबर जब मैं सुनी सुजान ।
दर्शन कहँ अति मोरमन तबहीं सों ललचान ॥
शंभु सभा सो तव ढिग आयो । दर्शनपाय परम सुख पायो ॥
व्यास बचन सुनि आनँद बाढ़े । पुलकित गात रोम भे ठाढ़े ॥
शुकमत सिंधु चन्द्र श्री शंकर । विनयसहितदीन्हेंयहउत्तर ॥
पैल सुमंतु आदि मुनि नायक । राउरशिष्यलोकसुखदायक ॥
तिन ते लघु क्रा गनती मेरी । दीन जान तव कृपा घनेरी ॥
सकल प्रकाशक सूत्र तुम्हारे । सहसकिरणसमजगउजियारे ॥
भाष्यदीप मैं तिनहिंदिखायो । अधिकढीठनहिंसोहिलजायो ॥
यद्यपि साहस मोर कृपाला । शिष्यजानिप्रभुक्षमहुदयाला ॥
कृपासहित अब देखि बिचारी । भूल चूक मम देहु सुधारी ॥
इमि कहि शंभु रहे अगाई । व्यासलीन्हिपुस्तकगुणखाई ॥
गुण प्रसाद गंभीर सुहावा । मुनिवर सकल ग्रंथमहँपावा ॥
दो० सूत्र अनुहरित वाक्य सों अर्थ निवेदन रूप ।
पूर्वपक्ष सब दूरिकरि निज सिद्धांत स्वरूप ॥
युक्तिसहित थापनकियो ऐसो भाष्यअनूप ।
हर्षित शंकरसन बचन बोलेश्री मुनि भूप ॥
सब प्रकार तुम शिक्षा पाई । अधिक रुचिरयहुभाष्यबनाई ॥

यहिमौंसाहस क छुन तुम्हारा । साहस को यहुवचन उचारा ॥
शोधन हेतु मोहिं जो कहहू । यहकहिबेकोतुमनहिं लहहू ॥
शब्द शास्त्र तुम नीके जानहु । भट्टपाद मतवर पहिचानहु ॥
श्रीगोविन्द मुनि गुरु तुम्हारे । सब जानें तिहुंपुर उजियारे ॥
तवमुख तात असंगत वयना । किमि निकसैंतुमसबगुणअयना ॥
सुनहु तात प्राकृत तुम नाहीं । तवप्रभावगुणकहिनसिराहीं ॥
महानुभाव पुरुष तुम सोई । जेहि समान सर्वज्ञ न कोई ॥
दिनकर सरिस पर्य्यटन करहू । ब्रह्मचर्य्य शिशुपन सो धरहू ॥
बाल वयसिलीन्हेंा संन्यासा । ऐसो राउर ज्ञान प्रकाशा ॥
आखर बहुत सूत्र महँ नाहीं । अर्थ परमगर्भित जिन माहीं ॥
गूढ भाव जानो नहिं जाई । जिनकर जानबअतिकठिनाई ॥
तुमहिं छाँड़िदूसर कोउनाहीं । होयशक्तिजेहिविवरणमाहीं ॥
विवरणकोकोकहहियतीशा । समुझबउनकोकठिनब्रतीशा ॥
तिनके करतहि जौन प्रयासा । वरणोतेहिजेहिअर्थप्रकाशा ॥
विवुधकहहिंअसिमहिमाजेहिकी।किमिकहियेदुर्घटतातेहिकी॥
सो० मेरे उर को भाव जो जाने भ्रम को भयो ।
विवरणतातबनाव तुमहिंबिनाकोलोकमें ॥
शिवबिन कोउसमर्थअसनाहीं । सोइ तुम प्रकटेहौ जगमाहीं ॥
सांख्यादिक मतकी परिछाहीं । श्रुतिमारगबिगरोमहिमाहीं ॥
बहुरहु ताहि सँभारन हेतू । प्रकट भये हौ तुम वृष केतू ॥
वे शिव कबहुँरोष करिजाहीं । तासु योग सपनेहु तवनाहीं ॥
विधुकी कला एक तिनपाहीं । सकल*कलातुम्हरेमनमाहीं ॥
अर्द्ध अंग गिरि सुता निवासा । तवहिगपूरणकरहिप्रकाशा ॥
उमा ब्रह्म विद्या जो गाई । तुम अद्भुत शंकर सुखदाई ॥
कविनप्रथमविवरणबहुकीन्हा । मतिअनुसारअर्थकरिदीन्हा ॥
आगेहु करि हैं और घनेरे । विवरण प्रभु माया के प्रेरे ॥
हमरो हृदय तुम्हारि समाना । नहिंजनिहैंअबहूँ नहिंजाना ॥

* विद्या ॥

श्रुति शिरविवरणाकरहुबहोरी । भेद वादि जीतहु बरजोरी ॥
प्रकटहु जे निज ग्रन्थ बनाये । जाहुँ सुखेन पंथ मन भाये ॥
यहसुनि शम्भुव्याससनकहेऊ । नाथसकलविवरणाह्वौं गयऊ ॥
निजशिष्यनकहँ सकलपढ़ाये । भेद बाद सब दूरि बहाये ॥
रहा शेष करिबो कछु नाहीं । दुइघटिकाठहरौंसोहिंमाहीं ॥
त्यागा चहहुँ शरीर गोसाँई । तबढिगअतिशयलाभभलाई ॥
मणिकर्णिका पुनीत सोहाई । निगमागम पुराणमहँ गाई ॥
यहि महँ जौ लौं तजहुँ शरीरा । करौ कृपा तौलौं मतिधीरा ॥

दो० सुनि ऐसे शंकर बचन कहन लगे मुनि व्यास ।
भली भाँति अद्वैत पथ कीन्हेंा नहीं प्रकाश ॥

बहुत विदुष जीते तुम नाहीं । अतिउदार विद्या जिनमाहीं ॥
तिनकेजयकारण क्षितिमाहीं । कछुदिनरहौ तजहुबपुनाहीं ॥
नतरु मुमुक्षा यहि संसारा । दुर्लभ जानहु शम्भु उदारा ॥
मातुहीन शिशु जीवन जैसे । ह्वै जैहै दुर्लभ वह तैसे ॥
अति प्रसन्न गंभीर तुम्हारे । ग्रन्थ देखि मन हर्ष हमारे ॥
यहु उत्साह होय मन मेरे । दीजे बर जीवन हितरउरे ॥
षोडश वर्ष आयु तब रहेऊ । षोडशको पुनिवरहमदयऊ ॥
बत्तिस संवत वयसि तुम्हारी । ह्वै है शम्भु कृपा अनुसारी ॥

दो० जौलौं रवि शशि को बनो जग में यह उल्लास ।
भाष्य तुम्हारे करहिंगे तौलौं धर्मसु प्रकाश ॥

षोड़श संवत वय तुमपाई । करहु तात दिग्विजय सुहाई ॥
भेद वादि नाशक सब पक्षा । गर्वांकुर उन्मूलन दक्षा ॥
ऐसे बचनन सों करिदूरी । भेद बुद्धि लोगन की भूरी ॥
यहि विधिसब परपंचमिटाई । थापहु श्रुति सारण सुखदाई ॥
सुनि ऐसे मुनिवर के वयना । बोले शंकर करुणा अयना ॥
राउर सूत्र समागम पाई । भाष्य प्रचार लहै शुभदाई ॥
असकहि मुनिपदबंदनकीन्हा । आशिषवरमुनिवरपुनिदीन्हा ॥

अंतर्हित ह्वै गये मुनीशा । विरहताप अतिलह्योगिरीशा ॥
यद्यपि ज्ञान भवन सुखराशी । शंकर दुख भंजन अविनाशी ॥
तापहारि निरुपाधि स्वरूपा । पूरण भरो अमृत सागर जस ॥
व्यास बिरह कैसे सहिजाई । तदपि सहो श्री पद उर लाई ॥
गुरुवर की आज्ञा अनुसारा । कियोदिग्विजयकेरविचारा ॥
दक्षिणादिशिकहंकीन्हपयाना । यहमनमहँ करिकैअनुमाना ॥
भट्ट पाद समरथ जग माहीं । तेहिसम कोऊपण्डितनाहीं ॥
हमरो भाष्य बहुत गंभीरा । तासु वार्तिक सो मति धीरा ॥
करि पैहे सो विगत विषादा । ताहिजीतिहौंकरिप्रतिबादा ॥
यहमन किये सहित अनुरागा । पहुँचे तीरथ राज प्रयागा ॥
गंग यमुन की संगम धारा । स्वेतश्यामलखिपरहिप्रचारा ॥

दो० उभय धार सूचन करै हर हरि रूप उदार ।
बिन प्रयास ते पाइ हैं जे मज्जहिं यहि धार ॥

यथा अपर्चित पाय सहेली । प्रथम मिलनकी लाजनबेली ॥
तिमि सोहै यमुना की धारा । गंग प्रवाह रुद्ध परिचारा ॥
जलनिर्मलअति रुचिरनिहारी । हंसशिष्य मंडलि जनुध्यारी ॥
सो गुरु सीखन हेतु निवासा । करहिंमराल मनहुँजलपासा ॥
कहुँकहुँ चक्रवाक परिचरहीं । ऐसो मनहुँ मनोरथ करहीं ॥
यह मेरहि सबकर दुख पावा । हरिहैं निशिवियोग संतापा ॥
पुनि प्रयाग महिमाश्रुति गावै । इहाँजीव मज्जन करि पावै ॥
तेहिको होय स्वर्ग महँ बासा । जौलोंरविशशि करहिंप्रकाशा
भोगहिँ अमरावति के भोगा । सदा सुखी कौनौ नहिँ रोगा ॥
संभव तिरोधान नहिँ जाना । रूपसितासित कीन्हबखाना ॥
ये प्रभाव श्रुति जासु बखाने । शंकर सुरसरि जाय न हाने ॥
हर्षित मुनिवर मधुरी बानी । व्याजस्तुति सुरसरिकीठानी ॥
छं० त्रिपुरारि जो निज जटा बाँधो क्रोध बड़ तुमको भयो ।
शिव सरिस मैं करिहौं घनेरे नेम यह तुमने लयो ॥

बहु बन्धु तब ह्वै हैं न जब वे जटा जूट सँभारहीं ।
नहिँ ताग तुम्हरी जड़कवौं नहिँ होनिहार विचारहीं ॥
सन्मार्ग वर्त्तकि यदपि सुर सरि दोस यह तेरो महा ।
सब देश के नर हाड़ लेकरि करोगी इनको कहा ॥
जानो हृदय तो मातु हम जे पाप निज तुहिमों धरैं ।
शृंगार के हित धरहु तिनके आय मज्जन जे करैं ॥
भव नींद जड़ता भरे जे जन नींद तिनको खोवहू ।
विषय को जो राग मन महँ तुरत उससो धोवहू ॥
करिके दिगम्बर दै बघम्बर मुण्डमाल सँवारहू ।
धूर्तावतंश बनाय कै यह कौन राह निकारहू ॥
दो० ऐसी स्तुति करत प्रभु सुर सरि कीन्ह प्रवेश ।
दूनो कर महँ दण्ड लै वस्त्र सहित कटि देश ॥
अघमर्षनविधि मज्जनकीन्हा । पूरक्षाआयु सबहिसिखदीन्हा ॥
कियो मातु सुमिरन जेहिपोषा । गर्भ धरो कीन्हें परितोषा ॥
नित्यनेम करि शिष्य सहीता । सुर सरि तटशीतल सुपुनीता ॥
तरु तमाल छाया विश्रामा । कीन्हें श्रीशंकर सुख धामा ॥
लोक वार्ता तहँ सुनि पाई । भट्टपाद सम्बन्ध सुहाई ॥
जे मुनिवर पर्वत पर जाई । कूदि परे महि श्रुतिमनलाई ॥
यहि विधि वेद प्रमाण दृढ़ाई । श्रौत पंथ पुनि दीन्ह चलाई ॥
जिनकी कृपा देव मख भागा । पाये होन लगे सब यागा ॥
गुरु मंथन पातक जो लागा । दूरि करो चाहत बड़ भागा ॥
वेद अर्थ सब जानहिँ मानहिँ । देहत्याग शंका नहिंआनहिँ ॥
तेहि अपराध केर परि हारा । तुष पावक चाहत तनजारा ॥
वेद मंत्र सबरे जिन पाये । तंत्र नदी महँ मनहु नहाये ॥
दुष्ट तंत्र सब दूरि करावा । कीर्त्तिपंथ त्रयलोक फिरावा ॥
सुनि शंकर तत्काल सिधाये । तुष पावक महँ बैठे पाये ॥
प्रभा करादिक शिष्य घनेरें । अश्रु वदन बैठे सब घेरे ॥

धूम सहित तेहि पावक माहीं। मुनिवर अंग जरत सबजाहीं ॥
अग्नि ताप मुख सोहत ऐसो । उपमा स्थापित पंकज जैसो ॥
दो० जिनके दर्शन जाय अघ जा गुरु आये जानि ।
शिष्यन को आज्ञा दई ते लाये सन्मानि ॥
प्रथमरहीनहिंकछु पहिचाना । सुनत रहे प्रभुयश जगजाना ॥
भट्टपाद हर दर्शन पाई । हर्षित सब पूजा करवाई ॥
करि भिक्षा बैठे सुख पाई। तिनहिँ भाष्य अपनो दर्शाई ॥
जे प्रबंध सत्पुरुष निहारा । भलीभांति ते लहहिँ प्रचारा ॥
भाष्य देखि अतिशय हर्षाने । अति अनंद नहिंहृदयसमाने ॥
ये गुणज्ञ सर्वज्ञ सयाने । तिनके मत्सर नहिंनिअराने ॥
उत्तमभणितदेखिसुखपावहिँ । बैर विहाय तासु गुणगावहिं ॥
पुनि शिवसन बोलेमुनिराया । शारीरक पहिलो अध्याया ॥
सो० भान होहिं मोहिं आठ सहस वार्त्तिक तासुमहँ ।
है पुनि यही उपाठ दाह दीक्षा लै चुको ॥
नाहीं तो रचना हम करते । सकलत्याग यहिमें मनधरते ॥
तव दर्शन दुर्लभ संसारा । तासु लाभ पुनि मरती बारा ॥
उदय भयो अति सुकृत हमारो । पायो दर्शन नाथ तुम्हारो ॥
बूड़ि रहे भव सिंधु अपारा । तिनके मुक्ति होन कर द्वारा ॥
तुम ऐसेन की संगति गाई । दूजो और न सुगम उपाई ॥
बहुत काल सों दर्शन आशा । रहीसो पूजी नाथ प्रकाशा ॥
अभिमत पूरण करिबे माहीं । यहि जगमें स्वतंत्र कोउनाहीं ॥
कबहु होय प्रिय को संयोगा । कबहुंतासु ह्वै जाइ वियोगा ॥
तथा भोग सुखदुख अरु रोगा । काल पाय सबकर संयोगा ॥
दो० करि प्रबंध निर्णय कियो कर्म पंथ बिस्तार ।
नैयायक मत युक्ति को भली भांति परिहार ॥
विषयन के सुख दुःख सब भोगे भले प्रकार ।
काल बंचनाशक्ति मोहिंनहिं दीन्हींकरतार ॥

दुइ पातक बनि आये हमसों । कारणसहित कहतहौं तुमसों ॥
जेहि बिनकाहु हि सुख नहिं होई । लोक वेद वंदित प्रभु सोई ॥
तेहि ईश्वरकर खण्डनकीन्हा । सर्वविधि सुखदकर्मकहिदीन्हा ॥
दूसर दोष कहौं अब गाई । रही धर्मणा जैमिन सों छाई ॥
प्रजा वेद मारग सब त्यागा । ममभन उपजो यह अनुरागा ॥
जीतों सकल जैन मत धारी । करों वेद पथ की रखवारी ॥
राजनकोतिन बशकरि लीन्हा । सकलप्रजाको आयसुदीन्हा ॥
नर पति सब हमरे अनुसारी । देश भयो सब आज्ञा कारी ॥
अदर करहु जैन मत माहीं । वेदनकी प्रमाण कछु नाहीं ॥
यहिविधिबकतफिरैं जगमाहीं । तासुविनाश यत्न कछु नाहीं ॥
वाद कीन्ह तिन सों बहु बारा । नहीं भयो कछु लाभ हमारा ॥
मत खण्डन तबही बन आवै । जब सिद्धांत तासु लखि पावै ॥
तिनकी शरण गही मैं जाई । मान वेष सब दूरि बहाई ॥
रहन लगो मैं तिनके साथा । पढ़ोंसुनों सब तिनकी गाथा ॥

दो० एक समय तिन वेदकी निन्दा बहुविधि कीन्ह ।
मम नयनन आँसू बहे लियो तबहि उन चीन्ह ॥

तेहि समाते शंका मन व्यापी । कहहिंपरस्परयहिविधिपापी ॥
शिष्य नहीं यह शत्रु हमारा । लियो चहे मत हृदय उदारा ॥
काहू विधि उच्चाटन कीजै । ऐसे को विद्या नहिं दीजै ॥
करिसम्मतमोहिंदियोनिकारी । तबहूं घटो बैर नहिं भारी ॥
ऊँचे पर्वत मोहिं चढ़ायो । तासु शिखरते भूमि गिरायो ॥
पतनसमय हमकीन्ह पुकारा । होहि सत्य जो वेद हमारा ॥
संशय उक्ति वेद महँ कीन्हीं । छलसों पुनिविद्याहमलीन्हीं ॥
जो कोउ अक्षर एक बतावै । सोऊ जग महँ गुरू कहावै ॥
सोकिमिकहियजोशास्त्रपढ़ावा । तिनजैननहमसोंदुखपावा ॥

दो० यहिविधि जिनसोंहमपढ़ो तिनको सकलविनाश ।
करवायों अरु कियो हम ईश्वर पक्ष निराश ॥

जैमिनि पक्ष पात मन दीन्हा । ईश्वरकर खंडन हम कीन्हा ॥
प्रायश्चित्त उभयअघ मुनिवर । तुष पावक विचारि सुन्दरतर ॥
कियो प्रवेश तुषानल जबहीं । श्रीपद दरश भयो सो हिंतवहीं ॥
अब अघनिः क्षत भई सुहाई । प्रायश्चित्त गयो दुखनाई ॥
सुनत रह्यो प्रभु भाष्य बनाई । मन में यह तरंग बहु आई ॥
वृत्ती तासु मनोहर कीजे । यह उत्तमयश जगमहँ लीजे ॥
तासु कहेकर कछु फल नाहीं । जोन आश पूजी जग माहीं ॥
मैं जानौं तुम शिव अवतारा । ज्ञानप्रकाशन हितवपुधारा ॥
रहौ सदा निज जन अनुरागी । करन हेतु उनको बड़ भागी ॥
पहिले होतो दरश तुम्हारा । ह्वै जातो पातक उद्धारा ॥
अग्नि प्रवेश नहीं मैं करतो । नाथ पाद सेवा चित धरतो ॥

दो० करि लीन्हें संकल्प अब ह्वैगो अग्नि प्रवेश ।
उभय प्रभाव पाप को निःक्षत भई विशेष ॥
शावरभाष्यकीवृत्तिहमजेहिविधिरचनाकीन्हि ।
तिमिरशउरके भाष्यपर कालहोन नहिंदीन्हि ॥

यह यश योगन भाग हमारा । यह सुनि बोले शंभु उदारा ॥
जैन घात हित शम्भु कुमारा । श्रुतिपथपालन हितअवतारा ॥
पाप गंध संबंध न तोहीं । तुम्हरोचरितविदितसबमोहीं ॥
प्रायश्चित्त लोक सिख हेतू । मुनिवरकरहु पालश्रुतिसेतू ॥
कहहु जियावहुँ तुमकहँ ताता । करकतोयप्रोक्षणाकरिगाता ॥
सावधान ह्वै वृत्ति बनावो । जगमोनिजअभिमतयशपावो ॥
सुनिकैविबुधशरीरमशावयना । कहहिंसप्रेमसजलहौनयना ॥
लोक विरुद्ध शुद्ध किन होई । सुरवरमोहिँकरिजायनसोई ॥
सोरी जो तुम कीन्ह बड़ाई । महाजनन की रीति सुहाई ॥
कैसेहु कुटिल लोक दुखदाई । साधु देहिं गुण ताहि लगाई ॥

दो० प्रकृति वक्रजिमि धनुष महँ शूरकरहिं गुणदान ।
तैसेहि पामर कुटिल का साधु करहिं सनमान ॥

बहुत काल कर मरो जो होई । कृपादृष्टि तब जीवहि सोई ॥
सब प्रकार समरथ भगवाना । है परन्तु मम यह अनुमाना ॥
वेद विदित ब्रत कीन्ह अरंभा । छांड़त लोगन होय अचंभा ॥
निन्दा किमि ह्वै है जग नाहीं । बुधवरकरु बिचारमनमाहीं ॥
प्रलय समय सब सृष्टि पसारा । निजस्वरूप लयकरहुअपारा ॥
पुनि वैसहि जगरचहु सुहावा । अनुपम जानहु नाथ प्रभावा ॥
अचरजकौनजोमोहिँजिवावहु । तदपि नयहब्रत भंगकरावहु ॥
अब ऐसी करुणा दर्शावो । निर्मल तारक मंत्र सुनावो ॥
परब्रह्म कर मोहिँ उपदेशा । देव कृतारथ करहु सुरेशा ॥
करन चहौ अद्वैत प्रकाशा । और दिग्विजय कीहैआशा ॥
तौ उपाय मैं कहहुँ दयाला । उचितहोय सोकरबक्रपाला ॥
सुधी शिरोमणि मंडन नामा । भूसुरराज सकल गुण धामा ॥
है दिगंत ब्यापी जेहि केरा । यशअरु धन गुणमानघनेरा ॥
बड़दानी कर्मी जग माहीं । सहागृही तेहिसमकोउनाहीं ॥
मंडन सँग जो तुम जय पाई । भई लोक दिग्विजय सुहाई ॥
है प्रवृत्तिमहँ अति बिश्वासू । नहिं निवृत्तिमहँ आदरतासू ॥
ऐसो कछु उपाय प्रभु कीजै । तेहिको अपनेवशकरिलीजै ॥

दो० वश वर्त्ती मंडन जबहि भयो मनोरथ पूरि ।
देर करहु नहिं जाहु तहँ नहीं बहुत कछुदूरि ॥

तासु नारि शारद अवतारा । मुनिवर शाप नहीं पगुधारा ॥
उभय भारती नाम उदारा । जासु नाहिं विद्या कर पारा ॥
विश्व रूप सम शिष्य पियारा । मम समान सो परम उदारा ॥
करि मध्यस्थ प्रिया तेहिकेरी । बाद कथा पुनि करहु घनेरी ॥
यहिविधि विश्वरूपव शकीजै । तेहिको पुनि अनुशासनदीजै ॥
सब ग्रंथन की वृत्ति बनै हैं । जब राउर वश में ह्वै जैहैं ॥
विश्व नाथ सम मोहिँ सुनावो । तारक भव निधि पार लगावो ॥
मैं जौलौं तनु त्यागहुं शंकर । यहां रहौ तौलौं करुणाकर ॥

योगीश्वर जेहिध्यानलगावहिं । ध्यानहुंमें दर्शन कोउ पावहिं ॥
सो लोचन गोचर सुख दाता । देखत चरण तजहुँ सघाता ॥
छं० सुनि गिरा सुनि धर्म मय शंकर हृदय हर्षित भयो ।
जो ब्रह्म पूरण बोध सुखमय तासु प्रभु बोधन कियो ॥
तिनमौनधरिनिजरूपमहँ लयकीन्हपरिपूरणहियो ।
यहिभांतिद्विजवरकोकृपाकरिब्रह्मपदसुखमयदियो ॥
दो० भट्टपाद द्विज राज को यहि विधि करि उद्धार ।
मंडन के गृह गमन को पुनि प्रभु कीन्ह विचार ॥

इतिश्री मत्परम हंस परिव्राज का चार्य्य श्री ७ स्वामि
रामकृष्ण भारती शिष्य माधवानंद भारती विरचिते
श्री शंकर दिग्विजये श्री व्यासा चार्य्य दर्शन
वर्णन परः सप्तमः सर्गः ७ ॥

श्लोक ॥ शंकरंसुखदंशांतंसोमंसोमार्द्धशेखरं ॥ स्वभक्तकल्पवृक्षाभमष्ट मूर्त्तिंसदाभजे १ ईशानःसर्वविद्यानांश्रुतौसम्यक्प्रकीर्तितः ॥ सोमेशः सर्वदास्माकमस्तुसर्वार्थसाधकः २ ॥

दो० भट्टपाद अभिलाष सब करि पूरी यतिराज ।
मंडन को जीतन चले छोड़ो तीरथ राज ॥

गहै व्योम मारग हर्षाई । माहिष्मती पुरी नियराई ॥
पुरशोभा अतिअधिक निहारी । रत्न जटित गृह रुचिर अटारी ॥
पुर समीप उपवन महँ जाई । व्योम पंथ छोड़ा सुखदाई ॥
महि मारग रेवा तट आये । साल वृक्ष जहँ सघन सुहाये ॥
शीतल बन राजीव बिहारी । बहै बयारि जहां श्रमहारी ॥
करि विश्राम तहां कछु काला । मध्यम दिवस नेम प्रतिपाला ॥
नित्य नेम करि मंडन धामा । तुरतहिँचले जगत अभिरामा ॥
देखी मारग मंडन दासी । दिव्य बसन वर रूप प्रकाशी ॥

चली जाहिं जल आनन काजा । तिनसन प्रश्नकियोयतिराजा॥
मण्डन पण्डित भवन बतावो । तिनशिवदरशपरमसुखपावो ॥
हर्षित मंडन भवन बताया । युक्तिसहितगृहचिह्न लखावा ॥
छं० है वेद आपु प्रमान । किमु अहैं परते मान ॥
है कर्म को फल जौन । तेहि देत है गो कौन ॥
है कर्म फल प्रद आप । किमु ईशप्रभुनिः पाप ॥
यहसकलजगहैनित्य । किमुअहैविश्वअनित्य ॥
शुकनारि बचनउचार । यहिभांतिकरैंबिचार ॥
जेहिद्वारपर असहोय । है भवन मण्डन सोय ॥
जब सुने ऐसे बयन । सुख पायगे गुण अयन ॥
देखा सो तैसोइ द्वार । लागे परन्तु किवार ॥
दो० मन में शोचि बिचारिकै व्योम पंथ पुनि लीन्ह ।
उपरहि ऊपर भवन में सुख प्रवेश प्रभु कीन्ह ॥
इन्द्रभवन सम सो गृह शोहा । ध्वज पताकयुतमुनिमनमोहा॥
भूतल मण्डन मण्डन धामा । सब देखा शंकर अभिरामा॥
सो शाला सब भांति मनोहर । बैठे जहँ नित विज्ञ धुरंधर॥
तहां जाय प्रभु मण्डन देखा । निज यश भूषित तेज विशेषा॥
पद्मासन सम जासु प्रभावा । जेहिकी विद्या करयशछावा॥
जैमिनि व्यास निमंत्रणदीन्हा । विधिवतश्राद्धचहैसो कीन्हा॥
उभय मुनीश्वर चरणपखारहिं । चरणोदक निजमाथे धारहिं॥
युगल मुनिन शंकर कहँ देखी । कीन्हीं अभि बंदना विशेषी॥
मण्डन हूँ देखे श्री यति वर । पाटल बसन रूप अद्भुत तर॥
बैठे जैमिनि व्यास समाजा । ज्ञानशिखा उपवीत बिराजा॥
बेष देखि संन्यासी जाना । मण्डन हृदय क्रोध प्रकटाना॥
यद्यपि मन्यु समय सो नाहीं । तदपि भयो तामस उर माहीं॥
विश्व रूप उर तामस भारी । शंकर तेहिक्षण कौतुक धारी॥
दो० गृह वर शंकर परस्पर प्रश्न उतरु की माल ।

क्रमसों यहिविधिह्वै चली गुंफितरुचिरविशाल ॥
कुतो मुंडितव मंडन कहेऊ । तव आगमन कहांसों भयेऊ ॥
अर्थ फेरि तब शंकर कहहीं । आगजात मुंडी हम अहहीं ॥
गल पर्यंत भयो है मुंडन । ऐसो हमैं जानु तू मंडन ॥
प्र० पंथा मैं पूंछतहैं ताता । उ० पंथाकौनिकहोतोहिंबाता ॥
प्र० त्वन्माता मुंडा यहकहेऊ । उ० अ तोउत्तरुपंथातोहिदयऊ ॥
पंथा सन पूंछी तुम बाता । पंथ कहो मुण्डा तव माता ॥
तुम पूछा तुम उत्तर पावा । त्वन्माताकहितुमहिंसुनावा ॥
हम सन पंथा कहि हैं नाहीं । हमरी प्रश्न नहीं तेहिं पाहीं ॥
करिबहुक्रोध कह्योद्विजराजा । मदिरा पीता भो यति राजा ॥
शंकर कहा पीत नहिं होई । मदिरा खेत कहै सब कोई ॥
यतीराज सों रंग तुम जानों । मैंरंग तुम स्वादहु पहिचानों ॥
रंग जाने कछु पाप न होई । रस चाखै अघ भागी सोई ॥
मं० मत्तोजात भयो मतवारा । अरुकलंज*आशी व्यवहारा ॥
सर्वविपरीत वचन अतिभाषत । बोलनमें सँभार नहिं राखत ॥
निज भाषा मंडन यह कहेऊ । तुम अतिशयमतवारे भयऊ ॥
भक्षाभक्ष खात तुम डोलहु । अरुविपरीतवचनसबबोलहु ॥
मत्तो जातो हम सन भयऊ । ऐसो अर्थ फेरि प्रभु कहेऊ ॥

दो० सत्य कहो द्विज तोहि सम तव सुतको व्यवहार ।
भक्षाभक्ष विचार नहिं सदा रहे मतवार ॥

पुनिपुनिद्विजनिविपरीतसकोपा । और प्रकार कीन्ह विक्षेपा ॥
हे कुबुद्धि कंथा तू वहही । जासुभारनहिं खरनिर्वहही ॥
यज्ञ उपवीत शिखा के बारा । रखते तो होतो कह भारा ॥
रे कुबुद्धि कंथा मैं धारी । जो हैगी तवपितु कहं भारी ॥
तिअखरि तिरस्कार जोसहई । सोनिश्चय गर्दभ समअहही ॥
शिखा यज्ञ उपवीत उतारा । तिहिकोरह्योश्रुती शिरभारा ॥
मुंडी ह्वै अरु विचरत वामा । एक ठौर नहिं करै निवासा ॥

* विषलिप्तवाणहतमृगमांस

बरनीहै यहिविधि जेहिमाहीं । सोतुम श्रुती सुनी धौं नाहीं ॥
मं० छोड़िदीनिजायागृहमाहीं । शक्ति रही पालनकी नाहीं ॥
सेवक पुस्तक भार बढ़ाई । भली ब्रह्म निष्ठा सरसाई ॥
शं० गुरु शुश्रूषा आलस पाई । घर आये निज गुरू विहाई ॥
भये नारि सेवा अनुरागी । अहो कर्म निष्ठा जग जागी ॥
मं० जिनकेगर्भभयो तव बासा । पालिपोषिसबकीन्हसुपासा ॥
तिनहीं की निंदा तुम ठानी । असिकृतघ्नता निजउर आनी ॥
शं० जिनकीयोनिजन्मतुमपावा । जिनको पयतव गातबढ़ावा ॥
तिनमें रमहु सदा द्विज राजा । पशुसमाननहिंआवतिलाजा ॥
मं० अग्निहोत्रआयेतुम त्यागी । इंद्रघात हत्या तोहि लागी ॥
शं० आतमघातपाप तुमकीन्हा । जोअपनोस्वरूपनहिंचीन्हा ॥
मं० दो० द्वार पाल सब बंचि करि आये चोर समान ।
शं० भिक्षुभाग दीन्हे बिना किमि खैहै धनवान ॥
मूंदि कपाट चोर की नाईं । खायो चहहु धर्म बिसराई ॥
उत्तर प्रति उत्तर इमि पाई । बोला मण्डन शक्ति गवांई ॥
भाषगा मैं मूरख तेरे सँग । कर्मसमय करिहौं एक अंग ॥
अहंभाष्य जब मंडन कहेऊ । संधि भंग यहि पद में भयऊ ॥
शं० अहोज्ञानअपनोप्रकटायो । भाषगासहँयतिभंग दिखायो ॥
श्रीशंकर यहु अर्थ जनावा । संधि भंग अज्ञान दिखावा ॥
अर्थ बदलि तब मंडन कहही । यती भंग मम संमत अहही ॥
तुम्हरो भंग जो मैं उर आना । यती भंग कर दोष न माना ॥
शं० यती भंग जो तुम मन देहू । पंचम्यंत समास करेहू ॥
श्रीशंकर यहु अर्थ जनावा । यतीआकाश भंगतोहिभावा ॥
मं० कहँकुबुद्धिकहँब्रह्मविचारा।कहँसंन्यासकहांकलिकारा ॥
मधुर अन्नभोजन रुचिलागी । योगिनवेष धरो क्रमत्यागी ॥
शं०कहांस्वर्गकहँदुराचारा । अग्निहोत्रकहँ कहँ कलिकारा ॥
मैथुनभोग अधिक मन भावा । कर्मिन गृहि को वेष बनावा ॥

दो० इत्यादिक दुर्वचन बहु भाखे रोष बढ़ाय।
तैसो तैसो उत्तरु प्रभु दियो करै तुक दर्शाय॥

मंडनदिशिदेखहिंहँसिजैमिनि । बोले व्यास तासु बानीसुनि॥
यतीराज तुम्हरे गृह आये । बहुत दुर्वचन तात सुनाये॥
सब ईषणा दूरि इन कीन्हीं । आतमतत्त्वभलीविधिचीन्हीं॥
सज्जनको नहिंयहु व्यवहारा । करहु तात जैसो आचारा॥
ये अभ्यागत मम गृह आये । आपु मनहुंश्रीविष्णुसिधाये॥
ऐसो मानि निमंत्रण करहू । कुटिलबुद्धि अपनीपरिहरहू॥
यहिविधिव्यासमसिखावनदीन्हीं ।मंडनशिरमाथेधरिलीन्हीं॥
विदित जासुजगपरम प्रभावा । विबुधनमेंमुखिआकरिगावा॥
मंडनकरि आचमन विधाना । शांत भयो पंडित गुनवाना॥
विधिवत शंकर पूजन कीन्हा । भिक्षा हेतु निमंत्रण दीन्हा॥
श्री शंकर सुरनर सुखदाई । बिहँसिताहियह गिरासुनाई॥
अन्न भीख चाहत नहिं खायो । वादभीख कारण मैं आयो॥
प्रथम परस्पर यहु पण होई । जो हारै सेवक है सोई॥
जो अद्धारा उर मन माहीं । देयह भीख और कछुनाहीं॥
बाद वितर्क यती नहिं करहीं । कोईपक्ष न दृढ़करि धरहीं॥
यह संदेह मिटावहुँ तोरा । सुनहु जौन संमत है मोरा॥
चाहौं श्रुति पथको विस्तारा । जेहिमें होय लोक उपकारा॥
कर्मपक्ष गहि जो तुम त्यागा । जेहिविधिहोयतहांअनुरागा॥
श्रुति सम्मत यहुजानु बिवादा । भवदुखनाशनसमनविषादा॥
ममविवादमहँऔरप्रयोजन । नहिंकछुजानहुतुमप्रियसज्जन॥
चाहत हौं सब बादिन जीती । प्रगट करौं जगमें श्रुतिनीती॥

दो० तुमहूं श्रुतिमत को गहो जो उत्तम सब माहिं।
नतरुकहो निजवदनसों बादशक्ति मोहिं नाहिं॥

तुम जीते यहु वचन उचारो । अथवा बाद कथा उरधारो॥
अर्थ भरे यति वरके बयना । सुनिविस्मितह्वै गोगुणअयना॥

यहनवीन परिभव निज देखी । जो जो गौरव राखि विशेषी ॥
एक बार शेषहु किन आवैं । सहस बदन अपने दर्शावैं ॥
कबहूं नहिं मैं करौं उचारा । राउर विजय भयो मैं हारा ॥
श्रुतिसम्मत अपनोमत त्यागी । नहिं ह्वैहौं परमत अनुरागी ॥
यह अभिलाष सदा समरहेऊ । कोउनजगअसकोविदभयऊ ॥
जो आवैअरु करहि विवादा । होय कुतूहल मन अह्लादा ॥
बड़े भाग जो पै तुम आये । विजय मोहिं घर बैठे लाये ॥
चलै बाद गाथा अति रूरी । सफलहोय विद्या श्रम भूरी ॥
आपु मिलै जो सुधा प्रवाहा । कोमहिबासीताहि न चाहा ॥

दो० यम भक्षक बड़ ईशको जेहिकरि दीन*निराश ।
सो यहु मराडन तव निकट रविसम करै प्रकाश ॥

तुम कलहंस कला गुणधारी । प्रकटोगिरा कलह अनुसारी ॥
विधुकरसुधाधामछविपावन । यतिवर कीजे बाद सुहावन ॥
वादि गर्व बन छेदन हारी । सुनी न मम चातुरी कुठारी ॥
बाद भोग तेहि कारण चाहा । नीके सुने न मम गुण गाहा ॥
मुनिवर अल्प याचना कीन्ही । सो आनन्दसहित मैं दीन्ही ॥
बिनहि याचना के सुनि मोरी । वादकथाकीरुचिनहिंथोरी ॥
रहे बाद उत्साह घनेरे । नहिं आवा कोउ सन्मुखमेरे ॥
करिहौं बाद न कुछ सन्देहा । मनमें है विकल्प कछु एहा ॥
विजय पराजय जाननिहारा । चहियेकोउ मध्यस्थहमारा ॥

दो० यहु विवाद ऐसो नहीं कंठ शोष फल होय ।
उत्तमफल यहि वादकर जीति परस्परसोय ॥

बाद माहिं बादी प्रति वादी । दुइ बैठे यहि रीति अनादी ॥
पक्ष और प्रति पक्ष सँवारैं । उभयप्रतिज्ञा करहि निर्द्धारैं ॥
मम तव कौनि प्रतिज्ञा भावा । किमिप्रमाणतहँइष्ट‡स्वभावा ॥
को मध्यस्थ कौन प्रण करहू । प्रथमहिं यहुविचारउरधरहू ॥
अहौं गृही वर मैं द्विज राजा । वादि मनोहर तुमयतिराजा ॥

* खंडन † प्रकाश ‡ अभिप्राय

जीतिहारि करपणअनुमानहु । विहँसितबदनबादपुनिठानहु ॥
आजु कृतारथ मैं जगमाहीं । आपवाद मांगा मोहिंपाहीं ॥
भयोसहामुनि अधिकसनाथा । ह्वैहै वाद कथा तव साथा ॥
येती विनय मोरि सुनि लेहू । आजु मोहिं तुम आज्ञा देहू ॥
पूरो करों कर्म जो ठाना । ह्वैहै तव सम्वाद बिहाना ॥
मंडन सो बोले यति राई । भली कहतहो तुम द्विजराई ॥
उभय मुनिन सन वचन उचारे । आप होहु मध्यस्थ हमारे ॥
ऐसे मुनि मण्डन के बयना । दोनों मुनिबोले गुण अयना ॥
तव जाया जो सबगुण खानी । सर्बबिधितेहिशारदसमजानी ॥
साखी ताहि बनाय बिवादा । करहु बिबुधद्वौविगतविषादा ॥
जानि मुनिन शारद अवतारा । कीन्हों यह उपदेश उदारा ॥
भलेहिनाथकहिपुनिद्विजराजा । चाहौकरन उपस्थित काजा ॥
प्रथमहिं सबकी पूजा कीन्हीं । मधुर मनोहर भिक्षा दीन्हीं ॥
तीनों मुनि बैठे भोजन करि । मनहुंतीनिपावक सूरतिधरि ॥

दो० मण्डनके दुइ शिष्य वर गुरु अनुशासनपाय ।
चवँरकरैंमुनिवरनपर दुहुँदिशिअतिसचुपाय ॥

कर्म भयो पूरो द्विजवर को । तव सम्वादभयो मुनिवरको ॥
तीनों निगम परावर जाना । ब्रह्मविचार मधुर तिनठाना ॥
दुइ घटिकाकहि कथासुहाई । तीनों मुनि चलिभे हर्षाई ॥
युग मुनि ह्वैगे अन्तर्द्धाना । रेवा तीर गये भगवाना ॥
देवालयमहँ कीन्ह निवासा । शिष्यनसर्बविधिकियोसुपासा ॥
जैमिनि वेदव्यास मुनीशा । चाहैं दर्शन जासु सुरेशा ॥
तिनके दर्शन सों हर्षाई । शिष्यनको सबकथा सुनाई ॥
यहिविधिसुखसों रातिगँवाई । जबरविको अरुणारी छाई ॥
नित्य नेमकरि शिष्य समेता । पहुंचे प्रभुद्विजराज निकेता ॥
सूरि सभा सोहैं तहँ भूरी । मानहुं अमर मंडली रूरी ॥
सभा मध्य बैठे यति राजा । उडुगणमहँ हिमकरजिमिराजा ॥

तब मंडन निज प्रिया बुलाई । सभा मध्य शारद जनु आई ॥
सबविद्यानिधिपरम विशारद । सबगुणधामनामपुनिशारद ॥
मंडन तेहि मध्यस्थ बनाई । बाद कथाकी रुचिसरसाई ॥
बैठी पति अनुशासन पाई । उभय वाद साखी हर्षाई ॥
दो० युगल बलाबल ज्ञानहित सभा शिरोमणि भाव ।
लहि अतिशय द्युतिमानसो शारदसमछबिपाव ॥
मंडन की उत्कंठा देखी । बाद माहिं उत्साह विशेषी ॥
बोले शंभु परावर ज्ञानी । सुनहु प्रतिज्ञाको ममबानी ॥
सांचो एक ब्रह्म परमारथ । सतचितनिर्मलरूपयथारथ ॥
विश्व प्रपंच रूप सोइ भासै । रजतरूप जिमिसीपप्रकाशै ॥
तासु ज्ञान बिन जगतप्रकाशा । रज्जू सर्प रूप जिमि भासा ॥
ज्ञान भये सब जगत हिराई । नाश अविद्या कर ह्वै जाई ॥
निज स्वरूप स्थिति सुखदाई । सो निर्वाण मुक्तिकहिगाई ॥
हैं प्रमाण श्रुति मस्तक सारे । एक रूप के बोधन हारे ॥
भई प्रतिज्ञा प्रण दर्शावैं । भली बात जोंजय हमपावैं ॥
जोपै पराजय करहिं प्रकाशा । सहितकषाय बसनसंन्यासा ॥
तजैंनकछु संशय मनकरिहैं । श्वेत बसनतनपर मैं धरिहैं ॥
सो० जीतिहारि फलदानि उभय भारती होय सम ।
जो सब गुणकी खानि बैठी है शारद सरिस ॥
यहिप्रकार श्रीशंकर यतिवर । करीप्रतिज्ञाप्रणअतिदृढतर ॥
तब मंडन बोले हर्षाई । मोरि प्रतिज्ञा सुनुयतिराई ॥
चित्स्वरूप परमातम माहीं । श्रुतिशिरकीप्रमाणहैनाहीं ॥
शब्द शक्ति है कारज माहीं । शब्दयोग निर्गुण में नाहीं ॥
जैसे सुनो शब्द घट लावो । घटस्वरूप तुरतहिंउर आवो ॥
तैसे नहिं निर्गुण कर बोधा । शब्द करैं नितकर्म प्रबोधा ॥
स्वर्गहु मुक्ति कर्म सन होई । जौलौं जियै करै नित सोई ॥
बादोकथे जो जय नहिं पावों । सहूं यती को वेष बनावों ॥

साखी जो राउर अनुमानी । हमहुँतासुसम्मति शुभजानी ॥
जो हारै निज आश्रम त्यागी । दूजे के मत को अनुरागी ॥
दो० यहप्रण करिदोउ सभामहँ पूजा अरु अभिषेक ।
उभय भारती कर कियो दोनहुँ सहित विवेक ॥
दोनहुँ निज निज पक्ष संभारा । कीन्हों जल्पकथा विस्तारा ॥
दिन प्रति नित्यनेम करिपूरा । बाद सभा बैठे द्वौ सूरा ॥
भारति दुइ माला लै आई । उभय कंठ दीन्हें पहिराई ॥
पुनि बोली शारदा सयानी । उभय सुनौ मेरी यह बानी ॥
जेहिको कंठ माल कुंभिलानी । लेहिपराजयनिजपहिचानी ॥
असकहि गईभवन महँ शारद । गृह कारजविज्ञानविशारद ॥
यतिवरभिक्षा पतिहितभोजन । गृहमेंनितप्रतिकरहिंमुदितमन ॥
युगल परस्पर जयफल सादर । भयेकरहिं वरबाद उजागर ॥
ब्रह्मादिकसुर निजनिज याना । बैठे देखहिं बाद सुजाना ॥
मण्डन भवन बिमानन छावा । परमरुचिर सबभांतिसुहावा ॥
भयो दुहुंनकर बहुत विवादा । बोलहिंहर्षित विगतबिषादा ॥
बेद प्रमाण उभय दिशि देहीं । वचन चातुरी चितहरिलेहीं ॥
साधु साधु सब सभा पुकारा । हर्षितदेखि उभयव्यवहारा ॥
दिनदिनअधिगतहोहिंप्रकर्षा । बाढ़ै दिनप्रतिसूरि*निकर्षा ॥
शीतन की दोनहुँ को†तर्षा । तदपि दूरि कियो आमर्षा ॥
दिनप्रतिमध्य दिवसजब आवै । तिनको भारति आयबुलावै ॥
कहै नाथ सों भोजन कीजै । बोलहि मुनिसों भिक्षालीजै ॥
यहिबिधि होतबिबाद सप्रीते । पांच किधौं षट बासर बीते ॥
दो० बैठे आसनबांधिकै विकसित मुख नहिं खेद ।
व्योमनिरीक्षणकंपनहिं क्रोधगिरा छलखेद ॥
यहिबिधिदोउ स्थापनखंडन । करहिंयतीश्वर द्विजवर मंडन ॥
देखी मण्डन की चतुराई । सहनि विचार भारगरुआई ॥
सोभित सकल पक्ष हैं जासू । कोटि समग्र गिरी पुनितासू ॥

* संनिकर्षा † इच्छा

कह्योशम्भु अब हमरी सुनहू । जोकछु कहनो है सो कहहू ॥
तब मण्डन निज पक्ष सँभारी । शंकरसन यहगिरा उचारी ॥
हे यतिराज आपु जो भाखा । ब्रह्म जीव महँभेद न राखा ॥
श्रुतिशिरतहां प्रमाणबतायो । सोहमकोनिश्चयनहिंआयो ॥
यतिवर कह्यो सुनहु गुणवाना । जानि लेहु तुम यही प्रमाना ॥
श्वेतकेतु आदिक जे मुनिवर । तिनहिंकियोउपदेशउजागर ॥
*आरुणयादिगुरुन समुझायो । आतम ब्रह्म रूप दर्शायो ॥

सो० हैं यतिवर जप योगवाक्य तत्व मस्यादि के ।
श्रुतिशिरकेरंप्रयोग औरअर्थ कछु कहत नहिं ॥

हुंफट् जेहि प्रकार यति राजा । तैसे श्रुति वरणी जयकाजा ॥
विश्व रूप ऐसी जनि भाषहु । निजमनयहसंशयनहिंराखहु ॥
हुंफटादि कर अर्थ न भाषा ।तिनहिंबिबुधजपयोगप्रकाशा ॥
तत्व मसी आदिक जे बयना । प्रकटअर्थजिनकोगुणअयना ॥
जपकेयोगतिनहिंकिमिमानहु । पंडित ह्वै अनर्थ उर आनहु ॥
तब मण्डन यह पक्ष बिहाई । और रीति सों तर्क उठाई ॥
तत्व मसी आदिक यतिराजा । यद्यपि अर्थ अभेद जनावा ॥
तद्यपि यहु आशय उरआनहु । मखकर्त्ताकी सुस्तुति जानहु ॥
है यजमान प्रशंसक मंत्रा । यज्ञ अंग जानहु निज † तंत्रा ॥
मुनिबाणी द्विजराज बखानी । दीन्हउतरुयतिवर विज्ञानी ॥
क्रियाअंगश्रुति ‡शिरतुम माने । यजमान स्तुति मंत्र बखाने ॥
ऐसीसमुझ तुम्हारि न नीकी । शंकात्यागकरौ निजहियकी ॥
यज्ञ खम्भ सविता सम गावैं । कर्त्ता सुरपति सरिस बतावैं ॥
कर्म मंत्र महँ यहु बनिजाहू । तहां प्रशंसा कर निर्वाहू ॥
ज्ञानकांडकेमंत्र कौनि बिधि । क्रियाअंगमानतहौगुणनिधि ॥
विश्वरूप कहँ सुनहुं कृपाला । दृष्टि बतावतिहैं श्रुति जाला ॥
साक्षात यहि ब्रह्म न जानो । ब्रह्म दृष्टि कर्त्ता महँ आनो ॥
जेहि में कर्म होय फलदायक । ब्रह्म दृष्टि है कर्म सहायक ॥

*उदालक † शार ‡ जीवको

दो० यथाव्योमसमहँ तरणि महँ पुनि कीजे मनमाहिं ।
ब्रह्म दृष्टि की भावना सांच ब्रह्म ते नाहिं ॥

दृष्टि विधान मंत्र जहँगावैं । *द्विजवरतहँकहिप्रकटजनावैं ॥
विधि में सदा प्रेरणा आवे । असकीन्हे नर बहुफलपावै ॥
व्योमादिक जहँ ब्रह्म बतावा । दृष्टिभाव तहँहीं बनिआवा ॥
मन आदिकमहँ दृष्टिविधाना । वैसो नहीं ब्रह्म सन्धाना ॥
तू है ब्रह्म जहां श्रुति कहई । दृष्टिभावना तहँकिमिलहई ॥
ब्रह्म भाव आरोपन जानो । जीवहि शुद्धब्रह्म तुम मानो ॥
तेहि कारण वेदान्त प्रमाना । नहिं लावै अपने मनआना ॥
श्रुतिशिरयतिवर होहुप्रमाना । विधिकोतुम कैसेनहिंमाना ॥
सर्बविधिकोजेहिर्विधिफलगावा।ब्रह्मज्ञानफलमुक्तिसुनावा ॥
ज्ञान भये भव दुखं मिटि जाई । ब्रह्मानन्द हृदय समाई ॥
श्रवणमननकी विधि बहुगाई । क्योंनहिं मानतहौ यतिराई ॥
जो मण्डन ऐसी तुम जानो । विधिआधीनमुक्तिपहिचानौ॥
जो पै कर्म जन्य है सोई । स्वर्गसमान नित्य नहिं होई ॥
जो उपजा है तासु विनाशा । सकलवेद बहुअर्थ प्रकाशा ॥
सदा उपासन केर प्रकारा । बनै उपासक रुचि अनुसारा ॥

दो० करै चहै पुनि नहिं करै चहै करै विपरीति ।
मन व्यापार भूत जो क्रियामाहिं यह रीति ॥

वस्तु यथारथ बोधक माहीं । यहुव्यवहार ज्ञानगत नाहीं ॥
ज्ञान कर्म आधीन न होई । तहांक्रियाकीविधिनहिंकोई॥
ज्ञान प्रथम श्रवणादिक गाये । बुद्धि शुद्धि के हेतु बताये ॥
मण्डन कह्यो सुनहु मुनिराया । ऐसोइ होहु जोआपबताया ॥
तत्त्व मसी आदिक ये बयना । नाहीं सही उपासन अयना ॥
है परन्तु मेरो अनुमाना । एकभाव नहिंकहहु सुजाना ॥
जीवहिपर समान कहि गावैं । दोनहुं को नहिं भेद मिटावैं ॥
मण्डन हम कहँ देहु सुनाई । समता केहिप्रकारश्रुतिगाई ॥

* हे द्विजवर

मानहु चेतन भाव समाना । सर्वज्ञादि गुणन सम जाना ॥
प्रथमपक्ष तव नहिं बनिआवा । जोप्रसिद्धसोश्रुतिनदिखावा ॥
दूसर पक्ष जो तुम उर आना । तव सिद्धान्त विरुद्धसुजाना ॥
यत्तिवरजीव नित्य श्रुति गावैं । सुख बोधादिक गुणदर्शावैं ॥
होहिंअविद्यावश नहिंभाना ।यहिप्रकारश्रुतिकहहिंसमाना॥
तवबर्णित कछु दोष न आवा । तवयहशंकर वचन सुनावा ॥
मण्डन जो ऐसो तुम मानहु । तवपरभावन क्योंउरआनहु ॥
तत्त्व मसी कर आशय सोई । वृथा दुराग्रहतव क्यों होई ॥
जो तव मन यह शंका आवे । है परतो क्यों नहिं दर्शावे ॥

दो० यहि संशयको उत्तर तुम निजमुखकह्यो सुजान ।
जीव अविद्या ££वरन ते परता होय न भान ॥

विश्वरूप तव और प्रकारा । अवलम्बनकरिवचनउचारा ॥
जोपर जग कारण भगवाना । है चेतन सो जीव समाना॥
चेत नते जग सृष्टि बताई । याते लाभ कहौं यतिराई ॥
अणु प्रधान प्रमुख जगकारन । वादिनमाने होहिं निवारन ॥
जोश्रुतियहुआशय द्विजगहती । तत्त्वमसित ऐसो पद कहती ॥
तत्त्वमसी प्रयोगनहिँ गावति । जो बहुअर्थ श्रुती दर्शावति॥
प्रधानादिकारण करखंडन । प्रथमहिंश्रुतिकरिदीन्हेंखंडन॥
एक अनेक रूप मैं धरहूं । बहुप्रकार जग सर्जन करहूं ॥
ऐसो चेतन निज उर धारा । सो जड़ते नहिँ बनै विचारा॥
प्रधानादि मत खंडन हेतू । कहहुन तुम ऐसोद्विज केतू॥
मंडन कह्यो सुनो भगवाना । एकभाव नहिं बनै सुजाना॥
सबसे बड़ प्रत्यक्ष प्रमाना । तासु विरोध होय गुनवाना ॥
और मंत्र जैसे जप लायक । तैसे तत्त्व मसी यति नायक॥
बाले तब शंकर सुखदाई । विश्वरूप सुनियो मनलाई॥
गोसन * भेद प्रमा † जो होई । तौ अभेद श्रुति बाधक सोई॥
इन्द्री सन्निकर्ष तेहि ‡ माहीं । तेहितेंहिभेद प्रमाकछुनाहीं ॥

* इंद्री †ज्ञान ‡आत्मा में

तेहि कारण अभेद श्रुतिबाधा । कौनि रीति चाहौतुमसाधा ॥
सुनहु नाथ प्रत्यक्ष विरोधा । अहै प्रकट सबको यहबोधा ॥
दो० ईश्वर ते मैं भिन्न हौं भासि रहौं यहु भेद ।
यहीविशेषण जीवको मानहु आपुन खेद ॥
भेदेन्द्री संयोग न होऊ । उक्त विशेषण मानहु सोऊ ॥
जौनविशेषण द्विजवर मानहु । तेहिको सन्निकर्ष*तहँजानहु ॥
कम्बुग्रीव कलश सब कहहीं । †तासुविशेषणजानतअहहीं ॥
कहुँन होय घट पृथिवी माहीं । आव विशेषणबलसों‡नाहीं ॥
भेदाश्रय आतम जो होई । गो+कर सन्नि कर्षलहु सोई ॥
तबहीं होय विशेषण योगा । काहू सों न जीव संयोगा ॥
तेहिकारण हमकहैंसोमानौ । केवल को स विशेषनजानौ ॥
यहि प्रकार बरन्यो भगवाना । खंडन तबयहु उतरु बखाना ॥
आतम को नहिँ इन्द्री योगा । कौन्हेंजोयहुआपुनियोगा ॥
आयो यहु संशय मन माहीं । नैयायिक मत देखो नाहीं ॥
आतम द्रव्य द्रव्य मनकहहीं । उभय द्रव्य संयोगहु लहहीं ॥
यहुसुनिकरिविकल्पभगवाना । तासु पक्ष खंडन उर आना ॥
आतमअणुकिसुव्यापकअहई । उभयभाँति संयोग न लहई ॥
दो० जो सावयव होय जग लहै सोई संयोग ।
साथ सावयव वस्तु के ऐसो शास्त्र नियोग ॥
मन को इन्द्री मानिकै भेदा÷८८संगि बखान ।
परमारथ ते मन नहीं इन्द्री हैं÷ गुनवान ॥
इन्द्री केर सहायक सोई । नयनसहाय दीप जिमिहोई ॥
सपडन कह्यो सुनों मोहिपाहीं । इन्द्री जनित भेद जो नाहीं ॥
तौ तुम भेद प्रमा असि मानौ । साक्षीको स्वरूपकरिजानौ ॥
यहि प्रकार जिव भेद प्रसंगा । श्रुतिधारकैसेकहहिंअसंगा ॥
यती नाथ कह वचन सुहावा । सुनहु भेद कर जैसो भावा ॥
माया योग ईश है जोई । जीव अविद्या संगति सोई ॥

* आत्मामें † घट ‡ घट + इन्द्री का ÷आसंगी ÷ हे ॥

उभयउपाधित्यागिश्रुतिभाखा । युगल शुद्ध महँ भेद नराखा ॥
यहिविधिविषयभेदअवरोधा । नहिंकछुश्रुतिप्रत्यक्षविरोधा ॥
अथवा जो प्रत्यक्ष विरोधा । पुनितेहिप्रबलश्रुतीजबशोधा ॥
तब विरोध को अवसर नाहीं । इहांसुनोउपमासोहिं पाहीं ॥
ज्ञान प्रसिद्ध रजत कर होई । सीप ज्ञान बांधै पुनि सोई ॥
जब यहसुनी यतीश्वर बानी । विश्वरूप तबकह्योबखानी ॥
ऐसोइ होहु यथा तुम माना । तदपि सुनो हमरोअनुमाना ॥
तब अंगी कृत भेद समेता । सदा जीवग्रह रहहिअचेता ॥
नहिं सर्वज्ञ ईश सम होई । घट की उपमा पावहि सोई ॥
मराडन जो तुम भेद बखाना । सांचोवा कल्पित उरआना ॥
पहिले में उपमा* की हानी । दूजो तुमक्यों कहो बखानी ॥
सो० कल्पित भेद अपार जो जो जे मानत अहैं ।
कीन्हे अंगीकार हमहूं स्वप्न प्रपंच सम ॥
दोष भयो सिध॰साधन रूपा । क्योंनलखौनिजउक्तिस्वरूपा ॥
जब यहु शंकर उत्तर दीन्हा । औरप्रकार पक्षतिनकीन्हा ॥
अपने प्रत्यय सों नहिं बाधा । भेदा श्रय चाहैं हम साधा ॥
आतम ज्ञान यद्यपि है जाई । घटपट भेद मिटब कठिनाई ॥
आतम ज्ञान बाध नहिं पावै । ऐसो भेद तुम्हैं नहिं भावै ॥
तब विपरीति वस्तु हममानी । कौनहु दोष न भा बिज्ञानी ॥
आपन प्रत्ययको जग मराडन२ । मानहुँ कहा अर्थ तुममराडन ॥
सुखदुख सहित आतमा जानौ । अथवासुखदुखरहितबखानौ ॥
भेद प्रथम महँ हमहूं माना । भासिधि साधनदोषसुजाना ॥
दूजे में नाहीं बनि ऐहै । उपमा हानिवही फिरि ऐहै ॥
निरुपाधिक तहँ भेद यतीशा ।कहहुं सुनौचित लाय मुनीशा ॥
दो० सो पाधिक जीवे शंकर भेद करौं स्वीकार ।
निरुपाधिकघट ईशकर हमकीन्हों निर्द्धार ॥
यति वर सुनिमंडन के बयना । कहनलगेमुनिये गुण अयना ॥

* नेहनानास्तिकिंचन • सिद्ध २ आभूषण

भेद ईश घट कर जो मानो । तहां उपाधि अविद्या जानो ॥
तुम्हरे जड़ता के अनुमाना । सुनिये यह प्रयोग*मैंनाना ॥
आतम को कबहूँ नहिं भेदा । जेहिकारणचितघनगतखेदा ॥
यह अनुमानहृदय निजआनो । चेतन चेतन भेद न जानो ॥
सुनि यतीश के बचन उदारा । मण्डन पुनियहबचनउचारा ॥
धर्मिप्रमा जेहि बाधन कीन्हा । आतमभेद नाथ हम चीन्हा ॥
संतत रहित ब्रह्म मत माना । तुमजस मानहु सुनहु सुजाना ॥
ब्रह्म ज्ञान सन भेद की बाधा । घटकि प्रमासन भेदअबाधा ॥
सिध साधन नहिं उपमा हानी । दोष कछू मुनिवर विज्ञानी ॥
पूरण ज्ञान भेद नहिं जाई । अथवा अल्पबोध द्विजराई ॥
प्रथमपक्षनहिं बनहिद्विजेशा । पुनिसोइउपमाहानिप्रवेशा ॥
दुसरे महँ सिध साध न दोषा । मण्डन तुमजानहु तजिरोषा ॥
धर्मी पद सों केहि तुम मानो । निर्गुणकिधौंसगुनपहिंचानो ॥
अंत्य पक्ष नहिं बनहितुम्हारा । सगुन बोध भेदहि नहिंटारा ॥
हमहिंइष्ट सिध साधन आवा । दोषनतुमसननिटहिमिटावा ॥
मण्डनअब प्रथमहिं तुमकहहू । कौनि रीतिसन साधनचहहू ॥
तेहि अज्ञात कहहु द्विजराई । अथवा ज्ञात देहु समुझाई ॥
जो अज्ञात ब्रह्म तुम मानहु । पक्षाऽसिद्धि दोषतहँ जानहु ॥
उपमा तासु सुनहु गुणवाना । यथाकरहि कोऊअनुमाना ॥
ब्योम पंक है पद्म समाना । परम सुगंधि नजाय बखाना ॥
फूलि रहा अति शायसुखदाई । निर्मल सरपंकज की नाई ॥
जो तुम ज्ञात ब्रह्म उर आना । विन अभेदतहिंमिलैसुजाना ॥
तेहिश्रुति बल अभेद तुमपावा । तेहि चाहो अनुमान उड़ावा ॥
अस लखि है तुम्हरो आरोपा । ह्वैहैश्रुतिशरकरव्याकोपा ॥

दो० तब अनुमानविरोध को छोंड दियो द्विजराय ।
पुनि मंडन बोलन लगे श्रुति विरोध दर्शाय ॥

जीव ब्रह्म दुइ विहँग सजाती । प्रेम परस्पर सहज सँघाती ॥

* अनुमान † निर्गुणको

भव तरु दोनहुं कीन्ह बसेरा । एककर्म फल खाहि घनेरा ॥
दूसरेको नहिं फलकी आशा । बिनचाखेनितकरहिप्रकाशा ॥
यहश्रुति उभय भेद शुठिसाधा । भेद्भेद श्रुतिकी शुनि बाधा ॥
लोक प्रसिद्ध भेद जो द्विजवर । जन्ममृत्युदुखप्रदअतिशयतर ॥
जौनि बात संसार न जाना । करै अलौकिक बेद बखाना ॥
आपुहि आपु भेद प्रकटाना । तासि श्रुतीकब करिहै गाना ॥
बिफल भेद को जो श्रुति कहई । द्विजवर तौ प्रमाणकबलहई ॥
मंडन जो ऐसो नहिं मनिहौ । अर्थ*वाद सबसांचोजनिहौ ॥
जेहि मेंहै कछु स्वारथ नाहीं । सोप्रमाण करिहौ उरमाहीं ॥
विश्व रूप बोले मुनि राया । हमसनसुनहु प्रमाणउपाया ॥
बरनहिं अर्थ प्रसिद्ध उदारा । श्रुति मूलक स्मृति स्वीकारा ॥
तैसेहि लोक सिद्ध जो भेदा । होय प्रमाण मूल लखिवेदा ॥
द्विजवर सुनहु त्यागि संदेहा । सब विदुषन कर संमत एहा ॥

दो० श्रुतिस्मृतिके अर्थ महँ तासुमूलपहिंचानि ।
जाननि हारे वेद के निर्बल निज उर आनि ॥

नहिंमानहिं जब श्रुतीप्रमाना । तबकिमिमानहिंलोकअयाना ॥
प्रथमहिं सिद्ध भेद सब जाना । चहिये कहु तहँ वेद प्रमाना ॥
उभय† भेद बादिनिश्रुतिमानी । तुमसन कही इहां लौं बानी ॥
यहश्रुति कोअबहृदयसुनावौं । तुम्हरो सब संदेह मिटावौं ॥
बुद्धिविवेचनकरि श्रुतिगावा । भव भय रहित जीव दर्शावा ॥
सुख दुखभागि सत्व‡दर्शायो । साक्षी चेतन पुरुष लखायो ॥
ऐसो अर्थ सहोनहिं गयऊ । तासु उतरु मंडन अस कहेऊ ॥
जोयह श्रुती ईशकहँ त्यागा । बुद्धिजीवकर करहि बिभागा ॥
तौजड़ कहँ भोगी ठहरै हैं । केहिविधिसोप्रमाणश्रुतिपैहैं ॥
हमसों द्विजशंका जनिकरहू । पैंगि रहस्य बोध उरधरहू ॥
यहश्रुतिकरतहँअधिकविचारा । यही अर्थकीन्हो निरधारा ॥
सत्व सदा सुख दुख संयोगी । द्रष्टा पुरुष प्रपंच बियोगी ॥

* फलश्रुति † जीवेश ‡ बुद्धि

मंडन बोले सुनहु यतीशा । पुरुष शब्द बाची तहँ ईशा ॥
सत्व शब्द शारीर * जनायो । जीवबुद्धि तहँ नहिं दर्शायो ॥
पैंगि रहस्यभली बिधि देखौ । द्विजवरतर्बनिश्चययकरिलेखौ ॥
तहांसत्व कर कीन्हविबेका । जेहिसन देखै स्वप्न अनेका ॥
सत्वशब्दकहि करि जो गाई । कहि लक्षण सो बुद्धि बताई ॥
सो० जो जाने यह देह क्षेत्रज्ञ तासों कह्यो ।
यहिमेंनहिंसंदेह उभयशब्दकीवृत्तिलखु ॥
पुनि शारीरकमहँ द्विजराया । क्षेत्रज्ञ लक्षण दर्शाया ॥
द्रष्टा को पर्य्याय † बखानो । अपने मन संशय नहिंआनो ॥
जीवहि स्वप्नक्रिया करकर्त्ता । वरन्योयतिवर पुनि भवहर्त्ता ॥
सो ईश्वर द्रष्टा यति राया । क्षेत्रज्ञ पदसों कहि गाया ॥
अर्थ चहहु द्विजवर उपरोधा । नहिं देखहुव्याकरणविरोधा ॥
तिङ्प्रत्ययकरि कर्त्ता गावा । करण तृतीया सों दर्शावा ॥
जेहिकरि देखै स्वप्न अपारा । यहि शरीर को देखन हारा ॥
ऐसो जासु विशेषण भाषा । तहँकिमिकरहुईशअभिलाषा ॥
यतिवरकहहिशब्द शारीरा । ईश्वर व्यापि रह्यो सवतीरा ॥
तेहिपरसों ईश्वर क्यों नाहीं । आवत यतिवर तब मनमाहीं ॥
शंकर तब बोले हर्षाई । सुनो गिरा हमरी मन लाई ॥
जोव्यापकईश्वरहिविचारो । क्यों शारीर नाम तेहिपारो ॥
जिमिनभव्यापिरहोजगमाहीं । क्यों शारीरकहैं तेहिनाहीं ॥
मण्डन बोले सुनु योगेशा । यह श्रुति जो न कहैजीवेशा ॥
बुद्धि जीव करकरहिबखाना । बुद्धि अचेतन सबकोउ जाना ॥
जड़ कोसुखदुखभोगीकहही । ऐसीश्रुति प्रमाणक्योंलहही ॥
विश्व रूप जिमि लोहे माहीं । देखौ दाह शक्ति कछुनाहीं ॥
अग्नि योग दाहक पुनिसोई । बुद्धिहु तैसेहि भोगी होई ॥
चित्प्रवेश चेतन ह्वै जाई । यहिविधिसकलभोगबनिजाई ॥
यहश्रुति जो अभेद परगाई । यति वर और सुनो मन लाई ॥

* जीव † त्यमन्त

दो॰ छाया तप सम भिन्न द्वौ कीन्हे बुद्धि प्रवेश ।
एक कर्म फल पान कर प्रेरक एक सुरेश ॥

कठ वल्ली श्रुति भेद सुनाया । भै अभेद बाधक मुनि राया ॥
है व्यवहार सिद्ध सब जाना । वही भेद जो मंत्र बखाना ॥
सो*अभेदश्रुति बाधक नाहीं । मंडन करु विचार मनमाहीं ॥
कहहि अलौकिकअर्थजनाई । सो अभेद † श्रुति परम सुहाई ॥
है बलवान भेद श्रुति बाधक । असमभुञ्यो द्विज‡ भेदप्रसाधक ॥
यतिवर दायक नाथ सुजाना । भेद श्रुती सब भांति प्रमाना ॥
प्रत्यक्षादि प्रमाण सहायक । है अभेद बाधक सब लायक ॥
बुधवर अग्र गामि द्विज राई । विश्व रूप सुन तर्क विहाई ॥
औरप्रमाणप्रबलनहिंकरहीं । सब प्रमाण ऊपर श्रुतिरहहीं ॥

दो॰ श्रुति गतार्थ ग्राहक सकलजहँलों जगतप्रमान ।
दुर्बलता के हेतु सब उर आनौ धरि ध्यान ॥

जोयह ÷ब्रह्मभाव क्योंनाहीं । यतिवरयह+ संशयमनमाहीं ॥
वस्त्रादिक सों ढांपेमंडन × । जिमि घटकरैप्रकाशअखंडन ॥
तथा अविद्या वृत्तन प्रकाशै । तत्त्व ज्ञानि पुरुषन कहँ भासै ॥
इत्यादिक मुनि युक्तिसुहानी । सुनि अनुमोदनकीन्हभवानी ॥
मंडन गिरा वेग सुन हारी । शंकर युक्ति मनोहर प्यारी ॥
बारहिंबार सराहि सुवानी । पुष्प वृष्टिवर कीन्हि भवानी ॥
श्री भारति मध्यस्थ सयानी । लखिपतिकीमालाकुंभिलानी ॥
श्री शारद बोली मृदु बयना । भिक्षाउभय करहुगुन अयना ॥
यहिप्रकारशिवविजयदिखाई । शंकर सों यह विनयसुनाई ॥
दुर्वासा मोहिं दीन्हों शापा । करोकृपा लखिममसन्तापा ॥
राउर विजयअवधिकरदीन्ही । आजुविजयशंकरतुमकीन्ही ॥
अब शिवमैंजैहौंनिजधामा । असकहिचलनचह्योअभिरामा ॥

दो॰ बन दुर्गा के मंत्रसों बांधी देवि तुरन्त ।
ताहि कोजोतो चहैं श्रीशंकर भगवन्त ॥

* मंच † तत्वमेभ्यादि ‡ है ÷ जानि + जानि × है

मत अद्वैत सिद्धि के काजा । ऐसो मन कीन्हों यतिराजा ॥
नहिं सर्वज्ञ कहावन हेतू । तिहुं जग पूजित श्री वृषकेतू ॥
पुनि बोले शारद सन शंकर । जानों तव प्रभाव अतिशयतर ॥
चतुरानन गृहिणी जग जानी । शंभु सहोदरि मातु भवानी ॥
लक्ष्म्यादिकसब तव अवतारा । जगपालन हित परम उदारा ॥
भक्तशिरोमणिजननितुम्हारो । जौहैं तोहिं सदा मैं ध्यारो ॥
ममरुचिराखिजाहु निजधामा । मानि लियो चतुरानन रामा ॥
दो० तब शंकरमन हर्षित यहि बिधिकीन्ह बिचार ।
मंडन के अब हृदय को देखौं कहा प्रचार ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिरामकृष्णाभारतीशिष्यमाधवानंद भारतीविरचितेश्रीशंकरदिग्विजयेमंडनशास्त्रार्थपरोऽष्टमःसर्गः८ ॥

श्लोक ॥ कुलुत्थदोषान्प्रविनाशयन्तं स्वानन्दरूपंसुविकाशयन्तम् ॥
एकांपरेणात्मनिभावयन्तंनमामहेयोगिनृपंवयन्तम् ॥ १ ॥

## अथनवमः

सो० यतिबर के सबबैन निगमागम शुभनय निपुण ।
सुनि मंडन गुण ऐन कियो अग्रह दूरि सब ॥
तदपि कर्म जड़ मति उरआनी । तुरत कही संशय युत बानी ॥
सत्य कहौं मेरे मन माहीं । नाथ पराजयको दुख नाहीं ॥
जैमिनिवचनसकलमथिगयऊ । यहहमकोअतिशयदुखभयऊ ॥
भावी भूत सकल मुनि जाना । जगउपकारक परम प्रधाना ॥
वेद प्रवर्तन को ब्रत जिनको । ऐसोक्योंचहियेपुनितिनको ॥
वृथा सूत्र केहि काज बनाये । तब बोले शिव वचन सुहाये ॥
जनि यहि संशयतुम उरआनो । मुनिवर कोनहिं दोषबखानो ॥

कछुअनीतिनहिंजयमिनिकीन्ही।तासुहृदयइमसकहिंनचीन्ही
हम सन कहहु नाथ मतिधीरा । तिनकर जो आशय गंभीरा॥
उचित जोकहिहौतुमयतिराई । गहिहैं हम अभिमान बिहाई॥
जयमिनि परब्रह्म के ज्ञाता । कियो विचारलोकसुखदाता॥
विषयबुद्धि बहुधा जग माहीं । ब्रह्म ज्ञान रहि है उर नाहीं॥
तिन परकृपा आनि उर माहीं । पुण्य कर्म तजि दूसर नाहीं॥
वर्णन कीन्ह मुनीश सुजाना । ब्रह्म मिलन करसाधनजाना॥
यहि कारण शुभकर्मबखाना । परब्रह्म कीन्हों नहिं गाना॥

दो० ब्रह्म मिलनहित श्रुति कहे वेद यज्ञ तपदान ।
ब्रह्मचर्य संन्यास पुनि योग उपासन ज्ञान ॥

मुक्ति परायण परम उदारा । मुनिवरधर्म कीन्ह निरधारा॥
यह निश्चय हमरे मनमाहीं । दूसर हेतु और कछु नाहीं॥
मंडन कह्यो सुनो यतिराई । यदपि सत्य उरभ्रम नहिंजाई॥
जैमिनि ऐसे सूत्र बनाये । वेद क्रिया वर आशय छाये॥
क्रियापरायणजोश्रुतिनाहीं । सो निरर्थ बरणी जिन माहीं॥
मुनिवर करजवयहअनुमाना । सिद्ध वस्तु पर नाक्यों माना॥
द्विजवरयद्यपिसबश्रुतिराशी। कहैं परंपर या अविनाशी॥
तदपि वेद कर्महु कहँ कहई। आतम बोध आशु फल अहई॥
ऐसो हेतु देखि मुनि रावा । कर्म परायण वेद बतावा॥

दो० ऐसो जो आशय रह्यो मुनिवर केर यतीश ।
खंडन तौ परमेश को काहे कियो मुनीश ॥

कर्म आप सब फलको दाता । कर्मछांड़िनहिं और विधाता॥
यहिकोकारणसुनुद्विजराया। मानत रहे कणाद निकाया॥
है अनुमान सिद्ध ईशाना । इहां करैं ऐसो अनुमाना॥
जग कर्ता ईश्वर कोउ मानो । जेहि ते जग कारज दरशानो॥
कारज को कर्ता नित होई । जिमि घट पर कर्ता रह कोई॥
बिनश्रुतिवचनकरहिअनुमाना । अरु अनुवाद वेदकहँ जाना॥

श्रुतिभिरगम्यपुरुषभगवाना ।बिनावेदकेहिविधिकोउजाना ॥
श्रुतिगोचर है जेहिकरज्ञाना । नाहिं मिलै कीन्हे अनुमाना ॥
ऐसो भाव हृदय महँ राखी । खंड्यो तर्क युक्ति शतभाखी ॥
दो० ईश्वर पर*अनुमान कहँ उद्भव प्रलय समेत ।
फलहुसहितखंडनकियो जैमिनियुक्तिनिकेत ॥
जेहिप्रकार हमकह्योबखानी । है रहस्य प्रतिकूल न बानी ॥
मूढ़ गूढ़ भावहि नहिं जानैं । मुनिर्हिनिरीश्वर बादिबखानैं ॥
मुनि जानैं परब्रह्म अनादी । एतेहि माहिं निरीश्वरवादी ॥
यथा निशातम मलिनअपारा । करैनदिनमणिकहँअँधियार॥
जैमिनिवचनहृदयशिवकहेऊ । मंडनमनअतिशयसुखभयऊ ॥
सहित शारदा सभा सयाने । गिरा यथावत सुनि हरषाने ॥
जैमिनि आशय शंभु बखाना । जानि लियो मंडन सुन बाना ॥
तद्यपि यहमनकीन्हविचारा । सुनि लीजै जैमिनि के द्वारा ॥
सुनिसुमिरन कीन्होंमनमाहीं । आये जैमिनि मंडन पाहीं ॥
सुमतिसुनोसंशय जनि करहू । भाष्यकार बाणी उर धरहू ॥
जोमम बचन भाव इनकहेऊ । ऐसोइ तात हृदय मम रहेऊ ॥
मेरो हृदय अकेलन जानहिं । निगमागमको भावबखानहिं ॥
ये त्रिकालदर्शी सब जाना । नहिं कोऊ यतिराज समाना ॥
सब श्रुतिशेखर वचन सुहाये । मम श्रीगुरु चित्परानिरायि ॥
तिन सों भे मम बुद्धि सयानी । तत्प्रति‡कूलकहवकिमिबानी॥
तेहि कारण सबसंशयत्यागी । सुनु मम बचनहृदय अनुरागी॥
दो० भवसागर महँ मग्नलखि लोग लियो अवतार ।
इन कहँ जानो पर पुरुष अद्वय रहित विकार ॥
कृतयुग कपिल रूपधरिज्ञाना । लोकतरन हितकीन्ह बखाना॥
दत्तात्रेय स्वरूप पुनि गहेऊ । त्रेताप्रजहि ज्ञान तिन कहेऊ ॥
द्वापर व्यास रूप भगवाना । कलिमहँशंकर कृपानिधाना ॥
यहिविधि शिवपुराणमेंगाई । इन की महिमा जगसुखदाई ॥

*परायण † परायण ‡ प्याम

तेहि कारण मन औरनधरहू । शरण होहु भवसागर तरहू ॥
असकहि मुनि भे अंतरधाना । शिवमूरति धरिहृदयसुजाना ॥
करशिशरोसशीतवशिरनाई । करन लगो विनती हरषाई ॥
छं० मैं ज्ञानिलीनप्रभाव राउर तुम जगतकारण सही ।
तुमसमनकोउजगअधिकतातबकहहुप्रभुकोनेलही ॥
आनन्द ज्ञानस्वरूप देखो जगत अबुधन सों भरो ।
उद्धाररहित तिनकेकृपानिधि आपुशिवनरतनधरो ॥
जो एकपद*सबवेद मस्तक बीचप्रति पादन कियो ।
तुमतासुप्रतिपालकमनोहरतत्त्वमस्याऽऽयुधलियो ॥
ततरु जैन प्रलाप विस्तृत कूप जो अँवरो महा ।
गिरिजातपुनिनहिँपावतो सो†कौनसी आपदतहां ॥
दो० जागि गये हम स्वप्नसों स्वप्न दूसरो देखि ।
मानहिंमूढ विमोहवश अपनेहृदयविशेखि ॥
तिमि लोकांत जनिकहँ मुक्तिकहहिँ कोइलोक ।
तिन्हहि हहँसैं तवदास जे माया रहित विशोक ॥
छं० धिग्भेदि‡ प्रलपित मुक्तिकहँ संसारजहँ लागोरह्यो ।
यह सेव्यसेवक सेवना कर्तृत्व दुखजहँ नहिँबह्यो ॥
तवकथितअस्थिर मुक्तिको अत्यन्तअनुमोदनकरौं ।
भवहीननिरवधिबोध चित्सुखअछततनुउरसंभरौं ॥
सो० अखिल ईशको ग्रास कीन्ह अविद्याराक्षसी ।
फारिपेट बिन त्रास तहँ सों लाये काढ़ि तुम ॥
असुर नारि घेरी जो सीता । ग्रास भई नहिँ परम पुनीता ॥
अखिलस्वामिप्यारिहिहनुमाना । जायदेखिआये बलवाना ॥
निश्चरिमारिताहिनहिँ•लायो । तदपितासुयशतिहुपुरछायो ॥
तवयशको शंकर मितिनाहीं । किमिकहिअवैसोमोहिंपाहीं ॥
सब संसृति दुख मेटनि हारी । अतिशयमहिमानाथतुम्हारी ॥
बिनजाने जो भा अपराधा । क्षमहु दयापय सिन्धुअगाधा ॥

*आत्मा † आत्मा ‡ भेदवादी • सीता

गौतम कपिल कणादअनेका। रहाजिनहिँ बहुबोध विवेका ॥
मोहलह्यो श्रुतिनिर्णयमाहीं। शिवबिनतहँ समरथकोउनाहीं॥
सुधाधार सम सरस प्रचारा। तवमुखचन्द्र गलित व्याहारा ॥
जबसोंयहिजगमाहिँ बिराजे। तब सों मोह तिमिर सबभाजे ॥

॥ दो० काणादिक बाणी जनित रहा मोह तम भार ॥
॥ हृदय मलिनता हेतु सों गयो भयो उजियार ॥

ईश्वर विग्रह खण्डन करहीं। श्रुतिगोछेदन मनमहँधरहीं ॥
महा मोह मद सों मतवारे। बादि समूह ग्रसन अनुहारे ॥
व्यापिगयो महिमण्डनमाहीं। रहीमुक्ति आशा जगनाहीं ॥
सत्य ब्रह्मवादिन के राजा। राउर जेवर शिष्य विराजा ॥
उदय भये दिशि दिशिबहुतेरे। जितकलिमलजितचित्तघनेरे ॥
प्रथम*कहींचिंता अब नाहीं। रहोन रहिहै तम जगमाहीं ॥
अल्पबुद्धि कृत विवरण जोई। भये सर्व श्रुति ग्रासक सोई ॥
नाथ गिरा घृत धार समाना। जोश्रुतिताहिकरतिनहिंपाना॥

॥ दो० तौ श्रुतिआतमभावको किये उचितनिरधार।
॥ करती सुखसों विश्वमहँ कौनप्रकार विहार॥

भव सविता कर जो संतापा। सहिनजायजगत्रिविधिप्रतापा॥
शशिकर निंदकशंकरबानी। जोनहिं होतिसुधा रसखानी॥
मिटतोकौनिभांति भवतापा। तथा जातकेहिविधितमपापा॥
सुत†गृह दार सुवन धननाना। ब्रतसंयमसबहि गो अभिमाना ॥
कर्म‡ रूढ परो भव कूपा। सोहिंनिकारो कृपास्वरूपा ॥
प्रथमजन्मतपकीन्ह अपारा। तासुपुण्य भा दरश तुम्हारा ॥
नतरु आपु जगदीश कृपाला। दुर्घट तव सँग कथा रसाला ॥
नाथ गिरा परिचय मैंपावा। शांतिसुकृतिको बीजसुहावा ॥
दम स्वरूप अंकुर उल्लासा। तेहिकरपल्लवसरिसप्रकाशा ॥
कल्पविटप सम महाविरागा। तासु मनहुं वरकली विभागा॥
लता तितिक्षा सुमन समाना। मन समाधि मकरंद प्रवाना॥

*मुक्तिनिर्णय † शास्त्र ‡ मुख्य

श्रद्धा को शुभ फल सुख दाई । मिलो अहो ममभाग बड़ाई ॥

दो० नाथकृपा चितवनि झरी धन्यपुरुष जो पाव ।
अमरसुखदभवग्रसितकहँमुक्तिस्वरूपदिखाव ॥

यहिजगविषयी लोगलुभाने । मृगनयनीचितवनि रुचिमाने ॥
कुच तट पट खोलत मनलाई । धन्य जन्म परिरंभण पाई ॥
तासु कला संभ्रम गुणलीला । परवशहृदयविषयरसशीला ॥
ऐसेहु अहैं बहुत जगमाहीं । कामिनिक्रीड़ामृग नरनाहीं ॥
सुकृतिशिरोमणिअधिकसयाने। सुयश भवन जगमें हरयाने ॥
सुखप्रद तव वचनामृत धारा । करहिसगनमनवारिविहारा॥
नाथ भणित मुक्तामणि चारू । तंतु मनोहर सुभग विचारू ॥
हारसरिसशुचि ज्ञानप्रकाशा । करहिअविद्यातमकरनाशा॥
अधिकमनोहरयहिजगमाहीं । तेहिसमानकोउभूषणनाहीं ॥
जे सब संत ताहि उर धारहिं । हर्षितदुख दारिद्र निवारहिं ॥
तिनकीदेखिअलौकिकशोभा । आतम विद्यातिय मनलोभा ॥
ग्रहण करै नित इन कहँ धाई । प्रात*मखप्रमुखसुरेशविहाई ॥
तवयशसविता सरिसप्रकाशा । पंकजश्रुति उपदेशविकाशा ॥
संत कोक पोषक सुख दाई । दुखप्रद खल उलूकसमुदाई ॥
श्री शंकर मूरति सुखधामा । तेहिकोजोहमकीन्हप्रणाम॥
निजानंद सागर सुख भयऊ । उर दुरंत तमसबमिटिगयऊ ॥

छं० सुमिरनतुम्हारो कल्पतरू नंदनकमल पदवंदना ।
संकल्प सुरतरु बेलितव गुण स्वर्नदी† जगनंदना ॥
चितवनितुम्हारीस्वर्गवरपहिंचानितवसेवकमुदा ।
अतितुच्छजानहिंस्वर्गकोजहँपतनभयलागेसदा ॥

दो० तेहि कारण सुतदारगृह द्रविण कर्म परिवार ।
त्यागि शरण आयो भयो किंकर नाथतुम्हार ॥

सेवक जानि कृपा अब कीजै । प्रभुमोहिंउचितसिखावनदीजै॥
यहिविधिमंडन विनयसुनाई । शंकर हृदय कृपा सरसाई ॥

*इन्द्रादि † गंगा

तबप्रभुशारद ओर निहारे । शिवरूचिलखितेहिवचनउचारे॥
मैं राउर मनकी गति जानी । यति केशरी सुनो ममवानी ॥
भाखावाद तापस के बयना । तुमहिंसुनावतिहौंशुनअयना ॥
एक समय रहिमातु समीपा । तहां एक तापस कुल दीपा ॥
आये जटा जूट शिर भारी । अतिसोहैदामिनि छविहारी ॥
श्वेत विभूति शरीर विराजा । ऐसो तेज मनहुं दिनराजा ॥
अर्घादिक पूजा विधि जैसी । मम माता कीन्ही सब तैसी ॥
पुनिप्रणामकरिपदजलजाता । मम भावी पूछा सबमाता ॥
हे मुनिनाथ सुता कर भागा । नहिंजानौं गुणदोष विभागा ॥
तप बल तुमभावी सब जानो । करुणाकरिप्रभुमोहिंवखानो॥
गोपनीय यद्यपि किन होऊ । भाषहिंप्रगतदेखि मुनिसोऊ ॥
केती वयस सुता की ह्वैहै । कैसो पति कितने सुत पैहै ॥
अन्न बसन धन कैसो पैहै । प्रीतम सहित यज्ञ मन लैहै ॥
अस पूछा मम मातु सुजानी । नयन मूंदि देखा मुनि ज्ञानी ॥
सकल प्रश्नक्रमसों मुनि गाये । गोपनीय पुनि चरित सुनाये॥
वेद वहिर्मुख संमत धारी । व्यापिगये सब धरणिमँझारी॥
वैदिक पंथ अस्थापन कारन । मंडनरूप धरो चतुरानन ॥
तासुप्रियातव सुतासयानी । जिमिशिवप्रिय जगजननिभवानी॥
यथा रमा प्यारी हरि केरी । करिहैमहिसख क्रियाघनेरी ॥
पति अनुरूप पाय सुख पैहै । सुत ह्वै हैं पुनि जग यशगैहै ॥

दो० प्रबल कुमति की वृद्धि सों श्रुतिसिद्धांत अनूप ।
नष्ट उधारन हेतु शिव धरिहैं मनुज स्वरूप ॥

निजपद महिमंडित प्रभुकरिहैं । यती राज वर वेष सुधरिहैं ॥
तव तनया पति साथ विवादा । ह्वैहैचिरलौं विगत विषादा ॥
देखि शम्भुकी विजय सुहाई । गहिहै शरण स्वगेह बिहाई ॥
कहिअसवचन मुनीशसिधावा । सबकछुभयो यथामुनिगावा ॥
शिष्यभावप्रथमहिकहिराखा । सोकिमिहोयदृथामुनिभाषा ॥

यद्यपि यह सब सत्य यतीशा । नहिंसमग्रजीत्योमम ईशा* ॥
अर्द्ध अंग मम देह बिराजै । याहू को प्रभु करहु पराजै ॥
तब निजशिष्यकरी त्रिपुरारी । यहिबिनती सुनिलेहुहमारी ॥
यद्यपि जग कारण परमेशा । परम पुरुष सर्वज्ञ सुरेशा ॥
तदपि नाथ सह विवदन हेतू । हृदय कुतूहल मम वृषकेतू ॥
याय † जूक अर्द्धांग भवानी । धर्मचारिणी परम सयानी ॥
विमल मधुर वर आशय सानी । उभय भारतीकी सुनिबानी ॥
अति शय मुदितभये श्रीशंकर । शारदको दीन्हीं यह उत्तर ॥
निजबिवादरुचिसुमुखिबखानी । अवले‡उचितकहीनहिंबानी ॥
महा यशी नर यह जग माहीं । करतबिवादबधुन सँगनाहीं ॥

दो० भगवन जेहि निज पक्षके भेदन में मन दीन्ह ।
नारी के नर तासु सँग बाद चाहिये कीन्ह ॥

जो चाहे निज पक्ष सँभारा । सो ऐसोनहिंकरहिबिचारा ॥
यही बिचारि मुनीश सयाना । याज्ञवल्क्यजिनकहँजगजाना ॥
नाम गार्गी नारि सयानी । तेहिसनबादकीन्हमुनिज्ञानी ॥
सुलभा अवला साथ विदेहू । कीन्हबिवाद न कछुसन्देहू ॥
ये दोनो शंकर जग माहीं । कहींनायकिमियशनिधिनाहीं ॥
सुनिये वचन युक्ति सरसाने । श्रुति॰सरिता सागर हर्षाने ॥
विदुष सभा बैठे यतिरावा । शारद साथ बाद सरसावा ॥
विजय परस्परकी रुचिभारी । बोलहिंबाद कथा बिस्तारी ॥
बुद्धि चतुरता रचित मनोहर । शोभितशब्दझरी जहँसुन्दर ॥
इमिबिवदहिंशारदयतिराजा । सुनिबिस्मितसबबिदुषसमाजा ॥
उभयकथा पद युक्ति विचित्रा । सबगुणयुत सबभांतिपवित्रा ॥

दो० इनकी उपमा शेष नहिं सवितहू नहिं पाय ।
नाहिं वृहस्पति शुक्र नहिं है सबसों सरसाय ॥

नियमकालतजि नितप्रतिहोई । रातिदिवस उपराम॰न सोई ॥
करहिं बाद दोनों नहिं जीते । यहिबिधिदिवससप्तदशबीते ॥

स्वामी † अतियजनकर्तामंडन ‡ हे • शंकर ॥ विवाद

शारद दीख विजय नहिंहोई। निगमागम सब जानहिंसोई ॥
अजयमानिपुनिकीन्हविचारा। इन संन्यास बालपन धारा ॥
जेतो नियम सदा ये करहीं। ब्रह्मचर्य सबविधिअनुसरहीं॥
कामागम इनको बुधि नाहीं। करिहौंविजयपूछितेहिमाहीं॥
यह मन में निश्चय जब आई। श्रीशारद अतिशय हरषाई ॥
कामागम की प्रश्न सयानी। लाय प्रसंग कीन्ह बरवानी ॥
छं० हैं पुष्प धनुकी कै कला अरु कलारूप बखानहू।
स्थान तिनको कहहु मोसन तथा जोतुम जानहू ॥
केहिभाँति स्थितमदनकीदुइपाखमोहिंबखानिये।
केहिरीतिसोंनरनारिमहँतिथिकहहुशंभुजोजानिये॥
सो० सुनि शारदकेबैन चिरलौं नहिंकछु शिवकह्यो।
श्रीशंकर श्रुति ऐन यहिप्रकार निजमन गुन्यो ॥
बिन उत्तर अज्ञान प्रकाशा। उत्तरु दियेनिज धर्मविनाशा॥
असबिचारि मनमाहिंसुजाना। मानहुकामाऽऽगमनहिंजाना॥
रक्षन हेतु यतिन को धर्मा। बोले शंकर सहज अकर्मा ॥
मास अवधि मोहिंदेहु भवानी। बादि अवधि संमतउरआनी ॥
काम शास्त्र अभिमानसयानी।पुनिछाँड़हुगी सुदतिसुबानी ॥
तव शारदकियो अंगीकारा। गगन पंथ यतिराज हंभारा ॥
योगि राज श्रुतिबिग्रह शंकर। तैसेहि सेवकसाथशशाकर ॥
नभ पथ जाति भूमि महँदेखा। मृत नृप देहविलाप विशेषा ॥
दिविच्युतअमरसरिसवपुधारी। दुखित सकल संत्रीनृपनारी॥
मृगया बश मूर्छित गत प्राना। अमरकनामनृपतिवर जाना॥
तरु छाया तर धरो शरीरा। निशासमय पालहिंगतधीरा॥
वचन सनंदन सों प्रभु भाषा। प्रकट करीअपनी अभिलाषा॥
यहअमरकनृपधरशिमंभ्झारी। सौतै अधिक जासुबर नारी ॥
सुंदरता सौभाग्य निकेता। पंकज लोचनिअइहिंसुचेता॥
सो नृप मृतक भूमि महँ सोवै। सह परिवार प्रजा सब रोवै॥

दो॰ यहि की देह प्रवेश करि तेहि सुत थापि नरेश ।
योगप्रभाव सँभारि पुनि निज तन करों प्रवेश ॥

यह इच्छा मोरे मन माहीं । प्रकट करतहैं सो तुम पाहीं ॥
नृपति अनूपमये बरबामा । कमलविलोचनिअतिअभिरामा ॥
किल*किंचित जे भेद घनेरे । देखा चहैं भाव तिन केरे ॥
जेहि में सर्वज्ञता निबाहीं । तेहि कारण ऐसो मैं चाहीं ॥
सहित सकोच शंभु की बानी । सुनिपुनिकह्योसनन्दनज्ञानी ॥
तुम सर्वज्ञ शम्भु जग माहीं । नाथतुम्हैंकछुअविदितनाहीं ॥
तदपिराउर भक्तिकृपाला । करहिमोहिंयहिसगावाचाला ॥
प्रथम रहे मत्स्येंद्र सुजाना । योगिराजगुणज्ञाननिधाना ॥
शिष्य तासु गोरक्ष योगिवर । तिनहिंराखिनिजतनरक्षापर ॥
मृतकनृपति तनकीन्ह प्रवेशा । करोंराजसुखसों तेहि देशा ॥
मङ्गल पूरि गयो महि माहीं । कौनिहुभाँतिप्रजादुखनाहीं ॥

दो॰ मेघ समय पर देहिं जल खेत यथा रुचि अन्न ।
नित मंगल युत प्रजा लखि मन्त्री भये प्रसन्न ॥

नृपतिअलौकिकज्ञानविशेषी । जानि गये सबलक्षण देखी ॥
योगीश्वर कोउ नृपतन आवा । तेहिकारणयहउदयसुहावा ॥
वशीकरन हित ते नृप रानी । समुझावत भे कहि मृदुबानी ॥
नृत्य गान अभिनय बहुतेरा । मनआसक्त भयो मुनिकेरा ॥
योगसमाधि बिसरिसबगयऊ । मुनिवरप्राकृत नरसमभयऊ ॥
गुरु शरीर रक्षक गो रक्षा । गुरु चरित्र जाना अतिदक्षा ॥
नटवर वेष धारि तहँ आवा । अन्तःपुर तियनृत्य सिखावा ॥
गुरु समीप पहुंचे यहि भाँती । राजा मुदित देखिगुणपांती ॥
अति समीप वर्ती नृप केरा । देख्यो तासु प्रसाद घनेरा ॥
एक समय वर अवसर पाई । बोधकीन्ह गुरुकहँसमुझाई ॥
भूपति राग दूरि जब भयऊ । योग बताय ताहि लै गयऊ ॥
यहि विधि पाई गुरु निजदेहा । असमुखदायकविषयसनेहा ॥

*रोमाश्रुहर्षभीत्यादेः संकरः

ऊर्ध्वरेत व्रत खण्डन पापा । ह्वैहै किमि न नाथपरितापा ॥
कहँ यतिवरको नेमसुपावन । कामकलाकहँ अधि कअपावन ॥
तुमहिं विचारहु गो जब ऐसे । धर्म सेतु रहि है जग कैसे ॥
परमहंस पथ थापन हेतू । कीन्हि प्रतिज्ञा तुमवृषकेतू ॥
अविदितनाथतुमहिंकछुनाहीं । राउर प्रेमजो मम उरमाहीं ॥
दो० तेहिवशकीन्हीविनययह क्षमियो मोहिंदयाल ।
उचितहोय सोकरहुअब करुणानिधि जनपाल ॥
पद्मपाद की सुनि यह बानी । बिनती नीतिभक्ति रससानी ॥
सुरगुरुसरिसगिराकहिशंकर । तातवचन पावनअति सुन्दर ॥
सावधानसनु तदपि सिखावन । परमारथ भवभीति नशावन ॥
जे असंग तिनको नहिं कामा । जिमिहरिगोपवधूअभिरामा ॥
योग क्रिया बज्रोलि सुहाई । रीति सहितजेहिनेकरिपाई ॥
तेहि कर रे तप तन नहिं होई । ऊर्ध्वरेत व्रत जाय न सोई ॥
हैं अभिलाष जिते जग माहीं । बिन संकल्प होहिं ते नाहीं ॥
सो संकल्प तात मोहिं नाहीं । कौनिउचाह यथाहरिमाहीं ॥
सो संकल्प न जाहि प्रकाशा । होयतासु भव बन्धन नाशा ॥
करहि चहैं सो कर्म घनेरे । संहृति दोष आव नहिं नेरे ॥
अहै विचार हीन पुनि जोई । देहादिक अहमित दृढ़सोई ॥
जो असजड़समतितत्त्वनजाना । तेहिप्रतिविधिप्रतिषेधप्रमाना ॥
अहै बहुरि जो आतम ज्ञानी । सोनहिंकबहुं देहअभिमानी ॥
वर्णाश्रम वपु जाति बिहीना । अज अरुबोधरूपगुण हीना ॥
सदा एक रस आपुहि जानी । निगमशिखरवासी विज्ञानी ॥
सदा असंग रहत है सोई । विधिकिंकरकबहूंनहिंहोई ॥
दो० मृद्भाजन जेहिभाँतिसोंबिनमृद*के न दिखाहिं ।
जगत भयोहै ब्रह्मसों तेहि बिन कछु जगनाहिं ॥
जगयह तीनि काल तहँनाहीं । रजतजौनविधि सीपीमाहीं ॥
है अग्नेय जग मिथ्या जाहीं । कर्मफलनसोंनहिं लपिटाहीं ॥

*मृत्तिका ब्रह्म

स्वप्ने पाप पुराय कर कोई । जागे नहिं तेहिकरफलहोई ॥
तेहिते जो परमारथ ज्ञानी । कर्मजनित कछुलाभनहानी ॥
सोशत बाजपेय किन करई । प्राण अमित विप्रनकेहरई ॥
नहिं जेहिकेअहमित उरमाहीं । तेहिकोपुरायपापकछुनाहीं ॥
एक समय सुर गुरु गे त्यागी । इन्द्रगर्व लखिभये बिरागी ॥
सुरपति विश्वरूप गुरुकीन्हो । होमसमयतिनकोछलचीन्हो ॥
असुरन को दीन्हो तिन भागा । मारो विप्रघात भयत्यागा ॥
एक बार देखे बहु यति गन । तिननमघवाकह्योमुदितमन ॥
तुम सबने लीन्हो संन्यासा । करियेकछुनिजज्ञानप्रकाशा ॥
तजि शौचादिक वेषमानको । नहिंपायोकछु वचनज्ञानको ॥
मारेसकल क्रोध बहुकीन्हा । वृकगणकहँतिनकरतनदीन्हा ॥
कीन्हो यद्यपि पाप घनेरा । बाँको बार न सुरपति केरा ॥
ज्ञान प्रताप दुखो नहिं माथा । है ऋग्वेद माहिं यह गाथा ॥
जनकबहुतमख जगमहँकीन्हे । विप्रन बहुतदान पुनिदीन्हे ॥
जीवन्मुक्त विदेह कहायो । तन संबंध स्वप्न नहिं पायो ॥
यजुर वेद कर यह इतिहासा । ज्ञानमहातम परम प्रकाशा ॥

दो० इन्द्र सरिस नहिं हानि कछु नृपति जनकसमवृद्धि ।
पुराय पाप सों ज्ञान की यह विवेक वर सिद्धि ॥

ज्ञानी करहि न मन संतापा । क्योंबनिआयो इमसनपापा ॥
इमसों कछुन पुरायबनिआई । ज्ञानी नहिं ऐसे पछिताई ॥
यही देह सों जो उर धरहूं । कामागम परिशील नकरहूं ॥
नहिंकछुदोष तदपिसुनज्ञानी । संप्रदाय रक्षण उर आनी ॥
और देह में जान बिचारा । जेहिनहोय शुभपंथबिगारा ॥
यहिविधिकहिभवभंजनिगाथा । जिनकरयशगावहिंमुनिनाथा ॥
पदचारी नर पहुंचि न पावा । अतिऊँचेगिरि शृंगसुहावा ॥
तहां जाय बोले श्री शंकर । शैलगुहा देखो अति सुन्दर ॥
समतलविपुलशिला चहुँपासा । स्वच्छसरोवरवारिप्रकाशा ॥

तट पर विटप मनोहर राजैं । फल सों शाखा नम्र बिराजैं ॥

दो० काम कला के योग में जौलौं और शरीर ।
धरिसो अनुभव करहुंगो तौलौंतुमसतिधीर ॥

ममसबशिष्य बसौ यहि तीरा । पालहु सजगहमार शरीरा ॥
ऐसो शिष्यन कहँ उपदेशा । गुहामाहिंप्रभुकीन्हप्रवेशा ॥
निजतन तहांत्यागि मुनिराया । लिंगशरीरसहितनृपकाया ॥
कीन्ह प्रवेश योग बल धारी । कौतुकधाम शम्भुत्रिपुरारी ॥

छं० सबभांतिनिश्चलकायसनबुधिकियोनिजस्वस्थिरहियो ।
निज पादतलसों खैंचि क्रम क्रम प्राण ऊपर लैगयो ॥
दश द्वार मारग जाय बाहर देह को त्यागत भयो ।
नृपब्रह्मरन्ध्र प्रवेश करि तन चरण लौं पूरण कियो ॥

सो० कीन्हो नृप के अंग बदन प्रभा पहिले उदै ।
मारुत चलन प्रसंग नासापुट में पुनि भयो ॥

अंघ्रिचलनतेहिपीछेभयऊ । नयन यथावतपुनि छबिलयऊ ॥
फरकन लाग्यो हृदय प्रवेशा । सकलदेह बलकीन्हप्रवेशा ॥
उठि बैठो जनु सोवत जागा । जियोदेखिसबकरदुखभागा ॥
रानिन जबहिं नाथमुख देखा । उर उपजो आनन्द बिशेषा ॥
हर्ष शब्द मुख पंकज माहीं । शोभाकहिनजातमोहिंपाहीं ॥
जिमि अरुणोदय अवसरपाई । पुष्करिणीकीछबिसरसाई ॥
अतिविकशितबरकमलसुहाये । सारस शब्द सहितमनभाये ॥
यहिबिधिपुष्करिणीछबिजैसी । नृपतरुणी सुखसापुनितैसी ॥
रानिनको अस हर्ष बिलोकी । नृपतिबहुरिजीवनअवलोकी ॥
मंत्रिन के मन मोद न थोरा । बाजनकीध्वनि भैचहुंओरा ॥

दो० शंख पनाव अरु दुन्दुभी बाजे पटह निशान ।
तेहिध्वनिबहिरेकरिदियेदिशिभुविकेसबकान ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्री७ स्वामिरामकृष्णभारतीशिष्यमाध वानन्दभारतीविरचितेश्रीशंकरदिग्विजयेसाङ्गोपायवर्णनंनामनवमःसर्गः ९

श्लोक ॥ नीलमेघवरश्यामंतडित्पिंगजटाधरं । वन्देकमलपत्राक्षं श्रीव्यासंजगतांगुरुम् ॥ १ ॥

अथ दशमः ॥

दो० सावधान ह्वै नृपति वर मंत्रिन आयसु दीन्ह ।
बोलिपुरोहितविप्रगणशान्तिकर्मसबकीन्ह ॥

मृतजीवनमहँ जो व्यवहारा । भयोयथाविधिमंगलचारा ॥
भद्र* गयन्द चढ्यो हर्षाई । साथसचिव सबनारिसुहाई ॥
जब पहुँचो निजनगर सुहावन । होनलगेतहँ रुचिरबधावन ॥
पुरजन प्रियजनसबपरितोषे । कहिप्रियवचनभलीविधिपोषे ॥
भयो चक्रवर्ती भूपाला । आज्ञा मानहिं सबनरपाला ॥
उत्तम सचिवसहित सो राजा । महिपालतनिजराजविराजा ॥
सहस नयन अमरावति जैसे । निज पुरपालहिं नृपवरतैसे ॥
यहिविधिमहिपतिह्वैयतिराजा।धर्मसहितपालहिंनिजराजा॥
नृपतिप्रभाव अलौकिक देखी । मंत्रिन उर सन्देह विशेषी ॥
कहहिं परस्पर बैठि समाजा । देहत्याग कीन्हीं निजराजा ॥
पुनि जो उठे प्रजा के भागा । ग्रहणकियोपुनिजोतनुत्यागा॥
है परन्तु यह सो नृप नाहीं । येगुण कबहिंरहे तिनमाहीं ॥
नृपति ययाति सरिस ये दानी । सुरगुरु सम बोलत हैं बानी॥
विजयी अर्जुन सम रणमाहीं । जानत सर्व भर्वकी † नाहीं ॥

सो० धीरज पौरुष शूरता दानादिक बहु भांति ।
क्षमाप्रतिबाढहिंनितनयीनरपतिगुणगणपांति ॥

सकलअलौकिकगुणइनमाहीं । जो औरन महँ देखे नाहीं ॥
सबगुण मंदिर परम सुज्ञाना । जिमिअनादिश्रीपतिभगवाना॥
बिना फूल फल होहिं सुहाये । गोमहिषिनमहँ पयसनभाये॥
अभिमत वर्ष मही हर्षानी । सस्यादिकगुणयुत सरसानी ॥
निजनिज धर्म प्रजारति मानी । सुखीसकलदुखगंध न जानी॥

*उत्तम गज †शिव

सर्व दोष आकर कलिकाला । तद्यपियहप्रभाव महिपाला ॥
त्रेता सों सब भांति सुहावा । धर्म कर्म महि मंडल छावा ॥
तेहि कारण हेसचिव समाजा । नृप शरीर कोउ योगी राजा ॥
अणिमादिककरतलसतिधीरा । आयो है यहि राज शरीरा ॥
दो० जेहि विधि अपनी देह महँ लौटिनयहु पुनिजाय ।
करनो चहिये हम सबन ऐसो रुचिर उपाय ॥
कीन्ह परस्पर बहुरि विचारा । सबहिन यह उपाय निर्द्धारा ॥
बहु सेवक सब दिशन पठाये । ते सब यहि प्रकार समुझाये ॥
बिगत प्राण पावहु जो देहा । दाह करो तुम बिन संदेहा ॥
गुप्त मन्त्र यह ऐसो ठानो । मन्त्रिन तजि काहूनहिंजानो ॥
राज भार सचिवन शिरराखी । भये नरेश विषय अभिलाषी ॥
मृगनयनिनसह भोगहिं भोगा । जिनहिंसिहाहिँऔरनृपलोगा ॥
धवल धाम निर्मल अति सुंदर । फटिकरचितसबभांतिमनोहर ॥
विधुकर शीतल सुभगसुहावा । उपवर्हराजहँरुचिरबिछावा ॥
तहँ बैठे रानिन सँग राजा । होय बहुतबिधि द्यूतसमाजा ॥
पांसा केलि मुदित मन धरहीं । तथा परस्पर जयपराकरहीं ॥
अधर दशन अरु भुज उद्वाहन । रतिविपरीतक्रमलगहिताड़न ॥
छं० मधुमद्यहिसकर किरणशीतल परमस्वादुसुहावनी ।
अधरज सुधा सम्बन्ध बदन सुगंधयुत मन भावनी ॥
अतिप्रीतिप्रियकरसोंसमर्पितजानिपुनिपुनिपावहीं ।
सोइ हेमभाजन गतमनोहर प्राणप्रियन पिआवहीं ॥
दो० प्रिया बदन उड़ राज सम जो सुंदर सब भांति ।
प्रकट भयी जहँ रस बिवस स्वेद कणनकीपांति ॥
स्मरवेगहिप्रकटत नहिंआखर । यहिप्रकारजहँभाषण सुंदर ॥
पंकज सौरभ जासु सुहाई । पुलकित शीतकारसुखदाई ॥
कछुकछुमुकुलितनयनसुहावन । प्रतिक्षणमन्मथवेगबढ़ावन ॥
ऐसो प्रिय मुख स्वादु रसाला । पान पाय नरपाल निहाला ॥

कुच पीड़त अधरामृत स्वादा । बर्द्धमान रति कूजित नादा ॥
कांचो भूषण मुखर सुहाये । विवृतजघनअतिप्रियमनभाये॥
अंग स्थापन रीति सुहाई । अति उत्साह मनोहरताई ॥
मनहुँ अंग नर्तन जहँ*होई । प्रकटभयो ऐसो सुख कोई ॥
गिरागम्य नहिं वरणिसिराई । उपजो सो अनन्द सरसाई ॥
मधुर चेष्टा कर भा ज्ञाना । मनसिजकलातत्त्वसबजाना ॥

दो० सब बिषयन व्यापारमहँ इन्द्री सकल प्रवीन ।
उत्तम प्रमदा भली विधि नृप वर सेवन कीन ॥
कुच गुरु केरि उपासना करि प्रसन्न नरपाल ।
रतिसुखमें परब्रह्मसुख लह्यो जो परम रसाल ॥

भोगिनि साथ नृपति इमि नै । यहिविधिभोगहिंभोगसयाने ॥
कामागम जे लोग प्रवीणा । तिनकेसाथविचारिधुरीणा ॥
वात्स्यायन के सूत्र उदारा । सहितभाष्यनृपकीन्हविचार॥
नूतन एक † प्रबन्ध बनायो । रसप्रधान सबभांतिसुहायो ॥
यहिविधिशिवनरपतितनधारातरुणिनसंगनितकरहिंबिहारा
सेवक पालहिं नाथ शरीरा । बीतीअवधि न गेमतिधीरा ॥
कहहिं परस्पर वचन अधीरा । कृपाकीन्हिनहिंगुरुगम्भीर॥

दो० एकमास की अवधि प्रभु करिगे जाती बार ।
पंच षष्ठ दिन अधिक भे करि अबहूं न सँभार ॥

निजतनआपुगमननहिंकीन्हा । दर्शनसुखहमकोनहिंदीन्हा॥
कहाकरहिंकेहिदिशिपुनिजाहीं।खोजहिंजायकौनपुरमाहीं ॥
खबरिभलाहमकेहिविधिपैहैं । जाने बिना कहाँ हम जैहैं ॥
और शरीर गुप्त सुनि राई ।हमहिंदेहिंकेहिभांतिदिखाई॥
श्रीगुरुकरुणानिधिजोत्यागा । उदय भयोहै परम अभागा ॥
सबकछुत्यागिघरणहमलीन्हीविपतिविनाशिनिपदरजचीन्ही
हमकहँ औरकोइ गति नाहीं । देह विना जैसे परिछाहीं ॥
श्रीगुरुचरणविरजहमध्यावहिं।क्षणक्षणनितनवआनंदपावहिं

*रति † अमरूशतक

लागि रहीगुरु चरणन आशा । तेहिसों हमरो सबदुख नाशा ॥
मनहुं मनोरथ तरु फल फूला । अथवा योगसिद्धि अनुकूला ॥
वैदिक शोभा केर विकाशा । तत्त्व ज्ञान धरि देह प्रकाशा ॥
निजस्वरूपधनधनिकसमाना । शांति विलासिनिसो हर्षाना ॥
जिनहिंछांड़िकोउटूसरनाहीं ।करिहशोकवकरुणाहसपाहीं ॥

दो० अविनय मंदन की हरैं सज्जन को परिताप ।
सो प्रभु हमरी गति अहै मेटहिंगे संताप ॥

महा मोह तम जिन सो नाशा । तत्त्व ज्ञानकर करहिँप्रकाशा ॥
जिनहिंपाययतिवरगतिमाया । भेविधूत सब दोषनिकाया ॥
गुरुअमृत प्रद जब हम पावें । शोकसिंधुविनयतनसुखावें ॥
निशितमसरिस बात सतदंभा । कियोतरिणा समनाथअरंभा ॥
गलित द्वैत अद्वैत प्रकाशा । सम अज्ञान रूप तम नाशा ॥
पुण्या पुण्य दृष्टि भ्रम खोई । शंकर रवि क्यों प्रकटन होई ॥
जीवत दीन्हो जिन निर्वाना । जासु वचन भवपाप नशाना ॥
जो तुम दरश हमैंनहिं दीन्हा । सोदुख नाथ हमारनकीन्हा ॥
निजवियोग अब घात हमारा । गुरुवरकेहिअपराधबिचारा ॥
खेद सहित निज मित्रन देखी । जानहिंनाथप्रभावविशेखी ॥
पद्मपाद तब बचन सुनावा । मित्रनको सबशोचनशावा ॥
जनि यहिभांति वृथा कदराहू । निजमन सबआनहु उत्साहू ॥
दिविभुवि अरु पतालमहँजाई । ढूंढहिँगे करिविविध उपाई ॥
विश्व गुप्त हरको जेहि रीती । खोजहिँतासु भक्तअतिप्रीती ॥
ऐसी कौनि वस्तु जग माहीं । खोजकियेजेहिपावहिँनाहीं ॥
है परन्तु यह नेम उजागर । कीजै तत्पर यत्न निरन्तर ॥

सो० विघ्नभये बहु भांति तजो न मथिबो सिंधुको ।
सावधान सुर पांति अति दुर्लभ पाई सुधा ॥

आन देह गुरु प्रविशे जाई । यद्यपि है ढूंढब कठिनाई ॥
तदपितासुगुणसहज प्रकाशा । उनको नाहिं दुरनकीआशा ॥

राहु ग्रसित विधुतेज विराजा । छिपैं नकबहुं तथा यतिराजा ॥
सुमनचाप आगम जानन हित । यतीनाथयहिहिनदीन्हों चित्त॥
सुमुखि सुलोचनि बाम नवीना । कामागम के उचित प्रवीना ॥
नृप बनिता सम औरन कोई । अवधि शरीर लेहिंगे सोई ॥
और चिह्न वरणों तुम पाहीं । ह्वै हैं शंकर जेहि महिमाहीं ॥
ह्वै हैं परम सुखी सब लोगा । सबको सुलभ सदा सबभोगा ॥
रोग शोक पीडा कछु नाहीं । सांची वृष्टि सदा महि माहीं ॥
शस्य सकल संपन्न सुराजा । जहां होहिंगे श्रीगुरुराजा ॥
ढूंढोकरि उपाय अतिशय तर । संसृति जलधि सेतुश्रीशंकर ॥
आलस त्यागितुरत चलिजावैं । इहां वृथा दिन नाहिं गँवावैं ॥
जलरुह पाद वचन सुनि सर्वे । ग्रहण कियोनिजमन गत गर्वे ॥
दो० गुरु तनु रक्षा हेतु पुनि राखि कछुक मति धीर ।
शंकर कहँ ढूंढन चले सब मिलते यति वीर ॥
पर्वत सों पर्वत पर जाहीं । एक देश ते दुसरे माहीं ॥
दिवि निंदक अमरक वरदेशा । पुनिकीन्हों तहँआय प्रवेशा ॥
मरिकै बहुरि जियो नर नाथा । पृथु दिलीप समप्रजा सनाथा ॥
यहसुनितिनसबविरहगवाँवा । गुरुमिलिहैं यहनिश्चयआवा ॥
जाना गान विनोद नृपालं । तरुणी सकं धरणी पालं ॥
प्रविशे स्वीकृत गायकवेशा । तेजानहिं गुणसकल विशेषा ॥
राजहि सब निजगुण दर्शावा । जासु हेतु यह स्वांगु बनावा ॥
रमणी मंडल गत अस सोई । देखो तारा वृत मिव चन्द्र ॥
नृप पीछे सोहैं तरुणी गणा । चँवरकरहिँबाजहिंकरकंकणा ॥
आगे गीत निपुण जन गाना । श्रवण सुखद सब तालवँधाना ॥
हेम दंड बर छत्र मनोहर । रत्न किरीट अनूपम शिरपर ॥
रतिपतिधरिसूरतिजनुराजहिं । भवनसहितजनुइन्द्रबिराजहिं ॥
छं० अतिरुचिर वेषबनावजिनको नृपसभामहँ जबगये ।
सन्मान नर पति नग्न संज्ञा पाय सब बैठत भये ॥

गुनिजानि नृपरुख मूर्छनास्वर सहितते गावनलगे ।
सब सभा सद से चित्रसे तेहि राग के रँग में पगे ॥
दो० भ्रमर तुम्हारो तनु रुचिर उच्च बिटप अनुरूप ।
गिरिवर शृङ्ग सुहावने लसत उदार अनूप ॥
और भृंग जे राउर संगा । तब संगति हित भा सँग भंगा ॥
पंच बाण संकेत अनूपा । संचय लगिबिसराय स्वरूपा ॥
इहविच रचि नस्मरसिस्वरूपं । वंचि तोसि संस्मर निज रूपं ॥
पंचानन निज रूप बिसारा । भयो पंच मिल पंचा कारा ॥
शरद शर्वरी नाथ समाना । बदनगिरागुणज्ञाननिधाना ॥
त्यागो प्रथमहिं दुख प्रदसंगा । सोतुम पावन सदा असंगा ॥
निजस्वरूप क्यों नाहिँ सँभारो । सेवक गिरा न क्योंउर धारो ॥
स्मरारि संस्मर निज रूपा । यथादिखावहिँ विमलस्वरूपा ॥
नेति नेति जय निपुणश्रुजाना । कारजकारण धरहिंनध्याना ॥
जोनिषेध की अवधि अनंता । आत्मरूप जानहिं जेहि संता ॥
मन बुध्यादिक विषयन जोई । हो तुम परम तत्त्व प्रभु सोई ॥
दो० व्योमादिकरचि विश्वपुनि कियोप्रवेश तेहिमाहिं ।
अन्न मयादिक कोशतुष जाल सरिस दर्शाहिं ॥
शालीगत तुष जिमि करिदूरी । तंदुल लहहिं तथा जगसूरी ॥
युक्ति सहित वर बुद्धि विचारी । गहहिसारकरिसबतुषन्यारी ॥
हो तुम सोई तत्त्व अनूपा । लखहु नाथनिजपरमस्वरूपा ॥
इंद्री विषम तुरग जनु भारी । निशिदिन विषयदेशसंचारी ॥
दोष दृष्टि चाबुक बश कीन्हे । मन लगाम गहिज्ञाननदीन्हे ॥
बांधहिँमुनिजहँ बाजिकराला । सोतुम परम तत्त्व महिपाला ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति समाधी । मूर्छादिक येकही उपाधी ॥
सबसों मिलो सबन सों न्यारा । माला तंतु सरिस निर्द्धारा ॥
तेहिकरबुधजनकरहिंबिचारा । सोतुम परमतत्त्व जगसारा ॥
तीनिकालजो भा जग माहीं । सोसब पुरुषभिन्न कछुनाहीं ॥

यहि प्रकार जग कारजरूपा । गावहिं जेहिको वेद अनूपा ॥
जेहिबिधिमुकुटकटककजगमाहीं । कनकभिन्न कबहूं ते नाहीं ॥
श्रुति यहमहिमाजासु बखानी । सोतुम परम तत्त्व नृपज्ञानी ॥

दो० जो मैं हौं नर देहमें सो रवि में दर्शाय ।
जो रविमंडल मध्य है सो मैं हौं सुखदाय ॥
यहि प्रकार श्रुति हारसों करहिं जासुउपदेश ।
जाननि हारे वेद के सो तुम तत्त्व नरेश ॥

वेद पाठ मख दान स्वकर्मा । श्रद्धा सहित उपासन धर्मा ॥
जासु ज्ञान हित विप्र सुजाना।अतिनिर्मलउरलावहिंध्याना॥
परब्रह्म जेहि वेद बखाना । सोतुम परम तत्त्वनहिंआना ॥
शमदमउपरमसाधनजाला* । धीरपुरुषकरिअधिककसाला॥
आतम रूप बुद्धि महँदेखहिं । सतचितआनँदआपुहिलेखहिं॥
जासुविचारनपुनि दुखलेशा । सोतुम पावन तत्त्व नरेशा ॥
निजस्वरूप महिमा तिनगाई । सुनिहर्षित नृपदीन्हि विदाई॥
तिनहिंविसर्जनकरिनृपनाहा । निजशरीरप्रतिकीन्हउछाहा ॥
सभा माहिं मूर्च्छा सी आई । गये शंभु नृप देह विहाई ॥
त्यागप्रवेश जौनिविधि गावा । तौनहिं क्रमसबभयोसुहावा ॥
नृप मंत्रिन जे लोग पठाये । उनमें कछुक गुहा पहँआये ॥
बिना प्राण वपु देखि जरायो । ताही समय शंभु तहँ आयो ॥
निजतन जरत देखि त्रिपुरारी । प्रविशे तुरत योगधुरधारी ॥
अग्नि शांतिहिततर हरिकेरी । अस्तुति कीन्ही शंभुघनेरी ॥

छं० श्रीक्षीर सिंधु निकेत योगीनाथ मूरति पावनी ।
श्रीनागराज सहस्र शिरमणि छत्रज्योतिसुहावनी ॥
हेचक्रपाणि अनंत भवनिधि पोतकरुणा कीजिये ।
लक्ष्मी नृसिंह सरोजकर अवलंब हमको दीजिये ॥

दो० ऐसो द्वादश पद्यसों निर्मल विनय सुनाय ।
ललित पदन नरसिंहको दीन्होमोद बढ़ाय ॥

---

* समूह

श्री नृसिंहकी कृपासों पावक बुझी निहारि ।
सावधान गिरि गुहाते बाहरगे त्रिपुरारि ॥
राहुवदनसोंजिमिनिशानायक।निकसैतिमिप्रकटेसुखदायक॥
बिरह निमित्त प्रेम अति बाढ़े । गुरुवर देखि भयेसबठाढ़े ॥
यथा सनंदन प्रमुख* सयाने । सनकहि घेरि लेहिँ हर्षाने ॥
तथा शिष्य चहुँदिशि हर्षाई । घेरि लियो चरणन लपटाई॥
पुनि आकाश पंथ शुभलीन्हा । मंडन गेह गमन प्रभुकीन्हा॥
दूरि भयो जिनको अभिमाना । तथा भोग तृष्णा बलवाना ॥
असमंडन प्रभु आवत देखा । उपजो हर्ष सनेह विशेखा ॥
बाढ़ो मन अतिशय अनुरागा । देखहिंएकटकपलकनलागा॥
करिपूजन अरु विनय प्रणामा । प्रेम सहित बोलागुणधामा ॥
गृह शरीर सब तव धुर साँई । असकहिपराचरण लपटाई ॥
प्रीति सहित प्रभु ताहि उठाई । सभा माहिँ बैठे पुनि जाई ॥
दो० पति पूजित बैठेसभा देख्यो भारति आय ।
परमविशारद शारदा यह बोली शिरनाय ॥
सब विद्या के तुम ईशाना । सब जीवन के ईश प्रधाना ॥
ब्रह्मगोधि पति वेद बखाना । सोतुम श्री शंकर भगवाना ॥
सभामाहिंममविजयनकीन्हा । कामकलाअनुभवचितदीन्हा॥
सोयह नर तन चरित बिडंबन । करुणाकरभवदोषबिभंजन ॥
दंपति कहँ जीत्यो वृषकेतू । हमको भयो न लज्जा हेतू ॥
दिन करते अभि भवजो पावै । नहिंहिमकरकोअयशकहावै॥
अबजैहौं तिन भवन गुसाँई । आज्ञा दीजे मोहिँ हर्षाई ॥
अस कहि अंतर्भूत भवानी । योगशक्ति तेहिदेखो ज्ञानी ॥
शंकर कह्यो देवि मैं जानौं । देव देव गृहिणी पहिचानौं ॥
आदि देवि भारति जग जानी । रुद्र सहोदरि मातु भवानी ॥
हौ चैतन्य रूप सुख राशी । जग रक्षाहित देवि प्रकाशी॥
ग्रहणाकीन्हलक्ष्म्यादिकरूपा । विनयसुनहुश्री शक्तिअनूपा ॥

* आदि

रचैं जहां जहँ धाम तुम्हारा । बसौंयही अभिलाष हमारा ॥
दो० ऋष्य शृंग शैलादि महँ पूजबहु सब मनकाम ।
शारद ऐसो नाम तव होहि तहां सुख धाम ॥
चतुरानन मन्दिर अभिलाषी । शारद गई तथा*इतिभाषी ॥
उभय भारती अंतर्द्धाना । देखिसभासद बिस्मय माना ॥
निज पतियतिशेखरबशजानी । तासु न्याउ भावी उरआनी ॥
निजवैधव्य विचारि सयानी । शुन्न भई भावी दुख जानी ॥
विश्व रूप यहु आशय जाना । शंकरसहित परमसुखमाना ॥
पुनि मंडन करि विरजायागा । धनकोसबकरि दीनविभागा ॥
हृदय राखि पावकद्विजज्ञानी । शंकर शरणागही मनबानी ॥
यहिप्रकारविधिवतसंन्यासा । शिवकरवायोसहितहुलासा ॥
पुनि प्रभु तत्त्वमसीश्रुतिबानी । कहीश्रवणमहँ आनँदमानी ॥
जो उपदेश असंसृति हेतू । कियोद्विजहिश्रुतिधरवृषकेतू ॥
सुनि मंडन उपदेश सुहायो । न्यासपायभिक्षा करिआयो ॥
सावधान लखि श्री गुरुराया । अर्थसहित सोऽहमंत्र सुनाया ॥
दो० सुनु मंडन तू देह नहिं घट समान जड़ रूप ।
रूपादिक जात्यादिगुण सहित सदादुख कूप ॥
मेरी देह कहै सब कोई । यहि ते जीव देह नहिं होई ॥
मैंहों देह ज्ञान यहु जोई । सो अध्यास जनित भ्रमहोई ॥
घटसों दंड भिन्न है जैसे । दृश्य वर्णते द्रष्टा तैसे ॥
यहिविधिनिश्चयकरुमनमाहीं । यहतन कैसेहु आतमनाहीं ॥
इंद्री पुनि आतम नहिं कोई । भोग वर्ग साधन हैं सोई ॥
गो गण विषय करण हैं कैसे । छेदन साधन परसा जैसे ॥
मेरे नयन हमारे काना । तिनको भिन्न होतहै ज्ञाना ॥
स्वप्नादिक महँ लय ह्वै जाहीं । तेहिते पुरुष † रूपगोनाहीं ॥
गो समुदाय आत्मा मानहुं । भिन्न भिन्नको पुरुषबखानहुं ॥
प्रथम पक्ष को करहु नआशा । एकनाश महँ सबकरनाशा ॥

* तथास्तु † आत्मा

दो० प्रतिद्वंद्वी जो मानिहै आतम भाव उदार।
बहु नायक भे देहके भयो नाश निर्द्धार ॥

नयनादिक जो आतम होई। तासु नाशपुनिसरै किमिकोई॥
जो हम सुना सोई पुनि देखा। ऐसो बनै न कबहूं लेखा॥
तेहिते करु निश्चय उरमाहीं। इंद्री आतम कबहूं नाहीं॥
आतम मनहूं कोनहिं जानो। प्रकटयुक्ति अपने उरआनो॥
कबहूं बचन कहै कछु कोई। श्रोता कर यहु उत्तर होई॥
गयो मोर मन और ठिकाने। राउर वचनन में उर आने॥
लयह्वै जाय सुषुप्ति महँ सोई। तेहि कारण मनपुरुषनहोई॥
ऐसोइ न्याय बुद्धि कोजानहु। ताहूको नहिं पुरुष बखानहु॥
अहंकृती आतम नहिं होई। डुकृञ्करणे* को पद सोई॥
अहमिति करीजायजेहिद्वारा। तेहिसो ताहि कहैंअहँकारा॥
करण सदा कर्ता नहिं होई।वसुःताहितक्षा†नहिंनकोई॥
यद्यपि है सुषुप्ति महँ प्राना। तद्यपि सोनहिंपुरुषबखाना॥
सबकोउ कहहिं हमारे प्राना। जीव ते भिन्नप्रान कोजाना॥
सकल बिलक्षण त्वंपदजानहु। जग निदानतत्पद उरआनहु॥
दोनहुं को एकता बतावैं। असपद दुहुंको भेद मिटावैं॥

दो० शिष्य कह्यो शुनु नाथमोहिँ संशयभयो अपार।
श्रुति दोनों की एकता बरणों कौन प्रकार ॥

अहै ब्रह्म सर्वज्ञ सुजाना। जीव मूढहै सबजग जाना॥
एक रूप तम और प्रकाशा। भये न ह्वै है की है आशा॥
सांच कहो तुम यद्यपिबिरोधा। भानहोयनहिँश्रुतिअनुरोधा॥
यहि उपाधिगत भासबिरोधा। जबलौं युगपदतुमनहिँशोधा॥
जो उपाधि तेहिकल्पितजानो। चेतन चेतन एकहि मानो॥
देवदत्त पुष्कर को राजा। काशी आयभयोयतिराजा॥
देश काल अरु सबव्यवहारा। त्यागिदेहगतकरहिँविचारा॥
सोई यह नृप हम पहिंचाना। तासुमित्रइमिकरहिँबखाना॥

* धातु † बढ़ई

लक्ष्यअर्थ को जब तुमशोधा। रहिहैपुनिकछु नाहिँविरोधा॥
देहादिकअहमितिकरिजाना। सोअहत्यागहु चिरअभिमाना॥
कर्म प्रठन सों यह अभिमाना। यद्यपि दुस्त्यज परमबखाना॥
दो० अब विवेकमय बुद्धिसों परमा तमकोध्यान।
भेद त्यागि कीजे सदा जोहै मुक्ति निशान॥
जहँ*ममताकोअवसरनाहीं।कबहिंउचितअहमितितेहिमाहीं॥
पुत्रादिकअपनोकरिमानहिँ। काकशृगालअग्निनिजजानहिँ॥
सबदुख को यह तनभंडारा। त्यागहु तहँ ममता विस्तारा॥
विषय प्रीति सबदूरि बहाई। निश्चयकरि जानहुदुखदाई॥
मन करि शंकादूरि बहावो सोपुनि ईश्वर माहिं लगावो॥
जैसे महा मत्स्य दुहुँकूला। सरिमहँ नित विचरहि गतशूला॥
उभय कूल सों भिन्न दिखाहीं। दुहुँ तीरनसों लेपन ताहीं॥
दो० जाग्रदादि महँपुरुषइमि विचरैसदा असंग।
भिन्न सकल के धर्म सों लहै नकबहूं संग॥
सो० जोपै जीव महँ नाहिँ नाथ अवस्था तीनहूं।
तौपुनिकहांदिखाहिं मोसनकहियेकरिकृपा॥
जाग्रदादि ये तीन अवस्था। ऐसी इनकी जानु व्यवस्था॥
जाग्रत मेंनहिं स्वप्न दिखाई। स्वप्न जाग्रत को भ्रम जाई॥
ऐसेहि सुषुप्ति अवस्था माहीं। जाग्रत स्वप्ने केर भ्रमनाहीं॥
लहैं परस्परये व्यभिचारा। मिथ्याकल्पितलखिव्यवहारा॥
चितप्रतिविम्बितबुद्धि पसारा। तहँ दर्शै सब भ्रम परिवारा॥
यथाएक रजु महँ भ्रम पाई। निशि बश बहुस्वरूपदर्शाई॥
सर्प दंड भूछिद्र विशाला। कोउकहैमूत्रधारकोउमाला॥
शिव तुरीय जेहिवेदबखानहिं। जाहि भेदबादीनहिँजानहिं॥
सबभयरहितअगुणअविनाशी। सो तुमब्रह्मपरमसुखराशी॥
हित उपदेश तात सुनिलीजै। पहिले कैसो भ्रम नहिंकीजै॥
अस आतम सबकोंनहिँजाना। यहसंशय जनिकरहुसुजाना॥

*देह में † अवस्था।

मूढ़न को सोहै अति दूरी । यदपिरहा सबमें भरिपूरी ॥
बाहिर ढूंढेमिलिहि न सोई । असि अद्भुत महिमाश्रुतिगोई ॥
सो० ज्ञाननिदान विराग सो नहिँ होय विचार बिन ।
तेहि बिन मोहन भाग यद्यपि करै उपायबहु ॥
दो० यथा प्रपापर पथिक बहु काल पाय जुर जाहिँ ।
पुनि निज निज मारग गहैं सदा बसैं तहँ नाहिँ ॥
तथा कुटुंबी बहु मिलि जाहीं । काल पायपुनितेबिलगाहीं ॥
सुखकेहेतु करहिँ बहु काजा । सुखन होय बहुदुःख समाजा ॥
बिना सुकृत सुख लहैन कोई । पूर्व पुराय बिन बनहिनसोई ॥
जेहिकी मति परिपक्वसयानी । एक बार सुनिसो श्रुतिबानी ॥
आतम बुद्धि लहै सुठि नीकी । जिनकी बुद्धिबोधरसफीकी ॥
तेबहुकाल करहिँ सतसंगा । श्रीगुरुपद महँप्रीति अभंगा ॥
प्रणव उपासन संयम ध्याना । इंद्रीदमन त्रितय* अस्नाना ॥
मन क्रम गुरुपद की सेवकाई । हरै सदा मन की कुटिलाई ॥
काल पाय उपजै उर ज्ञाना । क्रमसों पुनि सोहोयसुजाना ॥
तेहिते करै सदा गुरु सेवा । गुरु समान नहिँ दूसर देवा ॥
गुरु महँशिवमहँनहिँकछुभेदा । जोगुरुसोइशिवबरणतवेदा ॥
निशि दिन जब सेवै मनलाई । तब गुरु देखत हैं हरषाई ॥
गुरु आज्ञा पालै मन लाई । कल्पबेलि सम सो सुखदाई ॥
देव कोप गुरु पालक होई । गुरुके कोप राखु नहिँकोई ॥
यहि विधि सेवा में मनलावै । जेहि प्रकार गुरुकोपनआवै ॥
चारिहु फल पावै बड़ भागी । विहितकरैप्रतिषेधहित्यागी ॥
विधि निषेधजानहिगुरुपाहीं । जासु प्रभाव रहै सुखमाहीं ॥
दो० इष्ट लाभ दुख हानि पुनि सब संशय भ्रम जाय ।
श्रीगुरु पद की भक्ति असि को जग जेहिनसुहाय ॥
देवा राधन किये सो इष्ट लाभ जग होय ।
गुरुकृपाबिन भलीविधि जानिपरैनहिँसोय ॥

---

* तीनबेर

गुरु के तुष्ट भये सब देवा । तुष्ट होहिं मानैं निज सेवा ॥
गुरु के क्रोध भये रूठें सुर । यह निश्चयआनहुअपनेउर॥
आपुहि ब्रह्म रूप गुरुदेवा । तेहि कारणसबदेवविशेषा ॥
गुरु में बसें भिन्न तेहिं नाहीं । श्री गुरुविश्वरूप जगमाहीं ॥
यहविधि सुनि उपदेशउदारा । गुरु पद बंदों बारहिं बारा ॥
अबमैं धन्य भयों जगमाहीं । मोहिंसमान कोउदूसरनाहीं ॥
नाथ कृपाचितवनि उजियारा । मम अज्ञान महा तमहारा ॥
तब सुरेश संज्ञाप्रभु दीन्ही । जेहिंसबदिशिमहँकीरतिकीन्ही॥

दो० सब शिष्यन महँ मुख्य तब भये सुरेश सुजान ।
विधि पदवीकोतुच्छसुख गिनोन तासुसमान ॥

छं० निखिलश्रुतिमस्तकविचारत अहर्निशसुखपावहीं ।
निःशंकब्रह्मअखंडपदलहि विधिभवनबिसरावहीं ॥
अति वर्द्धमान विराग पूरण हृदय निर्भय पदगहे ।
यहि भांति बहु तिथि श्रीसुरेश्वर नर्मदातटमहँरहे ॥

सो० प्रणत योग प्रब राज यहि विधि मंडनवशकियो ।
गुण मंडलन बिराज खंडी दुर्मत मंडली ॥

पुनिदक्षिणदिशिकीन्हपयाना । जहँ कुसुमितसोहैंतरुनाना ॥
कोमलकिशलयरुचिरसुहाये । भ्रमतभ्रमरमण्डलछबिछाये॥
करहिं मधुरस्वरमधुकरगाना । देखत चले जाहिं भगवाना ॥
महाराष्ट्र पावन जे देशा । कियो तहाँयतिराजप्रवेशा ॥
तहँतहँ ग्रंथप्रकटनिज कीन्हे । अधिकारिनकहँसिखवनदीन्हे॥
ज्ञान गुणादसनकादि समाना । तर्दापनकछुविद्याअभिमाना ॥
पहुंचे पुनि श्रीशैल कृपाला । फूलीं जहँ मल्लिकाविशाला ॥
त्रिविधिपवनकंपिततरुनाना । अतिसुगंधनहिंजाय बखाना ॥
तहँबहुसिंहकरहिंध्वनिभारी । बिचरहिं मत्त गयंद प्रहारी ॥
भुजगाविभूषणभवनसुहावा । निजकौशलविधिमनहुंदिखावा॥
गिरि समीप बहुअधिकतरंगा । मानहुं चूंबहिंते गिरि तुंगा ॥

करे सकलकलिमलकरभंगा । मज्जन करि पतालकी गंगा ॥
पुनि शंकर चढ़िगेगिरिहुंगा । करत नमितजनकी भयभंगा ॥
व्योमछुअतमानहुंगिरिशृंगा । कूदत जहां पाप कर संगा ॥
करतमधुरध्वनिद्विजवर*भृङ्गा। आच्छालित शुभगंग तरङ्गा ॥
कियो काम जिन शंभुअनंगा । देख्यो परम सुहावन लिंगा ॥

छं० भव भीति भर्जन प्रणत जनको सम्पदार्जन जेकरैं ।
श्री मल्लिकार्जुन भक्तजनको अमृतसुखसोंनितभरैं ॥
जो सहस्रबाहु प्रसिद्धअर्जुन पूर्जाजिनकोयशलह्यो ।
तिनकोविनयप्रणिपातगुरुकरिभयोमुदपूरणाहियो॥

दो० तरु वरणों कृष्णा नदी तीर कियो गुरु बास ।
तृष्णा नाशक अति सुभग उष्ण जहां न प्रकास ॥

अतिपावनिकीरतिगुणधामा । गुरुवर पूजितपदअभिरामा ॥
अति पवित्र पद अर्थ उदारा । खंडित दुर्मत सकल पसारा ॥
अस शारीरक प्रमुख प्रबंधा । परिपूरण निर्वाण सुगंधा ॥
सद्गुण ग्राहक सुजनसमाजा ।तिनहिँपढ़ावहिँश्रीयतिराजा ॥
वेद बहिर्मत खंडन करहीं । श्रुतिअनुकूलयुक्तिअनुसरहीं॥
वीर शैव पशुपति मत धारी । माहेश्वर पुनि जेआचारी ‡ ॥
आये तहँ विवाद मन दीन्हा ।तिनहिँगुरेशादिकजयकीन्हा॥
तिनमहँकित्तनेहुँनिजमतत्यागी । गुरु वरशिष्यभयेबड़भागी ॥
भये विगत मत्सर मद दोषा । दोषभवन के तेहत रोषा ॥
नीचहृदयइसिकालबितावहिँ । श्रीगुरुवरकी सौतमनावहिँ ॥
शुद्ध गिरा श्रुति सार समाना । आपु वेद कल्पे विधिनाना ॥
श्रुतिबर्णित निजआतमदाहा । श्रुतिपथदाहत परमउछाहा ॥
अस पापी जे खल समुदाया । तिन शंकर सों वैर बढ़ाया ॥

दो० पौंड्रक जेहिविधि द्वेषकरि माधवसाथअयान ।
जौनि दशा पावत भयो यह्व चहतहैं जान ॥

छं० शिव शुक्ति महँ निस्नातजेतिनपरगिराहांसींकरीं ।

* पक्षी ‡ चक्रांकित

कागादवागीगनीनहिँपुनिकपिलकीजहँतहँदुरी ॥
भाग्यशावतस जो पाशुपतमत गर्हपद*अर्हतभयो ।
अरु लही दुर्मति वैशेषिकपालको असजगरह्यो ॥
दो० दयाछांड़ि विदलित किये दुर्मत शंभु सुजान ।
सुगत†कथा जगलीनभै तैसेहि न्याय बिलान ॥
सो० प्रेरनहू बहु पाय सीमांसक बोलैं नहीं ।
कापिलगयोबिलाय अतिविदग्धचापलयदपि ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यश्री७स्वामिरामकृष्णभारतीशिष्यमाधवानंदभारतीविरचित श्रीशंकरदिग्विजयेनृपकायप्रवेशवर्णनपरोदशमःसर्गः १० ॥

---✻---

श्लोक ॥ दयानिधिंज्ञानघनंप्रशांतं दुराशयानामपिकामदंतं । भवापहृत्कीर्त्तिभिरुल्लथंतंनमामिमोहंप्रविनाशयंतं ॥ १ ॥

माया मान रहित श्री शंकर । बसैं तहां जनु उदित दिवाकर ॥
कोइ कापाली प्रभुपहँआयो । साधुन कैसो वेष बनायो ॥
यथा जानकी हरिबे कारन । यतीवेष धरि गयो दशानन ॥
ये कामादिकबश नहिंपरहीं । मुनिवरजासु ध्यान नितकरहीं ॥
ते श्री गुरुवर भाष्य पढ़ाई । सावधान बैठे मुनिराई ॥
देखत ही फूल्यो हर्षाई । महा रंक मानहु निधि पाई ॥
चिर ते रहो मनोरथ जैसो । पायो योगिशिरोमणि तैसो ॥
मुनिवर सत्तमकहँ शिरनाई । प्रभुसोंनिज अभिलाष जनाई ॥
मुनिवरगुणगाथा बहुततुम्हारे । सुनि पाये हम जग उजियारे ॥
दो० दया शील सर्वज्ञता क्षमा और उपकार ।
सुनि उत्कंठामोहिं भईदेखाचरणतुम्हार ॥
निर्गत मोह सकल जग माहीं । तुम समान कोउ दूसर नाहीं ॥
द्वैत समूह पराजय कीन्हे । सज्जन कहँ अति आनँददीन्हे ॥

* निन्दास्पद † जैन ‡ जैन

कियोदूरितनकोअभिमाना । सदा देहु सब को सन्माना ॥
अद्वय मत करि दीन्ह प्रमाना । असतुम सबगुणज्ञाननिधाना॥
पर उपकार हेतु धरि सूरति । उभय लोक में पावनिकीरति॥
कृपा दृष्टि सज्जन दुख हरहू । निजबाणीजग पावन करहू ॥
तुमगुणाखानिसकलजगवंदितनिजअनुभवअहमितिकरिखंडित
जग बिजयी जीते सब बादी । बेद बिदूषक महा प्रमादी ॥
आतम दान करो जग माहीं । तुमसन कोउउदारमहिनाहीं ॥
आपुसरिस जे गुणविख्याता । जग में अहैं परा वर ज्ञाता ॥
तिन समीप याचकजे जाहीं । फिरत निराश कबहुंतेनाहीं ॥
तेहि कारणमैं प्रभुढिगआयो । सकलकाजममभयोसुहायो ॥
करि संतुष्ट मदन आराती । होहुं कृतारथ मैं नेहिभांती ॥
यह कामना रही मन माहीं । पहुंचौं केहिबिधिशंकरपाहीं॥
देह सहितगिरिजापतिदेखौं । तबनिजजन्मसफलकरिलेखौं॥
यहिबिचारिदुःसहतपकोन्हा।सबकछुतजिशिवपदमनदीन्हा॥
यहि प्रकार सो बर्ष गँवाये । करुणानिधि शंकरतबआये॥
ह्वै प्रसन्न यह गिरा सुनाई । तब ह्वैहै तेरे मन भाई ॥

दो० हवन करो सर्वज्ञ शिर कैसहीश को साथ ।
अस कहि अंतर्द्धान भे तबसों मैं यतिनाथ ॥

फिरौं सदा महि मंडलमाहीं । युगलसदृशपायों कोउनाहीं॥
तुम सर्वज्ञ जगत यश गायो । बड़े भाग तव दर्शन पायो ॥
अबपूजहि अभिलाष हमारा । सकल इष्टप्रद दरशतुम्हारा ॥
चक्रवर्तिमस्तकमुनिनायक । कैमुनिबरशिरममसिधिदायक॥
नृप कपाल दुर्लभ मुनिनाथा । है मम सिद्धि तुम्हारे हाथा॥
शिर दीन्हे तव यश संसारा । होय नाथमम सिद्धिअपारा॥
तन क्षणभंगुर सब जग जाना । करिये जो राउर मन माना ॥
शिरयाचनपुनिकरिनहिंजाई । को अस जग जोदेय हर्षाई ॥
तुमबिरक्त नहिंतनअभिमानी । परउपकार धरहु तनज्ञानी ॥

अर्थीपरदुख कबहुं नजाना। निशिदिननिजस्वारथपरध्याना॥
सो० निजरिपुबधहितजाय मुनिदधीचि सोंअस्थिप्रभु।
मांगि लिये सुरराय ऐसो निज कारज कठिन॥
क्षणिकशरीरत्यागिपरकाजा। तुरत दधीचादिक मुनिराजा॥
यशतन स्थिरलहि जग माहीं। पायसहितबड़िकीर्त्तिसुहाहीं॥
अतिनिर्मल व्यापक यशपाई। उत्तम गुण जग में रहेछाई॥
देह धरैं पर कारज लागी। तुम सम दयावान बड़भागी॥
स्वारथरत अरु दयाविहीना। कोमोसम जग माहिंमलीना॥
पर उपकारछांड़ि महिमाहीं। तुम्हरोनिजकारजकछुनाहीं॥
सकलईषणा प्रभु तुमत्यागी। देहादिक सों परम बिरागी॥
ममसमकाम बिबशजगमाहीं। उचितकिअनुचितदेखतनाहीं॥
भे जीमूत बाह जग पावन। अर्थिहि दीन्हों जीव सुहावन॥
मुनिदधीचिकीप्रथमहिगाथा। कहिदीन्ही तुमसोंयतिनाथा॥
इन सुकृतिनऐसो यश पायो। सहसबदन नहिंजायसुनायो॥
जब लों तारा चंद्र प्रकाशा। इनकोयशनहिंहोयविनाशा॥
तनुअदेय यद्यपि मुनिराया। मैं अतिनिंदित दोषनिकाया॥
तद्यपि जे बिरक्त जग माहीं। तिन कहँ कछुअदेयप्रभुनाहीं॥
महि में जे अखंड व्रत धारे। उर्ध्वरेत के जे रखवारे॥
तत्कपालममसिद्धिबिधायक। तुमबिनकोउनऔरमुनिनायक॥
देहु कपाल हरहु मम पीरा। बार बार बिनवों मतिधीरा॥
सो० कीन्हो दंडप्रणाम उठै न चरणन ढिगपरो॥
तबबोलेसुखधाम करुणा परि पूरणहियो॥
मैं तव वचन बुरो नहि माना। प्रीति सहितकरिहों सन्माना॥
अपनो शिर देहौं न सँदेहा। जेहि कारण क्षणभंगुर देहा॥
बहुत नाशयुतजो तन जाना। करहिं कौन अर्थी अपमाना॥
बहुत काल पालिय लौलाई। कालपायनहिं बचहिबचाई॥
जो पै आव काहु के काजा। यहितेअधिक न लाभसमाजा॥

मैं एकांत समाधि लगाये । रहिहौं तहँ आवहु सचुपाये ॥
तब अभिमत तव पूरोहु है । भयेप्रकाश अवशि दुख पैहै ॥
हमरे शिष्य जो पैहुनि पैहैं । तव कारज महँ विघ्न मचैहैं ॥
देह गेह ममता सब त्यागी । ते सब मम सेवा अनुरागी ॥
दो० कौनसहै निज देहको त्याग दुखद सब काल ।
नाथ शरीरवियोग दुख तेहिसों परम कराल॥
यहबिधि भयो उभय संकेता । मुदित कपाली गये निकेता ॥
शंकर निज स्वरूप लीलाई । काहूसों नहिं खबरि जनाई ॥
शिष्य दूरि जब गये सुजाना । कोइशौच कोइ गयेनहाना ॥
जो पै पद्म पाद कहुं जाना । करिहै अर्थीकर अपमाना ॥
यहभययुक्त कृपाल सुजाना । रहे एकाकी कृपानिधाना ॥
तेहिअवसर कापाली आवा । यहि प्रकार को रूपबनावा ॥
कांधे शूल त्रिपुंड विशाला । कंठ धरे मुंडन की माला ॥
अरुणनयन मदयोग भयंकर । सन्मुख दृष्टिगयो जहँ शंकर॥
देखि भैरवाकार शरीरा । कापालिहि शंकरमतिधीरा॥
देह त्यागकर कीन्हविचारा । आपन सहज स्वरूपसँभारा ॥
सावधान बैठे करुणाकर । तिनकोदीखकपालिभयंकर ॥
निजस्वरूपसुखमाहिंबिराजा । किये तुच्छ अमरावतिराजा॥
सनकादिक ये ज्ञाननिधाना । तिनसों अधिक शंभुभगवाना॥
विगतविकल्प समाधिसँभारे । बैठे हैं सिद्दासन मारे ॥
अंस*संधि महँचिबुकसुहाई । खोले मुख शंकर सुखदाई ॥
दो० जानू ऊपर हाथ है अर्द्ध निमीलित नयन ।
नासाशिरपर दृष्टिहै सब अँग शोभाअयन ॥
सूधो सकल शरीर बिराजा । ज्ञानमात्र शेषित यतिराजा ॥
इन्द्री सकल अचलचितमाहीं । बिसरायोभव‡देखहिं नाहीं ॥
यहिविधि गुरुहिदेखिहर्षाई । गयो समीप संदेह बिहाई ॥
मुदि सहित यहपापबिचारा । कियो चहै शठखड्गप्रहारा ॥

* स्कन्ध ‡ संसार

तैसेहि तुरत सनंदन जाना । विष्णुरूप समरथ भगवाना ॥
खड्ग त्रिशूल गहे नियराना । श्री गुरुवर को बधअनुमाना ॥
यतिबर बैठे ध्यान सँभारी । पद्म पादकहँ भै रिसिभारी ॥
गुरुहिनप्रलयानलसमभयऊ । अतिशयक्रोधव्यापिउरगयऊ ॥
सुमिरो श्रीनर सिंह स्वरूपा । परम तेजजग विदित अनूपा ॥
जिनप्रहलादकेरिरुचिराखी । खंभसों प्रकटभयेश्रुतिसाखी ॥

दो० मंत्रसिद्ध नर हरि सुमिरि सोई भयो तत्काल ।
बक्ष्योरोष ऐसो विकट मानहु काल कराल ॥

भूलि गयो तेहिमानुषभावा । क्षुभितभयोपुनिअपनस्वभावा ॥
प्रकटो श्रीनरसिंह सुभावा । तड़प्यो तबहीं अतुल प्रभावा ॥
सटाछटा सनफाटहिँजलधर । खरखरवत्रक्षितसकलअतिशयतर ॥
महा बेग मूर्छित सब लोका । व्याकुल चकितभये सुरलोका ॥
झपटे बेग सहित जबधाये । उमड़े सिंधु छोभ अति पाये ॥
निशिचरशब्दभयावनकरहीं । अतिशय तेजदिशासब जरहीं ॥
गिरिफूटहिं महिमंडलडोलैं । भय सोंलोग नयननहिँखोलैं ॥
गहि लीन्हो तेहिशूलसमेता । हेमकशिपुजिमितेज निकेता ॥
बज्र कठिन नख सों उरफारा । दंष्ट्रा चर्बित गात बिदारा ॥
पुनि पुनि अट्टहास विस्तारी । विदलित सुरपुरधाम अटारी ॥

दो० बाहर गेजे शिष्य गण तिन जब सुनो निनाद ।
भय व्याकुल सबहू गये आये सहित विषाद ॥

देखो भैरव मृतक शरीरा । हैं सुखेन बैठे गुरु धीरा ॥
विस्मित पद्म पाद पहँ आई । पूछा सबन प्रसंग चलाई ॥
ये प्रह्लाद वश्य सुर राया । वश कीन्हे तुम कौन उपाया ॥
यह सुनिपद्मपादहँसिकहेऊ । सुनहु मित्र जो कारण भयऊ ॥
पहिले हम बल भूधर ऊपर । वनमें करत रहे तप बहुतर ॥
भक्तविबशनरहरिनितध्यायो । यहिविधिजबकछुकालबितायो ॥
एकदिवस एक युवाकिराता । हमसनआय कहो यह बाता ॥

* लोग

केहिकारण तुमबसहुनिरंतर । सहहु कलेश शैल बनगहवर ॥
भक्त वश्य श्रीनर पंचानन । सदा रहहुँ बन उनकेकारन ॥
बीते बहुदिन आश लगाये । कबहूं देखन में नहिँ आये ॥
ममबाणी सुनि बनमहँगयऊ । क्षणमहँसोपुनिआवतभयऊ ॥
लताबांधिनरहरि कहँलायो ।प्रभुकोयहिविधिदरशकरायो॥
मनविस्मितहम गिराउचारी । अद्भुत महिमानाथ तुम्हारी ॥
राउर मुनिवरध्यानलगावहिं । मनहूँ में दर्शन नहिँ पावहिँ ॥
बनचरके बशभयहु कृपाला । अतिअचरज यहदीनदयाला ॥
यहिप्रकारमुनिममविज्ञापन । उत्तरदीन्हों मोहिँ मुदितमन ॥

दो० जेहि विधि इन एकाग्रचित किये हमारो ध्यान ।
ब्रह्मा दिक सों बनो नहिँ ये मुर प्रवर प्रधान ॥

तुमजनि उपालंभ मोहिं देहू । मम बाणी मेटहु संदेहू ॥
ह्वै प्रसन्न दै मोहिं बरदाना । तुरत भये हरि अंतर्द्धाना ॥
सुनि असि पद्मपादकी बानी । मित्र मंडली अति हर्षानी ॥
पुनि नृसिंह गर्जे सुखदाई । निज प्रताप ब्रह्मांड हलाई ॥
पुनि पुनि नरहरि गर्जन लागे । खुलीसमाधिकृपानिधिजागे॥
अति करालमुखनरहरि देखा । सकल प्रकार भयावन वेषा ॥
विधुकर निंदकसदाविकाशा । मस्तकतीसर नयन प्रकाशा ॥
सहसउदित रविजौन प्रकाशा । तैसो प्रभु शरीर की भासा ॥
विधिब्रह्माण्डविचालनहारी । गर्जत अट्टहास ध्वनिभारी ॥
नखसों कापाली उर फारा । तासु रुधिर लपिटोतनसारा ॥
कंठ सोइ आंतन की माला । जनु बैजंती माल विशाला ॥
सुरअरु असुर त्रास उपजावन । ऐसो प्रभु आकार भयावन ॥
सोलखिग्रथितसकलब्रह्मंडा । कांपत सब धरती के खंडा ॥
दंष्ट्रानन विकराल भयंकर । निकसत ज्वालाजाल धूमधर ॥
सोज्वाला नभ लौं चलि ताई । रोम रोम चिनगारी छाई ॥
जृम्भित हरिको बदननिहारी । सकल लोक तापितभयभारी ॥

दंतपेम ध्वनिअधिक भयंकर। जिह्वा दामिन सों चंचल तर॥
ब्रह्मादिक सब देव सनाथे। दूरिहि दूरि खड़े गुण गावें॥
विन अवसरप्रभुजनिलयकरहू। अब यहकोप नाथपरिहरहू॥
दो० यहि विधि देखि नृसिंह को निज आगे यतिराय।
लागे सुस्तुति करन तब निर्भय प्रभु ढिग जाय॥
नरहरि कोप प्रयोजन नाहीं। तव रिपु मरा परो महिमाहीं॥
मोपर कृपा करहु अब साँई। तुम्हहिंदेखिजगभयअधिकाई॥
शुद्ध सतोगुण तव मन माहीं। अल्पहु कोप उचिततवनाहीं॥
जगसुखदै शमता * मन धरहू। हेहरि हरगुण प्रकट न करहू॥
सुमिरहिं तुमहिं नाथभयपाई। सुख पावैं सबरी भय जाई॥
जब तव सुमिरन भीतिमिटावै। दर्शनकी महिमाकिमि गावै॥
तवपद सुमिरिदेहजेहित्यागी। निश्चय होय मुक्तिपदभागी॥
तव करकमल मृत्यु यहपाई। फिरन पाव संसृति दुखदाई॥
जन प्रह्लाद कीन्ह रखवारी। बहुत बार तिनकी भय टारी॥
दो० कह्यो सर्वगत ब्रह्मतिन सो तुम साँचो कीन्ह।
फूपर खंभते प्रकट ह्वै सब कहँ दर्शन दीन्ह॥
रजगुण सों जग सर्जन करहू। पालन हेतु सतोगुण धरहू॥
तमधरि विलयकरहुजगसोई। तव हरनाम तुम्हारो होई॥
हौं अज घटै न तव अवतारा। तिमिनिर्गुणको गुणविस्तारा॥
साँचे नहिँ जग रक्षा हेतू। पालन हेतु सकल श्रुति सेतू॥
तुमकहँ मन बाणी नहिं जानै। श्रुतिगणहू सबचकित बखानै॥
राउर नरहरि वैसो नामा। सुनतहि तुरत नाथसुखधामा॥
गुह्यकदुष्ट पिशाच प्रथम गन। औरअसुरनायकअतिखलतन॥
सन्मुख ठहरि सकैं ते नाहीं। भागहिँ भय उपजैं मन माहीं॥
दो० सर्ग स्थिति लय हेतु प्रभु ध्यान करनके योग।
अब हम राउर शरण हैं तुम छेदक भव रोग॥
मरो तुच्छ † यहक्रोध न कीजै। जगको अभय दान प्रभुदीजै॥

* शान्ति † कापाली

सुरतव रोष क्षमा अब चाहैं । तव गुणमहिमा सकल सराहैं ॥
कोटि तड़ितसम सहजप्रकाशा । तव मूरति सब जग तमनाशा ॥
तव अनुकंपा हीन मुरारी । सहि नहिं सकैं तेज अतिभारी ॥
तेहिते अब यहरूप दुराबहु । विचलित सकल लोक सुखपावहु ॥
प्रलय समय श्रीरुद्र भयंकर । माथे को खोलैं चख तीसर ॥
तेहिसों उठै अग्निकी ज्वाला । जरै त्रिलोकी जिमितृणशाला ॥
चट चट शब्द होय भयकारी । तिहि सों अट्टहास तव भारी ॥
यह ब्रह्मांड भवन दुख राशी । जरामरणजनि*रोगप्रकाशी ॥
सबदुख तृणघन अग्निसमाना । अस तव अट्टहास भगवाना ॥
हमरे सकल दुरित क्षयकरही । कृपाविलोकनि मुदउरभरही ॥
क्षीरसिंधु मंथन जब कीन्हा । मंथनहित मंदरगिरिलीन्हा ॥
बासुकि मंथन रज्जु समाना । मथैं सुरासुर अति बलवाना ॥
उठैं सिंधु कल्लोल अपारा । तासु घोषकर जो विस्तारा ॥
तेहिते तव अतिघोषभयंकर । दूसरि उपमा कहहु शिवंकर† ॥
प्रलय काल श्रीशंभु सुजाना । डमरू नाद करैं भगवाना ॥
जेहिसुनि फूटहिं दिक्तट सारे । तासु विनंदक घोष तुम्हारे ॥
हमरे सब पापन को नाशहिं । मनमहँ अतिआनन्दप्रकाशहिं ॥

छं० प्रलय जलधर अशनि ध्वनि अतिगर्वजो चूरनकरैं ।
अतिवेगशीवाराहनासाछिद्रघुर्घुरशब्दकी शोभाहरैं ॥
यहि रीति अति गंभीर राउर अट्टहास भयावनी ।
नाशहिं हमारे पापसब करि विमलबुद्धि सुहावनी ॥

दो० ऐसी विनती सुनि भये नरहरि अंतर्द्धान ।
निज स्वभावलहिपद्मपद शुरुपहँ गयो सुजान ॥
करि दंडवत प्रणाम पुनि बैठो मनहर्षाय ।
श्री नृसिंह बपु स्वप्न महँ गयो मनहुँ दर्शाय ॥
सावधान ह्वै यह चरित जो नित पढ़ै त्रिकाल ।
प्रीति सहितअथवा सुनै तरु अपमृत्यु कराल ॥

* जन्म † मंगल

सो० लहै परम हरि भक्ति भोगे अभिमत भोग सब ।
शंतकालतर मुक्ति पावैहि अनपायिनि सुभग ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिब्राजकाचार्य्यश्री७ स्वामिरामकृष्णा भारतीशिष्यमाधवावदभारतीबिरचितेउग्रभैरव निर्जयवर्णनपरएकादशः सर्गः ॥ ११ ॥

—— ❋ ——

श्लोक ॥ शंकरायवृषेशायनिशानाथपरापते ॥ आनंदकाननेशाय गिरिशायनमोनमः १

दो० एकसमय तीरथकरत शिष्यसहित यतिराय ।
श्री गोकर्ण समुद्र पहँ हर्षित पहुंचे जाय ॥
सो० विधि हरि वंदित पाय जगनायक केसूत्रधर ।
करीविनयमनलाय अर्द्धवधूतनशिवहि नमि ॥

दक्षिण ओर बलाहक सुखमा । बामभाग दामिनिकोउपमा ॥
दहिने हाथ मृगा शुभ सोहै । शुक बायें कर अतिमनमोहै ॥
मुंड माल दक्षिण दिशि राजै । बायेंगज मणि हार बिराजै ॥
नील कंठ जो शिव सुख रूपा । सोइ मैं हौं निर्भेद अनूपा ॥
त्रिगुणरहित शंकर गुणगाये । तीनिदिवसगोकर्णबिताये ॥
हरि शंकर तीरथ जग जाना । विष्णुलोक कैलास समाना ॥
जहँ हरि हर मूरति सुखदाई । एक रूप है द्वैत बिहाई ॥
भेद वादि भ्रम बारन हेतू । एक भये हौ हरि वृषकेतू ॥
तहाँ जाय शंकरसुखधामा । सुस्तुति कीन्हगिराअभिरामा ॥
हरि हर उभय अर्थ दर्शायो । ऐसी रीतिसहित गुणगायो ॥

श्रीमीनावतार ॥

सोम*कला†सहअधिकबिलासा । आदर‡युतगो†राशिप्रकाशा ॥
मैन‡ तेज कियो अंगीकारा । सोप्रभु सदा मोर रखवारा ॥

*चंद्र, वि†अंश, जल ‡ श्रुति † उभयपक्षमेंसमान ‡मीनसम्बन्धी, पार्व्वतीमेनाभववमैन

## कच्छपावतार ॥

मंदराग * धर नाथ अनादी । देव सुधा प्रद मुदाविवादी† ॥
गिरि‡लीलोचित मूर्त्ति सुहाई । मोपर कृपा करौ सुखदाई ॥

## वाराहावतार ॥

सो० उल्लासित* महिमान वराहोश†वपुसुभग ‡ अति ।
संध्या*कमल समान तिनकोहित कर† हमकरैं ॥

## श्रीनृसिंहावतार ॥

केसरिता ‡ वर धारन कीन्हा ।सुररिपु*कुंजर॰हनिपददीन्हा ॥
सुख†प्रह्लाद दियो सुखराशी । पंचानन‡प्रणामहु अविनाशी ॥

## वामनावतार ॥

वल्या*हरण मनोरथ कीन्हा । योवामन†हरमृग‡त्वचलीन्हा॥
प्रियविनतपचर्य्या*जेकरहीं । आदि†अनादिमोरदुखहरहीं॥

## परशुरामः ॥

ये‡अधिको घतवारि*मनोहर। जीतो अर्जुन † समरभूमिपर ॥
श्रीपति‡तारापति*द्युतिधरहू। करिकरुणासनाथमोहिंकरहू॥

## श्रीरामावतारः ॥

जग पावक निज तेज सँभारा । हेयि सकाम दशानन* मारा ॥
धरापत्य † सन परम सनेहू । निज स्वरूप अनुभव मोहिदेहू॥

## श्रीबलदेवावतार ॥

सो० ताल‡केतु भगवान धर्माय*स्थिरमय मूर्तिप्रभु ।
हालाहल†कियो पान रोहिणीश‡ चुंविद बदन ॥

---

* मन्दराचल,मन्दरपादप † अबिखादो शिबिखाद ‡ मन्चर, कैलास *महेमानं चित्तोन्नति † बारहोईश, बरअहोश, बासुकि ‡ तनसुभगदयु: * महिमा † संपुटित ‡ सिंहरूपता, शिरमेंगंगा * हिरण्यकशिपु॰गजासुर † प्रसिद्धः सुख और प्रकर्षअह्लाद ‡ सिंहरूप:,शिवरूप: * बलिकेसर्वस्व, दत्तयज्ञबलि † बामन: वा पक्षांतरे मनोहर: ‡ मृगचर्म, सिंहगजचर्म * बालब्रह्मचारी, सतीबिना † सबकेआदि,स्वयंअनादि, उभय पक्षेसमान: ‡ बालक * गंगबारि † सहस्राजुन, पाण्डवार्जुन, किरात में यह ‡ लक्ष्मी पति:,शोभापति चंद्रसम:, चंद्रधर:* प्रसिद्ध:,सकाम:,दशेंद्रियाणिसुखानियस्यां इंद्रोरूप सुख, जानकी पर्वतो ‡ प्रसिद्ध:, तालेगोत्रकालेकांतिर्यस्य *धर्माय, स्थिराधर्मयोमोच धर्ममय:,धमइ † बारुणी, विष ‡बसुदेव: चंद्र ॥

श्रीकृष्णावतार ॥

अहा पूतना*मारण कीरति । यशोद†पालं कृत प्रभु मूरति ॥
यों कलाप‡भूषासुर राया । मम रक्षा कीजै करि दाया ॥

बुद्धावतारः

मीनध्वज*जयमहँ विख्याता । प्रभु सर्वज्ञ दया मय त्राता ॥
यज्ञ† द्वेष आदर अति भारी । बोध‡रूप मोहिँ चाह तुम्हारी ॥

कल्किः

जन*मनविषयदूरि जिनकीन्हे । घोत मान सबतम†हरि लीन्हे ॥
सदावास‡आशय*जिन केरो । तिन को नमस्कार बहु मेरो ॥

दो० यहि विधिमापति*उमापतिसधुरीविनय सुनाय ।
मकांबिका सदन कहँ तब गवने मुनि राय ॥

द्वार देख द्विज दंपति पाये । बैठे मृत सुत अंक मलाये ॥
एकहि बालक रह्यो अपाना । तेहि कारण अतिरोदन ठाना ॥
शंकर तिनहिँ दुखीअतिदेखी । शोच कीन्हउरकृपा विशेषी ॥
शोचे जब श्रीशंकर ज्ञानी । तबहीं होत भई नभ बानी ॥
रक्षा को समरथ जो नाहीं । दया करै दुख हेतु तथाहीं ॥
गगन गिरा सुनि शंभु सुहाई । बोले ज्ञानि नृपति हर्षाई ॥
तीन लोक रक्षा निपुणाई । तेहिं दया भूषित अधिकाई ॥
जबयतिपतिअसउत्तरकहेऊ । द्विज बालक मृत जीवत भयऊ ॥
यह चारित्र सुना जिन देखा । सब कहँ अतिआश्चर्यविशेषा ॥
शालादिकतरुकीजहँमाला । पुनि समीप बर ग्राम विशाला ॥
साधक सिद्ध हेतु यश सुंदर । प्रविशे मूक अंबिका मंदिर ॥

दो० ब्रह्म लोक सों अधिक सुख असभा प्रेम अपार ।
नयन श्रवैं गद्गद गिरा तन रोमांच उदार ॥

---

* पूतना के मारनेकी है कीर्त्ति पवित्रनामःयाकीरति † यशोदाकरिकै यश और दया ‡ तूण,मयूरपंख * शमदमादिरीतिसें मारजिन्ने कजिजिन:,कामदहन: ,, उभय पक्षसमान † वेदयज्ञनिन्दाद्वारा दत्तयज्ञ ‡ बुद्धः,ज्ञानस्वरूपः * कलिजन; भक्तजन † पाप, अज्ञान ‡सतांआदासायसतांआंवाधेयस्मिंस्तथाभजेकृतयुगेकिं॰शि०य०सदैव वासायकृत:सर्वस्यअंत:करणंयेनकाश्यदीकृतोअभिप्रायोयेन * लक्ष्मी

करि पूजन पुनि शिव मृदु बानी । विनती कीन्ह भक्ति रससानी ॥
जो परार्द्ध संख्या बड़ि मानी । तेहि अति वर्त्तन करहु भवानी ॥
तव पद पद्म मयूख सुहाये । विगत बधि निगमागम गाये ॥
तरणि सोम पावक सहँ भासा । करि प्रवेश जग करहिं प्रकाशा ॥
आवाहन आसन अव रोपन । सुरभि तैल अभ्यंग सु मज्जन ॥
इत्यादिक चौंसठि उपचारा । मानस पूजन करहिं तुम्हारा ॥
अंते बसत्कांड पढदेहीं । तव पूजा महिमा फललेहीं ॥

सो० एक एक उपचार चौंसठि में जो बनि परै ।
अंतर्शुद्धि अपार शुद्वाज्ञा चक्रन किये ॥
दो० तव प्रसन्नता लागि जे ब्रह्मरंध्र सों ध्यान ।
उपाचरन युत करैं नित तिन सम ध्यानन आन ॥

तव पूजन कोउ बाहर करहीं । कोउ कोउ मानस बिधि अनुसरहीं ॥
कोइ करहिँ कबौं नहिँ पूजा । तव स्वरूपगत भाव नदूजा ॥
आचारादि कला जे गाई । अष्टत्रिंश साधक मन भाई ॥
बोधि निधारशिा पुण्य अमृता । क्षमा पांच ये सबदुखहर्ता ॥
तव पद पद्म रहैं इन ऊपर । अधिक प्रकाशित भजैं विबुधवर ॥
तुम्हहिँ देवि कालानल रूपा । धरि सब जारहु विश्वस्वरूपा ॥
अमृत रूप धरि सर्जहु पालौ । अस स्वरूप ध्यावहिँ लायेलौ ॥
सुष्टिकार ते होहिँ भवानी । तव अद्भुत स्वरूप केज्ञानी ॥
जे अद्वय मत के विज्ञाता । धन्य जन्म उनकोजगमाता ॥
प्रथमहिं गुरुमन सुनि तवरूपा । साह मस्मि यहयोगअनूपा ॥
अनुभव गम्यरूप तब ध्यावहिँ । एकभावलखिभेदभुलावहिँ ॥

छं० जे चक्र मूला धार स्वाधिष्ठान मणि पूरक भजैं ।
तवनगर बाहर बासपावहिँ भोग आशा नहिँतजैं ॥
पुनि जे अनाहत भजैं तुनको तव नगर बासागहैं ।
जे शुद्ध आज्ञा चक्र महँसामीप्य सम भोगन लहैं ॥
दो० ध्रुव मंडल संज्ञक कमल सहस पत्र बिस्तार ।

तेहि महँ तुम को जे भजैं लहैं नपुनि संसार॥

ते सायुज्य परम पद पावैं। जगमें साधक इंद्र कहावैं॥
पावंन जो श्री चक्र सुहावन। पुनिषटचक्रयोगि मनभावन॥
एक भाव इनको बुध देखैं। मंत्र चक्र पुनि भिन्न न लेखैं॥
चक्रहि राउर भेद न जाना। सो साधकगुणज्ञाननिधाना॥
यहि विधि वचनन पूजिभवानी। भैक्षोदन संतोषिक ज्ञानी॥
बहु साधक पूजित श्री शंकर। कछुदिनतहांरहेकरुणाकर॥
श्री वल नाम ग्रामअतिभारी। द्विजवरबसहिँजहांमखधारी॥
अग्नि होत्र तहँ घर घर होई। होमसुरभिअतिपावनिसोई॥
सब निज धर्म आचरण करहीं। कोइकुमारगपगुनहिँधरहीं॥
जहँ अप मृत्यु कबहुं नहिँ आवै। अविशनकीकहुँराहनपावै॥
दुइ सहस्र द्विज वर जहँ बसहीं। वैदिकधर्मकर्म तन कसहीं॥
अग्निहोत्र सबके गृह माहीं। कोद्विजअसजोश्रुति धरनाहीं॥
मध्य बसैं गिरिजा सह शंकर। नारमहाशोभाप्रदशशिधर॥
हारमध्यमनिसमछबिदायकनिशिशोभाप्रदजिमिनिशिनायक
दैव योग शंकर तहँ आये। साथशिष्यमंडलछबिछाये॥

दो० तहां एक भूसुर बसै जासु प्रभाकर नाम।
अति प्रभाव जिनकोविदित जोविद्यागुन धाम॥

बहुत यज्ञ करि कीरति पाई। कर्मनिपुणअति बुद्धिसुहाई॥
धन धरणी गौवें बहु तेरी। ज्ञाति बंधु मान्यताघनेरी॥
यह सब तदपि न मन आनंदा। जेहिते भयोसुअनगतिमंदा॥
नहिँपर सुनै न आपनि कहाई। ध्यान सरिस उपमासोलहई॥
रूप काम मुख चंद समाना। तेज भानु समक्षमा निधाना॥
तासु पिता नित करै विचारा। है पिशाच परवशममबारा॥
अथवा प्रथम कर्म वश ऐसो। बालकलह्योस्वभावअनैसो॥
मंद चेष्टा क्यों यहि पाई। पूंछहि सदागुनिन पहँ जाई॥
गुरु वर आगम तिन सुनिपावा। शिष्यप्रशिष्यझुंडसंगआवा॥

पुस्तक भार बहुत संग नाहीं । नगर लोगदर्शन कहँ जाहीं ॥
जाहिं इष्ट‡ सुरगुरु नृप तीरा । रीते हाथन जे मति धीरा ॥
जानि निगम मर्याद सयाना । सहितउपायनसुअनअयाना ॥
आय भेंट फलद्विगधरिदीन्हे । पुनिसुरुकहँप्रणामद्विजकीन्हे ॥
पुत्रहि प्रभु चरणन पद डारा । भस्मछिप्योपावकसमप्यारा ॥

दो० परो चरन नहिँ उठै सोजनु जड़ भाव दिखाय ।
॥ माथे हाथ लगाय तब शंकर दियो उठाय ॥

पिता कही प्रभु सन यहबानी । जानहुँ जड़ता हेतु न जानी ॥
ऐसे हिं तेरह वर्ष गवाँये । वेद पढे नहिँ आखर आये ॥
कैसे हुं करि दीन्हों उप वीता । आवत संध्या रीति पुनीता ॥
बालक क्रीड़ा हेतु बुलावा । तिनके ढिगकबहूंनहिँआवा ॥
मुग्ध जानि शठ बालक मारत । क्रोध करे नहिँवचनउचारत ॥
कबहुं खाय कबहूं नहिँ खाई । करत सदा अपने मन भाई ॥
क्रोधहु भा हमने नहिँ मारा । यह प्रभु बढ्योकर्मअनुसारा ॥
अस कहि विप्र रहे अरु गाई । बालकसन बोले यति राई ॥
कोतुम जड़ समान बपु धारी । तब बालक यहगिराउचारी ॥

दो० मानुष देव न यक्ष मैं नहिँ गंधर्व सुजान ।
ब्राह्मण क्षत्रीवैश्य नहिँ शूद्रनमैंभगवान ॥
ब्रह्म चारि अरु गृहीमैं बनवासीमैं नाहिँ ।
यतीनमैंहौंबोधबपु सवकल्पितसोहिँमाहिँ ॥

सुनहुं नाथ मैं जड़ बपुनाहीं । जड़ चैतन्य होत सोहिं पाहीं ॥
षटऊर्मी* षड्भाव†विकारा । मों में नहिँ इनकी अनु सारा ॥
सुख स्वरूपप्रभुमैं अविनाशी । चेतन सब जड़ वर्ग प्रकाशी ॥
मम अनुभव है निश्चल जैसो । सब मुमुक्षुगन पावहु तैसो ॥
ऐसे द्वादश पद्य* बखाने । गत प्रपंच अनुभव रस साने ॥
ते ‡पर तत्त्व प्रकाशन करहीं । जिमिधात्रीफल नरकरधरहीं ॥

‡ प्रिय * शोक मोह क्षुधा पिपासा जरा मृत्यु † अस्ति जायते वर्द्धते विपरिणमते अपक्षीयते नश्यति *श्लोक ‡श्लोक

तेहि कारण बरणो गुणधामा । हस्ता मलक ग्रंथ कर नामा ॥
तत्कर्ता संज्ञा सोइ पाई । निर्मल कीरति जग बरसाई ॥
बिनउपदेशलह्योअसज्ञाना । द्विजसुतलखिबिस्मितभगवाना ॥
माथे हाथ कृपा करि राखा । बालकपितहिबचनअसभाखा ॥
तव संग बसिबे लायकनाहीं । अर्थ लाभ नहिँ तवजड़माहीं ॥
दो० प्रथम जन्म अभ्यास बश सब जानत यह बाल ।
॥ ततक निरक्षर कहै किमिपद अनुभविकरसाल ॥
ज्ञानि बूझि यहबोलतनाहीं । यहिकोरुचिनहिँसंसृतिमाहीं ॥
निज शरीर ममताजेहिँत्यागी । होहिँकोनिबिधिपरअनुरागी ॥
अंतर्दृष्टि सदा यह रहहीं । ममविचारइमिआवतअहहीं ॥
असकहिद्विजबालकहँलीन्हा । तहंसनबहुरिगमनप्रभुकीन्हा ॥
तासु पिता ममता रसपागा । कछुकदूरि सुतके संगलागा ॥
स्थिरकरि निज बुद्धि सुहाई । निजगृह गयोलौटिद्विजराई ॥
विष्णु महेंद्र गीत गुण गाथा । पद्म पदादिक जिनकेसाथा ॥
पूरण काम ज्ञानि गन राजा । शृंगी गिरि गवने यतिराजा ॥
जहँ शृंगीऋषिवर तप करहीं । धर्मनधर्म सों देखिन परहीं ॥
दो० स्वर्गहोतपुरवहिसकल सुख कल्प गणिलाश ।
नाम तुंग भद्रा नदी गिरि तट करै प्रकाश ॥
इत्यादिक सों अधिक लसंता । शांतहृदयनिवशहिंमुनिसंता ॥
जिननिःशेष पढ़ी सब शाखा । अतिशिसनोरथ शेषनराखा ॥
भाष्यादिक अपने सद्ग्रन्था । तहँ बसि देनलगे प्रभु संथा ॥
श्रवणाकरतजिनकोअधिकारी । अहंतयोगताजहहिंसुखारी ॥
बरनहिं जीवेश्वरअविशेषा । सुर दुरुले सब भाँति विशेषा ॥
लज्जित होहिँदेखिकरिशेषा । होत प्राणि तस दूरिअशेषा ॥
तहँ शारद प्रासाद बनावा । इन्द्रविमानसरिसछविछावा ॥
पर देवता शारदा भवानी । इन्द्रादिक पूजित जगजानी ॥
तासुपीठ निर्मान करावा । पूजा कर बंधेज बँधावा ॥

शारदांबा जेहि कर नामा । पालु प्रतिज्ञा शुभयुत धामा ॥
अबहूँ करहिँ सदातहँ वासा । देहि मनोरथ ज्ञान प्रकासा ॥
एक शिष्यकीन्हो तहँशंकर । सोटकजाहि कहैं सब बुधवर ॥
गुरू मनको अनु दर्शनकरहीं । मन क्रम बचन धर्मआचरहीं ॥
भूत दशा पालै नित वेसा । श्रीगुरुपदमहँ अतिशय प्रेमा ॥
गुरुते प्रथम करहि अस्नाना । गुरु सेवा महँ परम सुजाना ॥
कंबलादिधरि कल्पितआसन । उन्नत सम मृदुरचहि सुहावन ॥
प्रथमहि दंतदारु * लै आवै । भक्ति सहित अस्नान करावै ॥
सूक्षम कोमल पट रंगि लावै । विनयसहितगुरुको पहिरावै ॥
पाद पद्म नित सहँ नकरई । तन छाया समनित अनुसरई ॥
गुरु समीप जृंभा नहिँलेही । कहिवे योग अवसिकहिदेही ॥
बहुत बचन नहिँ बोलै तबहूं । चरण पसारि बैठ नहिंकबहूं ॥

॥ दो० गुरु सन्मुख बैठे सदा नहीं दिखा मत दृष्टि ।
पाठ सुनै नित विनय सों नीची राखै दृष्टि ॥
गुरु बैठत बैठे सदा गुरू चलैं चलुसोय ।
विन सिखये सोईकरै जेहिमेंगुरुहितहोय ॥

अनहितकबहुँकरैनहिंकाजा । यहि प्रकार सेवै गुरु राजा ॥
एक समय सेवक वर केतू । श्रीगुरु बसन पखारन हेतू ॥
नदी तीर गवनों नहिँ आया । शंकर भक्त बसल सुर राया ॥
ताकु राह देखत करुणाकर । पाठ आरंभ कियोनहिंशंकर ॥
श्रवणाकरनहितशिष्यनिकाया । उद्यतदेखिकह्योमुनिराया ॥
क्षण भरि ठहरो जब वे ऐहैं । तबहिँ पाठको लागु लगैहैं ॥
सुनि गुरु बचन सनंदनकहही । सोतौ नाथ परम जड़ अहही ॥
मंद बुद्धि सो नहिंअधि कारी । किमि देखहु तुमराहपुरारी ॥
तिनको गर्व मिटा वन हेतू । दीन बंधु शंकर वृष केतू ॥
मनहींमन हरिलीनिअविद्या । दीन्हीं तुरत चतुर्दश विद्या ॥
परम अनुग्रह प्रभुकी पाई । तत्क्षण सब विद्या फुरि आई ॥

* दन्तकाष्ठ

गुरु समीप गवने अनु रागे। तोटक छंद सुनावन लागे॥

छन्द

भगवद्भव सिंधु अपारमहा। जनिनाशभरो अतिवारिजहा॥
दुख आनंद मीन समान प्रभो। तहँ बूड़त व्याकुल पाहि विभो॥
शरणागत मम उद्धार करो। उपदेशि महा अज्ञान हरो॥
मतिफेरि विषयगणसोंहमरो। तन आतम मानि रहो बिगरो॥
परमा तम रूप निमग्न करो। मम मोह महा भ्रम नाथ हरो॥
अन्नादिक पांचहु कोशसदा। अयमस्मिममेति करोमि मुदा॥
दृशि*रूप सनंत सजंवि गुणं। हृदयस्थ लखो सब त्यागिभ्रमं॥
जल भेद कृताहि तथा बहुता। नहिं आतम रूप गता विकृता॥
मति भेद कृताहि तथा बहुता। नहिं आतम रूप गता विकृता॥
दिन नाथ प्रभा सदृशो न सदा। जन चित्त गतं सकलंहि मुदा॥
विदितं भवताऽविकृते न सदा। यत एव मतोसि सदैव सदा॥

सो० गुरु पदपंकज मूल करुणा जल सींची गई।
भक्ति बेलि सब शूल पाप निवारकभै प्रकट॥
तोटक पद फल रूप महा मधुर तेहि में लगे।
अनुभव स्वादु अनूप शुक सज्जन चाखहिं सदा॥

गुरु सेवा सो पान समाना। गई परम पद लौं महि थाना॥
उन्नत गुर्वीअति शय पावनि। जेहिमुखत्रिभुवनपंक्तिसोहावनि॥
है जगमें अस जासु प्रकाशा। तोटकतम क्यों करहि न नाशा॥
यहि विधिजग तोटकपदगाये। श्रुति शिर संमत अर्थ सुहाये॥
छंद भेद आखर नहिं जाना। गुरु वर कृपा भयो सब ज्ञाना॥
अमृत समान सुनी जब बानी। देखी अधिक बुद्धि सर सानी॥
पद्म चरणअहमितितवत्यागी। भये सकल विस्मय अनुरागी॥
भक्ति वेग भे प्रकट सुहाये। तोटक पद्म परम गुण छाये॥
तेहिते जग यश भयो सुहावा। नाम तोट का चारज पावा॥

दो० अबहूं तोटक ग्रन्थ सो जग में प्रथित अनूप।

---

* दृष्टा

पढ़े सुने ते जासुके संत लहैं निज रूप ॥
पावा तोटक नाम सुहावा । सर्वदिशिमहँजिनकोयशछावा ॥
पद्मपाद मुनि सरिस बड़ाई । मुख्य शिष्य पदवी पुनि पाई ॥
पद्म चरण गुरु भक्त सुजाना । तथा सुरेश्वर ज्ञान निधाना ॥
हस्ता मलक परम विज्ञानी । गुरु दैवत तोटक गुण खानी ॥
चारिउ शिष्यदेखिमन माहीं । बुधवर बहुत विकल्प कराहीं ॥
धर्मादिक फल हैं ये चारी । किधौं बेद हैं नर तन धारी ॥
कैधौं विधिके मुख हैं चारी । अथवा मुक्ति भेद सुख कारी ॥
श्री गुरोक्त सिद्धांत उदारा । जिनकिश्रोनिश्वासहितविचारा ॥
निर वधि सुखप्रदआतमलाभू । परम दव्य सोइ जिहि तहँ लोभू ॥
स्वर्ग द्वार जे विशद विराजा । ऐरावत सम बहु गज राजा ॥
मदवशअतिकिलोलअनुसारी।सबदिशिभरिजिनकीध्वनिभारी
स्वर्ग संपदन शूकहिँ नाहीं । जे बिहरहिं स्वरूप सुखमाहीं ॥

छं० पयसिंधु मंथन जनिसुधा शुभ फेन सम निर्मल सदा ।
पुनि अमृतपूरण रुचिर ऐसे यश सहितशंकर मुदा ॥
पर वादि कल्पित मत निकंधन करत शंकर सोहहीं ।
त्रैलोक्य विजयी शिष्य मंडल सहतमतमन मोहहीं ॥

इतिश्री सत्परमहँसपरिब्राजकाचार्य्य श्रीस्वामिश्री ७ राम कृष्णभारतीशिष्यविरचिते शंकरदिग्विजयेहस्तामलक तोटकाचार्य्याश्रयवर्णनपरोद्वादशःसर्गः १२ ॥

—*—

श्लोक ॥ ईशानःसर्वविद्यानां शंकरोमेसहायवान् । आशुतोषंसदा वंदे विघ्नजालहरंहरं ॥ १ ॥

दो० एक समय अति भक्ति सो करि प्रणिपात सुरेश ।
गुरु वर सों विनती करी जिन्न दीन्हों उप देश ॥

शारी एक गंभीर उदारा । तासु वृत्ति * मैं रचहुँ उदारा ॥
अस मन धरि निज गुरु सों भाषा । मेरी नाथ परम अभिलाषा ॥
कछु सेवा प्रभु मोहिं बतावो । उचित सिखावन मोहि सुनावो ॥
जीवन तासु सफल जगमाहीं । श्री गुरु भक्ति विमल जेहि पाहीं ॥
शिष्य शिरोमणि की सुनि बानी । मुदित कह्यो गुरु बर विज्ञानी ॥
मेरो भाष्य रुचिर गंभीरा । वार्तिक तासु रचो मति धीरा ॥
यह सुनि कहहि सुरेश सुजाना । सुनहु भक्त वत्सल भगवाना ॥
तर्क युक्त गंभीर अपारा । नाथ भाष्य सब परम उदारा ॥
दो० तासु विचार शक्ति मोहि जब नहिँ शंभु सुजान ।
वृत्ति बना वन कठिन अति यद्यपि है भगवान ॥
तदपि कृपा दृष्टि तव पाई । यथा शक्ति मैं करब उपाई ॥
ऐसेइ होहु कहा सुनि राई । सो गुरु आज्ञा शीश चढ़ाई ॥
पुनि सुरेश निज आसन गयऊ । चित्सुखादि उर मत्सर भयऊ ॥
पद्म पाद सन प्रीति घनेरी । जग कीरति चाहैं तेहि केरी ॥
ते सब मिलि शंकर सन कहहीं । हमहिं नाथ कछु संशय अहहीं ॥
हित के अर्थ यत्न जो कीन्हा । सो चाहत उलटो फल दीन्हा ॥
मंडन अति विद्वान धुरंधर । रह्यो कर्म रत सो अति शयतर ॥
ब्रह्मादिक वंदित जग ईशा । जाहि सुरासुर नावहिँ शीशा ॥
सो ईश्वर इन खंडन कीन्हा । सब को यही सिखावन दीन्हा ॥
स्वर्ग नर्क कर्महि सन होई । ईश्वर फल दाता नहिं कोई ॥
सकल पुराण वचन जे अहहीं । जगत प्रलय ते सब मिलि कहहीं ॥
प्रलयादिक जेतो व्यवहारा । सांचो कर्म हेतु निर्द्धारा ॥
ते पुराण मुनि व्यास बनाये । तिनके जैमिनि शिष्य कहाये ॥
जैमिनि पक्ष पात धरमंडन । करिहैं अवशि प्रलय अवलंबन ॥
दो० गुरु शिष्य के पक्ष में भेद कबहुं जो होय ।
गुरु शिष्य को भाव जो नाथ रहे नहिँ सोय ॥
सो० होय तदपि जहँ सोय ‡ पूर्व पक्ष सर्वक गिरा ।

---

* वार्तिक ‡ पक्षभेद

॥ शुद्ध वचन तहँहोय परम प्रौढ सिद्धांत सम ॥
अबसे जन्म भयो जग माहीं । कर्म्म करतउनके* दिनजाहीं॥
औरन कोनित प्रति उपदेशा । कर्मकिये सुखहोयविशेषा ॥
सारग्राहीता गहो नहिं कोई । कहत रहो सबसों नितजोई ॥
तिन सो वृत्ति नाथ बन वावें । हम सबके मन संशय आवें ॥
यद्यपि आज्ञा पाय बनेहैं । कर्म परायण अर्थ जनेहैं ॥
ज्ञान वृद्धि चाहहु विज्ञानी । हमरी जानि मूलकी हानी ॥
इन संन्यास नरुचिसों कीन्हा । हारि गयेपरवशह्व लीन्हा ॥
तेहिकारण हमरे विश्वासा । नाथकरें नहिंहृदय प्रकाशा ॥
जोपे ज्ञान की वृद्धि बनावो । इनकी द्वारा जनि बनवावो ॥
भट्ट पाद कर यहमत रहेऊ । कुशलकर्मजनिकोउपरिहरेऊ ॥
कर्म करन के जेहैं योगा । तेनकरें शुभ कर्म वियोगा ॥
मन संन्यास कोर हठ जासू । अंधादिक अधि कारी तासू ॥
भट्ट पाद मतके अनु सारी । तिन ऐसी नित गिरा पुकारी ॥
निश्चय पक्ष पात ये करिहैं । तत्प्रति कूल हृदय नहिंधरिहैं॥

दो० जोजानौ प्रभु उचित पुनिसो कीजै मुनि राय ।
यहिमें हम को हठनकछुविनती दईसुनाय॥

पुनिको करिहै जोअसगुनहू । तो यह विनय हमारी सुनहू ॥
हम सब सुरसरि तीरहुजाना । रहे अपर तट पर भग वाना ॥
सबके प्रेम परीक्षा हेतू । करुणा सिंधु नाथ वृष केतू॥
हमसबकोनिजनिकटबुलावा । यति समूह नौका हित धावा ॥
पद्म पाद सुनि गुरु आदेशा । स्वर्ग नदी महँ कीन्ह प्रवेशा ॥
गुरु चरणन को प्रेमभवानी । त्रिपथ गामिनी लखिहर्षानी ॥
जहँ जहँ पाद नदी महँदीन्हें । कंचन कमल प्रकट तहँकीन्हें ॥
तिनपरधरिधरिचरणसयाना । तब समीप पहुँचो हर्षाना ॥
अति प्रसन्न राउर मनभयऊ । पद्म पाद संज्ञा प्रभु दयऊ ॥
तब चरणारविन्द अनुरागी । सकल भेद गत सो बड़ भागी ॥

* मंडन

है स्वाभाविक सिद्ध सुजाना । समरथसर्वविधिज्ञाननिधाना ॥
सूत्र भाष्य गंभीर अगाधा । तासु वृत्ति करिहैं निर्वाधा ॥
दो० अथवा ये आनंद गिरि करिहैं परम सुज्ञान ।
तव हर्षित श्री शारदा दीन्हों है वर दान ॥
तव प्रबंध आशय सबजाना । है वरदान जनित यह ज्ञाना ॥
कर्मनिपुणमतिपरमसुजाना । विश्व रूपहैं कर्म प्रधाना ॥
केहिविधिकरहुनाथविश्वासा । देखहिँ कैसे पूजिहि आशा ॥
पंकज पाद रचैं यह टीका । है अभि लाष नाथ सबहीका ॥
तेहि अवसर तहँआइ सनंदन । कह्यो वचन गुरुपदकरिवंदन ॥
हस्ता मलक परम वि ज्ञानी । जिनकीमहिमासबजगजानी ॥
हस्ता मलक चरित्र को जाना । जो शाउर सिद्धांत सुजाना ॥
यहि कारण तुमहींभगवाना । हस्तामलककोशोअभिधाना† ॥
ये सब भांति समर्थ सुजाना । इन्हें देहुआज्ञा भग वाना ॥
सुनी सनंदन कोयह बानी । विस्मितउतरुदियोमुनिज्ञानी ॥
सो० हैनै पुन्य अनूप तिनकी जैसी तुम कही ।
सदामगननिजरूप वहिर्दृष्टिनहिंहोवसो ॥
बालपने अक्षर नहिं चीन्हें । यद्यपि पिता यत्न बहु कीन्हे ॥
जब उपवीत भओ नहिं वेदा । पढे मगन मति ब्रह्म अभेदा ॥
मांगयो अन्न वचननहिँबोलो । लरिकन संग कबहुंनहिँ खेलो ॥
भूत समाहत निश्चय जानो । मम समीप आन्यो मुनिज्ञानी ॥
हमहिंदेखिपुनिपुनिपदबंदन । वैठो अधिक पाय अभि नंदन ॥
प्रकृति अपूर्वसकलजनदेखी । अतिविस्मितमन भयेविशेखी ॥
को तुम बालक केहिके ताता । मोसन कहो हृदय की बाता ॥
जब हमने पूछा यहि भांती । पढि दीन्ही द्वादश पद पांती ॥
निज स्वरूप आनंद बखाना । सुनि सुनि वचनजनकहर्षाना ॥
जब सों जन्म भयो नहिं बोले । आजु कहे अस वचन अमोले ॥
ज्ञानशिरोमणिबालकचीन्ही । तासु पितायहविनतीकीन्ही ॥

† नाम

हम सब ने जड़ बालक जाना । परम तत्त्व यह कहहि सुजाना ॥
यह तव दर्शन केर प्रभावा । जाय कौनिविधिमोसनगावा ॥
दो० संसृति मुक्त जन्म सों कीजे शिष्य कृपाल ।
मलिन सरोवर है न किमि मानस बासि मराल ॥
असकहि पिताभवननिज गयऊ । तब सों समसमीप यह रहेऊ ॥
शिशुपनतेस्वरूप सुखलीना । सो किमि रचै प्रबंध नवीना ॥
यह सुनि शिष्य कहैं हर्षाई । कहहु नाथनिजजन सुख दाई ॥
विन श्रवणादि उपाय उदारा । भयोज्ञान केहि भांतिअपारा ॥
शंकर उतरु दीन्ह सुख पाई । सुनहु कथा यहपरम सुहाई ॥
एक सिद्ध यमुना तट बासी । संसारि न सोंपरम उदासी ॥
तप आचार पुनीत सुहावा । ध्यान समाधि सदा लौ लावा ॥
कबहुं एक द्विज कन्या आई । युग संवत वय बालक लाई ॥
क्षणभरि बालक देखहुनाथा । मुनि सों कहिगैनारिनसाथा ॥
करन लगी यमुना अस्नाना । बालक तहँ खेलै हर्षाना ॥
दैव योग सरि में गिरि परऊ । तुरतहिसोबालकसरिगयऊ ॥
मातु पितादि सकलजनधाये । मुनिके तीरविलाप मचायो ॥
तिनकर रुदन सुनामुनि राया । कृपा लागि उर बहुदुखपाया ॥
योग प्रभाव बाल तन आये । सो यह हस्ता मलक सुहाये ॥
तेहिते बिन अमइन सबजाना । श्रुति स्मृति सब शास्त्रपुराना ॥
कौन तत्त्व अस है जग माहीं । हस्ता मल जेहि जानतनाहीं ॥
निज स्वरूप सुखरतिदिनराती । उचित न तासुप्रवृत्तिदिखाती ॥
दो० बुद्धि तत्त्व मंडन अहै सब लायक गुणधाम ।
जासु सर्व विज्ञाव की साखी शारद वाम ॥
जासुविशदकीरतिअसिभारी । चहुँदिशि फैल रहीउजियारी ॥
जेहि ने सकल शास्त्र कोपारा । देखि लियो है भली प्रकारा ॥
अहै सुरेश धर्म हित कारी । हमकहँमिल्योयतनकरिभारी ॥
ऐसहु रुचै जो तुम को नाहीं । तेहि सम और नहीं जगमाहीं ॥

तद्यपि बहुजनहितजेहिमाहीं । सो कारज करि हौं मैं नाहीं ॥
बहु प्रतिकूल भयेजेहिकाजा । अब मम उर संदेह विराजा ॥
तैसो और नहीं जग माहीं । यह सुनि भई सहनता नाहीं ॥
पुनि सबहुन बहु विनय सुनाई । कहो सनंदन की चतुराई ॥
ब्रह्मचर्य सों करि संन्यासा । इन को जग उत्कर्ष प्रकासा ॥
राउर आयसु जो ये पै हैं । भाष्य वार्तिक रुचिर बनैहैं ॥
सुनि शंकर तबआयसुदीन्हा । तद्यपि यह विभागतहँकीन्हा ॥

सो० करैं सनंदन जाय नन्दपिता जो जनन को ।
निजप्रबंधमनलाय विवरण हमरीभाष्यपर ॥

वार्तीक दूजो नहिँ करि हैं । मंडन मम अज्ञा अनुसरिहैं ॥
वृत्तिप्रतिज्ञाऔरहिकीन्ही । जिन नवीन दीक्षा है लीन्ही ॥
सबशोंयहिविधिशिवकहिदीना । आयेजबहिं सुरेशप्रवीना ॥
तब उनसो यह वचनसुनावा । तात करहु जनि वृत्ति उपावा ॥
करि अनेक संशय मनमाहीं । हमरे शिष्य सहत हैं नाहीं ॥
कर्मपक्ष तुम्हरो ते जानहिँ । हमरेशिष्य संदेह बखानहिँ ॥
जोपै सुरे प्रवर वृत्ति बनैहैं । कर्म परायण अर्थ जनैहैं ॥
तुर्या*अस श्रुति संमत नाहीं । यह निश्चय तुम्हरेमनमाहीं ॥
तेहिते द्वार पाल तव द्वारे । घुसन देहिँनहिँ भिक्षुविचारे ॥

दो० ऐसी लोकप्रसिद्धि सुनि तिन्हैं न तव परतीति ।
कारजकरि वो नहिँभलो बहुतन के विपरीति ॥

मैं तुमकों सब लायक जानौं ।सन्मुखगुणकेहिभांतिबखानौं ॥
तेहिते करौं स्वतंत्र प्रबंधा । प्रथमहिँ जहँ न कर्मकीगंधा ॥
सो बनाय हम कहँ दर्शावो । शिष्यन को सँदेह मिटावो ॥
सूत्र भाष्य की वृत्ति सुहाई । दैव योराहा † नहिँबनिआई ॥
कहिसुरेशसनयहिविधिबानी । पावा कछुक खेद मुनिज्ञानी ॥
जब सुरेश अस आज्ञा पाई । कियो यत्न निजआश्रमआई ॥

छं० नैष्कर्म्यसिद्धिबनाय गुरुपहँयोसुरेशवर लेगये ।

* संन्यास † कष्ट

श्रीशंभु सोवरग्रंथ रुचि अरु प्रेमसन देखतभये ॥
सहयुक्तिआद्योपांत निःक्रियतत्त्वको वर्णनजहां ।
सोदेखिमुनिवरलह्योअतिशयतोयअरुआनँदमहां॥

सो० औरन हूँ दर्शाय शंका मेटी सबन की ।
विस्मय गयो समाय सबलोगनके हृदयमहँ ॥

सबनकियोनिश्चयमनमाहीं । इन समान ज्ञानी कोउ नाहीं ॥
अबहूँ परम हंस बहु ग्रंथा । रुचिसों सुनहिँलेहिंपुनिसंथा ॥
जहँ निः कर्मक पुरुषस्वरूपा । होय जहाँसिधि मुक्तिअनूपा ॥
तेहि निः कर्मसिद्धि जनगावा । विदित भयोजगनाम प्रभावा ॥
दीन्हो शाप सुरेश्वर भारी । विघ्नकियोजिनयुक्तिविचारी ॥
यद्यपि करिहैं वृत्ति उदारा । नहिँ ह्वैहै महि तासु प्रचारा ॥
यहि विधिग्रन्थसतर्पनकीन्हा । अरुविश्वास सबनकहँदीन्हा ॥
श्रीगुरु सनपुनि विनयसमेता । कह्यो सुरेश्वर वचन सचेता ॥

दो० नहिँ प्रसिद्धहितलाभहित नहिँपूजासन्मान ।
यह प्रबंध मैंने रचो हेतु कहौं भगवान ॥

नहिँ गुरु आज्ञा लंघनकीजे । प्रेम सहित माथे धरि लीजे ॥
जोपै गुरु के वचन मिटावा । गुरु शिष्य को रहै न भावा ॥
प्रथमहिँजोप्रभुवचनबखाना । तासु उतरु बरणौ भगवाना ॥
पहिले कर्मि रह्यो मैं भारी । सो मैं अब नाहीं त्रिपुरारी ॥
लोकहु पुरुष युवा जब होई । करै कि बालक क्रीडा सोई ॥
वृद्ध भये नहिँ युवा सुभावा । जगमें काहूपर बनि आवा ॥
जबजब जहँ जहँ जोकोउजाई । जाय सोपहिलो बास बिहाई ॥
गृहीन मैं सुनि करहु विचारा । निज प्रभु कहँसंशयमहँडारा ॥
प्रथमहि गृही रहे ते नाहीं । करि विचार देखैं मनमाहीं ॥
गृहको बन को मन है कारन । पुनि मनहै बंधक अरुतारन ॥
गृही होहु अथवा संन्यासी । मन विशुद्ध सब ठौर सुपासी ॥
सोहिं संमत संन्यास न होतो । बादप्रतिज्ञाकेहिविधिकरतो॥

दो० उभय प्रतिज्ञा बाद महँ जैसी भई सुजान ।
सोप्रसंगकछु गुप्तनहिँजानहिँ सब विद्वान ॥
सो० जोन होत संन्यास हमको संमत नाथतव ।
कहतोमैं प्रभुपास मोहिँ नहीं अनुकूलयह* ॥
ममगृह भिक्षु ज्ञान नहिँपावा । जो लोगनयहप्रभुहिसुनावा ॥
शिष्यसहितनित प्रभुसेवकाई । कौनि भांति होतीपहु नाई ॥
लोगयथारुचिऐसेहिबकहीं । तिनकोमुखकोउढांपिनसकहीं ॥
जानि बूझि लीन्होंसंन्यासा । भाविराग सोंन्यासप्रकाशा ॥
निर्णय हेतु वाद हम ठाना । तव उपदेश भयो शुभ ज्ञाना ॥
जबगृहस्थ में रह्यो यतीशा । न्यायादिकमहँ ग्रन्थमुनीशा ॥
महा अर्थ पूरणारुचि लीन्हे । अबअभिलाषसकलतजिदीन्हे ॥
अब विहाय श्रीपद सेवकाई । नाथन मोहिंकछु औरसुहाई ॥
छं० अद्वैत श्रद्धाबद्ध आदर सुजनधी महँजो रही ।
दुर्वादिगर्वानलविपुलतरज्वालमालासोंदही ॥
निजगिरामृतसनसींचिश्रद्धाबहुरिप्रभुहर्षितकही ।
तिनआपुकीकहौंकौनसेवाकरिसकेगुरुवरखरी ॥
दो० असकहि वचन मौनगहि रहेसुरेश सुजान ।
तिनके द्वारा वार्तिक चाह्यो श्री भगवान ॥
सोनबनो तेहिहेतु ते शोक अग्नि उरमाहिँ ।
उपजीज्ञानसलिलप्रभु शीतलकीन्हीताहि ॥
तबशंकर अस हृदयविचारा । बनै उपनिषद वृत्ति उदारा ॥
नूतन ग्रन्थ सुरेश बनावा । जो श्री गुरुवर कहँ दर्शावा ॥
भावभरा बहु कोमल बानी । अति गँभीर परमारथसानी ॥
प्रथम पक्ष खण्डन अनुसारा । प्रस्थाप्यो सिद्धांत उदारा ॥
देखि शम्भुअतिशय हर्षाने । श्रीमुखबहुगुणआपु बखाने ॥
पुनि बोले मुनिवर विज्ञानी । अहै सत्य सुरपतितवबानी ॥
तैत्तिरीय उपनिषद सुहायो । वृहदारण्य तथा मुनिभायो ॥

* प्रतिज्ञा

इन दोनहुंकी वृत्तिबनावहु । दुष्टवचनसंशय जिनि लावहु ॥
मोरिप्रीतिअरु जनउपकारा । दूसरजनिकछु करहुविचारा ॥
चन्द्र सरिस कीरति जग पैहो । जो मम आज्ञा मानिबनैहो ॥
पहिले कैसो विघ्न अपारा । अबकी बार नहीं होने हारा ॥
करिसंकल्प जाहु निज वासा । करहुवेगिदुइ वृत्ति प्रकाशा ॥

सो० निजगुरुआज्ञापाय विज्ञशिरोमणिधर्मनिधि ।
लीन्हीउभयबनाय गुरुआज्ञागुरुतरविरिखि ॥

रचिविचित्रगुरुवरकहदीन्ही । भक्तिसहितबिनतीबहुकीन्ही ॥
पद्म पाद आज्ञा अनुसारा । शारीरक वर भाष्य उदारा ॥
पंच पादिका पहिलो भागा । टीका तासु सहित अनुरागा ॥
मुनि वर सूत्र विवेचन हेतू । टीका नाम ग्रन्थ पति केतू ॥
निजकीरतिडिंडिमसीकीन्हीं । गुरुदक्षिणा सरससो दीन्हीं ॥
देखि ग्रन्थमुनिकीन्हविचारा । शंकर गृह गतिके अनुसारा ॥
रहसि*सुरेश्वर सन प्रभुकहेऊ । यद्यपि तात ग्रन्थयहभयऊ ॥
ख्यातिपांचचरणन कीह्वैहै । चारिहु सूत्र प्रसिद्धी पैहै ॥
तुम प्रारब्ध कर्म बश जाई । वाचस्पति ह्वैहौ द्विजराई ॥
हम शारीरक भाष्य बनाई । रचि हौ टीकातासु सुहाई ॥
सो रहिहै जौलौं संसारा । सुनहु सत्य वरदान हमारा ॥
यह वरदान सुरेश्वर पावा । हर्षित गुरुचरणनशिरनावा ॥

दो० आनँदगिरिआदिकमुनिन शंकरकह्योबुलाय ।
निजनिज मतिअनुसारसब करहुग्रन्थहर्षाय ॥

छं० असपायगुरुशासनसुहावन तेसकल उद्यतभये ।
निजबोधपूरणज्ञाननिधिसबभांतिगुणगणसोंछये ॥
गतभेदश्रुतिसंमतमनोहरग्रन्थनिर्मिततिनकिये ।
तेतत्त्वपंकजकेप्रकाशक रविसरिसजगमहँ उये ॥

इतिश्रीशंकरदिग्विजयेवार्त्तिकांतब्रह्मविद्याप्रवर्त्तन
परास्त्रयोदशः सर्गः १३ ॥

---

* एकांते

॥ श्लोक ॥ तीर्थेश्वरंकामप्रदंमहेश्वरंगिरापतिंतर्थिकरंसुखाकरं । यतिप्रियंतर्थिफलप्रदंहरंनमामितंमोक्षपदंयतीश्वरं १

एकबार करिविनय बड़ाई । पद्मपाद यह गिरा सुनाई ॥
बहुत दिनन सोंहै मन मेरे । तीरथ पावन महि बहुतेरे ॥
देश परम कौतुक युत नाना । है इच्छा देखौं भगवाना ॥
सेवक पर करुणा प्रभु कीजे । ह्वै प्रसन्नमोहिं आज्ञा दीजे ॥
गुरु कह्यो मम ज्ञानी उरधरहू । पुनःसुखेन यथा रुचिकरहू ॥
गुरु समीप करिहै जो वासा । सोई तीरथ केर निवासा ॥
गुरुचरणोदक वारि सुहावा । सो पावन तीरथश्रुतिगावा ॥

दो० गुरु उपदेश रीति सों आतमदृष्टि जो होय ।
परम सुखदकल्याण प्रद देवदृष्टि है सोय ॥

श्रीगुरुनिकट वासनित कीजै । और देश महँ चित्त न दीजै ॥
राह चलेश्रम अति शयपावै । तृषा क्षुधा अरु नींद सतावै ॥
श्रम तन मन स्थिर ह्वै पावै । तेहिसोनहिंविचारवनिआवै ॥
ज्ञान भये लीजै संन्यासा । अथवा जानन हितहै न्यासा ॥
जीवन्मुक्ति सुखा रथ होई । विद्वन्न्यास कहावै सोई ॥
तत्त्वं पद शोधन अनुरागी । करैं द्वितीय पास बड़ भागी ॥
सोविचारिकियेन्यासयथारथ । घूमतकालजायविनस्वारथ ॥
कहुं जलमिलै कहूं पुनिनाहीं । तरुतर आसन कहुंबनमाहीं ॥

दो० शय्या थल ढूढत कहूं कवहूं जलमें चित्त ।
पथिक सदा सुस्थिर नहीं बढै बायु कफ़पित्त ॥

ज्वर आदिक मगमें ह्वैजाई । तब सूझै नहिँ एक उपाई ॥
जात बनै नहिं ठहरत बनई । संगी तासु संग पुनि तजई ॥
मज्जन पूजन नहिँ बनिआवा । नहिँ शुभशौचयोगमनभावा ॥
कहँ भोजन कहँ मित्र समागम । कहँकहुँ होयशाकलौंदुर्गम ॥
गुरु बाणी को उत्तर नाहीं । तदपि कहौं आई मनमाहीं ॥
गुरु ढिग वास श्रेयप्रद भाषा । सत्य कहाप्रभुसुनुअभिलाषा ॥

बिन देखे नाना विध देशा । थिर नहोयमनहृदयविशेषा ॥
ऐसे सब आवहिं नहिं देशा । जलथलको जहँहोयकलेशा ॥
सुख बिनपुण्यमिलैकहुँनाहीं । करि विचार देखोमनमाहीं ॥
मारग आगमन सबमहि माहीं । यदपि होयदुखतौक्षतिनाहीं ॥
दो० प्रथम जन्म अथ उदय जबहोय रोगन संदेह ।
अहो होय पर देशमें देह तथा निज गेह ॥
सो० जब आवत है काल बनैन कौमिहु देश में ।
फँसे मोह के जाल ऐसो मानै मूढ़ जन ॥
देव दत्त बाहर तन त्यागा । घरहोतो नहिं मरत अभागा ॥
किये नाम मन्त्रादिक नाना । न्यूनाधिक गृह पंथ विधाना ॥
देश काल व्यव हारविचारी । चलिहैं मारग विधिअनुसारी ॥
शौच व्यतिक्रम पाप नलागा । जो जानै अस धर्म विभागा ॥
जबलौं रहै दैव अनु कूला । बनहूं में न होय कछु शूला ॥
भोजन बसनरुचिरमिलिजाई । हैगो जबलौं दैव सहाई ॥
दैव भयो जबहीं प्रतिकूला । नर पावै तबहीं सब शूला ॥
गृह सों तीरथ हित चलिजाई । तीरथ करि आवै सुखपाई ॥
घर बैठे पुनि कोउ मरि जाई । दैव योगसुख दुखअधिकाई ॥
दो० देशकाल पूरण सदा सकल रहित निरुपाधि ।
देखहिं ब्रह्मानंद जे तिन कहँ सदा समाधि ॥
जहँजहँ चित्त होय एकतीरा । तहँतहँसुखसमाधिमुनिधीरा ॥
तीरथ सों सब पाप नशाई । मन निर्मल अस्थिर हर्षाई ॥
कौतुक युक्त देश बहु देखी । हृदय होय प्रभु हर्षविशेखी ॥
सज्जन संगति बहु दुख हानी । तीरथ सेवा कोहि न सुहानी ॥
अटन करतपंडितमिलिजाहीं । संगति होहि नाथतिनपाहीं ॥
बुध बुधजन को मित्र सुहावा । खल मित्रता न थिरतापावा ॥
जो विदेश वासी मन माहीं । ध्यान करै सो जनु गुरुपाहीं ॥
भक्तिहीन तीरहु किन रहई । गुरुसों अधिक दूरसोंअहई ॥

सज्जनसज्जनमिलिइकसाथा। शनै शनैः ते होहिँ सनाथा॥
दो० प्रौढ़ बुद्धि जब होय प्रभु लहै विवेकी वृद्धि।
हेयगुणन छोड़ै सदा इहि विधि पावै सिद्धि॥
अस तुम्हार हठ तीरथ माहीं। भली बात मैं रोकत नाहीं॥
मन थिरताहितप्रथमनिवारा। अब सुनिये उपदेश उदारा॥
मगमें बहुत चलब दुख हेतू। सोमतिकरि औ सज्जनकेतू॥
एक राह तीरथ की नाहीं। सकल थलहिबहुमारगजाहीं॥
जेहि मग चोर बाघ भयहोई। जायहु कबहुं न मारगसोई॥
जहँ बहु विप्रन केर निवासा। करि तहंतहं तुमआओवासा॥
द्विज वर जहँनिवासपुनिनाहीं। एकहु राति बसहु तहं नाहीं॥
सज्जन संगति मन सुख दाई। ब्रह्म ज्ञान की कथा सुहाई॥
तहँ नित नूतन होय प्रकाशा। परम हर्ष प्रद समनप्रयाशा॥
भव भय छेदिनि कथाअनूपा। संसृति श्रम नाशनितरुरूपा॥
जिनके सुनत तृषा सब बहई। तैसेहि क्षुधा कलंक न रहई॥
सतसंगति सब गुन की खानी। कछुक दोषसोकहहुँबखानी॥
ताप देह जब आवहि अंता। प्रगटहिं तेहिछिनदुःखअनंता॥
प्रथमहि बहु सुखसंगतिमाहीं। कौनि वस्तु दूषित जगनाहीं॥
जलको लो संगृहनहिं नीको। सो पुनि ताप बढ़ावत हीको॥
है संग्रह सर्वस्व विनाशक। परिव्राज को विघ्न प्रकाशक॥
इष्ट देस जब पहुं चहु जाई। तहां वास करिओ सुखपाई॥
दो० बीचबसे है हानि बहु कारज लाभ न होय।
मूल नाशहै इष्टथल पहुँचिसकै नहिं सोय॥
मारग महँ तस्करमिलिजाहीं। वेषरुचिरपहिचानिनजाहीं॥
पुस्तक बसन चुरावन लागी। रहहिँ संग मानहु अनुरागी॥
तिनकी तात परीक्षा करिओ। गतविश्वासलोगपरिहरिओ॥
यति थल जहँ देखौ तहं जाहू। पूजहु तिनकहँसहितउछाहू॥
योजन भरि लौं जहँ सुनिपैओ। दर्शन हेतु अवशि तुमजैओ॥

नतरु व्यतिक्रम सो अघ होई । श्रेय काज निष्फलकसमोई ॥
यतिवर जहँ कछुआपदनाहीं । करहु प्रीति ऐसे मतमाहीं ॥
नहिँ प्राकृत जन सेवन करहू । राग द्वेष मनमें नहिँ धरहू ॥
विचरहु सम्मत सुखी सयाने । निज आनँद मंगल हर्षाने ॥
गुरु वचनामृतयहिविधिपाना । करिके गवन्यो मनहर्षाना ॥
दो० पद्म पाद को बिदा करि शंकरसहित हुलास ।
कछुदिनतेहिगिरिमहँकियो शिष्यनसहितनिवास ॥
योग प्रभाव शक्ति भगवाना । मातु प्रयाण कालप्रभुजाना ॥
शिष्यन को सब कथा सुनाई । व्योम पंथ लीन्हो सुखदाई ॥
तुरतहिपहुँचिजननिकहँदेखा । अतिआतुरअरुविकलविशेषा ॥
पुनिमातहिप्रभुकीन्हप्रणामा । जननी देखो सुतसुख धामा ॥
यथा मेघ ग्रीषम संतापा । मेटि देहितिमिगारिप्रतापा ॥
यदपि असंग शंभु अविनाशी । तदपिसदा निज भक्तउपासी ॥
सकल मोह भ्रम मेटन हारे । शंकरयहिविधिवचन उचारे ॥
तव प्रिय सुत समीपहैं आवो । अबदुख अपनो दूरि बहावो ॥
सब प्रकार निज मन हर्षावो । निज सेवा कछुमोहिँ बतावो ॥
बहु दिनपर देखानिज बालक । सबगुणयुतसमर्थश्रुतिपालक ॥
मन प्रसन्न बोली स्वर मंदा । सुवन आय काटो दुख फंदा ॥
कुशल सहित मैं तुम कहँदेखा । यहितेअधिकनकाजविशेषा ॥
अति जीरण तनुत्यागन योगा । होय जबहिँ ममदेहवियोगा ॥
दो० क्रियासोरि विधिसन करौमोहिं उत्तम गतिदेहु ।
सुनि माताके वचन ये शंकर सहित सनेहु ॥
निर्गुण ब्रह्म कीन्ह उपदेशा । मायामय सबरहित विशेषा ॥
अप्रमेय अरु मान बिहीना । स्वप्रकाशअभय संशय क्षीना ॥
परम सनातन आदि अरूपा । हस्तादिकन हिंपरमअनूपा ॥
भीतर बाहर सबदिशिकाला । गगनसरिसव्यापकगतजाला ॥
जन्मादिक बर्जित सुखराशी । ब्रह्मनिरामयअजअविनाशी ॥

नहिं सूक्षमनहिं थूलविगतभय । ज्ञानरूप जो ब्रह्म अनामय ॥
रमै न मम मन निर्गुणमाहीं । तेहितेसगुणकहौ मोहिंपाहीं ॥
सो० सुनि माताके बयन गिरिजापतिकीप्रीतिसों ।
शंकर करुणाअयन करनलगे स्तुतिविमल ॥
स्तुति । अनाद्यंतमाद्यंपरंतत्त्वमर्थं । चिदाकारमेकंतुरीयंत्वमेयं ॥
हरिब्रह्म मृग्यं परं ब्रह्म रूपं । मनो वागतीतं महःशैव मीडे ॥
स्वशक्त्यादिशक्त्यंतसिंहासनस्थं । मनोहारिसर्वांगरत्नादिभूषं ॥
जटाहींदु गंगास्थिशंपाकमौलिं । पराशक्तिमित्रं नमः पंचवक्त्रं ॥
स्वसेवासमायातदेवासुरेंद्रा । नमन्मौलिमंदारमालाभिषिक्तं ॥
नमस्यामिशंभोपदांभोरुहंते । भवांभोधिपोतंभवानीविभाव्यं ॥
जगन्नाथमन्नाथगौरीशनाथं । प्रपन्नानुकंपिन्विपन्नार्तिहारिन् ॥
महःस्तोममूर्ते समस्तैकबंधो । नमस्ते नमस्ते पुनस्ते नमोस्तु ॥
महादेव देवेश देवादि देव । स्मरारे पुरारेयमारे हरेति ॥
ब्रुवाणःस्मरिष्यामिभक्त्याभवंतं । ततोमेदयाशीलदेवप्रसीद ॥
अयंदानकालस्त्वहंदानपात्रं । भवान्नाथदातात्वदन्यंनयाचे ॥
भवद्भक्तिमेवस्थिरांदेहिमह्यंकृपाशीलशंभोकृतार्थोऽस्मितस्मात
त्वदन्यःशरण्यःप्रपन्नस्यनेति । प्रसीदस्मरन्नेवहन्यास्तुदैन्यं ॥
नचेते भवद्भक्त वात्सल्यहानि । स्ततोमेदयालोदयांसंनिधेहि ॥
अकंठे कलं कादनं गे भुजंगा । दपाणौकपालादभालेनलाक्षात ॥
अमौलौशशांकादवामेकलत्रा । दहं देव मन्यं न मन्येन मन्ये ॥
दो० सुनि स्तुति गिरिजा रमण ह्वै प्रसन्न सुर भूप ।
पठये अस्वहि लेन हित अपने दूत अनूप ॥
शूल पिनाक धरे ते आये । नर कपाल अरु भस्म रमाये ॥
जननी कह्यो तात बलि जैहौं । इनके तौ मैं संग न जैहौं ॥
तव निहोरि दूतन लौटारी । माधव की स्तुति अनुसारी ॥
नागराज तन सेज सुहाई । कमला पद सेवै सचुपाई ॥
नीला वसुधा हर्ष बढावैं । दुहुं ओरते चँवर डोलावैं ॥

कर अंजलि कीन्हे छवि छाजे । सन्मुख विनतानंद* विराजे ॥
शंख१गदा२धनु३चक्र४सुहावा । पंचम५खड्ग नाथमनभावा ॥
मूरति मान अस्त्र चहुं ओरा । देखहिं नाथ भौंह की कोरा ॥
श्याम तमाल वरण प्रभु केरा । अतिशय तेज जाय नहिं हेरा ॥
रत्न किरीट अधिकशिरसोहै । बिधु मुख हँसन कामममनमोहै ॥

दो० इन्द्र नील मणि शैलपर मानहु उदित दिनेश ।
कृपा करहु सो जन सुखद दीना नाथ रमेश ॥

सुत वर्णित यहु माधव रूपा । मन में धारण कीन्ह अनूपा ॥
कमलनयनमूरतिकरिध्याना । योगीप्रवर सम त्यागे प्राना ॥
शरद चंद्र निर्मल छवि हारी । अतिविचित्रचंचलध्वजधारी ॥
अस विमान लै तेहिक्षण आये । श्री कमलापति दूत सुहाये ॥
वैमानिक शुभ मूरति देखी । जननीकहँ भयो हर्ष विशेषी ॥
करि सुतको बहु भांति बड़ाई । चढ़ि विमान देवनशिरनाई ॥
करि सन्मान देव तेहि लाये । मारगके सब लोक दिखाये ॥
पवनतरणिविधुदामिनिलोका।वरुणइंद्रविधिलोकविशोका॥
सब लोकन देखत हर्षाता । पहुंची जाय परम पद माता ॥

दो० माता की निजकर क्रिया कियो चहैं मनलाय ।
शंभु बुलायो बंधुको ते सब कहैं रिसाय ॥

तुम्हहिंकर्मकरकवअधिकारा । कीन्हेंभलोस्वरूपविचारा ॥
केवलकपटवेषधरिलीन्हा । यहिविधिबहुनिंदनतिनकीन्हा ॥
कोउ शंकरके तीरन आवा । भावी विवश मोह उरछावा ॥
पुनि मांगी पावक बहु बारा । सोउ बाणी नहिंसुनैं गँवारा ॥
तबहिँ कोप शंकर उर आयो । तिनको प्रभुयहशापसुनायो ॥
तुमजोअति निंदा मम कीन्ही । बहु मांगेपावक नहिँदीन्ही ॥

दो० वेद वाह्य तुम होहु सब चिता होहिँ तवगेह ।
यती लेहिँ नहिँ भीखतवजिन अवतजो सनेह ॥

गृहसमीप करवा सुर राई । धरिनिजकरसों चितालगाई ॥

* गरुड़

तहँ माता काया धरिदीन्ही । अरणोसअपावकप्रभुकीन्ही ॥
दाह क्रिया सब आपु सँवारी । यथा मातु सन वाचा हारी ॥
तबसो तिन घर निकट मसाना । अबलौंहोहिँसकलजगजाना ॥
समरथ को जेहि काहु सतावा । यहजगमें न कौनसुखपावा ॥
शांत जानि पीड़ा नहिँ दीजे । समरथसोंनितप्रतिभयकीजे ॥
यद्यपि शीतल होय सुभावा । पीड़ा भये क्रोध जग आवा ॥
शीतल सुखदायक अतिचंदन । प्रकटहि मथे तुरंत हुताशन ॥
यतिवरको न कर्मअधिकारा । कैसे जननी काज सँवारा ॥
नहिं संदेह करो यहि माहीं । दोष कछू समरथ को नाहीं ॥
परशुराम जननी अरु भाई । मारे सकल सनेह बिहाई ॥

दो० वृक को दीन्हे पुत्र निज मुनि लोगन जग जान ।
निन्दा दोष न भयो कछु बंदी वेद पुरान ॥

यहिविधिप्रभुजननी गति पाई । जैसी गति चाहैं मुनि राई ॥
जहां जाय पुनि पतन न होई । आनँदमय पुनि है गति जोई ॥
पुनि दुर्मत नाशन उर आना । कियो दिशा जयको संधाना ॥
जलज चरण की राह निहारैं । सुहृद सहायकताहि विचारैं ॥
पद्म पाद प्रभु आज्ञा पाई । प्रथम उदीची दिशि महँआई ॥
बहुत तीर्थतहँ सेवन कीन्हा । पुनिदक्षिणदिशिमहँपगुदीन्हा ॥
मुनिअगस्त्य सेवितसो आशा । जिनको जग बहु तेज प्रकाशा ॥
पर संभव जिन कोस्तुति गावा । सुमिरण ते सब रोग नशावा ॥
बिंदुसरिसजलनिधिकियोपाना । सबप्रकारसमरथभगवाना ॥
काल हस्ति ईश्वर तहँ देवा । करैं सुरासुर जिनकी सेवा ॥
सुभग नाग भूषण तन सोहै । चंद्र कला अतिशय मन मोहै ॥
बायें श्री गिरि सुता बिराजा । करुणा रस पूरण सुर राजा ॥
इन्द्रादिक सुर जे जे करहीं । दर्शन पाय मोद मन भरहीं ॥
सुबरण मुखरी सरित सुहाई । शिवमंदिर समीप बहिआई ॥
तहँनिमज्जिशिवदर्शनकीन्हा । करिप्रणामचरणोदकलीन्हा ॥

प्रेम कुसुम प्रभु चरण चढ़ाई । सानन्द विनती बहुत सुनाई ॥
तीर्थाटन की आज्ञा मांगी । शिवमन पद्म पाद अनुरागी ॥
काञ्ची पुरी पुनीत सुहाई । तहँ यति वर पुनि पहुंचे जाई ॥
दो० वृद्ध कहैं यह लोक में तरो चहैं संसार ।
तेहि पुरसम पावनन कोउ औरमुक्ति को द्वार ॥
विश्व नाथ शंकर गौरीशा । तहां बसैं त्रैलोक क्षितीशा ॥
श्री गौरी उर कीन्ह निवासा । मानहुं करहिं हृदय जिज्ञासा ॥
अति प्रारब्ध होय तब पावैं । दर्शन तासु वृद्ध अस गावैं ॥
करिप्रणाम तुरतहिँ यतिराई । कल्लालेश भवन महँ जाई ॥
आदि अंत बर्जित श्री नाथा । करि दर्शनअतिभयो सनाथा ॥
पुंडरीक पुर पहुँचो जाई । नृत्य करैं जहँ शिव सुख दाई ॥
आदि प्रकृतिश्रीगिरिजारूपा । देखहिँ शिवको नृत्य अनूपा ॥
दिव्यदृष्टिजिनमुनि जन पाई । जन्म मृत्यु भय भेद विहाई ॥
ते सब दिन अति देखहिँ जाई । नृत्य विनोद महा सुख दाई ॥
दो० पद्म पदादिक भिक्षु गण करी प्रश्न द्विजपाय ।
तीरथ इहां अनूप जो होय सो देहु सुनाय ॥
शंकर भक्तिरसिक द्विजकहई । सुनो इहां जो तीरथ अहई ॥
शिव गंगाको सुमिरणकीन्हा । सुरसरि तुरतहिँ दर्शनदीन्हा ॥
देव सरित की धार सुहाई । तब सों सदा बहै सुख दाई ॥
शिव आज्ञा सुरसरि जो आई । शिव गंगा तेहिहेतु कहाई ॥
औरहु एक हेतु मुनि कहहीं । हर लीला जे जानत अहहीं ॥
तांडव करिशत शिवकहँ देखी । शिवा*लह्यो मनप्रेमविशेषी ॥
अस नाशन हितसुरसरि रूपा । गहिलीन्हों हिम सुतअनूपा ॥
शिवा भई जो गंग सुहाई । शिव गंगा संज्ञा शुभ पाई ॥
दो० गिरिजापति शिर पर जटातेहिपर सुरसरिधार ।
नृत्यसमय महि गिरि परे सुर ध्वनि बूंद अपार ॥
तेहि कारण शिव गंगतेहि कहैंविपश्चित लोक ।

* पार्वती

यहि में मज्जन किये ते मिटैं महा अघ शोक ॥
नित नहाय शिव दर्शन करई । क्रम सों सब मनको तमहरई ॥
जबहि होय निर्मल मनपावन । देखहि शंकर नृत्य सुहावन ॥
अतिमहिमाशिवदिनकोजाने । नरजड़मतिकेहिभांतिबखाने ॥
मुनि तीरथ महिमा हर्षाई । शिव पूजे शिव गंग नहाई ॥
पुनि मुनि आगे कीन्हपयाना । रामेश्वर दर्शन उर आना ॥
बीचहि कावेरी सरि पाई । पुलिन जासु सब भांति सुहाई ॥
पद्म नाभ जहँ कीन्ह निवासा । क्षीर सिंधु को तजिप्रभुबासा ॥
करिसरिमज्जनहरिपदध्याना । पद्म पाद हरि भक्त सुजाना ॥
बहुरि चले मारग मन दीन्हे । बहुत शिष्य संडल सँगलीन्हे ॥
कछुक दूरि आगे जब गयऊ । निज मातुलगृहपहुंचत भयऊ ॥
बहु दिन पीछे दर्शन पावा । मातुलहृदय मोद अति छावा ॥
सुनि आगमन बंधु जन धाये । दर्शन पाय नयन जल छाये ॥
काहू देखि मोद मन भरेऊ । काहू तहां रुदन अति करेऊ ॥
ताहि देखि काहूहँसिदीन्हो । बालचरितकोउभाषणकीन्हो ॥

सो० अति प्रमोद वश एक भये न आवै मुख वचन ।
करैं सप्रेम अनेक मुनिवर की पग बंदना ॥

तहां जुरो बहु विप्र समाजा । सब घेरे बैठे यति राजा ॥
कह्यो बंधु जन तब हर्षाई । बहुतदिननपर दियहुदिखाई ॥
दरश लालसा नित उर माहीं । कर्म योग को अबलौं नाहीं ॥
है संन्यास सकल सुख मूला । जहां न कछु संसृतिदुखशूला ॥
पुत्र मित्र बाधा कछु नाहीं । नहिं नृपतस्कर भयमनमाहीं ॥
पुष्पित फलित वृक्षदुख पावैं । तथा धनी कहँ सकल सतावैं ॥
मन कुटुंबपालनमहँ जिनको । रजनीनींद आव नहिं तिनको ॥
कहँ तीरथ कहँ देवाराधन । कहां साधु सेवा पद बंदन ॥
सुना रहा राउर संन्यासा । आय विप्रगणकीन्हप्रकाशा ॥
यह बात को दिन बहु गयऊ । तीरथ मिस दर्शन तब भयऊ ॥

जैसे शकुनी तरु पर जाई । बसै तहां पुनि रैनि गँवाई ॥
होत प्रभात वृक्ष तजि जाई । नहिं मानै कछु विटप सगाई ॥
तथा देव मंदिर तरु छाया । बसहिँयती कछुमोहनमाया ॥
जैसे भ्रमर सुमन रस लेही । पादपको कछु दुख नहिँदेही ॥
तथा सार ग्राही नित यतिवर । स्वल्प स्वल्प यांचतहै घर घर ॥
यतिवर लहि वैराग्य सुहाई । आतम गति पावै सुख दाई ॥
होइ कलत्र अरु यह तन गेहा । मन संयम सुख बिन संदेहा ॥
प्रेम विराग सहित हर्षानै । पुत्र सरिस हैं शिष्य सयाने ॥
यहु सब साज यती ढिग रहई । जग में और वस्तु का चहई ॥
कामिनिको कबहूं सुखनाहीं । करैं मनोरथ बहु मन माहीं ॥
नारिचाहनिशिबासरकरहीं । दार मिले सुत परमन धरहीं ॥
॥ दो० जब नहिँ पावहिँ होय दुख पाये होहि वियोग ।
॥ काम विवश नर को सदा सब प्रकार दुख भोग ॥
है विरक्ति सबविधि सों नीकी । तासु मूल निर्मलता हीकी ॥
तेहि को मूल सदा सत संगा । तुम समान जे संत असंगा ॥
पर उपकार हेतु नित फिरहीं । लोक दृष्टि जड़रूप विचरहीं ॥
नाम जाति नहिँ काहू जाना । रहित भेद परि पूरण ज्ञाना ॥
लोक अनुग्रह तीरथ करहीं । यथा लाभ भोजन अनुसरहीं ॥
तीरथ करैं ज पावन हेतू । जिनके हृदय सदा वृषकेतू ॥
ज्ञानप्रभावव्यापतायोजिनको । तीरथसमचरणोदक तिनको ॥
कृपाकरौ कछुदिन अब रहहू । पातक दुःख हमारो दहहू ॥
तब दर्शन अति मोद बढ़ावा । चकितहृदयसबकेअसआवा ॥
हैं असंग जैहैं न सँदेहू । यहु भावी दुख चिधिजनिदेहू ॥
॥ छं० सतक्लेशकोहै कोशजो अरु पापकोआलय महा ।
॥ प्रै शून्यकोघरसया भासणा रहतहैनिशिदिन जहां ॥
। रहि ईर्षापहिं साजीव की दुर्जन समागम सों भरो ।
॥ यहि भांति के घरमें रहत हम नाथ हमरो तम हरो ।

दो० सुनि लोगन के बयन तब उत्तरु दीन्ह यति राय॥
प्रियसंयोग वियोग नित होहिँ काल निज पाय।

प्रिय वियोग संगम जब होई। रहै बिकार रहित बुध सोई॥
जो गृहस्थ निज धर्महि पाला। सबआश्रम करहोयभुआला॥
जब युग यामदिवस चढ़िआवै। तथा क्षुधाजब अधिकसतावै॥
अतिथि आययहु बचनसुनावै। क्षुधा हमारी कौन नशावै॥
जोदुख तासु निवारण करही। भूख पियासअतिथिकीहरई॥
तेहिको पुरायनकछुकहिजाई। एकबदन किमिकहौंबुझाई॥
सांझ प्रभात हुताशन सेवा। वेद पढ़ैं पूजैं गुरु देवा॥
ब्रह्म चारि कहँ क्षुधा सतावै। गृही गेह तुरतहि सोउआवै॥
पढ़ै सुनैं श्रुति द्विजवर उदारा। अथवा प्रणव मंत्र उचारा॥
जठरानल व्यापहि युगयामा। सोउचलिजाय गृहीकेधामा॥
बन बासी निशिदिन तपकरही। जेहिके अन्नउदरनिजभरही॥
लहैं अर्द्ध फल तप कर सोई। आधो तापस कहँ फलहोई॥
तीरथ ब्रती गृही घर आवै। जोपै तासु सेवा मन लावै॥
देह प्रयास न कछु बनि आवै। घर बैठे तीरथ फल पावै॥

दो० गृही धनीहै धन्य तर लहैं सकल धन पासु।
चोर भाव कोउ प्रीतिसों दानरीतिकोउतासु॥

कोउ तासु बल करि धनलेहीं। काहुहि आपुकृपा करिदेहीं॥
जो द्विजवर वेदज्ञ सयाना। तेहिसहँ बसहि देवजगजाना॥
करहि प्रसन्न गृही गुण वाना। तिन सबको मानहुसनमाना॥
जेस्वधर्म दृढ़ ज्ञान निधाना। सेये सबतीरथ विधि नाना॥
पर उपकार छांड़ि ब्रत नाहीं। ऐसेहु महापुरुष गृह माहीं॥
आवहिँ जोसेवा बनि आवै। गृही सकल तीरथ फलपावै॥
तीरथ रूप तासु गृह सोहा। गृही उदार तजै मन मोहा॥

दो० कतहुँ जायनहिँभवनतजिसबफलगृहमिलिजाहिँ।
धनीधर्म युत गृही लखि देव मनुज हर्षाहिँ॥

सूयकादि गृह में रहैं बाहिर मृगा श्वकुंतु।
गो अश्वादिक जीव बहु जीवहिं सब लघुजंतु॥
सबसों अधिक गृही मैं जानों। सत्यकहौं नहिं कपटबखानों॥
देह मूल पुरुषारथ साधन। अन्नमूलगावहिंतेहिश्रुतिगन॥
सब जीवन को अन्न मनोहर। धरो रहै नित गृहबासीघर॥
गृहपति शुभ तरुवर सम अहई। सब फलतेहिकेआश्रयरहई॥
हित उपदेश सुनहु मन लाई। आदर सों संदेह बिहाई॥
अभ्यागत पूजा नित करहू। आदर मान तासु अनुसरहू॥
यति पूजा तव कुल उद्धरिहै। अपमानअनहितअतिकरिहै॥
फलअभिलाष रहितनिज धर्मा। श्रुतिवर्णितसंध्यादिककर्मा॥
जो करिहौनितप्रति मन लाई। ह्वैहै मन निर्मल सुखदाई॥
छं० रागादि मन मल पंक सों सबभांति उरहमरोभरो।
जिमिबधूकुचतटहृदयपटपाटीर*सोंचहुँदिशिघिरो॥
तदपि हम सबयती यतिपति पदमजन पावनभये।
सबक्लेशहमरेक्षीणहैं नहिँजानकेहिदिशिकोगये॥
दो० यहि प्रकार उपदेश करि भिक्षा मातुल गेह।
करि बैठे मातुल कही बाणी सहित सनेह॥
शिष्य हाथ वर पुस्तक सोही। यहकर नाम सुनावहुमोही॥
सूत्र भाष्यटीका यहपावनि। हमहिँदिखावहुनिजमनभावनि॥
दै दीन्ही मातुल तब देखी। बुद्धिदेखि सुखभयोविशेषी॥
शुचि प्रबंध रचना उर आनी। भयो हर्ष तेहि पंडितजानी॥
सब मत को निराश तहँ देखा। निजमतखंडितभयोविशेषा॥
रहा प्रभाकर‡ मत अनुसारी। ग्रन्थ देखि मनभयो दुखारी॥
यद्यपि तेहि अतिमत्सरभयऊ। ऊपर मन अभिनंदन करेऊ॥
पद्म पाद तब कहहि सयाना। रामेश्वर चाहत हम जाना॥
ग्रन्थ भार तव गृह धरि जैहैं। तब मारगमें दुख नहिँ पैहैं॥
तुमकहँ जेहिविधिगोगृहप्यारे। तिमि पुस्तकहैं प्राणहमारे॥

* चन्दन ‡ मीमांसक

दो० अस कहि पुस्तक धरि चले जबहीं श्रीपति राय ।
भावी सूचक भये तब तेहि अशकुन समुदाय ॥
सो० बामूरु भुज नयन फरके सन्मुख छींक भै ।
सब जानत शुभाशयन कछु न गिनो अरु चलि दिये ॥
तब मातुल यह निजमन आनी । ग्रन्थ रहे मम मत की हानी ॥
खण्डन को मोमें बल नाहीं । तेहि ते यह आवै मन माहीं ॥
ग्रन्थ जराय करब में क्षारा । तब ह्वै हैं शुभ मत रखवारा ॥
पुस्तक सह गृह आगि लगैहैं । यहि विधि कबहुं अयश नहिं पैहैं ॥
गुरु मत रहै होहु गृह हानी । यह निज मन में निश्चय ठानी ॥
यह विचारि आपुहि गृह जारा । लगी अग्नि यह कीन्हि पुकारा ॥
लोक प्रकट यह सब जग जाना । तैसोइ माधव कीन्ह बखाना ॥
नतरु होय करतहि जो पापा । बक्ता हितासु दुगुन अघ०ग्रापा ॥
पद्मपाद चलि पहुँचत भयऊ । जहां फुल्लमुनि आश्रम रहेऊ ॥
सिंधु तीर धरि बाण शरासन । बैठे रघुबर डारि कुशासन ॥
तहां बैठि प्रभु कीन्ह विचारा । जाहुँ कौनि विधि सागर पारा ॥
बनचर शाखा मृग समुदाई । जल में इनकर बलन बसाई ॥
दो० ऐसो करैं विचार तहँ देखो अधिक प्रकाश ।
व्यापि रह्यो यहि जगत को जेहि लखि होत हुलाश ॥
शीतल तेज महा सुख दाई । आवत चलो राम समुहाई ॥
देखि लोग सब ह्वैगे ठाढ़े । सबके मन अति अचरज बाढ़े ॥
तेज मध्य शुभ युगल शरीरा । शिव गिरिजा सम दम्पति धीरा ॥
लोपा मुद्रा सहित मुनीशा । घट संभव लखि राम कपीशा ॥
आदर भाव सहित प्रभु लीन्हा । अर्घादिक दै आसन दीन्हा ॥
जबहि राम मुनिवर कहँ देखा । खेदत जो भा हर्ष विशेषा ॥
साधु दरश कर सहज सुभावा । होतहि सब परिताप मिटावा ॥
यथा भानु के होत प्रकाशा । तुरतहि होय महा तम नाशा ॥
सपत्नीक करिके मुनि पूजा । शिवा शंभु सम भाव न दूजा ॥

शिरसोंदुहुकहँकीन्हप्रणामा । कछुक देर चुप साधीरामा ॥
सीतापति पुनि वचन सुनावा । तुमहिँदेखिमैंअतिसुखपावा ॥
तुमहमकहँजनिपितुनरनाहा । मिले लही दुख सागरथाहा ॥
अबह्वैगे मम पूरण कामा । जो देखे तव पद सुख धामा ॥
दो० जबसों दिनकर बंश यह जगमें भयो अनूप ।
तबसों मुनिवर आजुलगि मम समान दुख रूप ॥
भयोनहीं भावी पुनि नाहीं । कारणसुनहु तातमोहिं पाहीं ॥
तिलकसमाज भयोसबनाशा । पुनि पायो दारुण बनबासा ॥
दंडकबन निवास हमकीन्हा । मायामृग प्रबोध हरिलीन्हा ॥
पुनि रावण सीताले भागा । बनअशोकमहँ बसहिसुभागा ॥
शोकवियोगदुखित सबगाता । रिपुगणमाहिंपरीबिलखाता ॥
तरि समुद्र सह अस कपीशा । लोकदुखद मारहुं दशशीशा ॥
जेहिबिधिजनकसुतामिलिजाई । नाथशोधिसोइकहहुउपाई ॥
तुमसमान प्रभु मम उपकारी । नहिंदेखौंकोउ निजदुखहारी ॥
मुनिवरकह्यो बचनममसुनहू । रामशोक लावहु जनिमनहू ॥
उभयबंश* महँ भूप घनेरे । जिन दुख पाये जग बहुतेरे ॥
कालपाय करिबिमलउपाई । सुखी भये सब शोक बिहाई ॥
दशरथ सुवन धनुर्द्धरनाथा । तथा अनुज बिजयीतवसाथा ॥
दो० बानरयूथप कोटिबहु तवसहाय रघुनाथ ॥
मति भाषौ ऐसे बचन जैसे कहै अनाथ ॥
तव सहाय संपति बहुतेरी । सुनि उपदेश गिरा पुनि मेरी ॥
बारानिधि दुस्तर मतिजानो । गोपदसम अपने उर आनो ॥
प्रथमहि पानकीन्हमैंसागर । बहुरिकरहुँशोकहहुगुणाकर ॥
जाहु सुखेन तात तुम लंका । मनमें कछु आनहुजनि शंका ॥
यहिबिधिममकीरतिजगमाहीं । दशरथनंदन तव यशनाहीं ॥
बांधहु सेतु जाहु पुनि पारा । तवह्वैहै तव यश संसारा ॥
शोकलकरि हरिलैगा सीता । मारहु दुष्टभुवन बिपरीता ॥

* सूर्य्य चंद्र

जगपावनि तव कीरतिह्वै है। जगमें हर्ष सहित सब गैहै ॥
यहिप्रकार मुनिवरमतपावा। रामचंद्र तहँ सेतु बँधावा ॥
जेहिमगुजाइ दशानन मारा। सीताले निजपुर पगु धारा ॥
सेतुबंध तीरथ श्रुति गायो। पद्मपाद तहँ जाय नहायो ॥

दो० रामेश्वर बंदन कियो कह्यो महातम गाय ।
सबकीश्रद्धाबढ़नहित शिष्यनकोसमुझाय ॥

रामेश्वर महिमा मुनि गाई। कोउ पंडित बोल्यो हर्षाई ॥
रामेश्वर कर करहु समासा। तीनिभाँतितिनकीन्हप्रकाशा ॥
लिंग प्रतिष्ठा जबहि कराई। नाम विचारि धरा रघुराई ॥
राम केर ईश्वर जो होई। रामेश्वर कहलावै सोई ॥
यहिप्रकार तत्पुरुष समासा। रामचंद्र यह अर्थ प्रकाशा ॥
रामचंद्रहैं ईश्वर जिनको। रामेश्वर कहिये नित तिनको ॥
ऐसो तव बहुब्रीह समासा। शिवनिजमुखसनकीन्हप्रकाशा ॥
जोई राम पुनि ईश्वर सोई। नाम तासु रामेश्वर होई ॥
इंद्रादिक जे देव सुजाना। कियो कर्मधारयतिनगाना ॥
सुनि समासबुधजनसुखपावा। बहुसराहि तेहिमाथनवावा ॥

दो० पद्मपादकछुदिनतहां कीन्हसप्रेमनिवास ।
अस्तुतिपूजाकरैंसब बहुबिधितासुसुपास ॥

शिष्य सहित लौटे हर्षाई। मननिर्मल सब क्षेत्र नहाई ॥
मातुल कुलमहँ पहुँचे जाई। पुस्तक दाह सुनी दुखदाई ॥
प्रथमहि कछुकखेदमनपायो। करिबिचार धीरजउरलायो ॥
मातुल गेह दाह सुधि पाई। पुस्तकभूलि कृपा उर छाई ॥
मातुल तवयहबचन सुनायो। कपट सनेह प्रकट दर्शायो ॥
तुमबिश्वास कीन्हहितजानी। पुस्तक भारभरे गृह आनी ॥
भेप्रमाद वश पावक दाहा। सोकछु भयोजोबिधिनेचाहा ॥
घरकोशोच मोहिंकछुनाहीं। पुस्तकशोच अधिक मनमाहीं ॥
पद्मपाद बोल्यो समुझाई। गैपुस्तक सम बुद्धिन जाई ॥

अस्रकहिकोन्हींबहुरिअरंभा । मातुतको तव भयो अचंभा ॥
दो० बुद्धिद्वैखिभयवशलखो कछुउपायजवनाहिं ।
बुद्धिबिनाशक बस्तुकछु मेलीभोजनमाहिं ॥
यतिवरदिव्यशक्तिरहिनाहीं । कहत लोगधरणी तलमाहीं ॥
यही बीच पहुंचे तहँ आई । पद्मपाद सँगके यतिराई ॥
पद्मपाद जिमि तीरथ करहीं । तेसब ताहि प्रकार बिचरहीं ॥
आश्रम महँ छोटे गुरु भाई । पद्मपाद कहँ लखि हर्षाई ॥
सबनप्रणामयथावत कीन्हा । पद्मपाद मुनि आशिषदीन्हा ॥
मिलत परस्पर बाढ़ी प्रीती । कुशल प्रश्न पूंछी जस रीती ॥
श्रीशंकर बाणी अति शोभा । जेहिसुनिशेषादिकमनक्षोभा ॥
तिनगुरुकेमन चरणबिराजें । जेहिलखिनवपल्लवछबिलाजें॥
धर्मादिक वह फलके दाता । तथा अविद्या नाश बिधाता ॥
दो० शिष्यन की वर मंडली तहँ सब भांति विराज ।
निज विचारिभिक्षादितजि जिन्हैंन दूसरकाज ॥
तीरथ व्रतधारी तहँ द्विजवर ।मिलेशंभुशिष्यनकहँश्रुतिधर॥
श्रीगुरुकुशलसुखदतेहिकहेऊ । सुनतसकलउर आनँदभयऊ ॥
गुरुबियोगअतिनहिं सहिजाई। खबरिपायचलिभेअकुलाई ॥
जानितहां निजगुरु सुखदाई । केरलदेश दीख तिनजाई ॥
केर महीरुह जहँ नभ गामी । तहँबिचरहिं श्रीशंकरस्वामी ॥
निज शिष्यनकीबाट निहारैं । महाविष्णु मंदिर पगु धारैं ॥
तहांसप्रेम हरिहि शिर लावैं । यहिप्रकार बहुबिनयसुनावैं ॥
अकथनीय राउर प्रभु माया । रचहुताहिसनभुवननिकाया ॥
जड़चेतन सब जगत सँवारहु । सृष्टिरूप लीला बिस्तारहु ॥
पूरण काम नाथ सुखधामा । जगसर्जन सोंनहिंकछुकामा ॥
सृष्टि रजोगुण गहितुमकरहू । तथा तमोगुणसों सब हरहू ॥
सत्ववृत्तिगहि सबजग रक्षा । लीलाहितन औरकछु इच्छा ॥
बिधिहरिहर सबनामतुम्हारे । सकलदेव तुमसोंनहि न्यारे ॥

बहुघट जलपूरण महिमाहीं । सबमहँ सम सविता परिछाहीं ॥
एक रूप तव परम अनूपा । सोइसब बिश्वभास बहुरूपा ॥
यहिबिधिहरिमंदिरयतिराई । प्रभुकीविनय करहिंमनलाई ॥

दो० ताहीक्षणसबशिष्यगण शिवढिग पहुंचेजाय ।
चिर बियोग सों दुखी सब हर्षेदर्शन पाय ॥

करिप्रणाम बहुबिनयसुनाई । सुखीभये गुरुआशिष पाई ॥
कुशलप्रश्न पूंछी यतिनाथा । मृदुलगिरा सबकिये सनाथा ॥
पंकज चरण कहो तव बानी । सहगदगद करुणा रससानी ॥
प्रभुमैं रंग नाथ जब गयऊं । पद्म नयन प्रति लौटतभयऊं ॥
पथिमातुल गृह आवत भयऊ । करिअतिविनयमोहिंलैगयऊ ॥
भेद वादि नृप यद्यपि रहेऊ । तदपि मोहमातुल कोभयऊ ॥
प्रथम प्रेम हम निजउरआना । विषमभावतेहिसोंनहिँमाना ॥
निज कृत टीका ताहिसुनाई । सुनिभैताहिसोंअतिदुखदाई ॥
भयो परस्पर बहुत विवादा । थापत खंडत बढो विषादा ॥
चक्रादिक मुद्रा तन धारी । तिनके मुखकी ढांपन हारी ॥
नाथ गिरा शुभ बर्म समाना । तेहि सों मैं रक्षित भगवाना ॥

दो० ध्वस्त किये जेहि तर्कगुरु*कपिल तंत्रजगमाहिँ ।
वेदसार रस सुधायुत जेहि सम दूसरि नाहिँ ॥

असतव गिरा प्रबल दल पाई । विजय भई मम नाथ सुहाई ॥
नाथ गिरा दृढ बर्म समाना । तेहि सन बर्मितपरमसुजाना ॥
सो कणाद सेना मुख माहीं । खङ्ग युद्ध में हारत नाहीं ॥
गौतम गुण थलमहँचलिजावै । शास्त्र युद्धसो श्रम नहिँ पावै ॥
तथाप्रबल कापिल दलमाहीं । यही समर खेद तेहि नाहीं ॥
सो मातुल जब हम सन हारा । यथाप्रथम कीन्हीअनुहारा ॥
प्रबल द्वेष निजहृदयछिपावा । मम आदरअतिशयदर्शावा ॥
तासु भवन धरि पुस्तक भारा । गवन्यो रामेश्वर दरबारा ॥
मातुल गृहपावक निशिजारा । भईनाथ टीका जरि क्षारा ॥

* प्रभाकर

लोग कहैं गृह आपु जरावा । निजमतखंडनतेहिनसुहावा ॥
दो० बुद्धि मंद मम होत हित पुनि विष भोजन माहिँ ।
डारो तब सों नाथ मम बुद्धि प्रकाश सो नाहिँ ॥
श्रीपद किंकर की दशा विषम भई यतिराज ।
तव भक्तनको उचित नहिँ ऐसो दुःख समाज ॥
राउर कीजो भाष्य सुहाई । वृत्ति रुचिर मैं तासु बनाई ॥
अतिशय निर्मल युक्ति उदारा । अहह नाथ सो जरि भै क्षारा ॥
बहुधा यत्न कीन्ह तेहिमाहीं । वैसी युक्ति फुरति अब नाहीं ॥
कृपा जलधि तवचरण उदारा । शरणागही जिनतजि संसारा ॥
यद्यपि प्रथम ते दीन दुखारी । सर्वेश्वर पदवी अब भारी ॥
केहि केहि लहीन शिवजगमाहीं । दीनबन्धु कहियेमो हंपाहीं ॥
केहि अपराध दशा यह मोरी । भई नाथ पूछौं कर जोरी ॥
पाप अंश जनि कह्योगोसांई । तासु अवधि श्रीगुरुसेवकाई ॥
सो० सुनि करुणामय वयन कृपा पूर पूरण हृदय ।
वचन सुधा रस अयन मोह हरण बोलत भये ॥
दुर्निवार विषफल सम ताता । विषमकर्मफलसकलविधाता ॥
होनहार प्रथमहि हम जानी । सोसुरेश प्रतितवहिबखानी ॥
अब तुम हृदय खेद परिहरहू । जोमैं कहहुँ तुरत सोइ करहू ॥
जब तुम टीका प्रथम बनाई । प्रेम सहित सो मोहिँ सुनाई ॥
पंच पदी कीन्हों उर गेहू । कहौं तात सो तुम लिखि लेहू ॥
यहिविधिसमाधानकरिशंकर । सोप्रबंध भाष्योकरुणाकर ॥
सकल ग्रन्थ क्रमजाननपावा । यथाप्रथमसुनिनाथलिखावा ॥
त्रिभुवन गुरु सब विद्या मूला । महापुरुष नाशक सब शूला ॥
ज्ञान शक्ति अव्याहत जासू । यहनहोयकछु अचरज तासू ॥
वेगसहितजबपुनिलिखिपाई । बढ़ोहृदय आनँद अधिकाई ॥
हर्ष वेग अतिशय उर बाढ़ा । गुरुयश कियो गानह्वै ठाढ़ा ॥
प्रेमसजल लोचन हँसिदीन्हा । देहखबरि नहिंनरतन कीन्हा ॥

यहसुनि केरल नृप तहँ आवा । राजशिरोमणि*नामसुहावा ॥
कविताकुशल चतुरजगमाहीं । जेहिसमान नृपवरकोउनाहीं ॥
पद किरीट धरि बंदन कीन्हा । विनयसुनायगुरुहिसुखदीन्हा ॥

दो० शंकर पूछा कहौ नृप तव कृत नाटक तीन ।
भे प्रसिद्ध जग में किनहि तब यह उत्तर दीन ।

भा प्रमाद बश अनल प्रचारा । भये ग्रंथ तीनहु जार क्षारा ॥
श्रीशंकरनाटकपढ़िदीन्हें । विस्मयसहितनृपतिलिखिलीन्हे ॥
करि प्रणाम बोला नर पाला । कछु आज्ञामोहिं देहुकृपाला ॥
नृपतिविनयसुनिकह्योयतिराजा । कालटिमेंजोविप्रसमाजा ॥
रहा न विप्र कर्म अधिकारा । भयो पाप बश शाप हमारा ॥
जो तुम मम आज्ञा अनु सरहू । तुमहूं तिन्हहिँ तथा विधकरहू ॥
पंच पदी पंकज पद पाई । अतिसुखलह्योबराणनहिंजाई ॥
नृपतिराजशेखरपुनिआयो । प्रभुकहँ निजअभिलाषसुनायो ॥

दो० शंकर मुख सो पुनि लहे नाटक त्रय नरपाल ।
बूड़त हर्ष समुद्र महँ निज गृह गयो भुआल ॥

सो० करै अहनिश ध्यान श्रीशंकर युगचरण को ।
मन क्रमवचन सुजान शंभु प्रेम महँ मगन नित ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्री७स्वामिरामकृष्णभारतीशिष्यमाधवानंदभारतीविरचिते श्रीशंकरदिग्विजये श्रीपद्मपादतीर्थयात्रावर्णनंपरश्चतुर्दशःसर्गः १४ ॥

——*——

श्लोक ॥ परीक्षिकप्रलापौघध्वांतधिक्कारशालिने । दिनेशायसुरेशादिपूज्यपादायतेनमः ॥ १ ॥

## अथपंचदशः

सो० श्री शंकर सुख धाम मंगलायतन सुयश धर ।
जासु कल्पतरु नामसुमिरतसबसुख लहतजन ॥

* राजशेखर

दो० शिष्यसहस्रन सहित प्रभु दिग्विजयमनकीन्ह ।
नृपति सुधन्वा वीर वर ताहू को सँग लीन्ह ॥

प्रथमहिं मध्यार्जुन शिव धामा । जाय कीन शंकर विश्रामा ॥
विधिवत करि पूजन यतिराई । करिप्रणामबहु विनय सुनाई ॥
फिरशिवसनशंकरअसभाखा । नाथनिगरासबश्रुतिअरुशाखा ॥
तुम सर्वज्ञ पुरारि कृपाला । संशय सब को हरहु दयाला ॥
युग मतद्वैता द्वैत दिखाहीं । निगमागम आम्नायकेहिमाहीं ॥
सुनिसुनिवचनप्रकटशिवभयऊ । मेघ गँभीर गिरा असकहेऊ ॥
है अद्वैत सत्य श्रुति माहीं । द्वैत माहिँ निगमागम नाहीं ॥
सत्य सत्य सांचो अद्वैता । सुनिमम वचन तजहु सब द्वैता ॥
असकहि शिव भे अन्तर्ध्याना । सब लोगन सुनि अचरज माना ॥
मध्यार्जुन के भक्त घनेरे । तासु देश वासी बहुतेरे ॥
तेहि थल महँ जे जुरे सयाने । सुनिशिव वचनसकल हर्षाने ॥
स्वीकृत करि शङ्कर सेवकाई । पंच देव पूजा सरसाई ॥
पंच यज्ञ वैदिक आचारा । उर निश्चय अद्वैत उदारा ॥
सबकरयहिविधिकरिदृढज्ञाना । रामेश्वरकोकीन्हपयाना ॥

दो० प्रमथसैन जिमि शंभुसँग नहिँअसंख्यगिनि जाय ।
शिष्य भीर यति राज सह तिमि अपार दर्शाय ॥

तुला भवानी धाम मनोहर । विजय करत पहुंचे जबशंकर ॥
शक्ति उपासक तहँ बहु आये । गुरु पद कमलहि शीशनवाये ॥
शक्तिउपासनमिषकरिलीन्हा । निशिदिनमदसेवामनदीन्हा ॥
नाथ सुनो हमरो मत सुंदर । शक्तिभजनतिहुंलोकउजागर ॥
आदिशक्तिजेहिजगउपजावा । जासु रूप मन वचन न आवा ॥
निज जन हेतु भई साकारा । गिरिजादिकस्वरूपतेहिधारा ॥
हेम चरण हम तासु बनाई । निज भुज कंठ धरैं मन भाये ॥
जीवन्मुक्त फिरैं जग माहीं । बिन विद्योपासन सुख नाहीं ॥
भजिये ताहि सदा मन बानी । विद्याते श्रुति मुक्ति बखानी ॥

दो० अकारादिजेहिभांति सों प्रणवअंग बुध जान ।
तिमिलहभ्यादिकलासुकोजानहुकला*सुजान॥
यथा चन्द्रिका चन्द्र को उद्बोधक जग माहिँ ।
ईश्वरबोधक तेहिकरिस कोउउपायप्रभुनाहिं ॥
रुद्रहिअति प्रियशक्तिसो सबप्रकारअभिराम ।
श्री स्वाधीन सुबल्लभा तेहिकारण भा नाम ॥

जग बंदित शंकर प्रिय जानी । भजहिँ सदा हम उमाभवानी ॥
यति वर तासु चिह्नतुम धरहू । मुक्ति प्रदा सेवा अनु सरहू ॥
गुरुकह्यो सत्यबचनतुमकहहू । यदपि हमारसिखापन गहहू ॥
ब्रह्मज्ञान बिनु मुक्ति न होई । कहैं वेद समुझो तुम सोई ॥
जेहिकहँआदिशक्तितुमजाना । पुरुष तासु पर वेद बखाना ॥
ब्रह्म जीव बिचनहिं कछुभेदा । एक भाव बरणौं सब वेदा ॥
सोई तुम करियत्न विचारौ । मुक्ति न और भांति निर्द्धारौ ॥
विद्या रूप देवि तुम भाषी । जेहिके हो मनक्रमअभिलाषी ॥
भजन तासुमन निर्मल करही । जेहिसोंनिजस्वरूप अनुसरही ॥
तेहिते कुंकुम तिलक बिहाई । पाद चिह्न सब दूरि बहाई ॥
सोहमस्मि भावहु मन माहीं । मुक्ति लहहुगे संशय नाहीं ॥
सुनिगुरु वचन चिह्नकरिदूरी । अद्वय मत श्रद्धा भै भूरी ॥
शिव सेवकभे मनक्रम बानी । पंच देव पूजा रति मानी ॥
संध्या स्नान करन सब लागे । एक भाव रुचि मन अनुरागे ॥

दो० पुनि लक्ष्मी के भक्त बहु आय परम गुरु पास ।
विनयप्रणामसहिततिन निजमतकियो प्रकाश ॥

सब फलदायक सबकी माता । आदिप्रकृतिसबजगकीत्राता ॥
अकथनीय महिमाअतिभारी । ब्रह्मादिकजननी सुखकारी ॥
तासुभजन जे तन मन करहीं । पंकजाक्ष † माला उर धरहीं ॥
युगभुज कमलचिह्न जे धरहीं । कुंकुमतिलक भालमहँकरहीं ॥
सकलेश्वरी बसै उर जिनके । करतल मुक्तिबिराजै तिनके ॥

* अंश † कमलाक्ष

आपुहु तासु भजन अनुसरहू । मुक्ति चाह जो तुमनितकरहू ॥
गुरुकह्यो अद्भुतवचनतुम्हारा । सुनहु तत्त्व उपदेश हमारा ॥
ईश छांड़ि कर्त्ता जगकेरो । कोउनहिँसुनहुसिखावनमेरो ॥
अद्वितीय अरु एक अनूपा । सत्य बोध आनंद स्वरूपा ॥
आतम तत्त्व रूप कहि गावा । बहुप्रकार श्रुतिगसादशावा ॥
तासु अधीन प्रकृति नितरहई । मुक्तिप्रदत्व ताहिनहिँघटई ॥
अहं ब्रह्म ध्यावहि भय त्यागी । करतलमुक्तिताहिबिनमांगी ॥
चिह्न छांडि अद्वय मत गहहू । मुक्तिभाग तुम निश्चितरहहू ॥
शिष्य भाव करि अंगीकारा । गहत भये सबश्रुतिआचारा ॥
शारद भक्त तहां चलिआये । पुस्तकतिलक चिह्नतनछाये ॥
दो० करि प्रणाम बोले सकल वेद नित्य जग जान ।
तेहिते शारद नित्यहै सब जग परम निदान ॥
शारद ब्रह्मादिक तनु धारी । सृजै हरै सोई रखवारी ॥
गुणातीत बपु रहित अनूपा । भजन योगसोइशक्तिअनूपा ॥
बहुश्रुति सम्मत मम मत एहा । ग्रहणा करो तुमबिन संदेहा ॥
तब बोले शंकर सुखदाई । वेद नित्यता कहँ सुनि पाई ॥
जेहि के प्रवास वेद सब जाये । वेदजन्म श्रुति प्रकटदिखाये ॥
जासु जन्म सो नित्य न होई । न्याय प्रकट जानै सबकोई ॥
रहै शारदा विधि मुख माहीं । नित्य वह चतुरानन नाहीं ॥
मन बागादि रहित सुखधामा । सोअनादि भूमा अभिरामा ॥
तेहि जाने बिन मुक्ति न होई । कह्योश्रुतिऔरपंथनहिँकोई ॥
शुद्ध अद्वैत परायण होहू । त्याग करोनिजहृदयबिमोहू ॥
दो० आनंद घन के ज्ञानते ह्वैहो मुक्ति स्वरूप ।
यह सुनि प्रभुके शिष्यभे तजिनिजहठदुखरूप ॥
बामाचार परायण आये । सबहुन गुरु को माथ नवाये ॥
ज्ञान रूप जानो तुम नाहीं । वृथा वेष धारो जग माहीं ॥
बंध्या पुत्र सरस जो ज्ञाना । अब अद्वैत ज्ञान मन माना ॥

आदिशक्तिजेहिजगउपजावा । महिमाकोउजगजानिनपावा ॥
रचै हरै ब्रह्माण्ड करोरी । जेहिबिनईशहु शक्तिनथोरी ॥
तासुचरणजेहिजेहिरतिमानी । तिनके करतलमुक्तिबखानी ॥
जो अव्यक्त बिमर्श कहावा । जेहिकरभृग्वादिकयशगावा ॥
तासुभजनजिनजिनसिधिपाई । तिन्हैंन बिधिनिषेधदुखदाई ॥
तेहि कारणतुमसकलबिहाई । विद्या भजन करहु मनलाई ॥
इत्यादिक बाणी जब कहेऊ । तब श्री शंकर उत्तर दयऊ ॥

दो० जेहिबिमर्श तुम कहत हौ सो आतम न कहाय ।
आतम ते व्यतिरिक्त को श्रुति निषेध दशाय ॥

श्रुतिहिप्रकृतिबहुरूपनखानी । तेहिते परे पुरुष कहैंज्ञानी ॥
सोइ भूमा प्रभु जानन*योगा । जाहि मुमुक्षुभजहिँतजिभोगा ॥
सुरा पान आदिकतुमकीन्हा । भूसुर कर्म धर्म तजि दीन्हा ॥
भृगुमुनि कीन्हो पाद प्रहारा । हरिको तुमनजायव्योंगारा ॥
श्री कुंभज सागर कृत पाना । तुमहुंजाय सोइकरौ सुजाना ॥
प्रायश्चित्त मूढ करु जाई । भ्रष्ट भये द्विज धर्म बिहाई ॥
यहसुनिगुरुपदतिनगहिलीन्हे । प्रायश्चित्तयथाविधिकीन्हे ॥
साधु वृत्ति गहि गुरुपहँआये । मन अद्वैत निरत हर्षाये ॥
पंच देव पूजा मन लाई । शिष्य भये संदेह बिहाई ॥

दो० यहि बिधिशक्तिउपासकन नाथनिरुत्तर कीन्ह ।
धर्म सेतु बहु युक्तिसों जनहित प्रभु करि दीन्ह ॥
तुला भवानी तीरकी कथा कही मैं गाय ।
रामेश्वर के निकट को चरित कहौं मन लाय ॥

रामेश्वर दर्शन जब पाये । शिष्य सहित मुनिवरहर्षाये ॥
रामचंद्र थापित शिवलिंगा । दर्शन होत करै भव भंगा ॥
कामेश्वरि बायें दिशि राजै । इन्द्र नीलमणि मुकुटबिराजै ॥
श्रीशंकर गंगा जल पावन । बिल्वपत्र अरुकमलसुहावन ॥
वन संभव फल फूल सुहाये । प्रेम सहितहर शीश चढ़ाये ॥

* लोहितादि

युगल मास तहँकीन्हनिवासा । गुरु आगमसब औरप्रकासा ॥
अद्वय द्वोहि शैव१तहँ आये । द्वौ भुजलिंग चिह्नछबिछाये ॥
शूलचिह्न अंकित बर भाला । रौद्र२ नामअति बेषकराला ॥
माथे लिंग चिह्न छबिछावा । द्वौभुज डमरू अंक सुहावा ॥
उग्र३ कहावैं ते जग माहीं । जंगम४चिह्न सुनोमोहिंपाहीं ॥
उर त्रिशूलशिरलिंगबिराजा । कहौंपाशुपति ५केअबसाजा ॥
भाल हृदय भुजनाभिसुहाये । तप्त त्रिशूल अंक छबि पाये ॥
पांच भेद पशुपति मत धारी । करिप्रणामयंहगिराउचारी ॥
शंभु चिह्न गहिकै सब काहू । सेवनीय शिव सहितउछाहू ॥
कृष्ण पीत बपु रुद्र महेशा । विरूपाक्ष श्रुतिगण उपदेशा ॥
एक बार देवन प्रति शंकर । आपु कियो उपदेशउजागर ॥

दो० आदि अंत अरु मध्य महँ ठीकदेहु मनमाहिँ ।
मोहिं छांड़ि हे देवबर जगदीश्वर कोउनाहिँ ॥

तेहिकारणशिवहैं जगकर्ता । भर्ता समय पाय संहर्ता ॥
बासुदेव नारायण शङ्कर । गुणाकृत शम्भु नामसब सुन्दर ॥
सृष्टि काल धाता सोइगायो । पालन समय रमेश कहायो ॥
सब दुख तथा सृष्टि संहारा । किये भयो हर नाम उदारा ॥
कृष्णावचन सुनि परमअनूपा । रुद्र मध्य शङ्कर मम रूपा ॥
दुर्वासाप्रति शिव पुनिभाषा । हमसनसुनहु सहितअभिलाषा ॥
मैं अक्षर कर्ता सब केरा । विधिहरिसमकृतलोक घनेरा ॥
सबकर कारण पुरुषपुराना । इच्छा शक्ति सोरिबलवाना ॥
प्रथमहिं महत्तत्त्व उपजावैं । सोपुनि सतरज तम प्रकटावैं ॥
ग्यार हरुद्र प्रकट हमकीन्हे । गुण अनुरूप काज तिनदीन्हे ॥
राजससर्जन विधि अनुसरहीं । सत प्रधान जगपालन करहीं ॥
प्रलयेश्वर भे तम गुण धारी । सकलमुख्यबिधितथासुरारी ॥
घोर रुद्र इनके बश रहहीं । तासुविभूति सकलसुरअहहीं ॥
भयो चराचर सबयहिभांती । प्रकटी लोक चतुर्दश पांती ॥

प्रलय काल सो महँ लयहोई। हैं अनंत सोहिं जान न कोई ॥
शिव पूजा जे तन मन करहीं। पंचाक्षरी जाप अनुसरहीं ॥

दो० रहहिंभूति रुद्राक्ष युत करहिँ सदा समध्यान।
ते नर पावन मुक्ति के भागी परम सुजान ॥

इमि दुर्वासा सुनि शिव बानी। हरकीभक्तिपरम रतिमानी ॥
शंकर परब्रह्म जगदीशा। सेवा योग कृपाल गिरीशा ॥
सवितादिक गृह जासुप्रकाशा। करहिँ जगतभाति तनिजभाशा ॥
तासु प्रकाश मान सब होई। तेहिबिनऔरभासनहिंकोई ॥
जग कारण शिव वेदबखाना। कोउकर्महिंकारणपहिंचाना ॥
कर्म कह्यो जड़ ग्रंथन माहीं। ईश बिना फलप्रद सो नाहीं ॥
तेहि कारण सब देव बिहाई। शिव पद सेवैं चिह्न बनाई ॥
सुनि अस वचन शंभु तब बोले। तासु पक्ष परिहार अमोले ॥
थिरलयपालनशिवसबकरहीं। ब्रह्मादिकस्वरूप सोइधरहीं ॥
मम अभिमत करिहैं हरभूषण। सुनो जो हैं तवमतमहँ दूषण ॥
तप्त चिह्न धारण नहिँ करहू। यह निर्मूल धर्म परिहरहू ॥
सकल देव मय विप्र शरीरा। योतन तासु ताप मति धीरा ॥

दो० पद नख सों ले शिखा लौं देवपितर कर वास।
तप्त होहिँ द्विज देह महँ ते सब पाय निवास ॥

सो० ब्रह्मा कह्यो सुनाय अरुणकेतु प्रति यह वचन।
वेदहु दीन जनाय सो तुम सों वर्णन करौं ॥

विप्र देह जे देव विराजैं। तप्त भये तुरतहि सब भाजैं ॥
शाप देइ सुर जाहिँ पराई। तब सों विप्र पतित ह्वै जाई ॥
तप्त चिह्न बिन व्याधि बनावैं। जोद्विज कबहुं दृष्टि तर आवैं ॥
तुरत सचैल करैं सुस्नाना। अथवा सविता दरश बखाना ॥
निंदत भेद उपासन वेदा। मिटै न भव संभव सब खेदा ॥
ज्ञानबिना नहिँ मुक्तिबखानी। ब्रह्म निष्ठ गुरुबिननहिँ ज्ञानी ॥
सकल हृदय वासी दुर्दर्श। मन वाणीकर होय न पर्श ॥

निज स्वरूप ऐसो जेहिजाना । हर्ष शोक सो तजै सयाना ॥
दो० वेद पढ़न पाठन मिलै नहिँ आतम सुख रूप ।
बहु श्रुत पुनि जानै नहीं बुधि किमिलखै अनूप ॥
मन क्रम सों जब तत्पर होई । आपुहि आपु फुरै तब सोई ॥
सब देहन बिन देह निवासा । नश्वर तनुगत होय न नासा ॥
अस आतमविभु रूप विचारी । तीरन आव लोक दुखभारी ॥
सकल व्योम जो चर्म समाना । धरि ऐहैं जब लोग सुजाना ॥
तबहु देव ज्ञान बिन पै हैं । भवदुख*कोबिनशमहिमिटैहैं ॥
तेहि कारण पर विद्या गहहू । गुरु वर कृपा मोह सब दहहू ॥
अमृत अभेद रूप कर पाना । तुम होहु निज तजि अज्ञाना ॥
रहा एक तिन में गुण ग्रामा । जेहि विदग्ध वीर अस नामा ॥
लिंग चिह्न धर मध्य प्रधाना । परमचतुरअतिशयगुणनाना ॥
गुरु मुख कमल सुनीयहबानी । श्रुतिनयनिपुणसुधारसबानी ॥
भा प्रसन्न मन अति अनुरागा । यहिविधिविनयसुनावनलागा
सो० शरण गही मैं नाथ भवआशी विष डसित तनु ।
मैं सब भांति सनाथ वेद गिरा सुनि नाथ मुख ॥
हौं जग पितु शिव रूप नष्ट भयो सब भेद मम ।
तुम फल परम अनूप महादेव के भजन के ॥
तुम प्रभु अद्वैतामृत दाता । शिवतेअधिकविश्वके त्राता ॥
अस्तुतिकरि वरणोदकलीन्हा । निजकुलदेशजननसिखदीन्हा ॥
अद्वय मत धर सबहि कराई । सुख पाओ संदेह बिहाई ॥
और शैव बोले करि रोषा । प्रकट करैं जनु आपनदोषा ॥
को तुम कपट वेष धरि आये । माया मय निजवचनसुनाये ॥
भ्रष्ट कियो यह शुभमत धारी । सुनहु सत्ययहगिरा हमारी ॥
विष्णुभक्त द्विज वर ते पावन । तेहिसेशिवजनपरमसुहावन ॥
नारद से ब्रह्मा यहभाषा । जिमिआरूढयतनअभिलाषा ॥
करहिँ तथायह मूरखकीन्हा । वृथालापतुम्हरोसुनिलीन्हा ॥

* लपेटलेंगे

स्मृति श्रुति पुराण मतः‡ एहा । शिवसमनहिँ कोउ बिनसंदेहा ॥
श्यामाजासु शक्ति अभिरामा । तथा तासु माहेश्वरि नामा ॥
तासु अंश लक्ष्म्यादि भवानी । शंभु अंश हरिबिधिबरदानी ॥
शिवरहस्यमहँ शिवजगकारन । यतिवरकहे नहरिचतुरानन ॥
रुद्र चिह्न जे धारण करहीं । शिव स्वरूप ह्वै ते भव तरहीं ॥
गुरु दारागम मदिरा पाना । ब्रह्म घात स्तेयं* बिधाना ॥
इन पापिन की संगति करई । पंच महा पातक अनु सरई ॥
जो विभूति नित अंग लगावै । तथा भस्म की शयन बनावै ॥
महादेव ध्यावै मन बाणी । सकल पाप सों छूटहि प्राणी ॥

दो० अति शय पुण्य सहाय जब शंभु भक्ति तबहोय ।
श्री पशुपति पद प्रेमसों पातक रहै न कोय ॥

शिवगीतामहँ शिवकहि राखा । नहिँ जानो हमरी यह भाखा ॥
रुद्राभरण महातम गायो । शिव दीक्षा प्रभाव दर्शायो ॥
सहसनाम शिवको अभिरामा । जेहि को वेदसार शुभनामा ॥
यहिबिधिसहजजपै हरनामा । सो शिव रूपपावशिवधामा ॥
भस्मादिक महिमाबहुगाई । एकबदनकेहिबिधिकहिजाई ॥
नहिँ अतप्त तनुकी गतिहोई । श्रुतिनिजमुखवरणयोपुनिसोई ॥
मुनि वर कह्यो न पावकतापा । श्रुति गायो नाशक संतापा ॥
कृच्छ्रादिक चंद्रायण रूपा । श्रुति वरण्योतपपरमअनूपा ॥
तप्त चिह्न बहु वचन विरोधा । हमसनसुनहुत्यागितुमक्रोधा ॥
तप्तचिह्न कर दोष विशेखा । नहिँ नारद पुराण तुमदेखा ॥
लिंगचक्रचिह्नितलखिद्विजवर । मज्जहिँअथवादेखहिँदिनकर ॥
तप्त चिह्न युत पतितकहावा । तेहिसन भाषणदोष बतावा ॥
अन्नादिकतेहिदियो जोदाना । भस्मऽऽहुतिसमग्रथाबखाना ॥
यद्यपि वेदादिक सब जाना । चिह्नलेत सो पतित बखाना ॥
चिरंजीव † मुनि केर पुराना । तहाँलिखोसोसुनुधरिध्याना ॥
गायत्री द्विज गण प्रति बादा । भयो लह्यो तबदेविबिषादा ॥

‡ विद्वेषनीर * चोरी † मार्कण्डेय

शाप दीन्ह करि क्रोधभवानी । होय तुम्हारि धर्मकी हानी ॥
वेद बहिर्मुख तुम कलिमाहीं । तंत्र छांड़ि रुचि दूसरिनाहीं ॥
ज्ञान कर्म पथ बाहर ह्वै हो । काम क्रोध के वश ह्वै जैहो ॥
तेहिते चिह्न कबहुंनहिँधरिये । वेदविहित मारगअनुसरिये ॥

दो० मन बाणी गोचर नहीं सत चित आनँद रूप ।
अद्वितीय विभु ब्रह्म है जो सब भांति अनूप ॥

श्री शिव तासु ब्रह्म अवतारा । शंभुभजनश्रुतिविविधप्रकारा ॥
कहो न हमतेहिखंडनकरहीं । भस्म सदा माथे हम धरहीं ॥
तप्त चिह्न निर्मूल तुम्हारा । यहसुनिपुनितिनवचनउचारा ॥
जबत्रिपुरासुरअतिदुखदीन्हा । इन्द्रादिक न पराजयकीन्हा ॥
तब देवन रचि कीन्हविधाना । विष्णुअग्निहिमकरमयबाना ॥
पावक आदिसध्यनिशिनाथा । अन्तकाल समकमलानाथा ॥
बहुरि परस्पर कीन्ह विचारा । को समरथ यह धार निहारा ॥
महादेव सम यह जग माहीं । विजय शक्ति धर दूसर नाहीं ॥
शिव सनपुनिबहुविनयसुनाई । महादेव बोले हर्षाई ॥
लाभ कहा मोहिं है सुरराया । कहहु बहुरि मैं करब उपाया ॥
ब्रह्मादिक हम सब पशु रूपा । तुमपशुपतिमसस्वामिअनूपा ॥
अस कहिसबसुरशंकितभयऊ । तब शंकरधनु कर महँ लयऊ ॥
तब त्रिपुरासुर को प्रभु मारा । निजपुनीतयशमहिविस्तारा ॥
विना सेव्य सेवक वर भावा । तरै न भव करि कोटि उपावा ॥
उचित चिह्न धारण तेहि हेतू । हम सब सेवक प्रभु वृषकेतू ॥
सुनि मुनिवर बोले मुसुकाई । अहो मोह जनता* जड़ताई ॥
मान हीन यह वचन तुम्हारा । देवनकबहुं चिह्न नहिं धारा ॥
जो हो तो यहु वचन प्रमाना । आवतश्रुतिमहँचिह्नविधाना ॥
कैवल्यादि श्रुती जो भाषा । सुनियेताहिसहितअभिलाषा ॥
श्रद्धा तथा भक्ति पुनि ध्याना । ब्रह्मलाभ को यतन बखाना ॥
शूल लिंग धारण नहिं भाषा । वृथाकरहु यहिमेंअभिलाषा ॥

* समूह ॥

दो० ज्ञान बिना कोउ पंथ नहिँ मुक्ति हेतु श्रुति गाव ।
मुक्तिहीन की जाहि रुचि ताहिन और उपाव ॥

देह दाह निंदा बहु गाई । कहँ लौं तुम सनकहौं बुझाई ॥
राज चिह्न सम तुम जो धरहू । क्यों शूलादि न धारण करहू ॥
लोह रचित शूलादि बनाई । धरहु जो तुमको हठ अधिकाई ॥
तेहि को फल बहु भार बिहाई । ह्वै है नहिँ कछु तव सुखदाई ॥
भुजग विभूषण शंकर धारा । क्यों न करौ तुम अंगीकारा ॥
तेहि ते पामर बुद्धि बिहाई । वैदिक धर्म करहु मन लाई ॥
फल अभिलाषन निज मन धरहू । ईश चरण तेहि अर्पण करहू ॥
मन महँ एक भाव नित राखौ । ज्ञान हिँ पाय अमृत फल चाखौ ॥
सुनि अस वचन सकल अनुरागे । करि दंडवत चिह्न सब त्यागे ॥
शिष्य भये निज कुटुंब समेता । अद्वय मत महँ तत्पर चेता ॥
तैसेहि औरहु जे तहँ आये । एक भाव लहि सब हर्षाये ॥
ठांव अनंत शयन महँ जाई । देव दरश करि मुनि हर्षाई ॥
तीन मास तहँ कीन निवासा । विष्णु भक्त आये प्रभु पासा ॥

दो० पंचरात्र १ अरु भागवत २ तीजे भक्त ३ उदार ।
कर्म४हीन वैष्णव५ तथा बैखानस६ आचार ॥

विष्णुभक्त षड्विध गुरु देखो । पूँछा तिन कर धर्म विशेषो ॥
भक्त प्रथम बोले शिरनाई । बासुदेव सेवैं मन लाई ॥
सब अवतार धरैं प्रभु सोई । जेहि की महिमा जानन कोई ॥
ह्वै प्रसन्न लखि हमरी सेवा । निज सुलोक सुख देहै देवा ॥
हम अनंत सेवहिं मन बानी । मुनि कौडिन्य पंथ रतिमानी ॥
यह मत के पुनि युगल स्वरूपा । एक कर्म पुनि ज्ञान अनूपा ॥
हमहिँ सुनावहु आपन ज्ञाना । विष्णुशर्म तब कहे सुजाना ॥
हम अनंत पद शरण पधारे । भये सकल कर्मन ते न्यारे ॥
तेहि आयसु बिन तृण नहिँ डोला । तासु चरण हम गहे अमोला ॥
ऐसी मुनि अचरज की बानी । बोले श्री शंकर विज्ञानी ॥

जन्म कालहै शूद्र समाना । कर्म भयेद्विज वेद बखाना ॥
सन्ध्यादिकजोनित नहिंकरहीं । प्रत्यवाय माथे पर धरहीं ॥
कर्म त्याग जो नर पशु करहीं । लय पर्य्यंत नरकमें परहीं ॥
सो० ब्रह्म भाव की हानि यह प्रकार कछु दिन रहे ।
ऐसो निज उर आनि कर्म तजै कबहूं नहीं ॥
विष्णु शर्म सुनि कहै सभीती । पीढ़ी सात हमारी बीती ॥
अष्टम पुरुष कर्म कछु करेऊ । तबगुरुवर सक्रोधअसकहेऊ ॥
दूर जाहिशठपरमअभागा । यहिविधिजअबांकरतेहित्यागा ॥
निजगणसहतेहिकीन्हप्रणामा । क्षमहुनाथप्रभुकरुणाधामा ॥
जबदेखा शरणागत आयो । विधिवतप्रायश्चित्तकरायो ॥
विष्णुशर्मआदिक द्विजवृन्दा । कर्म परायणसहित अनंदा ॥
पुनिगुरुसनयहविनतीकीन्ही । हमहिंनाथद्विजवरतादीन्ही ॥
मुक्ति उपाय कहो अबनाथा । हमकोसबविधिकरहुसनाथा ॥
पंच देव पूजन तुम करहू । कर्म ब्रह्म अर्पण आचरहू ॥
यहिविधिमननिर्मलजबह्वै है । तबहीं भेद दृष्टि मिटि जैहै ॥
करत विचारअबोधविनाशा । करिहैसबविधिज्ञानप्रकाशा ॥
लिंग देह भेदन ह्वै जैहै । अन पायिनी मुक्ति तब पैहै ॥
सुनिउपदेशचरणगहिलीन्हा । निजगणसहितगवनगृहकीन्हा ॥
पंच देव पूजहिं मन बानी । जोविधिश्रीगुरुआपबखानी ॥
दो० ब्रह्म गुप्त अरु तासु गण तब आयो गुरु पास ।
करि प्रणाम गुरु सनकियो निजमतकेरप्रकाश ॥
स्मृति रीति कर्म हम करहीं । ब्रह्मार्पणकोविधिअनुसरहीं ॥
तब गुरु कह्यो सुनो ममबानी । पंच देव पूजहु रति मानी ॥
यहिप्रकार मनशुद्ध तुम्हारा । ह्वै है बहुरि ज्ञानअधिकारा ॥
भेद बासना ह्वै है दूरी । आतम ज्ञान तबहि भरिपूरी ॥
लिंग देह संबंध बिहैहौ । तबतुम सकल मुक्त ह्वै जैहौ ॥
यहसुनि मन स्थिर ह्वै गयऊ । बार बार गुरु पदशिरधरेऊ ॥

तब भागवत केर गण आवा । करिप्रणाम निजमतदर्शावा ॥
सकल देव तीरथ फल जोई । हरि अस्तुति पावै नर सोई ॥
हरिकीर्तननिशिबासरकरहीं । शंख चक्र चिह्न नहमधरहीं ॥
पहिरैं उर तुलसी की माला । ऊर्ध्वपुंड्र निजभालविशाला ॥
रहैं सदा ये नेम सँभारे । जानहु कर तल मुक्तिहमारे ॥

दो० सुनि बाणी शंकर कह्यो नहिँ अस कहौ सुजान ।
तप्तचिह्न निंदित सदा बरणैं वेद पुरान ॥

हरि मूरति जग चारिप्रकारा । प्रथमपरा सो व्योमाकारा ॥
मनबाणी जहँ लौं नहिँ जाई ।एक विराट रूप दर्शाई ॥
इनकरचिह्नधरौनिजगाता । नखशिखलौंतब अतिसुखदाता ॥
मत्स्यादिक है तीसर रूपा । चौथो शालग्राम स्वरूपा ॥
आय समय मत्स्यादि बनाई । करहु चिह्न निज अंग तपाई ॥
अथवा मूरति माल बनाई । पहिरौ निज उर कंठ सुहाई ॥
वैष्णव भाव लाभ तब होई । जो लोगन कहँ दुर्लभ सोई ॥
जो तुम चिह्न प्रीतिअनुसरहू । लोह चक्रहरिसम किन धरहू ॥

दो० छोड़हु यह पाखंड मत करहु कर्मनिष्काम ।
फल हरिको अर्पण करौ मन पावै विश्राम ॥

ब्रह्म निष्ठ शरणागत जाई । निज स्वरूप अनुभवमतिपाई ॥
नष्ट कर्म बंधन ह्वै जैहो । यहिविधिसुखदमुक्तितुमपैहो ॥
सुनि उपदेश कहहिँ हर्षाई । बड़े भाग तब दरश गोसांई ॥
द्रवहु नाथ अबकरहुकृतारथ । तब शिवकहे वचनपरमारथ ॥
चिह्नछांड़िनिजक्रममनलावहु सोहमस्मियहनितप्रतिध्यावहु ॥
शार्ङ्गपाणिहरिभक्तिपरायण । कहनलगोकरिनमोनरायण ॥
शंख चक्र धरि करि सेवकाई । जैहौं विष्णुलोक सुखदाई ॥
चिह्न ग्रहणको नाथ प्रमाना । वर्णत जहँ तहँ विपुलपुराना ॥
कंठ देश तुलसी की माला । शंखचक्र भुजचिह्नविशाला ॥
ऊर्ध्व पुंड्र माथे महँ धरहीं । विष्णु भक्तजगपावनकरहीं ॥

श्रुति विरुद्ध ऐसो जन कहहू । तब बोले श्रुति हमसन गहहू ॥
बिन तनताप मिलतसोनाहीं । गुरुकह्योयहनअर्थश्रुतिमाहीं ॥
कृच्छ्रादिकतपश्रुतिमहँगायो । अथवा तपतेंध्यान लखायो ॥
ब्रह्मबोध सन मुक्ति बताई । बोध हेतु नित करै उपाई ॥
चिह्नधरै नहिँ कहहिँ पुराना । तुमधरिताशुलोकचहोजाना ॥
मनोराज यह वृथा तुम्हारो । शूद्रन द्विजवर वेष सँवारो ॥
अहंब्रह्म यह चिंतन करहू । भेद भाव मनसों परि हरहू ॥
गये भेद है यह शिव रूपा । शिवगीता यह अर्थ अनूपा ॥
कह्योताहितुमसुनहुसुजाना । जोशिवोस्मिनिश्चयकरिजाना ॥
सोशिव रूप न कछु संदेहा । यहसुनि गुरुपद भयोसनेहा ॥

दो० द्वैतभाव अब तजाहम असकहि कियो प्रणाम ।
मुक्ति होय तब वर दियो श्रीगुरु वर सुखधाम ॥

स्मृति के धर्म सदा रुचिमानी । पंच देव पूजा भलि जानी ॥
ब्रह्मज्ञानरुचिअधिकप्रकाशी । कियेतथा निजदेशनिवासी ॥
पंच रात्र मत धर तब आवा । आपन बहु उत्कर्ष सुनावा ॥
प्रतिमादिको स्थापन मूला । ममआगम*नाशकसबशूला ॥
सुनी तासु यहविधि जबबानी । बोले श्री शंकर विज्ञानी ॥
जहँलौं वेद विरुद्ध न होई । आगममत गहिये सुठिसोई ॥
तहँ गायत्री त्याग कराई । विष्णुमंत्र महिमा अतिगाई ॥
विष्णु मन्त्र शतबस मनमाहीं । वेदजननि‡बिनद्विजवरनाहीं ॥
भूसुर भाव हानि तब भयऊ । यहसुनितिनशंकरप्रतिकहेऊ ॥
विप्र भाव महँ मम न सनेहा । विष्णु भक्त मैं बिन संदेहा ॥
तब तुम भ्रष्ट न बोलन योगा । जोनहिँ मानहुँ वेदनियोगा ॥
तब माधव प्रधान असकहेऊ । ममआगम प्रमाणनहिँरहेऊ ॥
तप्त चिह्न महिमा तब गाई । विष्णुलोकप्रदअतिसुखदाई ॥
तब शंकर यह वचन सुनावा । माधव सुनहु हमारसिखावा ॥
आगम धर्म्म वेद प्रतिकूला । कबहुनतेहिजानहु अनुकूला ॥

* तंत्र ‡ गायत्री

वेदविहित निज धर्म सुहावा । करहु चित्तपावनश्रुतिगावा ॥
लहिहौबहुरिज्ञानअधिकारा । ज्ञान पाय तरिहौ संसारा ॥
सकल जीव गत आतम देखै । आतम महँ सब जीवन पेखै ॥
तबहीं ब्रह्म मिलै न सँदेहा । वेद*शिरनको संमत एहा ॥
तेहिते तुम सब चिह्न विहाई । ब्रह्म निष्ठता गहहु सुहाई ॥

दो० माधव मुनि निजग्रामकुलसबहिंसिखावनदीन्ह ।
श्रीगुरु परमप्रसाद ते श्रुति मारग तिन लीन्ह ॥

वैखानस मत धर तब आवा । व्यासदास निज नामबतावा ॥
एकबार ब्रह्मा किन आवा । मोर पक्ष नहिं हटै हटावा ॥
नारायण पर देव सुहायो । परमधामतिनकरश्रुतिगायो ॥
नारायण सब जग उप जावैं । तिनके भजे मुक्ति नर पावैं ॥
तासुभक्त लक्षण यह यतिवर । ऊर्ध्वपुंड्र वर भाल मनोहर ॥
शंख चक्र भुज मध्य सुहाये । वैखानस मत में दर्शाये ॥
नारायण जग कारण मानहु । परमधामपुनितासुबखानहु ॥
करहिंविवादनहम यहिमाहीं । ज्ञान विनामिलिहैसोनाहीं ॥
विष्णु भक्ति जो तब उर आई । करि स्वकर्महरिअर्पहुजाई ॥
कबहुँन चिह्नधरौ तनु माहीं । यहिमेंश्रुतिप्रमाणकोइनाहीं ॥
मुनि बोलाप्रभु सतयुगमाहीं । दत्तात्रय सम भा कोउनाहीं ॥
तिन मुद्रासबधारणकीन्हीं । मानहुँहमसब कहँ सिखदीन्हीं ॥
शंख चक्र धारण विधिनाना । कहहिंतथा प्रभुसकलपुराना ॥
हरि अवतार सिद्ध मुनिरावा । मुद्राधरकेहिँ तुम्हहिंबतावा ॥
हमनहिँ सुनो कहैनहिँकोऊ । तुम्हहिँछाँड़िमूरखजनिहोऊ ॥
तप्तचिह्न नहिँ कहहिँ पुराना । केवल यह तुम्हार अज्ञाना ॥
ध्रुव प्रह्लाद तथा गजराजा । हनूमान तिमि निषचरराजा ॥
द्रुपद सुता ब्रज के नरनारी । कहहु कौन भयो मुद्राधारी ॥
तेहिते तुम सब चिह्न बिहाई । अहं ब्रह्म ध्यावहु मनलाई ॥
जीवत ब्रह्म सुखहि तुम पैहौ । पुनि तनु त्यागि मुक्त ह्वैजैहौ ॥

*उपनिषद

जो पुनि शंक हेतु हठ करहू । कहँ जहां जहँ तहँ तुमधरहू ॥

दो० गलकपोल भुज पृष्ठ महँ कर्मेन्द्रियपुनि ज्ञान ।
सकलठौरमहँ चिह्नधरि फिरियेवृषभसमान ॥

पशु सम कर्महीन सुखचाहा । श्वेत वस्त्रबिन अंतर काहा ॥
सुनि गुरु वचन कहत हर्षाई । दियो आपु अज्ञान नशाई ॥
तव सेवक हौं शंकित नाहीं । उपजे यथा ज्ञान उर माहीं ॥
सो उपाय मोहिं देहु सिखाई । असकहि ढिगबैठोशिरनाई ॥
हँसि बोले तबशंभुसुजाना । यहिप्रकारकरुनितप्रतिध्याना ॥
मैं सोइ ब्रह्म न हौं संसारी । तत्त्वं पद कर अर्थ विचारी ॥
जो न विचार बनै वहिभांती । सुखसोइवचनकहौदिनराती ॥
यहि अभ्यास द्वन्द्व मिटिजैहै । अनुभव पाय मुक्त ह्वै जैहै ॥
ब्रह्म रूप मैं नाथ कृतारथ । मोर जन्मअबभयो यथारथ ॥
पुनिपुनि गुरुचरणनशिरनाई । निजगण सहित गयोहर्षाई ॥
कर्म हीन वैष्णव पुनि आयो । नामतीर्थप्रभुकहँशिरनायो ॥
कहनलगो निजमत गुरुपाहीं । शेषहु सन कंपितयह*नाहीं ॥
सर्व विष्णुमय जग श्रुतिगावा । तेहिते हमैं न कर्म सुहावा ॥
श्रीगुरुनिजसेवक हितकारी । हरिसनविनयकरहिंदुखहारी ॥
यह विनती हमरी सुनि लेहू । मम सेवकहि अपन पद देहू ॥
सुनिभगवानतथा विधिकरहीं । तेहितेहमसबसों नहिंडरहीं ॥
जीवन्मुक्त फिरैं जग माहीं । ममसत सम प्रभु दूसरनाहीं ॥
तुमहूं ग्रहण करो मन लाई । निश्चय पैहौ मुक्ति सुहाई ॥

दो० सत्य कहा तुम अपन मत कर्म भ्रष्ट पद पाय ।
जिअतमुक्त तुम ह्वै गये सहजहि बिना उपाय ॥

उभय धर्म सारग जगमाहीं । करहिंकर्मफलरुचिमननाहीं ॥
ब्रह्मसमर्पण विधिसनकरहीं । ते जन ज्ञान पंथ अनुसरहीं ॥
फलहित सदा करैं निज कर्मू । कर्म पंथ जानहु सो धर्मू ॥
कर्म भ्रष्ट तजि वेद नियोगा । तुम सब भये दंडके योगा ॥

* पक्ष

विष्णु भक्त केसेहु तुम नाहीं । घटैं न तौ न चिह्न तवमाहीं ॥
हरिबाणी तुम हमसनसुनहू । पुनिनिजमनकोभ्रमपरिहरहू ॥
सुहृद शत्रुसम बुधिकरिभजहीं । वर्णाधर्म निजकबहुंनतजहीं ॥
विषसजानिकाहुहिनहिंत्यागैं । परहिंसा में नहिं अनुरागैं ॥
मन निर्मल ममता मद त्यागी । जानहु विष्णुभक्तबड़भागी ॥
श्रुति स्मृति दुइ आज्ञा मेरी । तेहिउल्लंघहिजो मतभोरी ॥
मम आज्ञा भङ्गी मम द्रोही । सोन भक्ततेहिकीमतिमोही ॥
जग बंचक मम भक्त कहाई । सोनर परै नरक महँ जाई ॥
दो० इत्यादिक बहु वचन सों कर्म त्याग शुभ नाहिँ ।
द्विज निज कर्महिंकरैं नित यह गायोश्रुतिमाहिँ ॥
संध्या तीनि उल्लंघहिं जोई । तौनिष्कृतिकियोपावनहोई ॥
विधिसंन्यासकरैंनहिंजोलौ । करहिकर्मनिजदिनप्रतितौलौ ॥
तीरथ नाम सुनी यह बानी । करिप्रणाम प्रभुआज्ञामानी ॥
ऐसेयद्विधि हरि व्रतधारी । निष्कृति*करिहिजभावसँभारी ॥
वैदिक कर्म निष्ठ सब भयऊ । सुब्रह्मण्य धाम प्रभु गयऊ ॥
स्कंद धारसरि करि अस्नाना । सन्मुखपूजे सहित विधाना ॥
बसन कषाय श्रंग अतिराजा । हाथकमंडलु दिव्यविराजा ॥
भस्म सहित निर्मल वपुधारी । गुरु वर सोहैं यथा पुरारी ॥
नाना देश वासि द्विज आये । प्रभुहि देखि ये वचनसुनाये ॥
हमसब द्विजस्वकर्मनितकरहीं । मनु वर्णात सब धर्माचरहीं ॥
चतुरानन सेवक मन बानी । तेहि समकोउनदेवमनजानी ॥
दाढ़ी और कमंडलु धरहीं । चतुरानन पूजा अनुसरहीं ॥
थितिलयपालनसोनितकरहीं । लीला सहित रूप बहुधरहीं ॥
बहुश्रुति महिमा तासुबखानी । सुनहुविनययद्यपितुमज्ञानी ॥
सकलजीवप्रकटहिंजगमाहीं । प्रलयकालविधिनाहिँसमाहीं ॥
विनहिँ यत्न सबकोनिर्वाना । देतलोकनिजकरहिजोध्याना ॥
सो० ब्रह्म लोक पर धाम ब्रह्मा ब्रह्मन और कोउ ।

* प्रायश्चित

नहिं अभेद को काम क्यों ऐसी तुम हठ करौ ॥
शंभु कह्यो सुनिये मोहिंपाहीं । सो तुम श्रुती सुनी धौं नाहीं ॥
ब्रह्मादिक जेहिसन उपजाहीं । तासु ज्ञान बिनभवक्षतिनाहीं ॥
तेहितेश्रुतिशिरश्रवणबिधाना । कियेयथाबिधिपद निर्वाना ॥
चतुरानन सहलय तुम मानी । सो सुषुप्ति सम जानहिँ ज्ञानी ॥
सोइ उठैजेहिबिधिपुनिप्रानी । तिमिनहोहिजन्मादिकहानी ॥
गुरु वर वचन सुनत हर्षाई । भयेशिष्य सब चिह्न बिहाई ॥
पावक भक्त तहां पुनि आई । निजमतयहिबिधिदीनसुनाई ॥
अग्नि महातम बहुश्रुतिगावैं । तासु भजन बिनसुखनहिँपावैं ॥
दो० जीवत सुख प्रदअंत महँ शुभगति देहि सुजान ।
तेहिते पावक हम भजैं तेहि सम देव न आन ॥
तुमहुं तासु सेवा नित करहू । निजहितजानिवचनअनुसरहू ॥
सुनि शंकराचार्य्य भगवाना । वचन गँभीर पयोद समाना ॥
कह्योसुनहुद्विजमससमुझायो । देव भाग प्रद अग्नि बतायो ॥
अग्न्यष्ट धीन कीजे नित कर्मू । प्रभुहि समर्पहु फल सहधर्मू ॥
मत अद्वैत सदा मन देहू । पैहौ मुक्ति न कछु सन्देहू ॥
सुहोत्रादि सुनि गुरु वरबानी । पर ब्रह्म निष्ठा उर आनी ॥
सावधान मन ह्वै जग गयऊ । तबहिं सौरगण आवत भयऊ ॥
अरुण पुष्प माला उर धारे । रविमंडल सम तिलक सवांरे ॥
सकल प्रधानदिवाकर नामा । कहन लगो करि दंडप्रणामा ॥
नाथ दिनेश हमारे देवा । हम सबकरहिंतासुनित सेवा ॥
लोकनयनश्रुतिरविकहँगावा । औरौ बहु प्रभाव दर्शावा ॥
चंदनअरुणतिलककहसकरहीं । ताही की माला नित धरहीं ॥
षट प्रकार को भेद हमारा । सोसबतुमसन कहहिंप्रकारा ॥
उदय समय प्रभु ब्रह्म स्वरूपा । कोउ ध्यावैं सोइ रूप अनूपा ॥
मध्यदिवसशिवरूपदिवाकर । एकहि तीन रूप सेवाकर ॥
अस्त काल रवि हरितनधारी । तेहि स्वरूपकोइ भजैतमारी ॥

हेमप्रसप्रधरे प्रभु देवा । मंडल महँ ध्यावहिं करिसेवा ॥
दो० दर्श पाय भोजन करैं एकन को यह नेम ।
तप्त लोह मंडल करैं निज भुज एक सप्रेम ॥
भुज ललाट उर चिह्न सवांरी । क्षराक्षराध्यावहिंसदातमारी ॥
सब श्रुति संमत है रवि सेवा । तिन समान नहिँ दूसर देवा ॥
कृष्ण वचन हैं परम प्रमाना । गीता महँ बरणयो भगवाना ॥
तेजस्विनमहँरविमोहिंजानहु । सविताविष्णुरूपमोहिंमानहु ॥
मूढ़ दिवाकर सुनु मम बानी । यहश्रुतिक्योंनहिँतुमउरआनी ॥
मन सों जन्म लियो उडुराजा । चक्षुसों प्रकट भये दिन राजा ॥
जासु जन्म सोनित्य न होई । सविता ब्रह्म होइ नहिँ सोई ॥
ईशनियोग भ्रमैं निशि वासर । जेहि डरते जग करै उजागर ॥
जेहि डर पवन चलै जगमाहीं । जेहिभयपायसो सथिरनाहीं ॥
मारत काल जरावत आगी । जेहिडरमकहिँननिजपथत्यागी ॥
सबकर परम प्रकाशक जोई । ब्रह्म अनादि लख्यो तुमसोई ॥
जोश्रुतिरविवरणनअनुसरहीं । रविगतिब्रह्मनिरूपणकरहीं ॥
सविताकोनहिंनित्यबतायो । ज्योतिषमहँपुनियहिविधिगायो
आदिकल्परविकरहिंप्रकाशा । अंतकल्पमहँ होयँविनाशा ॥
तेहिको तू जग कारण कहई । तवविद्या बड़िअद्भुत अहई ॥
तेहि कारण सबचिह्न बिहाई । वेदाचार गहो मन लाई ॥
द्वैत रहित बोधहि जब पैहौ । तब तुम अवशिमुक्तह्वै जैहौ ॥
सुनि प्रभु गिरा सकल हर्षाई । शिष्यभये सब चिह्नबिहाई ॥
दो० जो द्विजवरहि समाज बहु जुरीसकल तहँआय ।
गुरु पूजा सन्मान करि हर्षे आशिष पाय ॥
वायुदिशा कहँ तवपगुधारा । तासुविजयकरकीन्हविचारा ॥
तीनि सहस्र शिष्यसँगमाहीं । कोउकोउशंखबजावतजाहीं ॥
कोऊतालकोउझांझबजावहिं । कोउ घंटा कोईयशगावहिं ॥
करैं व्यजन चामर लिये कोई । पूजहिंगुरुहिं मानमद खोई ॥

दुख सुखदाहरहितत्रिपुरारी । सबसेवहिंनिजरुचिअनुसारी ॥
जेहि जेहिदेशजाहिंयतिराजा । तहां होय बहु विप्रसमाजा ॥
कुमति खंडि वैदिक मतधारी । अभयदान देकरहिं सुखारी ॥
गण पुर महँ पहुंचे प्रभुजाई । सरित कौमुदी मुदितनहाई ॥
गणपति पूजे सहित हुलासा । एक मास तहँकीन्हनिवासा ॥
षटरस भोजन विप्र बनावहिँ । गुरुयुतभिक्षासबहिकरावहिं॥
सांझसमयकरि द्विषटप्रनामा । ढक्कानादसहितगुणधामा ॥
प्रेम विवश नाचत कोउआगे । गावैं यहि प्रकार अनुरागे ॥
पूरण ब्रह्म सकल उरवासी । सतचितआनँदअजअविनासी ॥
मन वाणीजेहिजानि न पावैं । श्रुतिशेखरनितप्रतिजेहिगावैं ॥
भली भांति गो गणजिन जीते । ध्यानकरैं नित हृदय पुनीते ॥
दो० तेजानहिं लहि गुरु कृपा पावहिं पद निर्वान ।
जासु ज्ञान सोइ ब्रह्म हम हमते सो नहिँ आन ॥
सो० श्री गुरु आनँद कंद यहि विधि सेवहिँ हर्षयुत ।
पुर जन देखि अनंद विस्मित मन बोलत भये ॥
तव मत समीचीन यह नाहीं । नहिंअवलंबनकछुजेहिमाहीं ॥
मनबाणी जेहि जानि न पावैं । केहि प्रकार तहँबुद्धिलगावैं ॥
तजहु वेगि यहमत जगन्यारो । गाणपत्य मत गहहु हमारो ॥
षटप्रकार यहु मत जगव्यापा । मुक्तिहेतु नाशक परितापा ॥
प्रथमहिं महा गणपकी पूजा । तथा हरिद्रा गणपति दूजा ॥
और एक उच्छिष्ट विनायक । पुनिनवनीतगणपसुखदायक॥
पंचम हेम गणप सुख दायक । तथाषष्ठ संतान विनायक ॥
शैवागम महिमा बहुवरणी । गणपतिभवतमकहँशुभतरणी॥
महागणप जग कारण स्वामी । सकलदेवतिनके अनुगामी ॥
श्रुतिगाई महिमा नहिं थोरी । रचैं देव ब्रह्मादि करोरी ॥
सुखप्रद मुक्ति विनायक देवा । जानिकरौं तिनकीनितसेवा ॥
शुण्डदन्तअंकितभुज करहू । यहिविधिसुखसोंभवनिधितरहू॥

गणपतिजगकारणनहिंहोई । रुद्रपुत्र जानै सब कोई ॥
परब्रह्म कारण जग केरा । वेद पुराण प्रमाण घनेरा ॥
बर्णहिं बहुविधि वेद पुराना । तेहिते चिह्न न धरहिं सुजाना ॥
दो० तजहु चिह्न अद्वैत रत होहु सदा निज कर्म ।
ब्रह्मार्पण विधिसों करहुयहिसमाननहिँधर्म ॥
निज गण सहित गहो उपदेशा । तजे चिह्न गवने निज देशा ॥
पंच देव पूजा अनुरागे । पंच यज्ञ सेवहिं हठ त्यागे ॥
तबहि हरिद्रा गणप पुजारी । आयकह्योनिजमतविस्तारी ॥
चारिभुजा त्रय नयन बिराजा । पीताम्बर पहिरे गणराजा ॥
पीत यज्ञ उपवीत सुहावा । पीत बदन सोहै छबि छावा ॥
अंकुश पाश सदा प्रभु धरहीं । निजभक्तनकीभयनितहरहीं ॥
तुण्ड दन्त कर चिह्न सुहावा । तप्त लोहमय जो भुजलावा ॥
मुक्त होय नहिं कछु संदेहा । हे यतीश सुंदर मत येहा ॥
अंशी अंश अभेद विचारी । गणपरूप जानहु त्रिपुरारी ॥
गण पति रूप भजो नहिँ हानी । पंच देव को सम करजानी ॥
वेद विरुद्ध चिह्न नहिं धरहू । मन अद्वैत भाव अनुसरहू ॥
यहि विधि मुक्त रूप ह्वै जैहो । कर्मभवन जगमें नहिं ऐहो ॥
दो० सुनिहारिद्रपरणामकरि गणकुमारसुखपाय ।
गुरु मूरति उररखिकै किये वचन मन लाय ॥
तीसर गण शंकर पहँ आयो । आपनमतयहिरीति सुनायो ॥
हम उच्छिष्ट गणप के दासा । करहिँ न और देवकी आसा ॥
लोचन तीनि धरे भुज चारी । अंकुश पास गदा भयधारी ॥
शुंड भरे मधु मद की धारा । गणनायक वरदानि हमारा ॥
सदा पीठ बैठे सरसाई । परमप्रिया सोहै दिशि बाई ॥
चुंबहिँ ताहि अलिंगन करहीं । तासु गुह्यथल पर कर धरहीं ॥
एक पुरुष अरु दूसरि नारी । उभयजातिबिरचीसुखकारी ॥
जेहिकोजेहिसंगमचरुचिहोई । भोग करैं नहिं दूषण कोई ॥

उभय योग उपजै सुख भारी । जानहु सोइप्रभुमुक्ति हमारी ॥
आनंद मूरति मंगल नायक । गणनायक सबकेसुखदायक ॥
कर्म मुक्ति को कारण नाहीं । प्रकट कह्यो है बहु श्रुतिमाहीं ॥
यहअनुकूल सुखद सबही को । सब प्रकार हमरो मतनीको ॥
गुरु वर तब बोले यह बानी । मम उपदेश सुनो हितजानी ॥
सुरा पान वर्जत श्रुति नाना । पापन परतिय गमनसमाना ॥
तासु ग्रहन जेहि मत में होई । तेहि में इष्टि करो जनि कोई ॥
जो अकर्म श्रुति मोहिं सुनाई । सो संन्यास कहै सुख दाई ॥

दो० सुरा पान पर दार सों मुक्ति लहै नहिं कोय ।
दुष्ट भाव छहतजहु तुम उरविकारनिज खोय ॥

प्रायश्चित्त यथा विधि करहू । अजपा जाप सदा मन धरहू ॥
पंच यज्ञ सुर पंचक पूजा । करहु सदा मन भाव न दूजा ॥
परम धर्म श्रुति संमत येहा । ह्वै हौ मुक्तन कछु संदेहा ॥
करि प्रणाम ते सहित सनेहा । सुनि उपदेश तजो सन्देहा ॥
पुनि अवशेष आयअसकहेऊ । यहसबजगगणपति सनभयऊ ॥
गणप रूप जग चिंतनकरहीं । मुक्त रूप मन शंक न धरहीं ॥
कैसे अय मत खंडन कीन्हा । तब गुरु वर यह उत्तर दीन्हा ॥
पुरुषाधीन प्रकृति उपजायो । मह तत्त्व तेहि नाम कहायो ॥
तेहि सो अहंकार प्रकटायो । तेहिसतरज तमगुणदर्शायो ॥
हरिहर विधिभे तीन स्वरूपा । थितिलय सर्जन हेतु अनूपा ॥
हर पुनि तीन पुत्र उपजाये । भैरव गणपकुमार* कहाये ॥
लहिनिजनिजअधिकारबड़ाई । सबन पूज्य पदवी जग पाई ॥
तेहिते तुम निज हठ परहरहू । पंचदेव पूजा नित करहू ॥
सुनिगुरु वचन चिह्नसबत्यागी । भये पंच पूजा अनुरागी ॥

दो० पांड्य देश अरु चोल कहँ तथा द्रविड़ वर देश ।
यहिविधिनिजवशआतिप्रभु कांचीकीन्हप्रवेश ॥

हस्तिनामगिरि चारिहुपासा । कटिमेखलसमकरतप्रकासा ॥

* स्कान्द

तहँ शारद मन्दिर बनवावा । जो सबभांतिविचित्रसुहावा ॥
श्रुति सम्मत पूजन उपदेशा । विप्रनकहँ प्रभुदीन निदेशा ॥
जहँ वरेश अस नाम अनूपा । रहादिव्यशिव लिंगस्वरूपा ॥
तहँ शिवपद्धन*को निर्माना । कियोमनोहरअतिभगवाना ॥
वरदराज हरि विग्रह जहवां । विष्णुनगरकीन्होंप्रभुतहवां ॥
उभयभेदयहिविधि प्रभुकीन्हें । ब्रह्मनिष्ठद्विजगणकरिदीन्हें ॥
एक मास तहँ भयो निवासा । कीन्हों मत अद्वैत प्रकाशा ॥
बहुरि ताम्र पर्णी तट वासी । द्विजन आय देखे सुखरासी ॥
करिप्रणाम संशय निजभाषा । मतनिर्णयकीउरअभिलाषा ॥
नाथभेदसबभांतिप्रकाशा । करहुतासुकेहिविधिहिसुनाशा ॥
जीव शुभाशुभ क्रिया घनेरी । करतलहैंतिमिगतिबहुतेरी ॥
जासु देव सेवा मन लावै । तनुतजि तेहिकेलोकसिधावै ॥
कहहुकौनिविधि नाथअभेदा । सो सुनाय हरिये सब खेदा ॥
परम तत्त्व पद बिन पहिचाने । द्विजवर तुम संशयउरआने ॥
ज्ञान पाय ह्वै जाय अभेदा । यहनिश्चय वरनै सब वेदा ॥

दो० सबकछु आतम जहँ† भयो कहि करि देखैकाय ।
ज्ञान अग्नि अघ नाश भे पुनि न भेद दर्शाय ॥

ब्रह्म जीव ह्वै कीन्ह प्रवेशा । बहुश्रुतिगणकीयहउपदेशा ॥
एक अनेक रूप सोइ धरई । देव मनुज संज्ञा अनुसरई ॥
सब प्रपंच परमातम रूपा । श्रुतिशिरकोसिद्धांतअनूपा ॥
शुद्ध बुद्ध सत चित अविनाशी । ब्रह्मज्ञानघनअजसुखराशी ॥
तेहि कारण सब भेद भुलाई । अनुभव तासु करहु मनलाई ॥
सुनि उपदेश परम सुखमाना । ब्रह्माऽभेद भाव उर आना ॥
अंध्र देश के जे द्विज आये । उक्तरीति गुरुवर समुझाये ॥
बंकटेश गवने सुख धामा । तिनकोकीन सप्रेमप्रणामा ॥

दो० नृप विदर्भ को समर पुनि शंकर देखो जाय ।
आगे आय लीन तेहि पूजे भक्ति दृढ़ाय ॥

* नगर । † जिस ज्ञानदशा में

क्रथकेशेश्वर पूजन पाई । रहे तहां शंकर सुखदाई ॥
भैरव तंत्र*लम्बन कारी । बहुत रहे तहँ तन्मत धारी ॥
तिनकी दुर्बुधि शम्भु निवारी । कियेसकलशुभपथअनुसारी ॥
करनाटक जय कीन विचारा । तब नरपतियहवचनउचारा ॥
कापालिकगणतहँअतिशयतर । हैअगम्य सो देश यतीश्वर ॥
सहि नसकैं तवयश उजियारा । श्रुतिविरोधसतधरवरिआरा ॥
जग को अहितहोय सोकरहीं । साधु विरोध सदा मन धरहीं ॥
सुनत सुधन्वा नृप तब कहही । यह प्रभु दाससाथतब अहही ॥
पांवर जन भय मन नहिं धरहू । सुनि वरमुदितगमन तहँकरहू ॥
तब श्री शंकर कीन पयाना । तहां जाय पहुंचे भगवाना ॥
क्रकचनामकापालिकगुरुवर । सुनि आयोबैठे जहँ शंकर ॥
चिताभस्म भूषित तनु भाला । हाथ विराजै मनुज कपाला ॥
निज सम बहु दुर्जन सँग लावा । गर्व सहित यहवचन सुनावा ॥
भस्म धरहुसोसोहिँअतिभावा । नरकपाल केहिहेतु विहावा ॥
धरहु अपावन मृन्मय भाजन । होहुन कौन हेतु भैरव जन† ॥
मधु भैरव कहँजेहिनपिआवा । नरशिरपंकजजेहिनचढ़ावा ॥
दो० जिन भैरव युत भैरवी यहि विधि पूजी नाहिँ ।
कौनि भांति ते मुक्तिके भाजन यह जग माहिं ॥
यहि प्रकारतेहि जल्पत देखी । लहो सुधन्वा कोप विशेखी ॥
निजपुरुषन कोआयुस दीन्हा । प्रभु समाज ते बाहरकीन्हा ॥
भृकुटी कुटिलानन सो भयऊ । कपतओठफरसा तेहिलयऊ ॥
तुम सब के शिर जोनगिराऊं । तौन क्रकच यहनामकहाऊं ॥
कापालिक दल उमड़ो भारी । प्रलयसमान शब्दभयकारी ॥
तेहि दल कीसंख्याकछुनाहीं । धरे शस्त्र आये गुरु पाहीं ॥
देखि विप्रगणअति भय पायो । नरपतिनिजरथतुरतसँगायो ॥
कवचपहिरिगहिकरधनुबाना । वर्ष न लगो पयोद समाना ॥
होन लाग नृप सों संग्रामा । तबसों क्रकचमहाअघधामा ॥

* नृपातसंज्ञा † भक्त

भूसुर वध हित बेगि पठाये । फेर खाय कापालिक आये ॥

दो० तोमर पट्टिश शूलकर खड्ग परशु धरवीर ।
अट्टहासध्वनिकरहिंशठ सुनिमनहोहिंअधीर ॥

आवत देखि कपालि बरूथा । लगे पुकारन द्विज वर यूथा ॥
त्राहित्राहिशरणागतद्विजगन । हरहु दुःख हमरो भय भंजन ॥
तब यति राजकीन्हिहुंकारा । उठी अग्नि तहँ भे जरिछारा ॥
नृपवर हेम पुंख शर मारे । बहु सहस्र शिर काटि पछारे ॥
शिर पंकज रणमंडितभयऊ । तब नृपवर शंकरपहँ गयऊ ॥
क्रकच देखि निजसेनसंघारी ।सबद्विजगणकहँसुखीनिहारी ॥
अति उदास शंकरपहँ आयो । अतिशयदारुणवचनसुनायो ॥
कुमता अय मम देखु प्रभावा । चहौ तुरतनिजकृतफलपावा ॥
करकपालकीन्होतेहिँध्याना । भैरव पद्म मह परम सुजाना ॥
नयन मूंदि भैरव जबध्यायो । मदिरा सों भाजन भरि आयो ॥
अर्द्ध सुरा कीन्हो तेहिँ पाना । पुनि कीन्हो भैरव कर ध्याना ॥
भैरव प्रकट भये तेहि काला । नर कपाल की पहिरे माला ॥
प्रबल तेज धर मनहु कृशानू । जटा जूट जनु ज्वाल समानू ॥
करत्रिशूलनृकपाल विराजा । अट्टहास सुनि विस्मितसमाजा ॥

दो० निजजनद्रोही हनहु प्रभु क्रकचकह्योशिरनाय ।
सुनि शठके ये दुर्वचन भैरव कहै रिसाय ॥

मम स्वरूप शंकर सुख दाई । कुशल चहसि तहँ बैर बढ़ाई ॥
यहकहिक्रकचशीशहरिलीन्हा । भैरवनाथ कोपबहु कीन्हा ॥
यति शेश्वर बहुविनयबढाई । करिप्रणाम यहगिरासुनाई ॥
वेद पुराण धर्म जो गावैं । ताहि क्रिये सब पापनशावैं ॥
जबहिँ होय उरकोअघनाशा । निर्मल मनमहँज्ञानप्रकाशा ॥
सभामांहिक्रकचहिसमुझावा । नहिँ मान्यो दुर्वचन सुनावा ॥
मर्मशिष्यनतेहिताड़नकीन्हा । तबते तुमको यह श्रमदीन्हा ॥
पूजनीय शंकर जग माहीं । हमतन भिन्नकबहुतुमनाहीं ॥

जो तुम कीन्होजनुहमकीन्हा । तिनकोयथायोगफलदीन्हा ॥
मन्त्र वद आयो मुनिराई । नहिँ कछु धर्मप्रीति दर्शाई ॥
दो० शेष रहे ते होहिं अब तव प्रसाद द्विज रूप ।
भैरव अन्तर्द्धान भे करि सम्वाद अनूप ॥
कापालिक मुनि भैरव बानी । करि प्रणाम बोलेभय मानी॥
क्षमहु नाथ अपराध हमारा । बनिआयोजोबिनहिबिचारा ॥
अबप्रभु हमपर रिसपरिहरहू । मूढ़जानि परिपालन करहू ॥
तबशिष्यनको आयसु दीन्हा । विधिवतसंस्कारतिनकीन्हा ॥
वटुकादिक द्विज भावहिपाई । वैदिक धर्म्म करें मन लाई ॥
यहिप्रकारखलकुल जबनासा । विप्रनंके मन परम हुलासा ॥
मुदित शंभु पद पूजा करहीं । पुनिपुनिपादरेणुशिरधरहीं ॥
बहुरि एक कापालिक आवा । सभामाहिँ असवचनसुनावा ॥
बहुकादिकनिजमतशुभत्यागी । जाति लोभ सबभयेअभागी ॥
जातिप्रयोजबसोहिंकछुनाहीं । जातिकीर्त्तिकल्पितजगमाहीं ॥
नर नारी दुइ जाति सुहाई । उत्तम नारि जाति मनभाई ॥
जासु भोग आनँद उर होई । जगमें तेहि समान नहिंकोई ॥
यह ममतिय यह नारिपराई । यहहठ नहिं कबहूं सुखदाई ॥
गम्यागम्य विभाग न नीको । वृथाविकल्प उठो सबहीको ॥
चर्म चर्मको योग सुहावा । मोद हेतु सबही को भावा ॥
तिय संयोग जो आनंद होई । परम मुक्ति जानो तुम सोई ॥
आनँद हितप्रकटहियहजीवा । देह तजे पुनि आनँद सीवा ॥
यहि प्रकार निज मतदर्शायो । तब गुरुवर यहवचनसुनायो ॥
भली कही कापालिक बाता । तनया कासुरही तव माता ॥
दो० सांची हमसों कहहु तुम जनि कछु करो दुराव ।
दीक्षित पुत्री सो रही कहाँ नाथ सत भाव ॥
दीक्षित अर्थ मोहिंसन कहहू । सत्य वचन तुम बोलत अहहू ॥
यति वर दीक्षा केर प्रकारा । मातामह कर कहहुँ उदारा ॥

ताल वृक्ष रस नितसों काढ़ा । जासु पान आनंद उर बाढ़ा ॥
यदपि रहा सादकरसज्ञाना । तदपि आपु करै नहिं पाना ॥
सो आनंद औरन को दीन्हा । मधुविक्रयतेहिनितप्रतिकीन्हा॥
रहाशीलयहिविधिवहुजाही । कहैं सुजन सबदीक्षित ताही ॥
कन्या तासु भई मम माता । रही जो सब की आनंद दाता ॥
आनंद हेतु लोग तहँ आवैं । तासु प्रकाश परम सुख पावैं ॥

छं० उन्मत्त भैरव नाम हमरे पिता कर बड़ यश रहा ।
जोमधुर मधु रस बांटि लोगनदेतनितआनंदमहा ॥
जेहितीर जातडरात सुरगण मद्यगन्ध भयातुरा ।
भागहिंलरहिंतिथिनाहिंऐसोभयोहैसमर्पितुपुरा ॥

दो० तेहिते सत्कुल जन्म मम प्रवर भयोयतिराज ॥
पूजनीय जगजानिमोहिं पूजहु सहित समाज ॥

सुनि शंकर तेहिसों असभाषा । जाहुजहांतुम्हरीअभिलाषा ॥
जेद्विज वर कुत्सित मत धारी । तिनहिंदराडदेकरहुंसुखारी ॥
ऐसन के भाषण अघभूरी । करहु आशु ममढिगते दूरी ॥
जब शंकरयहआयसु दीन्हा । शिष्यनताहिदूरिकरिदीन्हा ॥
दूरि जाइ अस कोन विचारा । सुनहुंकछू गुरु वचनउदारा ॥
कापालिकपुनिगुरुढिगआवा । तर्क सहितयहवचनसुनावा ॥
जीव मुक्ति लय दूसरि नाहीं । बनेन एनि आवन जगमाहीं ॥
सरिता जिमि समुद्र महँजाहीं । सागरसों पुनि आवतनाहीं ॥
तैसेहि देह तजै यह जबहीं । होयमुक्त यतिनायकतबहीं ॥
पिंडदिये मृत तृप्ति बखानहिं । यमपुरस्वर्गनर्कपुनिमानहिं ॥
पुरायपापबश गमन बतावहिं । क्षीणभयेनरलोकहिआवहिं ॥
तिनके मतकी कछुनप्रमाना । गुरुवर देखहु तुमकरिध्याना ॥
उभय भोग महिमें ह्वैजाई । सो प्रकार मैं देहुं सुनाई ॥
ते स्वर्गी पावहिं जे भोगा । ते नर्की जे बहु दुख रोगा ॥
स्वर्ग नर्क प्रत्यक्ष विहाई । है परोक्ष कल्पित यतिराई ॥

भूत रचित यह देह विलाई । जीवदेहबिन केहिविधि जाई ॥
समसतसबप्रकार सुखदायक । सुनि बोले शंकरमुनिनायक ॥
तव पथवेद बहिर्मुख है शठ । समीचीननहिं जनिकहबहुहठ ॥
वेदविहित प्रभुकरहुप्रकाशा । जासु लाभते भव दुखनाशा ॥
देहादिक जग चेतन कारी । जासुज्ञानलहिहोहिंसुखारी ॥
दो० ज्ञान बिनानहिं मुक्तिकोउ लहैकह्यो श्रुतिमाहिं ।
तुम जो मानहु मुक्ति सो मनभ्रमतजिकछुनाहिं ॥
यद्यपि थूल देह जरिजाई । लिंग देह युत जात सदाई ॥
यथा जलौकातृणतजिआना । तृणगहिचलैसकलजगजाना ॥
तथाजीवगति श्रुतिनितगावै । एक देह तजि दूसरि पावै ॥
जीव सदा यह लोक विहाई । औरलोक महँपुनिचलिजाई ॥
अवसिकरियपिंडादिविधाना । तेहिसों जीव लहै कल्याना ॥
प्रेतभाव तजि उत्तम लोका । गया पिंड सों होयविशोका ॥
अब शठ चारवाक मत धारी । जाहि इहां सों मौन सँभारी ॥
यह सुनि भाषा वेष विहाई । श्रीगुरु पद रज शीश चढ़ाई ॥
पुस्त भार वाही सो भयऊ । पुनिसौगत मत धरतहँ गयऊ ॥
करिप्रणाम गुरुवरसोंकहई । नाथ लोक सब मूरख अहई ॥
कर्म करैंनितप्रतिकेहि लागी । स्नानादिककेहिहेतु अभागी ॥
भौतिक देह पवित्र न होई । जीव सदा निर्म्मल ह्वै सोई ॥
तजे देह पुनि जन्म न पावा । मूरुख जल्पत हैं मनभावा ॥
देहगये पुनि हाथ न आवै । दैव योग धन सुबकोउपावै ॥
वरु ऋण करैंपयेघृत पीजै । देहुं पुष्ट अरु बुद्धि नवीनै ॥
सर्व भक्षिहै नित सुखलहई । आनंद लाभ मुक्तिपद अहई ॥
दो० वृथाजल्प जनि करसि शठ आगम निगमपुरान ।
परलोकादिक जीव को कहैं सो मानु प्रमान ॥
जोशठ ऋण करिके घृतखैहै । ऋण संबंध जन्म पुनिपैहै ॥
तेहि कारण अज्ञान विहाई । उत्तम पंथ चलो मन लाई ॥

सुगत मुनी विचरे जग माहीं । जीव हीन देखी महिनाहीं ॥
जगत सत्वपुनि पुनिअवलोकी । कियेअभय देजीवविशोकी ॥
करुणाकरितिनबहुसमुझायो।प्राणिदयाव्रतसबहिसिखायो॥
यह सम और धर्म नहिजायो । मम मत धर्म स्थानकहायो॥
सबहि उचित यह धर्म गोसाई । तब बोले शंकर सुखदाई ॥
पुनि जल्पसि सौगत मतधारी । वेद विहितहिंसासुखकारी॥
दो० अग्नि शोम यज्ञ मुख पशु हिंसा नहि पाप ।
स्वर्गलहै पशुदेह तजि जहां न कछु संताप ॥
वेद विहित हिंसा युत कर्मू । करहिंनतेहिसमानकोउधर्मू॥
वेद विनिंदिकश्रुतिपथत्यागी । तेसब घोर नर्क के भागी ॥
तेतहँ करहिं प्रलय सौं वासा । श्रीसनुने यहवचन प्रकासा॥
भूसुरादि के धर्म सुहाये । जे सब वेद पुराणन गाये॥
तिन्हहिछांडिजेऔरहिगहहीं।तिनसमअधमनकोउजगअहहीं॥
सुनि सौगात त्यागोअभिमाना । साधु प्रसादलगी तबखाना॥
श्रीगुरु पद्म पाद भगवाना । औरशिष्यगुणाज्ञाननिधाना॥
चरण पादुका तिन सब केरी । संगलै चलै सनेह घनेरी॥
पुनिक्षपणाक संज्ञकतहँ आवा । गोल यंत्रएकहाथ सुहावा॥
तुरी यंत्र दूजे कर माहीं । तनको पीन छांडिकछुनाहीं॥
पूरण समय नाम मम शंकर । मत विचित्रममसुनियेसुन्दर॥
उभय यंत्र धरि रविगतिदेखी । सकलशुभाशुभकहैंविशेखी॥
परम देव हमरे मत काला । नहिंचलाय कोउसकैकृपाला॥
बने रहो तुम हमरे पासा । कालशुभाशुभ करहुप्रकासा॥
आज्ञा शिर धरि सोसंगरहेऊ । जैनशिष्य सहआवत भयऊ॥
धरे एक कोपीन मलीना । तनमलीन सबचिह्न विहीना॥
अर्ह न्नमः सदा सो भाखै । और वस्तुकछु तीर न राखै॥
भय प्रद प्रेत सरिस तहँ आई । निजमत यहविधिदीनसुनाई॥
श्री*जिन देव सदा उर बासी । जीव रूपसो प्रभुअविनासी॥

* बुद्धावतार

तजे देह सो मुक्त स्वरूपा । देह सदा जानौ मल रूपा ॥

दो० जीव सदा परि शुद्ध है मल स्वरूप यह देह ।
मज्ज नादि सों शुद्धि नहिं जानैं बिन संदेह ॥

वृथा करहिं मज्जन केहि हेतू । उत्तर दियो ताहि वृषकेतू ॥
स्थूल सूक्ष्म कारण त्रय देहा । विल यहोहिँजबबिनसंदेहा ॥
ब्रह्म भाव पावै तब जीवा । सत चितरूपहोयसुखसीवा ॥
सोमन ईश भिन्न यह ज्ञाना । दुख प्रद बंधन हेतु बखाना ॥
जो अभेद अनु भव दृढ़होई । मुक्ति हेतु सुख दायकसोई ॥
दुर्लभ मुक्ति सकल जगजानी । देहनाश महँ सो तुम मानी ॥
श्रीशंकरकी यह वरवानी । शिष्यसहितमुनिअतिहितजानी ॥
भाषावेश सकल निज त्यागी । भयो नाथ सेवा अनु रागी ॥
बणिक भयोलावैसब नाजा । निजगणसहितकरतयहकाजा ॥
बौध सबल नामा तब आवा । यहप्रकारको वचन सुनावा ॥
बोध निरर्थक तव संसारा । तव अभेद मतमेंनहिं सारा ॥
नरबिषाणसमकेहिहित धरहू । क्योंप्रत्यक्षफलहिपरिहरहू ॥
चहहु अदृष्ट दृष्ट रुचि नाहीं । मुनिवर कासमुझिमन माहीं ॥
करिअभेदजीवहि नहिं मानहु । अतिअनर्थयातिवरयहठानहु ॥

दो० मम मत चेतन एक जो सो अनेक धरि रूप ।
तन मन प्रेरक मुक्त नित आतम मोदस्वरूप ॥
कर्ता भोक्ता आपु कहँ परानंद प्रभु मानि ।
इच्छा वश क्रीडा करै धरे देह सुख खानि ॥

तजत देह सो मुक्त स्वरूपा । ऐसो मम मत परम अनूपा ॥
सुनि यह वचन शंभु विज्ञानी । स्वर गँभीर बोले यह बानी ॥
देह त्याग तुम मुक्त बखानी । को जग तुम समान अज्ञानी ॥
सत्य शौच देवातिथि पूजन । कीन्हे ब्रह्म लोक पावै जन ॥
अग्निष्टोम याग करु जोई । होय स्वर्ग बासी नर सोई ॥
जेहि जेहि देवचरण में प्रीती । तेहि तेहिलोकजाययहरीती ॥

इत्यादिक बहुवचन प्रमाना । जीव गमागमकरहिं बखाना ॥

दो० सब भूतन में आतमा आतम में सब लोक ।
ब्रह्मभावलखिपरमपदलहिपुनिहोयविशोक ॥

सो० निज स्वरूप कोज्ञानजीवन यह जब लौं लहै ।
यदपि योग मख दान करै मुक्ति पावै नहीं ॥

कल्पित जीव भाव जब त्यागा । सब अनर्थ जनु तबहीं भागा ॥
सत चित आनँद रूप निवासा । सो जानहु तुममुक्ति प्रकाशा ॥
तेहि ते मूढ़ भाव निज तजहू । स्वस्थ चित्त सत मारग भजहू ॥
सुनिगुरुवचनपरमहितमाना । करि प्रणामअतिशयहर्षाना ॥
मागध बंदी वेष सँभारी । गुरुयशगायक भयोसुखारी ॥
करनाटकसन कीन्ह पयाना । पहुँचे मल्ल पुरी भगवाना ॥
शिष्यसायरविमलरिसप्रकाशा । एकविंशदिनकीन्हनिवासा ॥
द्विजन देखि बोले श्री शंकर । मोहिं सुनावो निज मत सुंदर ॥
मल्लासुर नाशकसुखकारी । तिन सों कहत लोग मल्लारी ॥
बाहनतासुश्वानश्रुतिगावहिं । बाहनसहितभजहिंसुखपावहिं ॥

दो० पहिरैं कंठ बराटिका भाषा वेष बनाय ।
नाचहिं गावहिंकालतिहु बाजे रुचिर बजाय ॥

यह प्रकार प्रभु सेवा करहीं । सुख सें मगन सदा हम रहहीं ॥
यह वरमत है श्रुतिअनुकूला । सुख दायकनाशकसब शूला ॥
सुनत वचन बोले श्री शंकर । एक अनादि ब्रह्म सुख सागर ॥
जासु अंश विधि रुद्र कहावैं । तेहि के ज्ञान मुक्ति नर पावैं ॥
रुद्रहि भजि विमुक्त ह्वै जाहीं । तासु अंश*पुनि जेजग माहीं ॥
भैर वादि शिव गन समुदाई । नहिंतिनकीमहिमाअधिकाई ॥
तेहिपर श्वान उपासन करहू । द्विज ह्वै अस अनर्थ आचरहू ॥
जाहि छुये ते करिये स्नाना । पूजन वेष तासु शुभ माना ॥
नित्य कर्मतन सनतुमत्यागा । करहु त्रिकाल नृत्य अनुरागा ॥
तब संसर्ग पाप भागी जन । तुम नहिं दर्शन भाषण भाजन ॥

---

* भैरवादय:

दो० यह सुनि गुरु चरणन गिरे यथा वृक्ष निर्मूल ।
नृपसन्मुख जिमि गर्भिणिजनभयो हृदय अति शूल ॥
प्रायश्चित्त होन हित गुरुवर आज्ञा दीन्हि ।
तिनकी पद्मपदादि ने निःकृति यह विधि कीन्हि ॥

शिरमुण्डन पहिले करवाये । अयुत बार पुनि सरि अन्हवाये ॥
पुनि मृदलेपन पुनि सुस्नाना । ऐसो करि शतबार विधाना ॥
औरहु प्रायश्चित्त करावा । द्विज संस्कार बहु रीति न पावा ॥
गुरुवर कहँ पुनि शीश नवावा । शिष्यभाव लहि अति सुख पावा ॥
शौचस्नान परायण भयऊ । पंच देव पूजा मन धरेऊ ॥
विद्या १४ शास्त्र करण सब लागे । मुक्ति योग सब भये सुभागे ॥
तेहि पुरते पश्चिम मग गामी । मरुध नाम पुर पहुँचे स्वामी ॥
बंदीलोग विमल यश गावैं । ढक्कादिक बहुवाद्य बजावैं ॥
तहां रहा अति सुन्दर गोपुर । विष्वक्सेन केर सो मन्दिर ॥

दो० तेहि के पूरुब दिशि विपुल प्रयागार बनवाय ।
करि गृहादिकी कल्पना बैठे दर्भ बिछाय ॥
उन्मनि दशा मगन सन्त करि स्वरूपको ध्यान ।
सुखसों तहां बहुत दिन बास कीन्ह भगवान ॥

विष्वक्सेन भक्त तहँ आये । करि प्रणाम ये वचन सुनाये ॥
समीचीन हमरो मत गुरुवर । विष्वक्सेन भजहिं निशि वासर ॥
सेनापति हरि के सब लायक । अति दया तभक्तन सुखदायक ॥
निज प्रभु को भरोस मन धरहीं । हम यमराज भीति नहिं करहीं ॥
तासु भक्त हम बिन संदेहा । विष्णुलोक जैहैं तजि देहा ॥
वृथा वचन ऐसे जनि कहहू । हरि की भक्ति विमल उर गहहू ॥
विष्वक्सेन एक हरि दासा । ऐसे तहँ बहु करहिं निवासा ॥
हरिहि भजैं भक्तन सन प्रीती । है यह रुचिर सनातन रीती ॥
शाखा सींचहु मूल विहाई । तुम्हरो मत असमंजस दाई ॥
श्रीनारायण को तुम भजहू । निंदित चिह्न सकल तुम तजहू ॥

तासुप्रीति हित करहु स्वकर्मू । पंचदेव पूजा शुभ धर्मू ॥
भेदभाव तजि करिहौ ध्याना । ह्वैहौ मुक्त पाय शुभ ज्ञाना ॥
सुनिप्रभुवचन चिह्न सबत्यागा । श्रीगुरुचरण बढ़ो अनुरागा ॥
तब मन्मथ सेवक तहँ आये । गुरुचरणन महँशीशनवाये ॥

दो० मन्मथ सबके उर बसैं रचैं हरैं संसार ।
सबजगसेवतजिन्हहिँनितमहिमाअगमअपार ॥

युगल वर्तुलाकार मनोहर । मदनविभूषणाते अतिसुन्दर ॥
तिनसों सबजग बशकरिलेहीं ।सकललोककहँअतिसुखदेहीं ॥
बामा वृन्द संग नित कीजै । दरशपरश सम्भवसुखलीजै ॥
जो मनोजकर सुख अवगाहा । सोनिर्वाण परमसुखलाहा ॥
पंच बाण के धरितन अंका । जिअतमुक्तहमरहहिँअशंका ॥
अप्रमाण वाणी जनि कहहू । मम उपदेश मनोहर गहहू ॥
चतुरानन सर्जन नित करहीं । हरि पालैं श्री शंकर हरहीं ॥
हरिसुतमदन सकलजगजाना । सोकिमिहोहियथाभगवाना ॥
सवितानंदनशनि*सब जाना । तासुप्रभाकिमितरणिसमाना ॥
नारि संग विषयिनकर संगा । कीन्हे होत ज्ञान गुणभंगा ॥
वर्जित कर जहँ अंगीकारा । महा अपावन पंथ तुम्हारा ॥
बंध रूप सब को जग कामा । सोकिमिहोहिमुक्तिकोधामा ॥

दो० तजे चिह्न गुरु वचन सुनि शुभमारग मनदीन्ह ।
तेहि पुरउत्तर ओरप्रभु मुदित गमनतब कीन्ह ॥

अद्भुत मागध पुर प्रभु आये । तहं कुवेर सेवक मुनि पाये ॥
नव निधि हेम पाद अतिसुंदर । चिह्न धरे पहुंचे जहँ गुरुवर ॥
करिप्रणाम तिनवचनसुनावा । यह प्रकार निज मत दर्शावा ॥
नवनिधिके प्रभु धनद कहावैं । तासु भक्त नितप्रति सुखपावैं ॥
विनधन धर्मनकोउकरिपावैं । नहिंलौकिकसुखपुनिबनिआवैं ॥
हम कुवेर पद के अनुरागी । कबहु न दुख दरिद्रके भागी ॥
ब्रह्मादिक सुर नाथ कहावैं । तेसब धनद दियो धन पावैं ॥

* शनिश्चर

पालक जानि करहिं सुरसेवा । हैं कुवेर देवन के देवा ॥

दो० दासी तिनकी यक्षिणी सुर सुंदरि अभिराम ।
ताहू के प्रभु भजन सों लोग लहैं मन काम ॥
मुक्त होनकी कामना धनद भजन को त्याग ।
लहहिं मंदते सुख न कछु तिनकर परम अभाग ॥

तेहिकारण जो तुमसुख चहहू । धनद अनन्य भक्ति उर गहहू ॥
तवमतकी प्रमाण कछु नाहीं । निश्चय सुनो मंदमोहिं पाहीं ॥
धन स्वामी कुवेर किन होई । धन ते तृप्ति लहे नहिं कोई ॥
जिमिजिमिलाभलोभअधिकाई । बिना तृप्ति नहिं धर्मदृढाई ॥
मुक्ति विचार दूरि नित रहई । तेहिते सदा त्याग श्रुतिकहई ॥
अर्थहि अनरथ भावहु नित्यं । जेहिते सुख लव नहिंसुनुसत्यं ॥
पुत्रहु ते धनिकन को भीती । भय प्रद धनकी है नित रीती ॥
धन ते धर्म होय सुनगावा । बिन प्रारब्ध कौन धन पावा ॥
हेमगर्भ चतुरानन नामा । लक्ष्मीपति श्रीहरिसुखधामा ॥
तिन कुवेर दीन्हो धन पावा । कहततुमहिंअस लाजनआवा ॥
ईश्वर निंदन पुनि जनि कहहू । चिह्न त्यागिवैदिक पथगहहू ॥
ब्रह्म निष्ठ संध्यादिक करहू । भेद त्यागि भव सागर तरहू ॥
यहिविधिसुनिश्रीगुरुसुखदानी । चिह्नत्यागिगुरुपदरतिमानी ॥

दो० इन्द्र भक्त जन आय के कीन्हो गुरुहिप्रणाम ।
सब सुर भूप सुरेश प्रभु पुरवै जन मन काम ॥

नाथ अनुजवामन जिनकेरा । गावहिं बहुश्रुति सुयशघनेरा ॥
सुधा रत्न जिनके गृह माहीं । इन्द्र समान देव कोउ नाहीं ॥
सर्व रूप यतिगण शिखदाता । ज्ञान हीनयति दंड विधाता ॥
एक बार ऐसे यति पाई । सबहिंमारि वृकदियेखवाई ॥
तुमहुं तासु सेवा नित करहू । जानि दंड धर तेहि को डरहू ॥
इन्द्र उपासन जब असकहेऊ । श्री गुरुवर यह उत्तर दयऊ ॥
इन्द्रशब्दजहँ जहँ श्रुतिमाहीं । तासु अर्थ कछु सुरपतिनाहीं ॥

जिमिप्रभुमहिमाकोनहिंअंता । तेहिविधितिनके नामअनंता ॥
दो० जगकर्ता जो इंद्रको मानहु सुर गण माहिँ ।
लोकपालवरुणादिसब जगकर्ताक्योंनाहिँ ॥
सहस चतुर्युग बीतहिं जबहीं । होयएकदिनविधि को तबहीं ॥
इन्द्र चतुर्दश तेहि दिनमाहीं । बुद्बुदसम पुनिहोहिंबिलाहीं ॥
ताहि सृष्टि कर्त्तार बतावहु । वृथाकौन हित गालबजावहु ॥
सुधापाय सो ईश न होई । औरहु देव लहैं पुनि सोई ॥
सबके प्रलय रहैं प्रभु जोई । जग कारण तारण हैं सोई ॥
तासु ज्ञान बिन मुक्ति न होई । भजहु ताहि सबसंशय खोई ॥
मुनिगुरुवचनशिष्यसबभयऊ । सो कीन्हा जोआयसुदयऊ ॥
यम प्रस्थ पुर महं प्रभु आये । यम के भक्त तहां गुरु पाये ॥
महिष चिह्न भुजमाहिं सवांरे । माथ नाय ये वचन उचारे ॥
जेहि कारण यम जग संहर्त्ता । तेहिते हैं पालक पुनि कर्ता ॥
यमको भक्ति सहित जेभजहीं । लहहिं मुक्तिभवबंधनतजहीं ॥
मखभोगी यम सब श्रुति गावैं । परब्रह्म यमराज कहावैं ॥
दुइ मूरति यम की श्रुति गाई । एक शुक्ल पुनि कृष्ण सुहाई ॥
श्वेत रूप निर्गुण तुम जानहु । कृष्ण रूप यमराजहिमानहु ॥
जग कारण प्रभु निर्गुण रूपा । जेहि ते भे सब देव अनूपा ॥
निर्गुण रूप मुक्ति को दायक । सगुणरूपजगक्षेम विधायक ॥
सगुण उपासन हम सब करहीं । मूरतिश्यामहृदयनिजधरहीं ॥
तुम जो अवशिमुक्तिनिजचहहू । यम आराधन मनकरिगहहू ॥
श्रुति विरुद्ध यहवचनतुम्हारा । कठवल्लीश्रुतिकरहुविचारा ॥
नचकेता पितु आज्ञा पाई । यम पुर गमने भूमि बिहाई ॥
गये रहे यम विधि के धामा । नचकेतासुनिकियोबिश्रामा ॥
तीनिदिवसबिनजलबिनभोजन । रहो तहां नचकेता सज्जन ॥
धर्मायधर्म * तेहिशीश नवावा । धर्म मूल यह वचन सुनावा ॥
सो० किये तीनि उपवाससम गृहमें तुमअतिथिप्रिय ।

* धर्मराज

अब तजि सकल प्रयास मांगो इमसों तीनि वर ॥
यह वरदान प्रथम मोहिं देहू । पिता करैं जनि मम संदेहू ॥
अग्नि उपासन मोहिंसिखावो । तीजे आतम ज्ञान बतावो ॥
दुइ वरदान तुरत तेहि पाये । तीजे में यम लोभ दिखाये ॥
पशु सुत धन पृथ्वी को राजा । सुरपुरके बहु भोग समाजा ॥
किये न जब तेहि अंगीकारा । तब दीन्हो सो ज्ञान उदारा ॥
सर्व वेद जेहि वर्णन करहीं । जेहिकेहितसबतवआचरहीं ॥
ब्रह्मचर्य्य व्रत जेहि के कारन । सो संक्षेप सुनावहु सज्जन ॥
बिन शरीर जो सबतन बासी । व्यापकचेतनघनअविनाशी ॥
आतम रूप विगत सब शोका । जेहिजाने जगहोय अशोका ॥

दो० मृत्यु* लगावन रूप है सब जग ओदन तासु ।
जानि सकै को ताहि जग बड़ि महिमा असिजासु ॥

सुनि सो ज्ञान कृतारथ भयऊ । नचकेता निजगृहतब गयऊ ॥
जब यम प्रभुको भोजन भयऊ । निजसुखधर्मराजयहकहेऊ ॥
सो यम जग कारण क्यों होई । ब्रह्म छांड़ि जानौनहिंकोई ॥
सोइ धारै विधि हरि हररूपा । सेवन योग सु स्वामि अनूपा ॥
चिरंजीव मुनि रक्षण कीन्हा । तबशिवयमहिंदंडतहँदीन्हा ॥
महा पापरत सुंदर नामा । तेहिजागरणकीनशिवधामा ॥
व्रतशिवरात्रिलोभवशकीन्हा । मरतहि यमदूतनगहिलीन्हा ॥
शिव के दूत तहां चलिआये । यम किंकरतिनमारिभगाये ॥
सुन्दर शंभु लोक तब गयऊ । शिवको भक्तमुख्यसोभयऊ ॥
विप्र अजामिल धर्म बिहाई । दासी विवश मृत्यु जब पाई ॥
यमकिंकरनबांधिलियोजाई । महा भयानक रूप दिखाई ॥
रहा एक बालक तेहि बारा । नारायण करिताहिपुकारा ॥
विष्णु दूत तेहि अवसरआई । करि ताड़नतेहि लियोछुडाई ॥
तेहि कारण तुमचिह्नबिहाई । वैदिक कर्म करो मनलाई ॥
तब तुम सब पावन ह्वै जैहो । ज्ञान पाय निर्भय पद पैहो ॥

---
* यम

करि प्रणामगुरुपदअनुरागी । भये तथा ते सब बड़ भागी ॥
दो० तीरथ राज प्रयाग महँ पुनि आये यति राज ।
तेहि थल बासी विप्रगण गवने नाथ समाज ॥
पास चिह्न धर वरुण के आये तहँ बहु भक्त ।
ध्वजा चिह्न धारी तथा राये पवन अनुरक्त ॥
पूरण अंक धरे महिदेवा । करहिँ सदा पृथ्वी की सेवा ॥
तीरथ पूजक पुनि तहँ आये । बिन्दु चिह्न धर परम सुहाये ॥
तिन आपन मत आयसुनावा । प्रथमहिँवरुणभक्तअ्रगावा ॥
जलस्वामी जग जीवन दायक । सेवायोग वरुण सबलायक ॥
नाथ पवन है सब कर प्राना । सब देवन महँ परम प्रधाना ॥
भूमि सकल धारकजग माहीं । तेहि सम कोइ देवता नाहीं ॥
सबतीरथ जगमें सुखदायक । त्रयवेणी निर्वाण विधायक ॥
नारद मुनि महिमा बहु गाई । दर्शनही सों मुक्ति बताई ॥
मज्जन फल तिनहूं नहिंजाना । वेदहु तासु करैं गुण गाना ॥
शंकर कह्यो सुनो तुम चारी । सत्य सत्य यह गिरा हमारी ॥
तुम अनित्य सेवक जगमाहीं । यहिते कबहुं मुक्तितवनाहीं ॥
जल तीरथ महिमा श्रुतिगाई । तन मन पावकता दर्शाई ॥
तुमसब अपन मोह परिहरहू । ज्ञान हेतु उद्यम नित करहू ॥
ज्ञान लाभ आतम गति पैहौ । जीवन्मुक्त तबहिं ह्वै जैहौ ॥
शिष्य भयेते तजि निज शंका । गुरु अनुराग तजी सब शंका ॥
शून्य वाद मत धर गिरनाई । तर्क युक्त यह गिरा सुनाई ॥
दो० मारगमें आवत रह्यो देखि परो जो मोहिं ।
अति अचरज हमको भयो नाथ सुनावहुं तोहिं ॥
मृगतृष्णा जलमज्जनकीन्हा । व्योम पुष्प शेखरधरिलीन्हा ॥
शश विषाणकरचापसुहावा । अस बंध्या सुत सन्मुख आवा ॥
देव बुद्धि करि ताहिप्रणामा । तव ढिग मैं आयों सुखधामा ॥
तब बोले शंकर सुर साईं । नाम आपनो देहु सुनाई ॥

निरालंब संज्ञा हम पाई । ऋत नाम पितुकर सुखदाई ॥
सो समसत्त बक्ता प्रभु रहेऊ । सुनि असबचनशंभुतबकहेऊ ॥
शून्य बाद निंदित जग माहीं । तेहिते ताहि ब्रह्मता नाहीं ॥
तासु प्रकाशित सब जग भासै । श्रुतियह विधिसङ्गावप्रकासै ॥
तेहिते शून्य भाव परिहरहू । आतम तत्त्व सदा उर धरहू ॥
तेहिपुनिकह्योसुनो शुनिरावा । व्योमब्रह्मश्रुतिप्रकटजनावा ॥
ताही ते सब भूत प्रकाशा । तेहिमें पुनिपावहिंप्रभुनाशा ॥
खं कं ब्रह्म श्रुती जो गावा । उभय शब्द सो ब्रह्मदिखावा ॥
खं ते व्यापकता दर्शाई । कं पद अनंदता समुझाई ॥
सत चेतन आनंद स्वरूपा । जानहु सो तुम ब्रह्म अनूपा ॥
आकाशादि केर सो कारण । तासु ज्ञान भव दुःखनिवारण ॥
शालावति शैशलि इतिहासा । छांदोगश्रुति माहिं प्रकासा ॥

दो० निर्णय कीन्हो तहां बहु देखहु तजि अज्ञान ।
बोलो हर्षित भयो मैं तव दर्शन भगवान ॥

मैं पावन ह्वै गयो गोसांई । अब उपदेश करो मुनि राई ॥
व्योम सरिसव्यापकभगवाना । सब उरगत आनंद निधाना ॥
तासु उपासन भेद बिहाई । किये मुक्ति पै है सुखदाई ॥
करि प्रणाम सेवक सो भयऊ । पुनिवराहअनुचरअसकहेऊ ॥
जिनमहिप्रलयपयोधिउधारी । तासुभजनसबविधिसुखकारी ॥
मुक्ति हेतु तेहि सेवा करहू । दंष्ट्रा चिह्न भुजा महँ धरहू ॥
विप्र धर्म तप वेद बतायो । चिह्नविधाननकहुंमुनिपायो ॥
वैदिक धर्म त्याग नहिं करहू । सगुणउपासन जो मन धरहू ॥
हरि हर रूप भजो मनलाई । ज्ञान भयो तव मुक्ति सुहाई ॥
सुनिगुरुवचनशिष्यसोभयऊ । परम तपस्वी सो ह्वै गयऊ ॥

अथलोकोपासकः

काम कर्म नामा तब आयो । आपनमतयहिभांतिसुनायो ॥
लोक उपासनहम प्रभु करहीं । और देवनहिं निज उरधरहीं ॥

ऐसो करै उपासन जोई । सत्य लोक पावत है सोई ॥
प्रलय कालसबलोकविनाशा । अनित सेयभलज्ञानप्रकाशा ॥
यह सुनि गुरु पद बंदनकीन्हा । ब्रह्म निष्ठ पदवी मन दीन्हा ॥

अथगुणोपासकः

गुण सेवक अस आय सुनावा । तीनगुणन यहजगउपजावा ॥
ब्रह्मादिक सुरके गुण कारण । तासु भजनज्ञानहु जगकारण ॥

दो० अहंकारसों तीनि गुण उपजे सब जग ज्ञान ।
नश्वर सेवा करहु तुम यह तुम्हार अज्ञान ॥

शिष्य भये सुनि गुरुवर बानी । शुद्ध अद्वैत भाव उर आनी ॥
सांख्यप्रधान वादितबआयो । प्रथमहिंगुरुचरणनशिरनायो ॥
जग कारण प्रभु जानु प्रधाना । स्मृति जानहु नाथ प्रमाना ॥
त्रयगुण जो समभाव बिराजा । ताहिप्रधानकहहिंयतिराजा ॥
महदादिक कारण है सोई । सो अव्यक्त* व्यक्त जबहोई ॥
रचै जगत पर ते पर सोई । ताहिभजे बिन मुक्ति न होई ॥
तुमहुंकरहुप्रभु तेहि स्वीकारा । तब बोले गुरु गिरा उदारा ॥
वेद विरोध वचन जनिकहहू । जो हम कहहिं सत्यसोगहहू ॥
स्मृति होय जोश्रुतिअनुकूला । सो प्रमाण है न तरुअमूला ॥
जग कारण प्रधानश्रुतिमाहीं । वरणी कत कैसेहुं नाहीं ॥
ईक्षण† युक्त सृष्टि श्रुति गाई । अह प्रधान जड़ वेद बताई ॥
वेद व्यास शारीरक माहीं । सृष्टि हेतु मानी सो नाहीं ॥

दो० जड़को ईक्षण नहिंबनै जगकारण सो नाहिं ।
सतचितआनँद रूप जग हेतु कह्यो श्रुतिमाहिं ॥

तेहिते मूढ़ भाव निज त्यागी । मत अद्वैत होहु अनुरागी ॥
सुनि गुरु वचन बहुरिसोकहई । हमरे मतप्रमाण श्रुतिअहई ॥
जो अचिन्त्य अव्यक्त स्वरूपा । इत्यादिक बरणौं यतिभूपा ॥
जो अव्यक्त शब्द श्रुतिगावा । तेहिसों प्राज्ञ रूप दर्शावा ॥
गुण समता सेवा मन जाना । नहिं उपजै देखो धरिध्याना ॥

* अप्रकट † विचार

यहिप्रकार जबगुरुसमझावा । शिष्यभयोगुरुपदशिरनावा ॥
पुनि आयो कापिलमतधारी । गुरुसमीपअसिगिराउचारी ॥
परमप्रमाणिकमम मत सुन्दर । योग मुक्तिदायकहैयतिवर ॥
षट चक्रन कर भेद प्रकारा । करि पावै निर्वाण उदारा ॥
जो तुम नाथ मुक्ति अनुरागी । गहौ मोरमतसब कुछत्यागी ॥
प्रभुकह्यो तव मत यह नाहीं । विद्या दहरकहीश्रुति माहीं ॥
चित्तवृत्ति रोकन हित योगा । मुक्ति हेतु नहिं तासुप्रयोगा ॥

दो० अजपा मंत्र जापको भाव रहै जेहि माहिं ।
भेद ग्रंथ छूटै नहीं योग मुक्ति प्रद नाहिं ॥
सबको देखै आपु महँ आपुहि सब जग माहिं ।
ब्रह्म भाव लखि मुक्ति है और हेतु कछु नाहिं ॥

ज्ञान मुक्ति प्रद बरणै वेदा । आवश्यक न चक्र कर भेदा ॥
श्रवणादिक साधननरगहही । हृदयविमलरूपहि निजलहही ॥
गायो श्रुति वेदान्त विचारा । सो संन्यास युक्त निर्द्धारा ॥
इत्यादिकश्रुतिवचन विचारी । योगआदरहिंनहिंअधिकारी ॥
बिनाज्ञान यतिवरअसभाषहु । हमरो वचनहृदयकरिराखहु ॥
जेहि खेचरि मुद्रा नहिँजानो । अहं ब्रह्म बोले यह बानी ॥
तासु जीभ छेदन करि डारै । मतमें नहिं कछु दोषविचारै ॥
सरितात्रय*संगम नहिं जानै । सोहमस्मि जो आपुहि मानै ॥
रसना छेद तासु करिलीजै । फिर ऐसो नहिं बोलन दीजै ॥
संगाटक जेहिद्विज नहिँजाना । अहंब्रह्म अपने को माना ॥

दो० पूरण मंडन पंथ सो मन उन्मनी स्वरूप ।
तीनि अवस्थाठौरपुनि जेहिविधि कह्योअनूप ॥
तेहि बिन जाने कहै जो अहंब्रह्म यति राज ।
तासु गिरै शिर झूठमें कहो न साधु समाज ॥

लयप्रकारजेहिसब विधिजाना । लहहि ब्रह्मआनन्दसुजाना ॥
जो हठ योग करै मन लाई । सोपुनि ब्रह्मलोक महँजाई ॥

* इड़ा पिंगला सुषुम्ना

यहिविधिमुक्तिचाह जेहिहोई । योग करै मनधरि पुनिसोई ॥
आपहु ग्रहण करौ मन लाई । तब गुरुवर यह गिरासुनाई ॥
योग रीति निर्वाण न होई । मन एकाग्र हेतु है सोई ॥
वेदहु सन विरुद्ध यह नाहीं । गूढ़ भाव तब इतने माहीं ॥
जो तुम खेचर्यादि बखानी । तिन आधीनमुक्तिपहिंचानी ॥
मुक्ति ज्ञानबिनकोउ नहिंपावै । जहँ तहँ श्रुति यहनेमदृढावै ॥
तेहिते वेद विहित निजकर्मू । करहु त्यागि सब मनकर भर्मू ॥
चित्तशुद्ध पुनि उपजै ज्ञाना । गुरुमुख तत्वमसीविधिजाना ॥
करि विचार आतमगतिपाई । बिन संदेह मुक्त ह्वै जाई ॥
गुरुचरणनप्रणामतेहिकीन्हा । प्रभुउपदेशयथाविधिलीन्हा ॥
अणुवादी*शंकर पहँ आये । यहिप्रकारतिन वचनसुनाये ॥
जब परमेश सृष्टि मन धरई । तेहिक्षण यह उपायअनुसरई ॥

दो० पंच भूत अणुरूप नित तिन्हहिँ मिलावैईश ।
प्रलय कियो चाहै जबहिं भिन्न करैजगदीश ॥

तिनकर कबहूं नाश न जानहु । योग वियोगरीतिउरआनहु ॥
श्रुति विरोध ऐसोजनिभाखौ । यह संशय मनमें नहिंराखौ ॥
व्योमादिक सब प्रभु उपजाये । तबकेहिविधिवैनित्यकहाये ॥
एक नित्य दूसर नहिं कोई । जेहिसों सृष्टिप्रलय सब होई ॥
जो परमाणु सनातन भयऊ । सब को कर्ता ईश न रहेऊ ॥
बड़ो दोष तुम्हरे मत माहीं । सुनै योग तुम्हरो मत नाहीं ॥
जो गौतम विद्या मनलावै । मरे शृगाल योनि सो पावै ॥
इत्यादिक बाणी उर धरहू । वेगि तर्क मनते परिहरहू ॥
जो आतम विद्या मन लैहौ । अनुभव पाय मुक्त ह्वै जैहौ ॥
धीरणवादिकसुनिगुरुबानी । प्रभु उपदेश गहो हितजानी ॥
शिष्यन सहित प्रयाग नहाई । पुनि काशी गवने सुखदाई ॥
शिष्य यूथ करताल बजावैं । मधुर स्वरन प्रभुकीरतिगावैं ॥
करहिं एक शंखध्वनि भारी । देखिदेखि बिस्मित नरनारी ॥

* नैयायिक

तीन मास तहँ कीन निवासा । गुरुआगमसुनिसहितहुलासा ॥
दर्शन को आवहिं द्विजराजा । जुरे तहां बहु विप्र समाजा ॥
कर्म परायण गुरु पहँ आई । करिप्रणामअसगिरासुनाई ॥
जगथिति लय पालन संधाता । यशअपयशसुखदुखकरदाता ॥
कर्म सकल प्रद श्रुतिगनगावैं । सुभग योनिशुभकर्महिपावैं ॥
नीच कर्म सन पांवर देहा । लहै सदा नर बिन संदेहा ॥
कर्म सिद्धि जनकादिक पाई । गीता में अस कह्यो कन्हाई ॥

दो० कर्मकिये जो स्वर्ग सुख सोई पद निर्वान ।
तेहिकारण सो कीजिये सुनि बोले भगवान ॥

कर्म जासु यह जग श्रुतिगावा । ब्रह्म विश्वकारणसुभावा ॥
सो सतचित आनंद स्वरूपा । जगकारणन कर्म जड़ रूपा ॥
भेद बुद्धि कर्महि मन लावैं । अनुभव बिननमुक्ति ते पावैं ॥
शिष्य भये सुनि गुरवर बानी । परविद्या सबविधिसनजानी ॥
तब वा भरण नाम तहँ आई । शिष्य सहित बोलाशिरनाई ॥
देवपाल उडुपति सबलायक । पूनौ* महँ पूजे सुख दायक ॥
चंद्रलोक परलोक प्रकाशै । ताहि भजै भव भ्रम सबनाशै ॥
चंद्र भक्तकी सुनि यह बानी । उतरु दियो शंकर बिज्ञानी ॥
वापी कूपाराम बनावहिँ । इष्टकर्म नितप्रति मनलावहिँ ॥
ते रनचंद्र बिम्ब मग जाई । पुनि नरलोक गिरहिँते आई ॥
देवअन्नविधु श्रुति पुनिगावै । ताहि भजै विधुलोक सिधावै ॥
मत अद्वैत गहो मन लाई । मुक्तहोहु नहिं आन उपाई ॥
शिष्यभये गुरु पद शिरनाये । ग्रह सेवक मुनिवरपहँ आये ॥
भौमादिक सेवा श्रुति गाई । मुक्तिहोय नहिं और उपाई ॥
ग्रह पीडा परिहार बताये । मुक्ति हेतुनहिं ग्रह श्रुतिगाये ॥

दो० बिन चेतन के बोधते लहै न पद निर्वान ।
ज्ञान रूप आनंद घन जाहि करैंश्रुतिगान ॥

करिप्रणामशिररविदिवेशा । सबन सुनोप्रभुकरउपदेशा ॥

* पूर्णमासी

तबसपाकगुरुसन असकहेऊ । मैं षटमास नाथ सँग रहेऊ ॥
काल ब्रह्म गुरुवर मैं जाना । सोइ मुक्तिप्रदहै भगवाना ॥
काल जन्म श्रुति महँ दर्शावा । नश्वरसेवाकेहि सुखपावा ॥
जब अद्वैत भाव मन ह्वैहै । क्षपणाकतबहिंमुक्तिपद पैहै ॥
सुनि पुनीत श्रीगुरु मुखबानी । ब्रह्मनिरतिमानीसुखखानी ॥
पित्र उपासक सन्मुख आई । निजमतयहविधिदीन्हसुनाई ॥
चंद्रबिम्ब ऊपर के बासी । नित्य मुक्त निजभक्त सुपासी ॥
सात भेद जानहु तिन माहीं । तीन वृन्द की मूरति नाहीं ॥
चारि वृन्द मूरति धरशंकर । अग्निष्वातादिकसबसुखकर ॥
तिनकरभजनचारिफलदायक । सेवनीयसबविधिमुनिनायक ॥
गृही जो सत्यबचन नित भाषा । श्राध करै संयुत अभिलाषा ॥

दो० चंद्रमास की रीति सों मास सहै मध्यान ।
पितन को तत्प्रीति सों तेहि दिन पिंडप्रदान ॥

अवशि करै सुनिशंकरकहेऊ ।यहश्रुतिश्रुतिगोचरनहिँभयऊ ॥
कर्म सुअन सो मुक्ति न होई । एक त्याग लहिये पुनिसोई ॥
तेहि कारण सब कर्म बिहाई । गुरुमुखअनुभव रीतिसुहाई ॥
सुनि बिचारि पावै निर्बाना ।तिन गुरुकहँतबकौनप्रमाना ॥
पुनि पायो उपदेश सुहावन । भये कृतारथ पावन पावन ॥
शेष उपासक पुनि तहँ आवा । गरुडभक्त दो बचन सुनावा ॥
हरि के शयनशेष सबलायक । हरिबाहननिर्भय पददायक ॥
उभय लही जिन पाय बड़ाई । क्योंनभजहुतेहिकोमनलाई ॥
मननिर्मल पुनि ह्वैहै ज्ञाना । गुरुमुख सुनि पैहौ निर्बाना ॥
महि शिरलाय सुना उपदेशा । शिष्य भयेशुभजानिनिदेशा ॥

दो० सिद्धोपासक आयकै निज मत दीन सुनाय ।
गुरु उपदेश कृतार्थ हम भये मंत्र वर पाय ॥

सत्यनाथ आदिक सिद्धेश्वर । श्री शैवादि बसैं श्री शंकर ॥
अंजनादि विद्या हम पाई । सकल पदारथ देहि जनाई ॥

अति उत्तमयहमतसुखदायक । आपहु के प्रभु गहिबेलायक ॥
लोभि रहे घोरो अभिलाषन । तिन असायउ चित्तनहिंभायन ॥
लाभन वेष विचित्र बनाये । दोष होय पर धन के पाये ॥
बहुत जिये स्वारथ नहिं होई । दुख मय देह जान सब कोई ॥
देहादिक फल तुच्छ बिहाई । मुक्ति उपाय करहु मनलाई ॥
सुनि गुरु गिराशिष्यतेभयऊ । पुनि गंधर्व भक्त तहँ गयऊ ॥
बिश्वा बसु सेवा मन लाई । नाद विवेक होय सुखदाई ॥
दो० बिंदु कलाके बोधते भये कृतारथ रूप ।
मुक्ति हेतु आपहु सिखौ विद्या परम अनूप ॥
वेद विरोध कहो पुनि नाहीं । शब्दातीत कह्यो श्रुतिमाहीं ॥
जो अशब्द निस्पर्श स्वरूपा । निरस अगंध अनादि अनूपा ॥
तासु ज्ञान जब यह नरपावै । तब पुनिकालबदननहिंआवै ॥
स्मृतिहूं पुनि ऐसोइ गावा । नादअगोचर कहिसमुझावा ॥
विंदुकला निर्गत जेहि माना । वेद अर्थ तेहि नर भलजाना ॥
नाद अगोचर ब्रह्म विचारी । ह्वैहौ तुमलहि मुक्तिसुखारी ॥
शिष्य भये तजिनाद विवादा । ब्रह्मलीन भे विगत विषादा ॥
तब वेताल भक्त तहँ आये । चिता भस्म सब अंग रमाये ॥
भूत उपासन हम मन धरहीं । तेहिबलसकललोकवशकरहीं ॥
है अयुक्त तव मत दुखदायक । श्रुतिवर्जितनहिंमुनिबेलायक ॥
दूरि जाहिँ सब भूत घनेरे । जिन धरती महँ किये बसेरे ॥
भूत विघ्न कारक दुखदाई । नाशहोहिँ शिव आज्ञापाई ॥
इत्यादिक हैं वचन प्रमाना । भयेभ्रष्ट तजि कर्म विधाना ॥
अबनिजकर्म रुचिरमनलावो । अरुअभेद मत बुद्धि दृढावो ॥
जो स्वकर्म हठवश शठत्यागा । लहहिनशुभगतिपरमअभागा ॥
गुरुवर वचनशीश तिननावा । शिष्य भये श्रीगुरुमत भावा ॥
दो० तिन तिन देशन जाय प्रभु पाखण्डी द्विज जीति ।
यहविधिथापी धरणिमहँ वैदिकपथशुभनीति ॥

प्रतिवादिन के दर्प मिटाये । पश्चिम सिन्धुतीरप्रभुआये ॥
लहरिनसों जनु हाथ चलावै । दुंदुभि निंदक शब्द सुनावै ॥
जनु निगूढ़ कछु अर्थ सुनावा । प्रतिवादीसागर जनु आवा ॥
बहु भ्रम यह सागर मनमाहीं । जड़स्वरूप यह चेतन नाहीं ॥
पहिले विबुधन यहमथिडारा । हृदयसाम जनु शंभुविचारा ॥
निदरि सिंधु शंकर भगवाना । कीन्हगोकरणा ओरपयाना ॥
पहुँचि सिंधु महँकरिअस्नाना । गोकर्णेश्वर पूजि सुजाना ॥
रचो बहुरि अस्तुति श्री शंकर । छंद भुजंगप्रयात मनोहर ॥
पुनि मंदिर महँ कीन निवासा ।श्रुतिशिरकोतहँभयोप्रकाशा॥
नील कंठ शिव मत विज्ञानी । तासु शिष्य हरदत्त सुबानी ॥
निज गुरु को येवचन सुनाये । शंकर विजय हेतु तब आये ॥
मंडनादि जीते द्विजराजा । शिवमंदिरयतिराजविराजा ॥
नीलकंठ अतिशय अभिमानी । शिवकरभक्तमुख्यगुणखानी॥
सकल अर्थ शिवपक्ष लगाई । ब्रह्म सूत्र की भाष्य बनाई ॥
रत्न समान अनेक प्रबंधा । रचोहार इव अधिक सुबंधा ॥
शिष्यगिरासुनितेहिअसकहेऊ । आये शंकर तबकह भयऊ ॥
वरु सागर निज तेज सुखावैं । अंतरिक्ष सों तरणि गिरावैं ॥

दो० बसन समान लपेटिके गज वीथी बरु लेहिं ।
हे परंतु सामर्थ्य नहिं मोहिं पराजय देहिं ॥

वादि परम तम टारन हारे । दिनकर कर समतर्क हमारे ॥
तिन सन करहु तासुमतखंडन । अबहिंजायमैंनहिंकछुमंडन ॥
चलाकोपि जल्पत द्विजनाथा । बहुत शिष्यवरजेहिकेसाथा ॥
कंठ रुचिर रुद्राक्ष सुहाये । श्वेत विभूति सकलतनछाये ॥
शैव शास्त्रमहँ परम प्रवीना । आवत दीख यतीश धुरीना ॥
निकटजायतेहिआसनलीन्हा । अपनपक्ष थापन सो कीन्हा ॥
कपिला*शमजिमिप्रथमप्रकाशा॥ शुक्रपितुजेहिविधिताहिप्रकाशा ॥
तब सुरेश यह विनय सुनाई । प्रथमलखहु प्रभुममचतुराई ॥

* सांख्य

असकहि गुरुहि सुरेशसुजाना । तेहि संगमहाबादतिनठाना ॥
मैं जानौं तुम्हारि चतुराई । देखहुं गो यतिवर निपुणाई ॥
असकहितांहिनिवारनकरेऊ । यतीसिंह सन्मुख सो भयऊ ॥
परमत मनहु कमलकरनाला । भक्षक यतिवर वचनमराला ॥
जो जो पक्षप्रवल मतिकीन्हे । यतिवर सबखंडन करिदीन्हे ॥
नीलकंठ निज पक्ष विहाई । गुरुमत खंडन रुचि उपजाई ॥
तुम्हहि इष्ट पर जीव अभेदा । सो तुम कहौ न वरनहिंवेदा ॥
है अल्पज्ञ जीव मुनि नायक । पर सर्वज्ञ सकल सुखदायक ॥
है विरुद्ध धर्माश्रय दोऊ । यथा तेज तम एक न होऊ ॥
रविप्रतिबिम्बएककरिमानहु । सो न घटै नीके करि जानहु ॥
दर्पन बिम्ब सांच नहिं होई । घटै तहां नहिं उपमा सोई ॥
मुख समीप दर्पन जब आवै । तेहिमेंजो प्रतिबिम्बदिखावै ॥

दो० दर्पन गत आनन मृषा मानैं तवमत माहिं ।
मायिक त्यागिविरोधदोउ जोअभेदसोनाहिं ॥

मत प्रमाण बरणौ किन कोई । विदितभेद कहु दूरि न होई ॥
जो प्रत्यक्ष भेद नहिं मानो । अग्रवधेनु सकहि करिजानो ॥
अस प्रत्यक्ष मानकी हानी । इष्ट होय नहिं मुनिविज्ञानी ॥
मैं हौं ईश कहे श्रुति बानी । होय न उभय भेद की हानी ॥
यह प्रकार मतयुक्ति दृढाई । मत अद्वैत मया द्विजराई ॥
जिमिप्रफुल्लवनकमलमनोहर । मथैबालगज ताहिमपलतर ॥
दोष जालवर्णितसुनिमुनिवर । कहन लगेतेहिसबकरउत्तर ॥
तत्व मसी जेहिभांति अभेदा । कहै सोश्रुनु आशय तजिखेदा ॥
वाच्य अर्थकर मेटि विरोधा । लक्ष्य अर्थ श्रुति करै प्रबोधा ॥

दो० अग्रव धेनु उपमा कही तहँ नहिं कछु प्रमान ।
जेहि बश युगल अभेद को होय लक्षणाज्ञान ॥

सो० परिच्छिन्न विभुरूप जीवेश्वर यति नाथ हौ ।
यह ते भिन्न स्वरूप नहिं दूसरि तहँ लक्षणा ॥

सुनि अस वचन कहा भगवाना । इहां करौ ऐसो अनुमाना ॥
परिच्छिन्न अरु व्यापक भावा । दृश्य होनते कल्पित गावा ॥
रज्जू गत भुजंग जिमि भासा । सांच होय नहिं सो अवभासा ॥
सत्य एक परमा ऽधिष्ठाना । भासै तहँ जीवेश्वर नाना ॥
एक रज्जु गत जिमि भ्रमनाना । सर्प माल महि विवर समाना ॥
देहादिक जस हम जड़ माना । दृश्य सकल जड़ तुमहूं जाना ॥
रहा शेष चेतन सत रूपा । गहहु सोई चैतन्य स्वरूपा ॥
तथाईश गत जग व्यवहारा । सब कल्पित अस करहु विचारा ॥
रजत सीप महँ जेहि विधि नाहीं । तथा जगत यह ईश्वर माहीं ॥
अधिष्ठान चेतन अविकारी । ईश रूप करु अंगीकारी ॥

दो० मूढ़ भाव सर्वज्ञ पुनि गत उपाधि तहँ नाहिं ।
चेतन चेतन एक हैं यह आशय श्रुति माहिं ॥
यथा पुष्प ढिग फटिक मणि भासै लोहित रूप ।
पुष्प उपाधी दूरि करि पुनि सो विमल स्वरूप ॥

सो० सांच होत जो भेद भेद दर्शि भय प्राप्ति तो ।
निजमुख कहत न वेद सो वरणी बहु भांति श्रुति ॥

मृत्यु को अधिक मृत्यु सो पावैं । नाना रूप भेद मन लावैं ॥
थोरहु अंतर जो निज देखा । ताहि होहिं भयवृन्द विशेषा ॥
भेद बुद्धि विपरीति कहावैं । जाहि किये नाना दुखपावैं ॥
श्रुति वर्णित अभेद परमारथ । जो न होत द्विजराज यथारथ ॥
कहति न श्रुति तेहि कर फल भारी । सो श्रुति पुनि पुनि कह्यो पुकारी ॥
एक भाव जब होय प्रकाशा । शोक मोह दुख होय विनाशा ॥
मैं न ईश यह भ्रम तुम गावा । सब प्रकार श्रुति ताहि मिटावा ॥
विधु प्रादेशमात्र तुम देखा । तासु रूप विस्तार विशेषा ॥
यह विधि प्रकट भेद जो साधा । श्रुति प्रमाण पावै सो बाधा ॥
एक भाव जो श्रुति बहु साधा । कबहुं होय नहिं तेहि की बाधा ॥

दो० क्यों* न होय जो कहो तुम तो देखो धरि ध्यान ।

*बाधा

और न कोई लोक महँ श्रुति तेप्रबल प्रमान ॥
जेहि बलते अभेद कीबाधा । चाहौ केहिप्रकार तुमसाधा ॥
कपिलादिक परमेश स्वरूपा । तासु भजन तत्फल बहुरूपा ॥
बहुऋषिविर्हीतमतश्रुनाशहु । एकभाव यतिराजप्रकाशहु ॥
बहुत कहैं सो होय प्रमाना । एक बचन सम्मतकेहिमाना ॥
शंकर कह्यो सुनो द्विजराई । यह न रीति जो तुम दर्शाई ॥
बलवति श्रुतिविरोधजहँहोई । सो स्मृति मानै नहिं कोई ॥
ऐसी नीति सदा बलवाना । श्रुतिविरुद्धनहिंश्रयथप्रमाना ॥
नीलकंठ कह सुनु यतिराजा । युक्तिसहितऋषिवचनविराजा ॥
ते सब भांति मानिबे लायक । कहहुं सुनौशंकर मुनिनायक ॥
प्रति शरीर आतम है भिन्ना । कहुंसुखीकहुं अतिशयखिन्ना ॥
आतम एक जोसब तनमाहीं । दुखिहिराजसु वक्योंप्रभुनाहीं ॥
एक सुखी बहु दुखमय कोई । सति अभेद यह ज्ञान न होई ॥
अंतःकरणहि जो तुम कर्त्ता । मानहु जीवहि सदा अकर्त्ता ॥
उचित तुम्हारो यहमत नाहीं । घटितहोय*सोनहिंजड़माहीं ॥
ज्ञान युक्त सोई कर्त्ता होई । तासु भोग पावै पुनि सोई ॥
करै कोऊ फल भोगै कोई । लोक वेद अघटित मत सोई ॥
दुखकर नाश परम सुखहोई । ऐसी मुक्ति गिनौ तुम जोई ॥
सोन युक्त सुनिये यतिराई । दुःख नाशसोइमुक्ति गोसांई ॥
जेते सुख मुनिवर जगमाहीं । ऐसो कौन जहां दुख नाहीं ॥
ऐसो करहु इहां अनुमाना । जेतो सुख सब दुखसो साना ॥
विशदयुक्ति बल त्यागन योगा । मिष्ठअन्नजिमिविषसंयोगा ॥

दो० नीलकंठ असकह्यो जनि सुख दुख मन गत जानि ।
सब प्रपंच मन मूल है नहिं अभेद मत हानि ॥
सो० जड़ कर्त्ता नहिं होय इत्यादिक जो तुम कह्यो ।
चित संयोग लहि सोइ कर्तृत्वादिक तहँ घटै ॥

अग्नि योग जिमिआयसु दहई । कर्त्तृत्वादिकतिमितोलहई ॥

*अन्तःकरणस्यकर्तृत्व ॥

चिति संयोग नहिं तशामें देखा। तेहिकर्त्ताहमकवनहुंलेखा॥
श्रुतिकल्पन उत्तम करिजानहु। सुखदमुक्तितुमजोनहिंमानहुँ॥
तहां सुनहु उत्तर द्विज राई। दुखयुतजो सुखसकल बुझाई॥
विषय जन्य ऐसो सुख होई। दुख युत ब्रह्मा नंदन सोई॥
ताहि परम पुरुषारथ जानहु। दुखविनाशकोमुक्तिनमानहु॥
यह प्रकार शत युक्ति दृढाई। श्रुति अनुकूलगिरायतिराई॥
आपन मतभलथापन कीन्हा। तन्मत खंडि पराजय दीन्हा॥
दो० नीलकंठ तब गर्व तजि अरु निज भाष्यविहाय।
हरदत्तादिक शिष्य युत शरणगही शिरनाय॥
नीलकंठ जीतो यतिराई। सब विदुषनजयहसुधिपाई॥
उदय नादि जे द्वैत विवोधी। कांपि उठे अद्वैत विरोधी॥
सौराष्ट्रादिक देश सुहाये। तहँ तहँ भाष्य ग्रन्थप्रकटाये॥
सुर भूसुर पावन यश गाये। द्वारवती श्री शंकर आये॥
पंचरात्र मत धर तहँ आये। शंख चक्र भुज चिह्न बनाये॥
ऊर्द्ध पुंड्र शर दंड समाना। तुलसी पत्र धरे निज काना॥
छं० तेजीवपरको १ भेदजीवनकोपरस्पर २ मानहीं।
पुनिजीवजड़३करभेदतैसेहिईश४ जड़करजानहीं॥
तथा चेतन को परस्पर पंच भेद बखानहीं।
यह रीतिसों ते मोहबश ह्वै कल्पना बहु ठानहीं॥
सो० शङ्कर शिष्य सुजान अति प्रगल्भ मृगराज सम।
मस्तक हस्ति समान रंगे देखि झपटे तुरत॥
तिन गयंद सम आय पछारे। भये मान खंडित सबहारे॥
वैष्णव शैव शाक्त अरु शौरा। गणपभक्ततैसे पुनि औरा॥
निजवशकरि ते सकलसनाथा। पुनिउज्जैनिगये यतिनाथा॥
पहुँचि पुरी पावनि सो देखी। कहिनजायरमणीयविशेषी॥
महाकाल पूजन तहँ होई। ध्वनिमृदंगपणवानकजोई॥
ताहिजलदमंडलध्वनिजानी। प्रतिध्वनिमोरकरहिंसुखमानी॥

पूर रहाध्वनि सब दिशिमाहीं । निजपरावसुनिअतकछुनाहीं ॥
महाकाल महिमा गुरु जाना । दर्शन हेतु गये भगवाना ॥
शीतल श्रम हर पवन सुहाई । पुष्प सुगन्ध मनोहर ताई ॥
अगुरु धूप धूपित सब आशा । शंकर मनअतिभयोहुलाशा ॥
मुनि वंदित पदपद्म सुहावा । जिनको यश त्रिभुवनमेंछावा ॥
चंद्रमौलि पद कीन्ह प्रनामा । कियो मनोहर मठ विश्रामा ॥
निज विद्यामदअतिशयजाही । मम आगमन सुनावो ताही ॥
पद्मपाद कहँ प्रभु समुझावा । भट्ट भास्कर तीर पठावा ॥
ताहि सनन्दन देख्यो जाई । बुध अवतंश न वरशिसिराई ॥
विवरन वेदराशिजेहिकीन्ही । दुर्मद रिपुन पराजय दीन्ही ॥

दो० वावदूक अति पद्म पद ताहि कह्यो समुझाय ।
श्री शंकराचार्य्य गुरु तव पुर पहुंचे आय ॥

योगि चक्रवर्ती भगवाना । होहिं दिगंत जासु यशगाना ॥
मत अद्वैत प्रकट ते करहीं । परपंथिनकर सबमदहरहीं ॥
तिन सबठौरविजयकरिपायो । गुरुवर तुम्हहिं संदेश पठायो ॥
दुर्मत कल्पित करि हमनाशा । श्रुति शेखरको अर्थप्रकाशा ॥
जीव ब्रह्म कर विशद अभेदा । दर्शायो गावहिं जेहि वेदा ॥
सो तुमहूं अपने मन धरहू । तेहि विचारि दुर्मतपरिहरहू ॥
न तरु उग्र पविपात समाना । समजे तर्क परम बलवाना ॥
तिनसों आपन पक्ष बचावहु । अरुविवादहितसन्मुखआवहु ॥
तिरस्कारयुत सुनियहबानी । यशनिधिकछुकरोयउरआनी ॥
पद्मपाद कहँ वचन सुनावा । तवगुरुममयश नहिंसुनिपावा ॥
जो सब की कीरति अपहरई । विदुष शिरन पर नर्तन करई ॥
मोरि वचन धारा जब बहई । कणभुग्जल्प अल्पता लहई ॥

सो० भागे कपिल प्रलाप आर्धुनि कनकी कह कथा ।
यहसुनि वचन कलाप कुशल सनंदन पुनि कह्यो ॥

यद्यपि बहुत शक्ति तुम धरहू । तदपिअवज्ञाअसिजनिकरहू ॥

टंक विदारन गिरिको करई । पविमर्गसोंतेहिकोनहिंसरई ॥
असकहि शंकर तीर सिधावा । गुरुवरकहँ सबचरितसुनावा ॥
भट्ट भास्कर तहँ चलि आवा । भयो परस्पर दर्श सुहावा ॥
यतिवर द्विजवर करिसंबादा । करन लगे दो प्रबलबिवादा ॥
छंद मनोहर गुंफित बानी । उभय कहैं कविता रससानी ॥
खंडन मंडन उभय प्रवीना । करहिं बादजय आशाधुरीना ॥
उभयविचित्र शब्द अनुसरहीं । दुष्ट युक्ति भेदन बल धरहीं ॥

दो० बाद समरगत बीर दो कहैं जो तेहि छिन बयन ।
यदपि तीर बैठे सुनैं नहिं समुझैं शुन अयन ॥

देखि तासु अतिशय निपुणाई । खंड्यो बहुत विकल्प उठाई ॥
शंभु पक्ष विधु शरद समाना । तासुपक्ष पंकज कुंभिलाना ॥
निजमत रक्षा हित गुणवाना । वचन चतुरबहुयुक्तिनिधाना ॥
श्रुति सम्मत गुरुपक्ष निराशा । *करनहेतु बुधवचनप्रकाशा ॥
ईश्वर जीव भेद को हेतू । प्रकृति कहो जो तुमयतिकेतू ॥
कहहुसोप्रकृति जीवगतमानी । किमु ईश्वरगत मुनिविज्ञानी ॥

दो० उभय भांतिसों भेद नहिं प्रकृति करै यतिराज ।
जीवेश्वर के भाव सों प्रकृती प्रथम विराज ॥

यह विधि पूर्व पक्ष जब भयउ । तासु उतरु शंकर असकहेउ ॥
भेद बिम्ब प्रति बिंब जो होई । भेदक दर्पन कहै सब कोई ॥
कहोबिम्बगत† सोतुममानहु । किमुप्रति‡ बिंबगताहिबखानहु ॥
जो ऐसो मानहु द्विजराया । दर्पण मुखकर भेद जनाया ॥
प्रकृतिहु चेतन आश्रित गाई । जीवेश्वर भेदक ठहराई ॥
चेतन क्यों नहिं सुखदुख लहई । कैसे जीव सदा सो सहई ॥
यह शंका मन में जनि धरहू । जोहमकहैं सो निश्चय करहू ॥
ईश्वर प्रकृति उपाधिहि तजई । जीव उपाधि धर्मपुनि भजई ॥
चलनादिकजिमि मुखमेंनाहीं । दर्पणगत प्रतिबिंब दिखाहीं ॥
जो तुमकहो प्रकृतिसविकारी । जो अज्ञान रूप निर्द्धारी ॥

*अज्ञान † अभेद ‡ गामी

ज्ञान रूप चेतन अविकारा । एक असंग रूप उजियारा ॥
चेतन आश्रित प्रकृति न होई । उर*विशिष्टजीवाश्रित सोई ॥
करो न यह शंका मन माहीं । यह में है प्रमाण कछुनाहीं ॥

दो० मैं हौं अज्ञ प्रतीति यह करहु जो तुम अनुमान ।
यह प्रतीत यह अर्थ में लहै न कबहुं प्रमान ॥

जेहिते यह प्रतीति पुनि आवै । अनुभविता मैं हौं ठहरावै ॥
उर विशिष्ट गत तुम अज्ञाना । मानतहौ आवत पुनि ज्ञाना ॥
जो तुम इष्टा पत्ति बखानहु । तौविरोधयहनिजउरआनहु ॥
चित्त स्वरूप अनुभव जो होई । जडउर निष्ट होय नहिं सोई ॥
तर्क युक्त मुनि शंकर बानी । प्रतिवादी यहयुक्तिबखानी ॥
पावक योगलोह जिमि दहई । चेतन योग†तथा उरलहई ॥
दाहक लोहे सों ज्यों कहहीं । अनुभविताउरकारयेंगहहीं ॥
सुनहु भास्कर असनहिं कहहू । तद्यपि जो वैसा हठ गहहू ॥
मायाश्रितचितियुत उर ज्ञाना । तहँउपचारप्रकृतिकर माना ॥
प्रकृति योग केवल उर माहीं । जो मानहुतुम बनै सो नाहीं ॥

दो० यतिवरतौऐसो गहो अनुभवयुतिचितपाय ।
प्रकृतिकेरउपचारतहँ यहमतिशुभगतिजाय ॥

द्विजवर जनि ऐसोतुम कहहू । प्रकृतिजनितउरजानत अहहू ॥
उर जौलौं द्विजवरनहिं जाया । कहांप्रकृतितौलौं द्विजराया ॥
रही मोहिं तुम देहु बताई । तहां न यह उपचार समाई ॥
जो अज्ञान हृदाश्रित होई । मलगत सुप्तिमाहिं रहै सोई ॥
हृदय विशिष्ट निष्ट अज्ञाना । उक्तरीति कोउनाहिंप्रमाना ॥
यहकारण चितिगत अज्ञाना । मानहुयह मम वचनप्रमाना ॥
यतिवर चेतन गत अज्ञाना । बहुधासोतुम कीन्ह प्रधाना ॥
जीव ब्रह्म एकातम भावा । प्रति बंधक अज्ञान कहावा ॥
सुप्तिकाल सुनिरहत सो नाहीं । यहते प्रकृति न चेतन माहीं ॥
सुप्तिसमय सतसों मिलि जाई । जीवसदा श्रुति दीन्ह सुनाई ॥

* अन्तःकरण विशिष्ट † चितस्वरूपानुभव

जो घरन्योपुनियहश्रुतिमाहीं । जीवसुप्तिसतसोंमिलि जाहीं ॥
कछुनहिंजानहिं जोयह गावा । यहिते नहिं अज्ञान जनावा ॥
ज्ञान निषेध तहां श्रुति करई । जेहिते नहिं जानै उचरई ॥
अज्ञातहिंतुम नित्य बखानहु । अथवातेहिअनित्यउरआनहु ॥
प्रथमपक्ष नहिंबनहिं यतीशा । युक्तचंभाव तहँ हेतु मुनीशा ॥
करहु इहां ऐसो अनुमाना । नित्यहोय नहिं यहअज्ञाना ॥
सकल होहिं अज्ञान समाना । जाग्रत्स्वप्न यथा सब जाना ॥
दूसर पक्ष सिद्ध नहिं सोई । नहिंकोउतासु निवर्तक होई ॥
जो प्रकाशकहं तुमअनमानहु । तेहिको तासु निवर्तक जानहु॥
सो प्रकाश किमु चेतन होई । अथवा जड़मानहु तुम सोई ॥

दो० जोचेतन* अविरोधि सो जोजड़ करहु बखान ।
जड़जड़कहँ नहिंनाशही यह जगमें सबजान ॥

प्रतिवंधक नहिं तहं अज्ञाना । तेहिकोहम औरहिकछुमाना॥
प्रथमहिं भ्रम दूसर संस्कारा । तीसर अग्रह†पद निर्द्धारा ॥
तब शंकर कीन्हेंा अनुमाना । प्रतिवादी ऐसो नित जाना ॥
सब प्रत्यय परमारथ मानहिं । भिन्नाभिन्न एककरिजानहिं ॥
द्रव्यदृष्टिजिमि घटपटएका । व्यक्तिदृष्टि पुनिगिनहिंअनेका॥
सब प्रकार भ्रम सिद्ध न होई । यह निश्चयकरि पूछा सोई ॥
भलीकही द्विजवर तुम बानी । भ्रमस्वरूपमोहिकहाबखानी ॥
देहां में मनुज बुद्धि जो होई । यतिवर भ्रम जानहु तुम सोई ॥
तब शंकर बोले यह बानी । तुमविस्मरणा भये द्विजज्ञानी ॥
शंकर सकल‡पदारथ भाखहु । पुनितेहिकोतुमध्याननराखहु॥
भेदाभेद विषय सब रहई । तवमतको यहनिश्चय अहई ॥
है तव शास्त्र सिद्ध विज्ञानी । खंडा धेनु यथा तुम मानी ॥
प्रत्यय भेदाभेद प्रमाना । तिनसबको परमारथ जाना ॥
तवमैंनर यहभ्रम क्यों मानहु । वैसो न्याय इहांउर आनहु ॥
भयो सिद्ध ऐसो अनुमाना । नहिं भ्रम मानुषबुद्धि प्रमाना॥

* यथा चन्द्राः राहुरथ प्रकाशकः † ग्रहण न होना ‡ पदार्थ शंकरवाद

*भिन्नाभिन्न विषय महँ हेतू । खंड धेनु उपमा द्विज केतू ॥
यतिवर देह बुद्धि जो होई । श्रुतिअनुसारप्रमाण न सोई ॥
जेहिते है निषेध यह माहीं । श्रुतिकहजगनाना कछुनाहीं ॥
रजत बुद्धि सीपी दर्शाई । पुनि विचारते जाय बिलाई ॥
अहंब्रह्म यह बुद्धि प्रकाशी । मैं नर तवहिंबुद्धि यहनाशी ॥
इहां करो ऐसो अनुमाना । देहातम धी नाहिं प्रमाना ॥
श्रुती निषेध हेतु तुम जानो । रजत बुद्धि उपमा उर आनो ॥
†सत्प्रति पक्ष दोष ठहराना । प्रवललखौनिजहृदयसुजाना ॥
द्विजवर तुम ऐसो नहिं भाखौ । खंडाधेनु हृदय महँ राखौ ॥
भट्ट भास्कर यह व्यभिचारा । आवतहै सो करहु विचारा ॥
खंडाधेनु प्रथम जेहि माना । पुनि मुंडा कीन्हीं अनुमाना ॥
नहिं खंडा मुंडाहै गाई । धेनुमाहिं यह बुधि उपजाई ॥
दो० ‡खंड धेनुव्यवशायमहँ आयो यहव्यभिचार ।
यहखंडानहिं† मुंडहै जेहिविधि कोउ निहार ॥
यद्यपि यह निषेध बनि जाई । दोनहु कोन भेद दर्शाई ॥
तैसेहि देह ब्रह्म अरु जीवा । हैं अभेद प्रत्यय के सींवा ॥
यतिवरभ्रम प्रतीत जहँ होई । अधिस्थान बरनो है सोई ॥
तहां निषेध होय यह रीती । मानहुतुम यह वचन प्रतीती ॥
यथा प्रथम सीपी जब देखी । मानिहु है रजत विशेखी ॥
पुनितेहिकोजबकीन्हविचारा । नहिंयह रजतभयो निर्धारा ॥
आत्मनि मनुजभावजो माना । तहहिंनिषेधतासु गुणवाना ॥
ऐसो जो द्विजवर उर धारा । पुनि आवै सोई व्यभिचारा ॥
नहिं खंडा मुंडा यह गाई । जब ऐसो मानैं यति राई ॥
अधिस्थान जो धेनु सुहाई । वादस्थान खंड भयो आई ॥
खंडभाव प्रतिषेध न जानैं । मुंडमाहिं खंडा नहिं मानैं ॥
यतिवरनिजमनकरहुविचारा । नहिंउपमाकरभा व्यभिचारा ॥
जनि द्विजवर ऐसो नहिं होई । समविकल्पसहिहै नहिंसोई ॥

* भिन्नाभिन्न विषयत्वात् † दूसरे हेतुसे जो अनुमान बाधितहोजाय ‡ अंगहीन
† शृङ्गहीन ‡ मानुष बद्ध

दो० खंड भावकर मुंडमहँ करहु निषेध सुजान ।
जाति*सहितके मुंडमहँ तुम वरणो गुणवान ॥
प्रथम पक्ष तकर्हिं बनिआवा । प्रात्य†भाव तहँ हेतु सुहावा ॥
प्रथमहिं कहु घट देखो होई । नहिं घट पृथिवी परहै सोई ॥
न्यायविदित सुन्दर जगमाहीं । प्राप्तोविननिषेध कहुं नाहीं ॥
खंड मुंडमहँ प्राप्त न होई । पहिलो पक्ष बनो नहिं सोई ॥
दूसरहू नहिं बनै बनाया । तहंयहदोष प्रवल द्विजराया ॥
जाति युक्ति कहुं मुंडा माहीं । खंड निषेधहोय द्विज नाहीं ॥
दो० खंड विशेषण धेनु कर जानतहो द्विजराय ।
जाति निषेध करे नहीं वाही को बनिजाय ॥
यथा दण्डधर पुरुष को कोई करै प्रहार ।
दंडोपरि सो लेत है निज मन करो विचार ॥
खंडा है नहिं धेनु यह जब निषेध ह्वै जाय ।
तेहिके पीछे हू तहां धेनु भाव दर्शाय ॥
ब्रह्म‡बोध ऐसा नहीं जब स्वरूप को ज्ञान ।
तेहिपीछे नर बुद्धिसों पुनि आवै नहिं ध्यान ॥
द्विज प्रारब्ध कर्म अनुसारा । ज्ञानभयेहुपर अस व्यवहारा ॥
मनुष्यक कछु दुर्घट नाहीं । फुरि आवै बहुधा मनमाहीं ॥
यतिवरजिअतहोहु व्यवहारा । मुक्त भये नहिं तासु प्रचारा ॥
तहँकेहिकरिकेहिकोपुनिदेखै । आतम रूप सबहि जब लेखै ॥
सब व्यवहार नाश ह्वै जाई । व्यवहरतोहु नहिं दर्शाई ॥
ऐसी नीति प्रवल श्रुति गाई । यहसुनिवचनकह्योयतिराई ॥
मम मत में ऐसो बनिजाई । नहिंतवमतमहँसुनिद्विजराई ॥
जग अज्ञान मूल उल्लाशा । तासुनाशमहँ जगकर नाशा ॥
तव मत जग उच्छेद न हुई । सत्य रूप मानो तुम सोई ॥
दो० यतिवर भिन्नाभिन्न जो हेतु कह्यो दर्शाय ।
तासुसिद्धिनहिं जेहिविधि कहौंतुम्हैंसमुझाय ॥

*खंडकर † प्रात्यभावात् ‡ भास्कर:

भेदाभेद पांच थल माहीं । और ठौर हम मानत नाहीं ॥
जातिव्यक्ति१ अरुगुण२ गुणवाना कारजकारण३ तीसरजाना
चौथो तथा प्रविष्ट स्वरूपा ४ । अंशांशी ५ ये पांचअनूपा ॥
अस संबंध जहां कहुं होई । भेदाभेद बनहिं तहँ सोई ॥
देही देह द्रव्य हम मानी । प्रथम युगल तहँबनै न ज्ञानी ॥
कारज कारण नहिं बनिआवै । जेहिते भौतिक देह कहावै ॥
दंड विशेषण जेहि विधिहोई । है अधीन दण्डी के सोई ॥
तैसेहि देह जीव आधीना । नहिंमानहिंहम सुनहुप्रवीना ॥
अंशांशी संबंध न यति वर । निरावयव आतम है सुन्दर ॥
पंचस्थल सों इतर तुम्हारा । हेतु बनै नहिं यद्यपि सँवारा ॥
ऐसो जनि मानो द्विजराई । नहिं विकलपमहँ यहठहराई ॥

दो० सब मिलि भेदाभेद के कर्ता हैं द्विजराय ।
के माने हैं भिन्न तुम कहिये मोहिं सुनाय ॥

प्रथम पक्ष तुम्हरो नहिं होई । मिलैं पांच कबहूं नहिं सोई ॥
दूसर पक्ष जो तुम उर आनहु । देही देह भाव पुनि मानहु ॥
तथा अंग अंगी बनि जाई । गौरव दोष न पुनि दर्शाई ॥
भाव अंग अंगी तुम मानहु । गौरवदोष न निज उर आनहु ॥
देही देह भाव महँ द्विज वर । भेदाभेद तजहु सो हठ धर ॥
सब शंकर बादी मत हानी । ह्वैजै है द्विज वर विज्ञानी ॥
जाति जाति युत प्रमुखजोहोई । भेदाभेद प्रयोजक सोई ॥
ऐसो जो हठ होय तुम्हारा । तहँ सुनिये यह वचन हमारा ॥
सोऊ तहँ* दुर्लभ नहिं जानहु । कारज कारणभावहिमानहु ॥
परमातम कारज जग मानो । जनि संशय आनहु विज्ञानी ॥
उभय अभेद रीति बनिजाई । जीवकार्य यह तनु द्विजराई ॥

दो० हेतु प्रमुख जे दोष तुम बहुविधि कहे बनाय ।
कहेसकल अनुमान सम निर्मल भा द्विजराय ॥

धम*धी जो प्रमान तुममानी । सो असिद्ध जानहु विज्ञानी ॥

* देहिदेहभाव में

डरपरिणामभ्रमहितुमजानहु । कैआतम परिणाम बखानहु ॥
आदि पक्ष नहिं बनहि बनावा । प्रबल दोष द्विजवर यहुआवा ॥
डरपरिणाम जो यह भ्रम होई । आत्माश्रय दर्शौं नहिं सोई ॥
मृन्मय घट है सब जग जाना । तंत्वाश्रय न करै गुणवाना ॥
फटिक अहन पुष्पहि जबपावै । अहन धर्म तेहि महँ दर्शावै ॥
भ्रमयुत चित्त योग बनिजाई । करौ न यह संशय द्विजराई ॥
तदपि जो शंका उर आनहु । भ्रमविकल्पकरउत्तरुबखानहु ॥

दो० सत कि असङ्गम मानहु द्विजवर देहु बताय ।
नहिं विकल्प पहिलें बनै सुनु मोसन द्विजराय ॥

तुम अन्यथा ख्यातिमत धरहू । तेहिबल यह निश्चयउरकरहू ॥
रजत सीप महँ देहि दिखाई । ताहि तुच्छ मानहु द्विजराई ॥
दूसर पक्ष न पुनि ठहराई । कारणतुम्हहिं देहुंसमुझाई ॥
वंध्यासुत अरु मनुज विखाना । व्योम पुष्पयहअसतबखाना ॥
कहैं यथा भ्रम महँ मन गयऊ । तस न कहैं वंध्यासुत भयऊ ॥
जो परोक्ष नहिं होय प्रसिद्धा । असत्यक्ष तव भयो असिद्धा ॥
जो आतम परिणाम स्वरूपा । दूसर भ्रमविकल्प द्विजभूपा ॥
सो न उचित है कारण येहा । है असंग आतम बिन देहा ॥
नहिनिरवयवबस्तुपरिणामा । भयोआजुलौं द्विजगुणधामा ॥
आतमकहँ परिणामिहमानौ । भ्रम आश्रय तबहूं नहिं जानौ ॥
ज्ञानाकार सदा जो होई । भ्रमस्वरूप परिणाम न होई ॥

दो० एक जाति के युगुल गुण एक साथ एकतौर ।
शुक्ल[†]उभय एकठौर नहिं तस जानहु मतिधीर ॥

कहहु जो तुमगुणहोयनज्ञाना । गुणीद्रव्य तेहिको हममाना ॥
यह संशय त्यागहु द्विजराया । यह अनुसार दोषनहिंआया ॥
कटक रूप सुवरन जो होई । कटक असत कदा नहिं सोई ॥
तथा नित्यज्ञनाश्रय द्विजवर । होय न भ्रमाधार पुनिहठधर ॥
भ्रमनबनो यद्यपि यतिराई । [‡]संस्कृतिअग्रहँ नहिंमिटिजाई ॥

* बुद्धि † गुण ‡ संस्कार

द्विजवर भै जब तब भ्रम हानी । संस्कृतितेहिकेसाथविलानी ॥
आग्रह कहँ कैसो तुम मानहु । प्रथमहितेहिकोरूपबखानहु॥
निजस्वरूपकर ग्रहण अभावा । आग्रह सो तुम्हरे मन भावा ॥
कृत्यऽभाव को अग्रह माना । प्रथम पक्ष नहिं बनै सुजाना ॥
चेतन नित्य ग्रहण नित होई । चिति अभावजानै नहिँकोई ॥
कृत्यभाव अग्रह द्विजराया । सोउन बनै पुनिकोटिउपाया ॥
कृत्यभाव चेतन नित फुरई । वृत्ति तासु प्रतिबंधन करई ॥
जो हम चेतन में अज्ञाना । मानि लेहि तववचनप्रमाना ॥
भंजक तासु न कोउ दर्शाई । जनि आनो शंका द्विजराई ॥
खण्ड जडाऽवृत है अज्ञाना । जानत हो नीके गुणवाना ॥
वृत्ति अखंडा रूप सुजाना । ब्रह्मबोध नाशक अज्ञाना ॥
मत शंकर असमंजस रूपा । सुनुमोसन कारण द्विजभूपा ॥
इष्ट अनिष्ट केर सब साधन । ज्ञानजनित मानहु अपने मन ॥
जगत प्रवृत्ति निवृत्ति बनहीं । महा दोष तव मत बुध गनहीं ॥
संकीरण तव तव व्यवहारा । दुर्लभ तव जीवन संसारा ॥
दो० यह प्रकार शत युक्ति सों तेहि जीत्यो यतिराय ।
श्रुति विरोधि मत ग्रन्थ तब मथे तुरत हर्षाय ॥
भास्कर जबहि पराजय पावा । शंकरविमलसुयशजग छावा ॥
जब प्राविट जलधरविलगाई । शरद चंद्र सुखमा रहे छाई ॥
अति प्रसिद्ध जे बाण मयूरा । दंड्यादिक विद्या युधि शूरा ॥
शिथिलमानसबकेकरिदीन्हे । भाष्यश्रवण उत्कंठित कीन्हे ॥
वाह्लादिक देशन प्रभु गयऊ । कछुदिनतहँनिवासजबभयऊ ॥
शिष्यन को निजभाष्यपढावैं । अर्ह तमीवर तहँ बहु आवैं ॥
सुनोजबहिंनिजमतकरखंडन । सहिन सके बोले शशिगुरुमन ॥
सुंदरमत हमार उर धरहू । ताहि वृथा क्यों खंडन करहू ॥
पंच अस्ति काया हम मानी । प्रथम जीव काया सुनु ज्ञानी ॥
बद्ध१मुक्त२अरु सिद्ध३ उदारा । जीव काय के तीनि प्रकारा ॥

नित्य. सिद्ध अर्हन भगवाना । मुक्त रूप साधन जिन जाना ॥
और बद्ध जानौ यतिराई । दूसरि पुद्गल काय सुहाई ॥
षट् प्रकार तेहिंते तुम जानौ । चारि भूत बिननभ पहिचानौ ॥
स्थावरचर मिलि भे षट सोई । तीसरि धर्म काय पुनि होई ॥
अधरम काय चतुर्थि बखानी । ब्योम काय पंचम विज्ञानी ॥
सो० तेहिं के पुनि दुइ भेद पहिले मेंये लोक सब ।
तिनपर जौन अखेद मुक्तिधाम सो दूसरो ॥
आस्रव इंद्री द्वार कहावै । जीवहि विषयन ओर बहावै ॥
जो प्रवाह कहं रोकहि जोई । शम दमादि संवर है सोई ॥
पुराय पाप सदकलुष नशावा । तेहिकारण जरनाम कहावा ॥
तप्त शिला रोहण है जोई । तेहिसमान मुनि धर्म न कोई ॥
जीव अजीवप्रथमकहिआये । सुनहु बंध के भेद सुहाये ॥
कर्म अष्ट विध बंध मतारी । घातक चारि अघातक चारी ॥
ज्ञान मुक्ति साधन नहिं होई । १ ज्ञानाऽऽवरण कहावै सोई ॥
अर्हत दर्श मुक्ति नहिं पावा । सो दर्शन२आवरण कहावा ॥
मुक्ति पंथ कर बोधन जासो । ३ मोहनीय भाखैं हम तासों ॥
ज्ञान विघ्न कारक सो होई । ४ अंतराय कहि गायो सोई ॥
घातक चार कर्म कहि दीन्हे । सुनौअघातकतुम रुचिकीन्हे ॥
जो आतम कर बोध जनावा । १ वेदनीय सो कर्म कहावा ॥
यह ममनाम होयअभिमाना । २नासिककर्मताहिबुधजाना ॥
जो गुरु वंश लाभ अभिमाना । ३ गोत्रिक संज्ञातासुबखाना ॥
जो शरीर निर्वाहक होई । आयुस्कर जानौ तुम सोई ॥
अष्ट कर्म नर बंधन हेतू । बन्ध नाम तेहिते यति केतू ॥
मुक्ति रूप अब कहौं बुझाई । यतिवर ताहि सुनौमन लाई ॥
दो० निरावरन विज्ञानयुत क्लेश रहित जब होय ।
सकल लोक ऊपर बसै मुक्ति कहावै सोय ॥
दूती मुक्ति सुनो यतिराया । जीव उपरि गामी नित गाया ॥

धर्माधर्म बंध छुटिजाई । ऊपर जाय तबहि सुखपाई ॥
सप्त *पदारथ हम ये मानैं । भंगी सप्त तथा हम जानैं ॥
अस्तिभाव जब हम ठहरावैं । अस्ति१भंगतेहिमोंकहिगावैं॥
नास्तिभावइच्छा जबकरहीं । नास्ति२भंगतेहितसअनुसरहीं॥
उभयभाव क्रमसों जबकहहीं । अस्ति३नास्तिभंगीतबगहहीं ॥
युगपदउभयभाव जबमानहिं । अवक्तव्य४ तेहिभंगबखानहिं॥
पहिलो चौथो जब हमगहहीं । अस्तो५अवक्तव्यतेहिकहहीं॥

दो० दुसरे चौथे भावको जब हम करैं प्रमान।
नास्ती अवक्तव्य६ तेहिभङ्ग कहैं गुणवान ॥
तीसरचौथोजबहि हम गहहिसुनो यतिराय।
अस्तिनास्ति७अरुअकथसोमुनिवरभङ्गकहाय ॥

सप्तभङ्गि युत सप्त पदारथ । क्यों नगहो यतिवरपरमारथ ॥
तब शंकर यह वचन सुनावा । जीव काय जो तुम दर्शावा ॥
ताहिविशदकरि कहो बुझाई । अर्हत बोले सुनु यतिराई ॥
देह समान जीव हम जाना । अष्टकर्म लपिटो तेहिमाना ॥
विभुअणुरूपजोतुमनहिंमानहु । तनुप्रमाणपुनिजीवबखानहु ॥
मध्यम गही जोतुम परिमाना । भाअनित्यसोकलशासमान॥
नर तन जबहि जीव यहतजई । गजशरीरकेहिबिधिसोभजई॥
नहिं पूरो प्रवेश तहँ होई । सशक देह जब पावै सोई ॥
कैसे तेहि तनुमाहिं समाई । कहहुशरीति प्रकट दर्शाई ॥
बड़ी देह महँ जब चलिजाई । अवयव वृद्धिहोय यतिराई ॥
जबहिजीव लघुतनको पावा । अवयवअपचयतेहिसणगावा॥
अवयव हानि वृद्धि जेहि होई । आतम रूप भयो नहिं सोई ॥
हानि वृद्धि युत नश्वर होई । यह श्रुरीति जानै सबकोई ॥
जन्मनाश दै भाव बिहीना । जानहु जीवाऽवयव प्रवीना ॥
तिनकर उपचय अपचय होई । बड़ लघुतनतिनसों लहुसोई ॥
जीवाऽवयव स्वरूप बतावहु । जड़ मानहु कै चेतन गावहु ॥

*१ जीव २ अजीव ३ आस्रव ४ संवर ५ निर्जर ६ बंध ७ मोक्षः एकसार्थो जीव

जो जड़ तौ तन चेतन नाहीं । बहु चेतन जो यक तनमाहीं ॥
बहुकी एक बुद्धि नहिं होई । नेम विदित जानै सब कोई ॥
बहु विरुद्ध मतियुत यह देहा । नाशहोय नहिं कछु संदेहा ॥
दो० यतिवर जैसे बाजि बहु जुते एक रथ माहिं ।
एक बुद्धि रथ लैचलैं हैं विरोध कछु नाहिं ॥
तैसे चेतन जीव अवयवा । तनचालहिंनहिंकछुअवरेवा ॥
बाजि नियामक सारथि पाई । एक बुद्धि तिनकी बनिजाई ॥
एक बुद्धि कारक तिन माहीं । बिन नेता संभव सो नाहीं ॥
जैन युक्ति जब नहिं ठहरानी । पुनियहविधिबोलाअनुमानी ॥
अवयव हानि वृद्धि नहिं होई । बड़ लघुतन प्रविशै जबसोई ॥
जीवाऽवयव सुनो यतिराई । विकसितहोहिं बड़ोतनुपाई ॥
जीव गहै लघु तन पुनि जबहीं । अपने अंग सकोचै तबहीं ॥
जोंक यथा बड़ि लघु है जाई । उपमा यह मानो यतिराई ॥
जो मानहु संकोच विकाशा । तौविकारयुतजीव प्रकाशा ॥
जो विकार युत नित्य न होई । प्रबल नीति मानै सब कोई ॥
जीव अनित्य भाव मन लाये । युगल दोष नहिंमिटै मिटाये ॥
कृतविनाशविनकृतकर लाहा । औरहुबहुविरोध अवगाहा ॥
तौंवासब जीवहिं तुम माना । ऊर्ध्वगमनकहँ मुक्तिसुजाना ॥
अष्टकर्म बंधन गलमाहीं । ऊपर गमन बनै पुनिनाहीं ॥
जीव अनित्य भये सब नाशा । जोअपनोमतकियोप्रकाशा ॥
सप्त भङ्गि जो तुम समुझाई । अस्त्यादिक संज्ञा दर्शाई ॥
तिनकोहम आदरनहिं करहीं । निन्द्यजानिखंडन अनुसरहीं ॥
दो०. एक धर्म महँ धर्मबहु एकसाथ घटि जाहिं ।
अस्त्यादिकजोतुमकहे बहुविरोधयहिमाहिं ॥
दर्पभग्नकरिमाध्यनिक सकलपराजयकीन्ह ।
नीश्वारके देशमहँ तब शंकर पग दीन्ह ॥
तहँ निज भाष्य वृन्द फैलाये । सबकहँ श्रुति मारग दर्शाये ॥

शूरसेन दर दर कुरुदेशा । भरतदेश पुनि कीन प्रवेशा ॥
पांचालादिक देशन जीती । सकलठौर थापी श्रुतिनीती ॥
पुनि श्रीहर्ष नाम बुध भारी । सकलशास्त्रकरखण्डनकारी ॥
जीतो भट्ट पाद जेहि नाहीं । भास्करगुरु* केहिलेखेमाहीं ॥
अजितउदयनादिकसन रहेऊ । तेहिसनबहुविवादप्रभुकरेऊ ॥
वाद जीति गुरुवरवशकीन्हा । काम रूप देशन्ह पद दीन्हा ॥
अभिनव गुप्त शक्ति मतधारी । रची भाष्यनिजमतअनुसारी ॥
जीतो ताहि शंभु तहँजाई । तेहिनिजमन अतिशयदुखपाई ॥
निज उर लागोकरन विचारा । इनसमानजंहिं कोउ संसारा ॥
मम बश और उपाय न ऐहैं । पुरश्चरण करिहौं मरिजैहैं ॥
दो० गूढभावयह राखिउर शिष्यसहित शठराय ।
त्यागिभाष्यनिजलोकभयसेवकभावदिखाय ॥
राखी निज मनमहँ कुटिलाई । सो कहिहौं आगे दर्शाई ॥
निज सेवक कर उत्तर बासी । मैथिलकोशलगे सुखराशी ॥
इनमें प्रभु पूजन बहु भयऊ । तवयतिवरआगे पुनि गयऊ ॥
अङ्गवङ्ग महँ यश विस्तारा । गौड देशमहँ पुनि पगुधारा ॥
तहँमुरारि मिश्रहिजयकीन्हा । उदयनबुधहिपराजयदीन्हा ॥
धर्मगुप्त मिश्रहि पुनि जीता । विस्तारानिज सुयशपुनीता ॥
वेदविनिन्दकअरु द्विज द्वेषी । विप्र विमोहे बुद्ध ‡विशेषी ॥
तासु प्रबल मुख मोरन हारे । भास्करादिजे जगउजियारे ॥
यद्यपि बुधमत भेदन कीन्हा । मिथ्या†भूतपक्ष गहिलीन्हा ॥
तिनहिं पराभवशंकर दीन्हा । मृषावादहठलखि बशकीन्हा ॥

अथ विजयोत्कर्ष वर्णन ॥

छं० चक्रांकचिह्नित पाशुपत कापालिक्षपराकमतघने ।
पुनि जैन और अनन्त दुर्मत जाहिं ते कापै गिने ॥
श्रुतिपन्थरक्षाहेतुयह विधिविजयसबहीकरकियो ।
नहिंमान कीरति हेतु श्रीशंकर विजयमें मनदियो ॥

* प्रभा ‡ जैन † भेदाभेद

सो० चहै न कछु सन्मान शिव सर्वज्ञ कृपायतन।
जिनहिंदेहअभिमान तिनहिं होयमानादि रुचि॥
प्रथम कियो उपदेश कमलासन निज सुतनको।
पितुकर मानि निदेश सनकादिक बोधनकियो॥
बालमीकिमुनि प्रमुख उदारा। तेहि संचित करि सो संसारा॥
सो श्रुतिपथ कंटकयुत भयऊ। दुर्वादिन जहँतहँ विथबयऊ॥
तेहिपुनि शोधनकरिश्रीशंकर। अधिकारिन दर्शायो सुंदर॥
शांति१दांति२उपरति३सुखदाई। श्रद्धा४एकाग्रता५ सुहाई॥
क्षमा६मनहु षट् जननि समाना। सरासुखसम शंकरभगवाना॥
षट्जननी सरामुखहि बढ़ावा। वधितारक सुरदुःख मिटावा॥
बुद्धादिक थूलोदर नाना। रविक तासु खंडन भगवाना॥
विजय करत विचरे जगमाहीं। अब बिबुधनकहँ बाधानाहीं॥
युद्धारंभ बजै कर नाला। तासु शब्द अतिहोय कराला॥
दो० चार्वाक सुनतहि भज्यो क्षेत्रा को बहु देखि।
भेकशाद काशो बहुरि सूझि न परै विशेषि॥
सांख्य असांख्यबुद्धि उरधारी। लरि हारे भागे सब झारी॥
पातंजल तिन साथ पराने। कोउ सुभट ऐसे न दिखाने॥
जो श्री शंकर सन्मुख आवैं। कछुबलअपनोप्रकट दिखावैं॥
प्रथमहि मंडन खंडन भयऊ। जेहिविवाद सुन्दर प्रगटयऊ॥
यतिनृपजयडिंडिमध्वनिभारी। बादिशर्वरिमबनदाहनहारी॥
दावानल सम कौन प्रकाशा। भयो सकल पाखंड विनाशा॥
बुद्ध युद्ध उद्यत कछु भयऊ। छिनुलरिबहुरिपलायनकरेऊ॥
रहो कौरा कणाद चुराई। गौतम मत गत नहिं दर्शाई॥
भग्न भये कापिल गे भाजी। तथा पतंजलि अंजलि साजी॥
यो शंकर की असि चतुराई। त्रिभुवन उपमा नहिं दर्शाई॥
दो० वैदिक वादी समर महँ हाथ गहे यतिराय।
चार्वाकादिकश्रुतिविमुख बलकरिहने अघाय॥

कारागादिक बादी गृह कीन्हे । पुनि स्वराज सिंहासन दीन्हे ॥
करी शूरता यतिनृप जैसी । बहुरि दया प्रकटी पुनि तैसी ॥
दया रूप चंदनि सुखदाई । निशा अमावस सम जो गाई ॥
क्षमा कमलिनी पूरणमासी । विधुकरसरसकुतर्कप्रकाशी ॥
शांति सिंधु बड़वानल जैसी । सत्य पयोद प्रभंजन कैसी ॥
आस्तिक्य तरुवर क्षयकारी । दावानल ज्वाला जनु भारी ॥
हंसिरूप सत्कथा सुहाई । । प्राविट समतेहि की दुखदाई ॥

सो० जेहि सबको दुख दीन्ह पाखंडिन कीसो गिरा ।
सबहिं सुखारीकीन्ह दंडिशिरोमणि खंडितेहि ॥

छं० गुरुसूक्तप्रसरणशीलजलधरअतिरुचिरसर्वदिशिछये।
अद्वैत धाराऽमृत वरसि त्रयताप सबके हरिलये ॥
जो जीव परकी एकता दुर्भिक्ष तेहिको जगरह्यो ।
सो शांतह्वैपाखंड लक्षण * ताप सबखंडितभयो ॥
ये सुभट पातंजलि तथा कापालि अनुयायी रहे।
ते गिरतग्रहके ग्रहणके व्यापारको हठकरिगहे ॥
काणाद जे प्रतिहार समक्षपणक तथा नरपालसे ।
बैतालिका सामंतवर जनु भे दिगंबर वंशये ॥

दो० चार्वाक के वंश के अंकुर रहे नवीन ।
कथा शेष तिन की रही मुनि बानी भे क्षीन ॥

सो० यह विधि सब दिशिद्वैत कथा हानि जबह्वैगई ।
विस्तारो अद्वैत गुरुवर सब संदेह तजि ॥

दो० जेहिप्रकारदिननाथसबप्रथमहितमहिनिवारि ।
पुनि अपने वर तेज को देहि जगत विस्तारि ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्री ७ स्वामिरामकृष्ण भारतीशिष्यमाधवानंदभारतीविरचितेश्रीशंकरदिग्विजयेदिशाजयकौतुकवर्णनपरःपंचदशःसर्गः१५॥

---

* स्वरूप ॥

## विज्ञापन ॥

---

इस सर्गमें और इस्से प्रहिले मतांतरके खंडन और विचित्र उपदेश में यह समुझना चाहिये कि जिस मत में जितना अंश वेद विरुद्ध रहा उसका खंडन हुआ—और विचित्र उपदेश अधिकारियोंके विचित्रता से हुआ—अर्थात जो अति प्राकृत रहे उनको कर्मोपदेश—जो केवल कर्मी उनको उपासना जो कर्म उपासना युक्त रहे उनको ज्ञान का-जो तीनों के भी अनधि कारी रहे उनको महा पुरुष सेवा—और अद्वैत निष्ठा साधारण सबको-इत्यादि व्यवस्था विचारि भ्रम नहीं करना चाहिये—

द० माधवानन्द भारती ॥

## अथ षोडशः ॥

श्लोक ॥ शारदेशादिभिर्वंद्यंवादिभेदविशारदं नमामिशंकरंनित्यं शारदापीठवासिने ॥ १ ॥

दो० जीतो अभिनव गुप्त को यति शेखर जेहि काल।
गुरु विनाश मनमें धरे उर अति क्रोध कराल ॥

मंत्र परम विधि जाननिहारा। मारनहित कीन्होंअभिचारा॥
रोग भगंदर गुरु कहँ भयऊ। बहु उपाय कीन्हे नहिंगयऊ॥
श्रवैरुधिर दिन प्रतिबहुभांती। वसन मलीन होंहिदिन राती॥
तोटक मुनि भक्त सुजाना।गुरु सेवा महँ परम सयाना॥
सकलवसन निर्मलनित करई। सब प्रकार सेवा अनुसरई॥
रोग भगंदर पीड़ित देखी। शिष्यन उर परताप विशेषी॥
श्रीगुरुके चरणनशिर धरहीं। प्रभुसन यहविनतीसबकरहीं॥

सो० बड़ोभयो प्रभु रोग करहु उपेक्षा नाथ नहिं ।
दायकदुखसंयोग वृद्धिपायरिपुप्रबलजिमि ॥
तुम्हहिदेह ममता कछु नाहीं । तेहितें नहिं लावहु मनमाहीं ॥
तव पद सेवक हम सब कोई । देखि व्यथासहिजाय नसोई ॥
अबहमसबअतिआतुरअहहीं । तेहिकारणप्रभुसोंअसकहहीं ॥
व्याधिनिदानचतुर बहु तेरे । अहहिं धरणि वर वेद घनेरे ॥
जानहिं जे औषधि करवेदा । हरहिं व्याधि संभवसबखेदा ॥
तिन्हहिं पूंछियेरोगनिदाना । करैंचिकित्साप्तेविधिनाना ॥
देहादिक नश्वर तुम जानहु । तेहितेकछुनिजमननहिंआनहु ॥
निजसुखयदपिदृष्टितबनाहीं । देखि दशा हमलोग दुखाहीं ॥
हम समर्थ तवदेखि विषादा । पाप होय जो करहिं प्रमादा ॥
स्वस्थरहे तव पद जलजाता । हम सब स्वस्थभक्तजन त्राता ॥
पद पंकज मधुकर सबकोई । तवविग्रहजेहिविधि सुखहोई ॥
चहहिंसदानिजहितउरआनी । सुनि बोले मुनिवर अज्ञानी ॥
दो० जन्मान्तरकेपाप बश प्रकटैं व्याधि सुजान ।
विना भोग क्षय होयनहिं वरणौं वेदपुरान ॥
भोगन योगन कछु संदेहा । शोच न जाय रहे पुनि देहा ॥
द्वन्द्वज कर्मज युग विध रोगा । मिटै न कर्मजविनकृत भोगा ॥
द्वन्द्वज औषधिसन मिटिजाई । यह न जाय बहु भयेउपाई ॥
तेहितें कर्मज है यह रोगा । जैहै जब ह्वै जैहै भोगा ॥
रोग विवश जो यह तननाशा । होहुएकदिनअवशिविनाशा ॥
यह निश्चय मेरे मन माहीं । तेहितेकछुहमको भयनाहीं ॥
सांचकही प्रभु तुम यह बानी । यद्यपिराउर कछुनहिंहानी ॥
देह लोभ नहिं निज उर धरहू । चिरजीवनउपाय नहिंकरहू ॥
दो० हमरो जीवन तदपि प्रभु तव जीवन आधीन ।
और भांतिसो नहिं जियेंजैसे जलबिनमीन ॥
आपु कृतारथकछु रुचिनाहीं । मुनिवर देह धरे जग माहीं ॥

विचरहिंजेहिविधिपरहितहेतू। राखहिं देह यथा वृषकेतू॥
तैसे निज तन रक्षा करहू। हमरी विनय नाथ उरधरहू॥
यहविधिशिष्यनबहुहठकीन्हा। तब शंकरअनुशासनदीन्हा॥
चले शिष्य गुरु आज्ञा पाई। वैद खोजहित मन हर्षाई॥
जेविदेश विधि परम सयाने। हरिगुरुभक्तिहृदय सरसाने॥
निज मनकीन्हेंबहुरिविचारा। कविजनभिषकजितेसंसारा॥
धनहितसकलनृपतिढिगरहहीं। नितप्रतिसेवहिंबहुधनलहहीं॥
राज नगर मिलिहैं गुणवाना। असमनधरितिनकीनपयाना॥
बहुत देश निज कारज लागी। फिरिपहुंचेनृप पुरबड़भागी॥
वैदनमिलि बहुविधि समुझाई। गुरु समीप लाये हर्षाई॥
गुरु सेवक जे द्विज धनवाना। तिन वैदन को बहु सन्माना॥
जबभिषजनअभिमतधनपावा। विनयसहितयहवचनसुनावा॥
गुरुवर आज्ञा देहु उदारा। करहिंउपायशक्तिअनुसारा॥
तब गुरुवरतिनसों यहकह्यऊ। पायु समीप रोगतन भयऊ॥
सो शरीरकहँ अधिक सतावै। करहुचिकित्साजोबनिआवै॥
औषध उत्तम लेहु विचारी। प्रबलरोग तम आपु तमारी॥
पापजनित हमकरिअनुमाना। बहुदिननहिंनिजमनतरआना॥
वहुहठबश शिष्यन दुखदीन्हा। तबतुम्हारआवाहन कीन्हा॥
ऐसे सुनि मुनिवर के बयना। बहुतउपायकरैं गुणअयना॥
सो० नहींगयो सोरोग यद्यपिते सब भिषज वर।
करनलगेमनशोग भेउदासलखि गुण वृथा॥
तिनहिं उदासदेखिगुरु कह्यऊ। बहुतकाल तुमकोह्वै गयऊ॥
तुम सब लोगन के दुखहारी। ह्वैहैं तुम बिन परमदुखारी॥
अबसुखेन निजनिजगृह जाहू। समहितजनिमनमहँपछिताहू॥
गृह जन सकल करत अवसेरी। पथ निरखत ह्वैहैंलखि देरी॥
विरहातुर प्रिय जनपरिवारा। सब करमेटहु जाय खँभारा॥
राज सेवि तुम सब गुणवाना। जो विदेशआसम नृप जाना॥

वृत्ति तुम्हारि हरैकरिक्रोधा । तबहि करै को नृपति प्रबोधा ॥
नृप चंचल मन सब जगजाना । तासु हृदय गति बाजिसमाना ॥
कहुँ न और वर वैद बुलावै । नृप मनको कोउजानि न पावै ॥
तजे रोग नाशक तुम देशा । पावत ह्वैहैं रोगि कलेशा ॥
ढूंढन तव गृह आवत ह्वैहैं । तव मिलाप विनते दुख पैहैं ॥
मातु पिता सों जन तन धरहीं । वैद सदा तव पालन करहीं ॥
जन्म वैद बिन निःफल होई । तेहि ते हरि मूरति है सोई ॥
यद्यपि नाथ वचन फुरभाया । तदपिहोयनहिंगृहअभिलाषा ॥
को बुध जो सुरपुर कहँ पाई । भूमि बास चहै ताहि बिहाई ॥
गयेभिषज अशिविनयसुनाई । निजगृह गुरु अनुशासन पाई ॥
तब गुरुवर ममता तन त्यागी । सहो अधिकदुखपरमविरागी ॥
सहसवैद मन रोग न गयऊ । तबशिवकहँगुरुसुमिरतभयऊ ॥
मनसिज नाशन प्रेरि पठाये । देव वैद गुरु पहँ चलि आये ॥
उभय नाम अश्विनीकुमारा । कर पुस्तक द्विज वेष उदारा ॥

सो० बैठेगुरु पहँ आय सुभुज सुलोचन देव द्वौ ।
कह्योगुरुहिसमुझायभयोरोगअभिचारबश ॥

दो० औषधि योगन रोग यह कहि गवनेद्वौ भाय ।
पद्म पाद उर कोप अति सुनि उमड़ोअधिकाय ॥

रिपुगनहूँ पर कोप न करई । सब पर दया सदा मन धरई ॥
निज गुरु रोग निवारणहेतू । यतन कियो तब यह यतिकेतू ॥
परम मंत्र जामें मन दीन्हा । यद्यपि गुरु वर वारन कीन्हा ॥
गुप्तहि वही रोग तब भयऊ । महा नीच तुरतहि मरिगयऊ ॥
गुरुजनसन विरोधजेहिठाना । भयो जगतकेहि को कल्याना ॥
स्वस्थ भयेगुरु कछुदुखनाहीं । एक समय गंगा तट माहीं ॥
संध्यासमय ब्रह्म कर ध्याना । करत रहे शंकर भगवाना ॥
गंग तरंग संग लहि पावनि । आवै शीतल पवन सुहावनि ॥
सुरसरि सिकतापर भगवाना । पौड़ पाद मुनि ज्ञान निधाना ॥

आवत देखे गुरु अभिरामा । हाथ कमण्डल सुखमाधामा ॥
दो० श्वेतकमलशोभानिदरिअरुणाकिरणावशलाल ।
भान होय करकमल महँ सुखमातासुविशाल ॥
श्री रुद्राक्ष माल कर राजै । यह वर उपमा तासु विराजै ॥
अरुणकमलकोलखिलचिराई । भ्रमरमण्डली जनुरहिछाई ॥
तुरतहिं उठि आगे ह्वै लीन्हा । युगल कमलपद पूजनकीन्हा ॥
श्रद्धा भक्ति हृदय अतिभारी । डरसंभ्रम गुरुचरण निहारी ॥
सर्व कंध युग अंजुलि बांधे । गुरु सन्मुख ठाढे चुप साधे ॥
क्षीरसिंधुलहरीसमचितवनि । शंकर कहेंदेख्यो श्रीगुरुमुनि ॥
मंदहास वर दशन प्रकाशा । बोले वचली करिसब आशा ॥
श्री गोविंद नाथ मुनि ज्ञानी । वत्स तासु विद्या तुम जानी ॥
जो सबविधि तारक संसारा । प्रिय पावन कमनीय उदारा ॥
सतचितनिर्मल आनंद रूपा । ज्ञानहु जानन योग अनूपा ॥
शांत दांत आतम अनुरक्ता । श्रद्धायुत अरु विषय विरक्ता ॥
शिष्यवर्य्यतवसकलविनीता । भक्ति वान आचार पुनीता ॥
तत्त्व ज्ञान चाहत मन माहीं । तव सेवा रत हैं किमु नाहीं ॥
कामादिक जे शत्रु भयंकर । जीते हैं तुमने अति दुस्तर ॥
शांत्यादिक षट्शासनभाये । कहहु तात मोसन तुम पाये ॥
कियो योग अष्टांग सुहावा । भयो चित्त चेतन सुख छावा ॥
दो० प्रेमसहित जब परम गुरु यह बिधि भाषे बयन ।
भक्ति बेग तब शंभुके भरि आये जब नयन ॥
करिप्रणामअंजुलिशिरराखी । बोले शंभु बिनय बहु भाषी ॥
जो जो पूज्य चरणप्रभुभाषा । पूजिहिसबहमरीअभिलाषा ॥
दया दृष्टि देखहु जेहि पाहीं । तेहिकोजगदुर्लभ कछुनाहीं ॥
मूक होयपंडित क्षण माहीं । पापी के सब पाप नशाहीं ॥
कामी शुभ कीरति बहुलेरी । जेहि दिशि देहु नाथतुमहेरी ॥
तव महिमा अनंत जग माहीं । लव जाने असनरकोउनाहीं ॥

व्यास सुअनु शुकदेव मुनीशा । बंदत जेहि सुरमुनियोगीशा ॥
वन त्यागि जबबिपिनसिधाये । पिता नेह वशगे पछिआये ॥
दो० सर्वातमके भावको परि शीलन बहु कीन ।
वृक्षारूपजिनपिताकहँउचित सिखावनदीन ॥
सो० जिनको नवहिं सुरेश सो प्रसन्नह्वै आपुकहँ ।
कियोतत्त्वउपदेश जिनकीगतिकोउजाननहिं ॥
ऐसे श्रीगुरु ज्ञान निधाना । पादयुगल तवकमल समाना ॥
दैवयोग मोहिँ दियोदिखाई । कहि न जाय ममभागबड़ाई ॥
सुनि शंकर पानी मुनि राया । गौड़ पाद यह वचन सुनाया ॥
तवगुणौघसुनिमोहिँअतिगाढ़ी । तव दर्शन उत्कंठा बाढ़ी ॥
शांत रूप देखन हित आयो । सुखी भयो दर्शन तव पायो ॥
भाष्यादिककियेग्रन्थमनोहर । ममकारिकाकमलरविसुंदर ॥
श्रीगोबिंद मुनिसनसुनिपायो । हर्षसहित तुमपहँचलिआयो ॥
कही परम गुरु जबयहबानी । विनय सहितशंकर विज्ञानी ॥
निज कृत सकल भाष्यदर्शाई । निज मुख शंकरबांचिसुनाई ॥
मांडूक उपनिषद सुहावन । तासु कारिका जे अति पावन ॥
उभय भाष्य सुनिअति हर्षाई । शंकर सों बोले मुनिराई ॥
मम कारिका भाव दर्शावा । रुचिरभाष्यमम मतअतिभावा ॥
दो० श्रवण जनित आनंद मम उर बढ़ाव उत्साह ।
मांगहु हम सन बर सुभग जो तुम्हरे मनचाह ॥
तुम शुकदेव रूप भगवाना । हरि मूरति आनंद निधाना ॥
तव दर्शन दुर्लभ हम पावा । यह समान बरदान सुहावा ॥
ह्वैहै और कहा मुनिराया । तदपि देहु यहमम मनभावा ॥
ममचित चेतन गत नित होई । चहौं और बरदान न कोई ॥
चिरंजीव मुनि ज्ञान निधाना । कहि तथेति भे अंतर्धाना ॥
शिष्यन कहँ वृत्तांत सुनाई । सुरसरितट सो रैनि बिताई ॥
प्रातहिकरि सबनित्य बिधाना । शिष्यन युत शंकरभगवाना ॥

ध्यान लालसा मुनिमन आई । तबहिँ वार्त्ता यह सुनिपाई ॥
जंबूद्वीप सकल महि माहीं । औरद्वीपतेहिसमकोउनाहीं ॥
तेहिमहँ भरतखंड अतिपावन । काश्मीर जहँ देश सुहावन ॥
बसै जहाँ शारद सुखदाई । वागेश्वरि देवता सुहाई ॥
चारि द्वार युत भवन मनोहर । जहँ सर्वज्ञ पीठ अति सुंदर ॥
अस शारद वर भवन सुहावा । तहँपरन्तु कोउ जानन पावा ॥
जो सर्वज्ञ होय तहँ जाई । तासु धाम यहरीति सुहाई ॥
पूरब पश्चिम उत्तर द्वारा । तिहुं दिशाके सर्वज्ञ उदारा ॥
खोले तीनिद्वार तिन जाई । निज सर्वज्ञ भाव दर्शाई ॥
भा सर्वज्ञ न दक्षिण माहीं । तेहिते खुलो द्वारसो नाहीं ॥
लोक बतकही सुनि मुनिराई । कहोदेखिहैं हम तेहि जाई ॥
ह्वैहै जो यह वचन प्रमाना । द्वारखोलिहैंकरिअनुमाना ॥
मन प्रसन्न प्रभु कीन्ह पयाना । काश्मीर पहुंचे भगवाना ॥
दक्षिण में सर्वज्ञ न भयऊ । शेषद्वार खोलननहिँगयऊ ॥
यह प्रसिद्धि मेटन हित शंकर । हर्ष चले जहँ शारद मंदिर ॥

छं० जो वादि वृन्द गजेन्द्र दुर्मद गर्व शंकरसण महां ।
श्रीमान शंकरसिंह अरु सर्वज्ञ आवत हैं इहां ॥
वेदांतकानन बिहरु मित बहु वादि भयनहिं मनधरैं ।
संन्यास दंष्ट्रायुध मनोहर द्वैतवन भक्षण करैं ॥
गजकुंभविगलित मदसुरभिवश भृङ्गमण्डलयुतलहै ।
ऐसे गजनप्रतितासुबल मृगराजलघु पशु नहिं गहै ॥
तैसे यतीश्वर सिंह मद रद युक्त जंतुन नहिं गनै ।
अरुदृष्टिगोचरकरत नहिं कोतासु जगमहिमाभनै ॥

दो० दूरिजाहुंशठ वादि गज आवत यतिमृगराज ।
असिध्वनिसबहिसुनावते सेवकयुतयतिराज ॥
दक्षिण द्वारे जायके खोले तासु किवार ।
गुरु प्रवेशकहँ कीन्हमन जुरेवादिगणद्वार ॥

रोकि दियो शंकर कहँ आई । सबबादिन यहगिरा सुनाई ॥
जनि संभ्रम अस मनमहँ धरहू । प्रथमहिंउचितहोयसोकरहू ॥
सुनि बोलेशंकर तिन पाहीं । हमहिंनकछुअविदतजगमाहीं ॥
हम सब ज्ञानहिलेहु परिच्छा । आवैसन्मुखजेहिकी इच्छा ॥
भले वचन मुनि राज बखाने । देय परिच्छा जाहु सयाने ॥
तब कणाद मतधर तहँ आवा । जेहिके मतमें है बड़भावा ॥
द्रव्य१कर्म२सामान्य३विशेषा४गुण५समवाया६भाव सों* लेखा
युग परमाणुयोगजब पायो । सूक्ष्मद्व्यणुकतबहिमुनिजायो ॥
द्व्यणुकाश्रितअणुभावजोहोई । सो उत्पत्ति काहिसन होई ॥
तुम सर्वज्ञ जो बिन संदेहू । एक प्रश्न हमरी कहि देहू ॥
नतरु सर्व विज्ञाव न होई । वृथाभाष्यतवविरचहिंजोई ॥
सुनि कणाद की प्रश्न सुहाई । बोले यहिप्रकार यतिराई ॥

दो० दुइ परमाणु निष्ठ जो युग संख्या तहँ होय ।
द्व्यणुकमाहिंअणुभावको कारणजानहुसोय ॥

यह उत्तर जब शंकर दीन्हा । तासुवचन सबपूजनकीन्हा ॥
जबकणाद लक्ष्मी क्षय पाई । और प्रश्न यह भई सुहाई ॥
मुक्तिकणाद यथाविधिमानी । गौतम मतविशेष विज्ञानी ॥
जो जानहु तब कहौं विभागा । नतरु मान कछुकीजेत्यागा ॥
गुण संबंध केर अति नाशा । व्योमसरिसतिथिकेरप्रकाशा ॥
सो कणाद मुनि मुक्ति बताई । अक्षपाद मत कहहुँ सुनाई ॥
जसिकणादतसि गौतसमाना । ज्ञानानंद विशेष तिन जाना ॥
कणभुग सात पदारथ माने । अक्षपाद षोड़श उर आने ॥

छं० गौतमप्रमाण१प्रमेय२ संशय३ अरुप्रयोजन४ जानहीं ।
दृष्टांत५अरुसिद्धान्त६अवयव७तर्क८ निर्णय९ मानहीं ॥
पुनिवाद१०जल्प११वितंड१२ हेत्वा१३भासछबि१४पहिचानहीं
अरुजाति१५निग्रह१६ सहितषोड़शयहप्रकारवखानहीं ॥

सो० ये षोड़श अस्थान तत्त्व यथा वह जानते ।

---

* कणाद ॥

पावैनर कल्यान यहगौतम को मत रुचिर ॥

दो० उपादान परमाणु कह ईशहि कहैं निमित्त ।
यह दोनों सम जानहीं आनहु अपने चित्त ॥

यह प्रकार जब उत्तर दीन्हा । नैयायिक अभिनंदन कीन्हा ॥
द्वार देश तजिसोहठि गयऊ । तबकापिल यहपूछत भयऊ ॥
प्रकृती जो हम हेतु प्रबीना । सो स्वतंत्र कै ईश अधीना ॥
कहो जोतुम सब मतके ज्ञानी । नाहिं तौ दुर्लभ दरशभवानी ॥
विश्वयोनि जोप्रकृतिउदारा । है स्वतंत्र सो सकल प्रकारा ॥
बहु स्वरूप भामिनि है जाई । त्रिगुणात्मक तुम्हरेमत गाई ॥
हमरे मत ईश्वर आधीना । तब आये बहुबोध प्रवीना ॥

दो० क्षणिक ज्ञानवादीप्रमुख जेहि सोहै बहु भेद ।
है प्रसिद्ध यह भूमि परते सब खंडहि वेद ॥

ऐक्यों आय करत बहु नादा । प्रथमकरौ हम संग विवादा ॥
है वाह्य रथ उभय प्रकारा । तिनमें जो अंतर निर्द्धारा ॥
पुनि विज्ञान बाद तव ज्ञाना । उभयभेद मुनिकरहु बखाना ॥
दुइ उत्तर हमरे है देहू । देवि भवन तव गमन करेहू ॥
सौत्रांत्रिक ऐसो उर आना । तेहि अनुमान गम्य सब जाना ॥
वै भाषिक यहनिजमतठाना । तेहि प्रत्यक्ष गम्य सब माना ॥
पहिलो लिंग वेध सम जानै । अक्ष वेध दूसर मन आनै ॥
यही विशेष करौतुमध्याना । क्षणभंगुर दोनहुं पहिचाना ॥
ज्ञान भेद अब करहुं बखाना । सुनु विज्ञान वादि जस माना ॥
प्रथमहिबहुतज्ञान तेहिमाने । सकलज्ञानपुनिक्षणिकबखाने ॥

दो० एक ज्ञान वेदांत सहँ थिर मानो है सोय ।
यह विशेष तुम धरहु मन पूंछौजो रुचिहोय ॥

तबहिं दिगंबरमत अनुसारी । गुरुवर सन यहगिरा उचारी ॥
जो सर्वज्ञ कहा बहु यतिवर । एक रहस्य हमारी सुंदर ॥
जे हम जैन मती जग अहहीं । काय शब्दपहिलेक्याकहहीं ॥

प्रथम जीव काया तिन मानी । दूसरि पुद्गल कायबखानी ॥
धर्म काय तीसरि पहिचानी । चौथी अधरम काया जानी ॥
पुनि आकाश काय समुझाई । यह विधि पंचकाय दर्शाई ॥
औरहु जो तुम्हरे मन होई । तुरतहिं पूंछौ हमसन सोई ॥
वेद बहिर्मुख वादि सयाने । यह विधिसुनिउत्तरविलगाने ॥
बोले जैमिनि मत अनु सारी । शब्द रूप तुम कहहु विचारी ॥
द्रव्यरूप के गुण करि माने । कहहुयथा विधिजैमिनिजाने ॥
वर्णानित्य जैमिनि मुनि माने । ते सब व्यापक बहुरिबखाने ॥
श्रवनन द्वार जाहिं सब जाने । तेहिते व्यापकमुनि अनुमाने ॥
शब्दजाल सब जिनको रूपा । नित्य सोव्यापकद्रव्यअनूपा ॥
असमानहिंजैमिनि अनुसारी । तेहिप्रतिगुरुवरगिराउचारी ॥

दो० सकलशास्त्र महंप्रभु जब यहविधिउत्तर दीन ।
शारद दीन्हों हर्षि उर तिन सब पूजन कीन ॥

तव मंदिर भीतर प्रभु गयऊ । भद्रासन तहँ देखत भयऊ ॥
हाथ सनंदनको गहि लीन्हा । तहँचढ़िवेको प्रभुमनकीन्हा ॥
तेहि छिन शारद मातुसयानी । व्योमगिरा बोली यह बानी ॥
तुम सर्वज्ञ न कछु संदेहा । प्रथमहितेमोहिंनिश्चययेहा ॥
नतुरु चतुर्मुख रूप उदारा । महिमाजिनकीअकथअपारा ॥
मंडन अति प्रसिद्ध संसारा । सोकिमिहोतोशिष्यतुम्हारा ॥
मम पीठारोहण यति केतू । एक सर्व विज्ञावन हेतू ॥
जोपरि शुद्धहोय मुनिनायक । सो मम पीठारोहण लायक ॥
प्रथम विचार करौ मनमाहीं । है तव शुद्धभाव के नाहीं ॥
यतिवरअस साहसजनिकीजे । अपनचरितहमसनसुनिलीजे ॥
यती धर्म रत ह्वै तुम नाना । कामिनि भोगसरससुखजाना ॥
मदन कला चातुर्य सुहाई । सब प्रकार शंकर तुम पाई ॥
ऐसे पद आरोहण योगा । रहेकवनविधिकरिवहुभोगा ॥
जो सर्वज्ञ विमल पुनि होई । यह सिंहासन बैठे सोई ॥

दो० यह शरीर सो मातु मैं कबहुर्नाकिल्विषकीन ।
उपालंभ यह वृथातुम बिनु समुझे मोहिंदीन ॥
और देह से भयो जो देवि कर्म अन्याय ।
तेहिसन लिप्त न देह यह लोकवेदको न्याय ॥

शारद यह उत्तर जब पायो । पुनिकछुनहिंविकल्पदर्शायो ॥
तब सर्वज्ञा ८८कनयति राजा । बहु आनंद युत जायबिराजा ॥
शारद कीन्हों बहु सतकारा । तथा तहां जे विबुध उदारा ॥
पूजे याज्ञवल्क जेहि भांती । गार्गिकहोलादिकद्विजपांती ॥

अथ शारदा पीठ साक्षात्कर्षः ॥

बाद बढ़े आनंद समुदाया । आयेजहँ प्रतिवादिनिकाया ॥
मंडनादि जिन कहं जगजाना । तिन सन बादकीनभगवाना ॥
अति दुर्वार तर्क जिन केरी । अस्थापन जहं भई घनेरी ॥
तिनकरतिरस्कारतुम कीन्हा । निजप्रागल्भ्यपराभवदीन्हा ॥
सर्बदिशातवपुनीतयशछावा । अस सर्वज्ञ भाव तुम पावा ॥
तवगुणपावनजगसुखदायक।यतिवरतुमसबविधिसबलायक॥
अतिशय तव प्रभाव संयोगा । यह सिंहासन बैठन योगा ॥

छं० यह भांति अति गंभीरध्वनिसनप्रकटजबशारदकह्यो ।
निर्सेघश्लाघा मनोहरसुनि सकलजनसुखअति लह्यो ॥
जगमातु ध्वनिजनघोषयुतडिमडिमसशरसध्वनि राजहीं ।
यति राज शारद पीठ सुंदर वास अधिक विराजहीं ॥

दो० अति उद्धत जे वादिगण तिन सोंभयो जो बाद ।
विजय दुंदुभी करभयो मानहुं धिमधिम नाद ॥

अक्ष पाद मुनि कथा सुहाई । लीन भई अब कबहुं न जाई ॥
कापिल गाथा भई प्रलीना । भास्करोक्ति भै भग्न मलीना ॥
भट्ट पाद मुनि केर प्रवादा । प्रकटनकहुंसुनिधिमधिमनादा ॥
पातं जल कणाद बनाये । छौमत असत गिरा कहवाये ॥
सब पाखंड रूपअतिशयतम । ताशुविनाशकगुरुसवितासम ॥

शारद पीठ बास सुनि नादा । अब कह है काशाद प्रवादा ॥
कहुं नहिंकपिलबचनसंवादा । अक्षपाद कर कहुं न प्रवादा ॥
रहीं न कतहुं योग की कंथा । तथा भास्कर*गुरुकी संथा ॥
भट्टप्रघट्ट क कहुं न दिखाहीं । द्वैता द्वैत कथा परि छाहीं ॥
क्षपणा कवि वृती नहिं दर्शाई । गयो सकल पाखंड नशाई ॥
जब भायो शंकर मन भावा । शारद पीठ निवास सुहावा ॥
सुर पति प्रेरित देवन आई । तुरतहिं बहु दुंदुभी बजाई ॥
सुर वीथी घन मंडल छाये । हर्षितगर्जहिंअति सुखपाये ॥
सिंधु गंभीर महा ध्वनि होई । सबदिशिव्यापिरहासुखसोई ॥
‡शची कंवरके लायक सुंदर । कल्प वृक्ष के पुष्प मनोहर ॥
कछु दिन लौं देवन हर्षाई । गुरुशिरपरप्रतिदिनझरिलाई ॥
अति प्रसन्नतहँ कीन निवासा । निजमत करउत्कर्षप्रकासा ॥
तीन काल शंकर मन माहीं । मान बड़ाई की रुचि नाहीं ॥
पुनि सुरेश कहँ शंभु बुलावा । ऋष्य शृंगसठ माहिं पठावा ॥
ऐसेहिबहुदिशिशिष्य पठाये । तिन तिन भवननमहँ बैठाये ॥

सो० कछु सेवक लै साथ बदरी बन शंकर गये ।
श्री यतिवर मुनिनाथ मुदितरहेकछुकालतहँ ॥

हारिगये त्यागे सब दर्शन । ऐसे जे केते योगी जन ॥
तिन्हहिंकृपाकरिभाष्य पढ़ावें । विगत भेद मारग दर्शावें ॥
उडपति प्रसरितकिरन समाना । यशपावनजिनकोजगजाना ॥
लोगन आतम ज्ञान सिखावत । सदयहृदयवरविबुधरमावत ॥
ऐसे सुख सो काल वितावत । यतीराज शोभा अति पावत ॥
कलिमल नाशनचरितउदारा । करतरुचिर शंकर अवतारा ॥
निर्मल कीरति राशि बढ़ाई । यहिविधिवृत्तिसवर्यविताई ॥
जोकलिमलनाशकअतिपावन । मुक्ताकेर जनु मोलसुहावन ॥
विवुध मनो हर भूषरा रूपा । कीन्हे सुंदर भाष्य अनूपा ॥
कुमतिदंडवतिअहमितिबाढ़ी । खंडी बुध लोगन की गाढ़ी ॥

* प्रभाकर ‡ इन्द्राणी केश पोश ॥

विपथमथनअतिशयमनदीन्हा । मुक्तिपंथ विद्योतितकीन्हा ॥
बुध श्रेयस बहुविधमन धरहीं । यहतेअधिकऔरकहकरहीं ॥
कुन्दु दुन्दु चन्दन मंदारा । मुक्ता हार प्रचल नी हारा ॥
हीरक अरु सुंदर नभ तारा । इनसमाननिजयश विस्तारा ॥
रहीजोदैन्याऽनल भरि पूरी । करुणामृत निर्भर करिदूरी ॥
सबप्रकार जग सुखविस्तारा । रहो शेषमहि जग उपकारा ॥
जेहि सौरभमहँअब मनधरहीं । प्रकटजाहि शंकरअबकरहीं ॥
अतिदृढअधिकसहायशाछ्ययऊ । व्यापितसकलदिगंतरभयऊ ॥
रुचिर अमानुषक्रीडाकीन्ही । अचरजहौंसबदिशिभरदीन्ही ॥
भुक्तिमुक्तिअभिमत फलदीन्हे । सेवक सकल कृतारथकीन्हे ॥
नहीं शेष कछु जाहिं सवारैं । कौनिसुजनता अब बिस्तारैं ॥
तापस नाथ गये केदारा । जो सबकी आपद उद्धारा ॥
सो० करैं अतुल विस्तार सेवक जन कहं स्वस्तिनित ।
दर्शनते संसार पापानल को हरहिं जो ॥
रहा तहां अति शीतविशेखी । व्याकुल सबसेवक जनदेखी ॥
सबकी रक्षा निज उर आनी । अति प्रभाव शंकर विज्ञानी ॥
तप्तोदक हित जन सुख दाई । चंद्रमौलि कहं बिनय सुनाई ॥
तब गिरीश अतिशय हर्षाई । तप्त तोय सरि दीन्हि बहाई ॥
अबलौ यतिवर यशविस्तारी । बहति तप्त जलसरिदुखहारी ॥
यहविधिसुरकारजसबकीन्हा । जग अवतारजासुहितलीन्हा ॥
रजत शिखर गिरितुंगउदारा । तहं लै जैवे हित पगु धारा ॥
विधि सुरेशविधुअग्निसमीरा । श्री उपेन्द्र सुर निकरगंभीरा ॥
सिद्धऋषयगणमिलसबआये । बहुबिमान नभ मारग छाये ॥
स्थिर दामिन कोटि समाना । संख्यालंघितरुचिर विमाना ॥
यतिवरकी जयजयसुरकरहीं । त्रिपुर मथन ऽस्तुति उचरहीं ॥
वर्षत सुमन रुचिर मंदारा । देवन पुनि यह वचनउचारा ॥
आदि देव सुर भूसुर रक्षक । करुणाकर सागरविषभक्षक ॥

मदन दहन त्रिपुरारि गुनैना । विश्व प्रभवलय हेतुत्रिनयना ॥
जेहि कारनसहिसहंपगुधारा । भली भाँति सबकाज सँवारा ॥
तेहिकारननिजधामसिधारहु । कृपाविलोकिनिहमहिनिहारहु
जब देवन यह बिनय सुनाई । तब श्री शंकर जन सुखदाई ॥

दो० अपने सुंदर लोक कहं गमन हेतु मनकीन्ह ।
रुद्र पार्षद सहित तब नंदी दर्शन दीन्ह ॥

छं० जनु सिंधु मथन जनित शुभ नवनीतपिंड सुहावनो ।
पुनि शरद पय विहरनि मराली अहंकार सिटावनो ॥
भूषण मनोहर अंग प्रमथ न रचोसो अति सोहही ।
शिव प्रीति भाजन वृषभकी नहिं जात कछु शोभाकही ।

दो० इन्द्रोपेंद्र प्रधान सुर जय ध्वनि मंगल रूप ।
दिव्य पुष्पझरि करहिं सुर तबशंकर यतिभूप ॥
जटाजूट निज प्रगट करि चंद्रकला धरि भाल ।
नंदीश्वर आरूढ भे विधि कर गहि नरपाल ॥
ऋषिवर यश वर्णित सुनत श्री शंकरअभिराम ।
यहिविधिसर्बहिसनाथ करि प्रभुगमनेनिजधाम ॥

ऐसो श्री हर चरित उदारा । भक्तिसहितजोकरहिंविचारा ॥
ब्रह्मज्ञान विमल अति पैहै । जीवन्मुक्ति तबहि ह्वै जैहै ॥
गावहिंगे नर नारि सप्रेमा । अथवा सुनि हैं जे धरि नेमा ॥
तेसब श्री शिव पद अनुरागी । लहिहैं शंभु भक्ति बड़भागी ॥
जो अभिलाषरुचिरमनमाहीं । नाथ कृपा सो दुर्लभ नाहीं ॥
ज्ञान प्रधान चरित शिवकेरा । करहि जासु उरआयबसेरा ॥
तेहि सम और धन्यनहिंकोई । देव सिहाहिंमनुजलखिसोई ॥
कौनि बस्तु दुर्लभ पुनि ताही । हर कीरति प्रियतमहैजाही ॥
सकलसुमंगलखानिप्रकाशक । हरयशदिनकरउरतमनाशक ॥
हरि हर प्रेम लाभजेहिमाहीं । लौकिक सुखकेहिलेखैमाहीं ॥
यह बिचारि जे सुजन सयाने । पढ़िहैं सुनिहैं मन हर्षाने ॥

ते सब शिव पदके अधिकारी । ह्वैहैं अभिमत पाय सुखारी ॥
उमानाथ शंकर मदनारी । गौरीपति पशुपतित्रिपुरारी ॥
तिनकी यहकीरतिउजियारी । सुखप्रद सकलअमंगलहारी ॥
मंगल मूल न कछु संदेहा । श्रुति पुराण कर संमतएहा ॥
छं० श्रुति शेष शारद जासु यशमहिमाअपार बखानहीं ।
अतिअतुलतासुप्रभावकेहिबिधि क्षुद्र नरपहिचानहीं ॥
सो परम पावनि शम्भु कीनर सुनहिंगे जे गाय हैं ।
ते चन्द्रभाल प्रसाद ते मन काम सब बिधि पायहैं ॥

सो० जो पायोहै मोद यहमें माधव भारती ।
तैसो लहैं प्रमोद शंभु कृपासे लोग सब ॥

इतिश्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री० स्वामि रामकृष्ण भारतीशिष्यमाधवानंदभारतीबिरचितेश्रीशङ्करदिग्विजये शारदापीठबासवर्णनपरःषोडशःसर्गः १६ ॥

समाप्तोयं ग्रन्थः ॥

---

इस पुस्तकको पण्डित रामबिहारी व पंडित रामसेवक व पं० रामेश्वर व पं० गौरीशंकर व पं० रामलाल व पं० हरदयाल जीने शुद्ध किया है ॥

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने मुक़ाम लखनऊ में छपी
मार्च सन् १८८८ ई० ॥

नामकिताब

दुर्गायननवकाण्ड
देवीभागवतभाषाबारहों-
स्कंध
दास्तानअमीरहमज़ा
दैवज्ञाभरण
दोहावलीरत्नावली

( न )

निर्णयसिंधु
नाममाहात्म्य
नानार्थनवसंग्रहावली
नवीनसंग्रह
नवरत्नभाष्य
निघंटभाषा
नारीबोध

( प )

परमार्थसार
प्रेमसागर
पारसभाग
प्रेमरत्न
प्रेमामृतसार
पद्मावतभाषा
पत्रासंबत् १९४५
पटवारियोंकीपुस्तकके ती-
नों भाग
प्रबोधचन्द्र दयनाटक
पत्रहितैषिणीनागरीवकैथी
प्रेमप्रकाश
पद्यसंग्रह

( ब )

बृहज्जातक

नामकिताब

बृहत्संहिता
बिनयपत्रिकामूल व टीका
सहित
ब्रजबिलास
ब्रजबिलाससारावली
ब्रह्मोत्तरखण्ड
बिष्णुपुराणभाषा
बाराहपुराण
बीजककबीरदास
बीजगणितदोभाग
बैतालपच्चीसी
बकावलीसुमन
बैद्यजीवन
बैद्यमनोत्सव
बैद्यप्रिया
बालशिक्षा दो भाग

( भ )

भक्तमाल
भविष्यपुराण
भोजप्रबन्धसार
भाषाव्याकरण
भाषातत्त्वदीपिकाव्याकरण
भूगोलतत्व
भाषाचन्द्रोदय
भूगोलवर्णन

( म )

मार्कण्डेयपुराण सटीक
माधवनिदान
मुहूर्त्तचक्रदीपिका
मुहूर्त्तचिन्तामणि सटीक

नामकिताब

मुहूर्त्तमार्तण्डसटीक
मुहूर्त्तगणपति
मुहूर्त्तदीपक
महाभारतदर्पण
तथाअलग २ उन्नीसों पर्व
महाभारत सबलसिंह
कीबनाई
मिश्रितमाहात्म्य
मनमोहनी
मनमोहन
महारामायण
मनुस्मृति
मंगलकोष

( य )

याज्ञबल्क्यस्मृति
योगवाशिष्ठ
युगलसंवादबोधप्रकाश
यमुनालहरी
युगलबिलास

( र )

रेखागणितदोनोंभाग
रघुवंशसंस्कृत व भाषा दो
जिल्दोंमें
रामायण मूल तुलसी कृत
मोटेअक्षरकी
रामायणमूलतुलसीकृत
रामायणतुलसीकृत मूल
छो० सैकांड

इत्यादि॥

# इश्तहार

माहमार्च सन् १८८६ ई० से मुमालिक मग़रबी व शिमाली का बुकडिपो इ-लाहाबाद क्यूरेटर बुकडिपोसे मतबा मुंशीनवलकिशोर मुक़ाम लखनऊ में आगया है इस डिपो में मग़रबी व शिमाली एजूकेशनलबुकडिपो के सिवाय और भी हर एक विद्या की किताबें मौजूद हैं इन हर एक किताबों की ख़रीदारी की कुल शर्तें क़ीमत के सहित इस छापेख़ाने की छपी हुई फ़ेहरिस्त में दर्ज हैं जो दर-ख़्वास्त करने पर हर एक चाहने वालों को बिला क़ीमत मिलसक्ती है जिन साहबों को इन किताबों की ख़रीद करना हो वे इस छापेख़ानेसे ख़रीद करें और फ़ेहरिस्त तलब करें ॥

द० मनेजर अवध अख़बार
लखनऊ मुहल्ला हज़रतगंज